ईश्वरीय ज्ञान पाठ्यक्रम

(केवल ब्रह्माकुमारी बहनों के लिए)

कृति

(संकलन)

स्पार्क *(SpARC)*

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

विषय सूची

क्र.	पाठ	शिर्षक	वक्ता
		साप्ताहिक कोर्स	आशा बहन जी
		विद्यालय का परिचय	राधा बहन जी
1	पहला	मैं कौन हूँ? (आत्मा की पहचान), तीन लोक, आत्मा से सम्बन्धित प्रचलित मान्यतायें और ज्ञान की बातें -	राधा बहन जी
2	दूसरा	परमात्मा का सत्य परिचय	राधा बहन जी
3	तीसरा	त्रिमूर्ति (परमात्मा का कर्त्तव्य)	राधा बहन जी
4	चौथा	कल्पवृक्ष (झाड़)	गीता बहन जी
5	पाँचवाँ	सृष्टि चक्र (गोला)	उषा बहन जी
6	छठा	मनुष्यात्मा 84 लाख योनियाँ नहीं लेती	मनोरमा बहन जी
7	सातवाँ	गीता का भगवान	मनोरमा बहन जी
8	आठवाँ	राजयोग का आधार तथा विधि	शीलू बहन जी
9	नौवाँ	राजयोग के द्वारा आध्यात्मिक शक्तियों की प्राप्ति (दिव्य गुणों की धारणा)	शशि बहन जी
10		मुरली की कहावतें	कुलदीप बहन जी

साप्ताहिक पाठ्यक्रम

[1] विषय प्रवेश

[2] विद्यार्थी को किस दिन क्या कराना है?

(1) पहले दिन – फार्म भरवाना और विद्यालय का परिचय देना

(2) दूसरे दिन – प्रथम लेसन अर्थात् आत्मा का लेसन

[3] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ध्यान में रखने योग्य कुछ बातें

[4] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ज्ञान, योग और धारणा के लेसन्स का क्रम

(1) ज्ञान के लेसन्स

1. मैं कौन हूँ?
2. परमात्मा का सत्य परिचय
3. त्रिमूर्ती (परमात्मा का कर्त्तव्य)
4. कल्पवृक्ष (झाड़)
5. गोला (सृष्टि चक्र)
6. सीढ़ी (भारत के उत्थान और पतन की कहानी)
7. गीता का भगवान

(2) योग का लेसन

1. राजयोग का आधार और विधि

(3) धारणा का लेसन

1. राजयोग से आध्यात्मिक प्राप्तियाँ/दिव्य गुणों की धारणा

[5] विद्यार्थी से भरवाये जाने वाले दो प्रकार के फॉर्म

(1) पहले दिन भरवाये जाने वाले फॉर्म का प्रारूप

साप्ताहिक पाठ्यक्रम

[1] विषय प्रवेश

विद्यार्थी को सबसे पहले 7 दिन का ज्ञान का Course, योग का Course, धारणा का Course कराना है और उसके बाद ही मुरली सुनानी है।

[2] विद्यार्थी को किस दिन क्या कराना है?

(1) पहले दिन – फार्म भरवाना और विद्यालय का परिचय देना

बाबा ने आदि से एक विधि (System) बनाया है कि कोई भी नया विद्यार्थी आता है तो पहले उससे Form भरवाना है और फिर उसके बाद संस्था क्या है, उसका परिचय देना है।

(2) दूसरे दिन – प्रथम लेसन अर्थात् आत्मा का लेसन

दूसरे दिन प्रथम Lesson होता है और प्रथम Lesson में आत्मा के विषय में पूर्ण जानकारी दी जाती है, आत्मा का परिचय दिया जाता है। फिर उसके सम्बन्ध में ज्ञान की Points भी देते हैं। जैसे – आत्मा, परमात्मा में लीन नहीं होती, आत्मा पुनर्जन्म लेती है, आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है।

एक अच्छी टीचर साहित्य (Literature) का खूब अध्ययन करती है। एक ही Topic ले लीजिए, जैसे – आत्मा, उस पर Points निकालें, तो वह Lesson तैयार हो जाएगा।

[3] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ध्यान में रखने योग्य कुछ बातें

(1) पहली बात

कोशिश करें कि एक ही टीचर (Teacher) एक स्टुडेण्ट (Student) अथवा स्टुडेण्ट के एक ग्रुप का सारा कोर्स (Course) सम्पन्न करें।

(2) दूसरी बात

विद्यार्थी को जब हम Course कराते हैं तो Centre का वातावरण University के वातावरण की तरह महसूस होना चाहिए। ध्यान रखना है कि Course कराते समय रसोई घर से किसी भी प्रकार का आवाज ना हो, गृहस्थी जैसा खाना बनाने या बर्तन धोने की आवाज इत्यादि नहीं होना चाहिए। इतना व्यवस्थित और शक्ति रूप से Course दें जो कभी भी वह आपकी कोई Loose बात न देखें, न पूछे। Course कराते समय अगर आवश्यक हो, जैसे कोई बुला रहे हो या फोन की घंटी भी बज रही तो दौड़े नहीं अपनी रूहानी स्थिती में स्थित होकर ही चलें।

(3) तीसरी बात

विद्यार्थी को कभी भी अपना नाम नहीं बताना है। विद्यार्थी से हमेशा Distance रखना है, ज्यादा Familiar नहीं बनना है। आपको उनकी व्यक्तिगत जीवन (Personal Life) में जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि फिर वह आपकी भी Personal Life के बारे में पूछेगा।

(4) चौथी बात

विद्यार्थी को 45 मिनट से ज्यादा समय नहीं देना है। 45 मिनट पूरे होते ही अगर Lesson Complete नहीं हुआ तो दूसरे दिन Continue करना है। क्योंकि विद्यार्थी को ज्यादा समय बैठने की आदत पड़ जायेगी।

(5) पाँचवीं बात

विद्यार्थी को अगर First Lesson समझ में नहीं आया हो, तो दूसरे दिन फिर से उसे समझाना है।

(6) छठीं बात

विद्यार्थी को जो बात जिस Lesson में सुनानी है, उतनी ही सुनानी है। विद्यार्थी जो सवाल पूछता है उतना ही जवाब दीजिए। अगर उस दिन के Lesson से जुड़ा (Connected) सवाल नहीं है तो आप बता सकते हो कि इस सवाल का जवाब आने वाले Lesson में देंगे।

(7) सातवीं बात

विद्यार्थी को Homework जरूर देना है। उदाहरण – आत्मा का Lesson देते हैं तो उसकी Practical धारणा क्या है? और दूसरे दिन विद्यार्थी से Homework जरूर पूछना है। अगर Homework पूछेंगे नहीं तो उसकी कोई Value नहीं रहेगी।

(8) आठवीं बात

विद्यार्थी को जो भी Lesson करवाते हैं उस Lesson को Revise जरूर कराना है। Teacher की बुद्धि में हर Point की Detail होनी चाहिए और वो तब होगा जब आप अध्ययन करेंगे। जो Study है उस पर Attention दिलाते विद्यार्थी को Revise करायें, जैसे – कल आपको जो Lesson दिया था उसमें आपने क्या सीखा?

(9) नौवीं बात

विद्यार्थी को अगले दिन (Next day) के लिए उत्कण्ठा जरूर देनी है जैसे कि – आज आपने यह सुना लेकिन कल क्या सुनेंगे?

(10) दसवीं बात

विद्यार्थी का परिचय पहले दिन से ही अपनी बड़ी बहन (Teacher) के साथ जरूर करवाना है। और शिष्टाचार के अनुसार उन्हें Good Morning या Om Shanti करने के लिए कहना हैं। सेन्टर में भी बड़े हो तो उनका उनसे भी परिचय जरूर करवाना है।

(11) ग्यारहवीं बात

विद्यार्थी में Notebook और Pen लाने की आदत डालनी है जिससे वह Notes में नई बातों को लिख सके। Next day आज जो उसने सुना उसको लिखकर लाने को कहना है और उसको Check जरूर करना है।

(12) बारहवीं बात

विद्यार्थी को जो Time दिया है, उसी Time पर हमें तैयार रहना है। अगर हम Punctual रहेंगे तो Student में भी Discipline आयेगा। जो दूसरे के Time का महत्व जानता है वह स्वयं भी Punctual रहेगा।

[4] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ज्ञान, योग और धारणा के लेसन्स का क्रम

विद्यार्थी को पहले ज्ञान के 7 लेसन्स (Lessons) देने हैं। ज्ञान के लेसन्स देने के बाद योग का लेसन देना है। योग के लेसन्स देने के बाद धारणा का लेसन देना है।

(1) ज्ञान के लेसन्स

1. मैं कौन हूँ? (आत्मा)
2. परमात्मा का सत्य परिचय
3. त्रिमूर्ती (परमात्मा का कर्त्तव्य)

4. कल्पवृक्ष (झाड़)

5. गोला (सृष्टि चक्र)

6. सीढ़ी (भारत के उत्थान और पतन की कहानी)

7. गीता का भगवान

(2) योग का लेसन

1. राजयोग का आधार और विधि

(3) धारणा का लेसन

1. राजयोग से आध्यात्मिक प्राप्तियाँ दिव्य गुणों की धारणा

लेकिन किसी को अगर योग में रुचि (Interest) है तो उसको आत्मा और परमात्मा का लेसन कराने के बाद योग का लेसन कराओ।

[5] विद्यार्थी से भरवाये जाने वाले दो प्रकार के फॉर्म

विद्यार्थी से दो प्रकार के Form भरवाते हैं। एक फॉर्म पहले दिन (First day) और दूसरा फॉर्म अन्तिम दिन (Last day) भरवाते हैं।

(1) पहले दिन भरवाये जाने वाले फॉर्म का प्रारूप

1. आपका नाम, पता और व्यवसाय

2. आपके शरीर के पिता का नाम, पता और व्यवसाय

3. निज आत्मा के परमपिता परमात्मा का दिव्य नाम, दिव्य धाम, दिव्य कर्त्तव्य और विशेष दिव्य गुण

4. आपके धर्म का नाम क्या है? और स्थापक कौन है?

5. आप परमपिता परमात्मा को किस रूप में और क्यों याद करते हैं?

6. क्या आप जानते हैं कि गीता ज्ञान किसने दिया था अर्थात् गीता के भगवान कौन हैं?

7. क्या आपके कोई गुरु अथवा मार्ग-प्रदर्शक हैं? कब से तथा किस लक्ष्य से?

8. आप यहाँ किस उद्देश्य से पधारे हैं?

विद्यालय का परिचय

[1] विषय प्रवेश

[2] जिज्ञासु को परखने और उसको डील करने से सम्बन्धित बातें

(1) पहले जिज्ञासु को परखना पड़ता है कि वह किस उद्देश्य (Aim) से आया है?

(2) फिर उनसे पूछना है कि आप कहाँ से आये हैं? आपको किसने भेजा है? क्या आप Board पढ़कर आये हैं या आपने कोई मेला देखा है?

(3) कोई नशा (Drink) करके आया होगा, तो उसको मना करने का तरीका क्या है?

(4) कोई पूछता है कि क्या मुझे पानी मिल सकता है?

[3] जिज्ञासु को कोर्स कराने के पहले अपनी शारीरिक और मानसिक तैयारी से सम्बन्धित बातें

(1) शारीरिक तैयारी

(2) मानसिक तैयारी

1. जिज्ञासु को ज्ञान देते समय निमित्त भाव रहे
2. जिज्ञासु हायर पोजीशन वाला हो तो उससे डरे नहीं, अपने अन्दर न तो सुपीरियारिटी कॉम्प्लेक्स ले आयें और न ही इन्फीरियारिटी कॉम्प्लेक्स
3. जिज्ञासु के प्रति रहम की भावना रखें
4. जिज्ञासु को कोर्स कराने के पहले अभ्यास कर लें, ओवर कानफिडेन्स में न रहें
5. जिज्ञासु को जरूरत पड़ने पर बाबा का घर दिखायें

[4] जिज्ञासु को बतायी जाने वाली विद्यालय के परिचय से सम्बन्धित बातें

(1) विद्यालय की स्थापना कब और कहाँ हुई, मुख्यालय कहाँ है?

(2) विद्यालय की शाखायें और उपशाखायें कितनी हैं और कितने देशों में हैं?

(3) विद्यालय की सीस्टर इंस्टीट्युशन RERF की अलग-अलग विंग्स कौनसी है?

(4) विद्यालय का UNO/DPI, ECOSOC और UNICEF से क्या सम्बन्ध है तथा विद्यालय को कौनसे पदक/पुरस्कार प्राप्त हुये हैं?

(5) विद्यालय का नाम क्या है और वह क्या-क्या कर रहा है?

(6) विद्यालय के नाम का स्पष्टीकरण कैसे देना है?

1. प्रजापिता माना क्या?
2. ब्रह्माकुमारी माना क्या?
   ① ब्रह्माकुमारी नाम क्यों रखा?
3. ईश्वरीय शब्द क्यों?
4. विश्व-विद्यालय शब्द क्यों?
   ① ईश्वरीय ज्ञान
   ② सहज राजयोग
   ③ दिव्य गुणों की धारणा
   ④ ईश्वरीय सेवा

[5] जिज्ञासु को कैसा लगा?

[6] जिज्ञासु से फॉर्म भरवाना क्यों जरूरी है?

साप्ताहिक पाठ्यक्रम

[1] विषय प्रवेश

[2] विद्यार्थी को किस दिन क्या कराना है?

(1) पहले दिन – फार्म भरवाना और विद्यालय का परिचय देना

(2) दूसरे दिन – प्रथम लेसन अर्थात् आत्मा का लेसन

[3] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ध्यान में रखने योग्य कुछ बातें

[4] विद्यार्थी को साप्ताहिक कोर्स कराते समय ज्ञान, योग और धारणा के लेसन्स का क्रम

(1) ज्ञान के लेसन्स

1. मैं कौन हूँ?
2. परमात्मा का सत्य परिचय
3. त्रिमूर्ती (परमात्मा का कर्त्तव्य)
4. कल्पवृक्ष (झाड़)
5. गोला (सृष्टि चक्र)
6. सीढ़ी (भारत के उत्थान और पतन की कहानी)
7. गीता का भगवान

(2) योग का लेसन

1. राजयोग का आधार और विधि

(3) धारणा का लेसन

1. राजयोग से आध्यात्मिक प्राप्तियाँ/दिव्य गुणों की धारणा

[5] विद्यार्थी से भरवाये जाने वाले दो प्रकार के फॉर्म

(1) पहले दिन भरवाये जाने वाले फॉर्म का प्रारूप

विद्यालय का परिचय

[1] विषय प्रवेश

पहले-पहले दिन जब भी सेवाकेन्द्र पर कोई जिज्ञासु आता है और बड़ी दीदी उस जिज्ञासु की जिम्मेवारी आपको देती है, तो आप क्या करेंगे? पहले तो हमें उससे बातचीत करते हुए उसे परखना होता है, पूछना होता है कि आप यहाँ कैसे आये और फिर विद्यालय का परिचय देना होता है, परिचय के बारे में सुन लेने के बाद जिज्ञासु को कैसे लगा वो पूछना होता है और उससे फॉर्म भरवाना होता है। तो अब इन्हीं बातों को देखेंगे।

[2] जिज्ञासु को परखने और उसको डील करने से सम्बन्धित बातें

(1) पहले जिज्ञासु को परखना पड़ता है कि वह किस उद्देश्य (Aim) से आया है?

यह उस व्यक्ति से बातचीत करने के पश्चात या उसके वायब्रेशन (Vibration) से पता चल जाता है या उसकी नब्ज देख सकते हैं। उनके बात करने के तरीके से ही पता चलता है कि दुनिया कितनी खराब है। इसलिए हमारी स्थिति इतनी Strong हो जैसे बाबा कहते कि आप शिवशक्ति स्वरूप हो।

(2) फिर उनसे पूछना है कि आप कहाँ से आये हैं? आपको किसने भेजा है? क्या आप Board पढ़कर आये हैं या आपने कोई मेला देखा है?

कोई कहेगा प्रदर्शनी (Exhibition) देखकर या कोई कहेगा आपके मुख्यालय (Headquarters) में गये थे। कई बार ऐसे भी लोग होते है जो सिर्फ बहनों से बात करने के लिए आते हैं इसलिए हमारी स्थिति शक्तिशाली Strong होनी चाहिए।

(3) कोई नशा (Drink) करके आया होगा, तो उसको मना करने का तरीका क्या है?

उसके लिए सेंटर के सामने एक बोर्ड पर लिखाकर रख दे कि **कोई भी प्रकार की नशीली चीजें लेने वाला व्यक्ति यहाँ आ नहीं सकता** इसलिए उनको समझाना है कि यहाँ पर आध्यात्मिक ज्ञान दिया जाता है इसलिए आपको आना है तो नशे में नहीं आओ।

(4) कोई पूछता है कि क्या मुझे पानी मिल सकता है?

उनको कहो यहाँ मटका है आप यहाँ से ले लीजिए। कभी भी जिज्ञासु का जुठा गिलास हमें नहीं उठाना है, उनको कहो कि यहाँ टेबल पर रख दो।

[3] जिज्ञासु को कोर्स कराने के पहले अपनी शारीरिक और मानसिक तैयारी से सम्बन्धित बातें

कोर्स (Course) कराने के पहले शारीरिक और मानसिक तैयारी दोनो होनी चाहियें।

(1) शारीरिक तैयारी

शारीरिक तैयारी में हमारे बाल, बैठने का ढंग, जहाँ कोर्स करते उस स्थान की सफाई ठीक हो। Lesson के अनुसार गीत Set करके रखना है जिससे वह अच्छा प्रभाव लेकर जाये।

(2) मानसिक तैयारी

1. जिज्ञासु को ज्ञान देते समय निमित्त भाव रहे

मानसिक तैयारी में यह ध्यान रहे कि यह ज्ञान जो मैं सुनाने जा रही हूँ यह ज्ञान शिवबाबा का है, मैं निमित्त हूँ। अगर जिज्ञासु ने कहा कि बहनजी आप अच्छा सुनाती हैं, तो उससे कहो कि यह भगवान का ज्ञान है, हमने भी उनसे ही ज्ञान लिया है, हम तो केवल निमित्त (Instrument) हैं।

2. जिज्ञासु उच्च पद (Higher Position) वाला हो तो उससे डरे नहीं, अपने अन्दर न तो सुपीरियारिटी कॉम्प्लेक्स ले आयें और न ही इन्फीरियारिटी कॉम्प्लेक्स

आप सेण्टर पर अकेले हैं और अगर कोई उच्च पद (Higher Position) वाला आया तो डरना नहीं हैं। ऐसा समझना है कि बाबा ने मुझे जो ज्ञान दिया है वह उनके पास थोड़े ही है। सदैव यह समझें कि बाबा यह आपके बच्चे आपके घर में आये हैं, यह प्यासी आत्मा है इसलिए मुझ आत्मा द्वारा आपको इनको जो ज्ञान देना है वह आप दे देना। अपने अन्दर ना ही सुपीरियारिटी कॉम्प्लेक्स (Superiority Complex) हो, ना ही इन्फीरियारिटी कॉम्प्लेक्स (Inferiority Complex) हो।

3. जिज्ञासु के प्रति रहम की भावना रखें

जिज्ञासु के प्रति रहम की भावना रखनी है क्योंकि कभी-कभी कोई निम्न वर्ग (Lower class) के भी आते हैं उस समय समझना है कि यह भी बाबा का बच्चा है जो अपना अधिकार लेने आया है। जिस भी आत्मा की मुझे सेवा मिले मुझे मानसिक रूप से तैयार रहना है।

4. जिज्ञासु को कोर्स कराने के पहले अभ्यास कर लें, अति विश्वास (Over Confidence) में न रहें

कोर्स कराने के पहले खुद अभ्यास करना बहुत जरूरी है। इसलिए कभी भी अति विश्वास (Over Confidence) भी न हो।

5. जिज्ञासु को जरूरत पड़ने पर बाबा का घर दिखायें

कई ऐसे भी आते हैं जिनको आपको Centre दिखाना जरूरी हो तो उनको क्लास रूम और बाबा का कमरा और Museum अगर हो तो दिखा सकते हैं।

[4] जिज्ञासु को बतायी जाने वाली विद्यालय के परिचय से सम्बन्धित बातें

कोर्स कराने के पहले इण्ट्रोडक्टरी लेसन (Introductory Lesson) होता है जिसमें हम विद्यालय से सम्बन्धित बातें बताते हैं, जैसे – यह विद्यालय क्या है? यह संस्था क्या कार्य करती है? इसका Status क्या है? और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम क्यों है?

जब हम विद्यालय का परिचय देते हैं तो उसमें विद्यालय के बारे में कुछ-कुछ Important बातें बतानी है, जिससे उनको पता चले कि ब्रह्माकुमारीज़ क्या है।

(1) विद्यालय की स्थापना कब और कहाँ हुई, मुख्यालय कहाँ है?

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1937 में सिंध-हैदराबाद में हुई, जो अब पाकिस्तान में हैं। सन् 1950 में यह विद्यालय भारत के माउण्ट आबू में स्थानांतरित हुआ। जहाँ इसका मुख्यालय है।

(2) विद्यालय की शाखायें और उपशाखायें कितनी हैं और कितने देशों में हैं?

इस विद्यालय की 130 देशों में 8500 (नवम्बर 2011) शाखायें और उपशाखायें हैं, जिनके द्वारा यह विद्यालय आम जनता को ईश्वरीय ज्ञान निःशुल्क देता है।

(3) विद्यालय की सीस्टर इंस्टीट्युशन RERF की अलग-अलग विंग्स कौनसी है?

इस विद्यालय की Sister Institution है RERF (Rajyoga Education and Research Foundation) जिसके अन्तर्गत 18 Wings कार्यरत हैं, जैसे – Medical Wing, Women Wing, Administrative Wing, Youth Wing, SPARC etc.। यह हमने Profession wise Distribute form किया है क्योंकि हर प्रभाग की सेवा पर ध्यान दे सकें।

(4) विद्यालय का UNO/DPI, ECOSOC और UNICEF से क्या सम्बन्ध है तथा विद्यालय को कौनसे पदक/पुरस्कार प्राप्त हुये हैं?

यह विद्यालय UNO (United Nation Organisation) में DPI (Department of Public Information) में गैर सरकारी संस्था में एक सलाहाकार है। भारत में यही संस्था है जो एक गैर सरकारी संस्था के तौर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के आर्थिक एवं सामाजिक परिषद ECOSOC (Economic and Social Counsil) का परामर्शक सदस्य है तथा युनिसेफ UNICEF (U.N. ChildrenŽs Fund) से भी सम्बन्ध है और जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'शान्ति पदक' (Peace Award) तथा एक आन्तर्राष्ट्रीय और पाँच राष्ट्रीय शान्ति दूत (Peace Messenger) नामक पुरस्कार प्रदान किये हैं।

(5) विद्यालय का नाम क्या है और वह क्या-क्या कर रहा है?

इस विद्यालय का नाम 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय' है। इस नाम से स्पष्ट करेंगे कि यह विद्यालय क्या-क्या कार्य कर रहा है।

(6) विद्यालय के नाम का स्पष्टीकरण कैसे देना है?

1. प्रजापिता माना क्या?

प्रजापिता माना The Great Great Grandfather जिसका शास्त्रों में भी गायन है, जिन्हें आदि पिता माना गया है। जिनके द्वारा परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि पर रचना (स्थापना) का कार्य किया। इसलिए कहा गया है कि ब्रह्मा ने सृष्टि रची और यही ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा और उनके बच्चे इसके बारे में हम आपको तीसरे Lesson में बतायेंगे। ब्रह्मा ने कैसे रचना रची? यह उनको कहना है कि यह आगे के लेसन में बतायेंगे।

2. ब्रह्माकुमारी माना क्या?

ब्रह्माकुमारी माना लोग समझते हैं कि उसमें सिर्फ कुमारी ही है, कुमार नहीं है। लोग पूछते हैं कि इसका नाम ब्रह्माकुमार क्यों नहीं रखा?

उनको बताना है कि यहाँ ब्रह्माकुमार नहीं है, ऐसा नहीं है। यहाँ जितनी बहनें आती हैं उतने भाई भी आते हैं। लेकिन इस विद्यालय की विशेषता है कि यहाँ कोई Difference नहीं है। जब कि यहाँ कोई जातिभेद, भाषाभेद, राष्ट्रभेद...नहीं है, तो फिर लिंग का भेद कैसे हो सकता है?

① ब्रह्माकुमारीज़ नाम क्यों रखा?

ब्रह्माकुमारीज़ नाम रखा क्योंकि जिस समय परमात्मा का सृष्टि पर अवतरण हुआ, उस समय स्त्रीयों की दशा संसार में बहुत ही दयनीय थी और खास कर सिंध में, जो बहनें विधवा (Widow) हो जाती थी तो वह बहनें स्वच्छ कपड़े पहन नहीं सकती थी, पाँव में चप्पल नहीं पहन सकती थी, उसके बाल कटवाते थे और कोई गलती से उनका मुँह देख लेता था तो उसको अपशगुन समझा जाता था, कुल कलंकित कहा जाता था। तो ऐसे समय पर परमात्मा का अवतरण हुआ।

एक अच्छा Teacher क्या करता है? कमजोर विद्यार्थी पर ज़्यादा ध्यान देता है, उनको आगे रखता है। तो परमात्मा ने भी एक अच्छा शिक्षक होने के नाते बहनों को आगे रखा और इसलिए बहनों को ज्ञान का कलश दिया।

इसलिए जितने भी सेवाकेन्द्र हैं वहाँ पर ज्ञान बहनें ही सुनाती हैं और उसके अधिकारी भी बहनें ही हैं और संचालन भी बहनों के ही हाथ में हैं और मुख्यालय की संचालिका दादी जानकी जी वह भी एक नारी ही है।

जैसे सागर मंथन के समय कलश लक्ष्मी को दिया वैसे सागर अर्थात् परमात्मा ने ज्ञान का कलश बहनों को दिया है। जितनी भी भारत में नदियाँ हैं उन सबके नाम बहनों के नाम से ही है जैसे – गंगा, कावेरी... सिवाए ब्रह्मपुत्रा के। कहते हैं इन नदियों में स्नान करने से पावन बनते हैं। यह भी यादगार है कि जिन बहनों ने ज्ञान सागर परमात्मा से ज्ञान लेकर ज्ञान अृमत सबको बाँटा जिससे वह ज्ञान नदियाँ कहलाई।

बहनों की कुछ Original विशेषतायें होती हैं जो इस ज्ञान को देने में काम आती हैं जैसे – सहनशक्ति, नम्रता। भाई Backbone हैं वह भी Equally हमारे साथ सेवा में सहयोगी है लेकिन बहनों के Natural गुण हैं जो ज्ञान देने में काम आते हैं। और, बहनों के पास समय होता है, वह समय दे सकती हैं इसलिए ब्रह्माकुमारीज़ नाम है।

3. ईश्वरीय शब्द क्यों?

आपको पहले ही बताया कि परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा यह ज्ञान दिया। इसलिए सात दिन जो ज्ञान की बातें आपको सुनाई जायेगी वह हमारी नहीं है, ना ही किसी ऋषिमुनियों की, शास्त्रों की या किसी मानव की है। यह ईश्वर का ज्ञान है यह स्वयं परमात्मा ने बताया है, यहाँ का परमशिक्षक स्वयं परमात्मा है। इसलिए ईश्वरीय नाम रखा है।

4. विश्व-विद्यालय शब्द क्यों?

विश्व-विद्यालय – इसे English में कहा जाता है University। जिससे सिद्ध है कि यह विद्यालय पूरे Universe के लिए है। इसलिए इस विद्यालय की शाखायें पूरे विश्व में है और इसलिए यह सही अर्थ से विश्व-विद्यालय है। जहाँ कोई धर्म भेद, जातिभेद, भाषाभेद, राष्ट्रभेद नहीं है। हर आत्मा यहाँ आकर इस ज्ञान को निःशुल्क प्राप्त कर सकती है। यहाँ पढ़ायी जाने वाली पढ़ाई के चार मुख्य विषय हैं –

① ईश्वरीय ज्ञान/सहज ज्ञान ② सहज राजयोग
③ दिव्यगुणों की धारणा ④ ईश्वरीय सेवा

① ईश्वरीय ज्ञान

इसमें हम आपको मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आई हूँ? मुझे कहाँ जाना है? मेरा पिता कौन है? मैं कहाँ की रहने वाली हूँ? धर्म का ज्ञान, कर्म का ज्ञान बतायेंगे।

② सहज राजयोग

जो ईश्वरीय ज्ञान का विषय समझते हैं उस आधार पर राजयोग का अभ्यास करते हैं। राजयोग अर्थात् जोड़, सम्बन्ध मानसिक और यह सम्बन्ध आत्मा का परमात्मा के साथ है और इस सम्बन्ध से आत्मा अपने इन्द्रियों की राजा बनती है इसलिए यह सहज राजयोग है। इस राजयोग में हठक्रिया, कर्मकांड, जप, पूजा-पाठ, सामग्री आदि नहीं है। केवल बुद्धि से स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा को याद करना है। इसका अभ्यास भी हम आपको अन्तिम Lesson में करायेंगे।

किसी को अगर योग में रूचि (Interest) है तो उनको पहले योग का Lesson दो जैसे – आत्मा, परमात्मा और फिर राजयोग।

③ दिव्य गुणों की धारणा

विद्यालय का लक्ष्य है मनुष्य से देवता बनना। यहा नर को नारायण और नारी को लक्ष्मी बनना है। कहा जाता है –'**नर ऐसी करनी करे जो नारायण कहलायें और नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी कहलायें**' यह गायन जो प्रसिद्ध है वह इस ज्ञान से ही बनते हैं। क्या आपने ऐसा कोई School देखा है जहाँ का Aim मनुष्य से देवता बनना हो? नहीं। क्योंकि यह कार्य भगवान ही कर सकते हैं। दिव्य गुणों की धारणा करना या उनको अपनाना

उनका Application करना – यह भी हमारा बहुत Important विषय है। इस विद्यालय में इस विषय पर ज्यादा ध्यान(Emphasize) दिया जाता है।

④ ईश्वरीय सेवा

जब परमात्मा का ज्ञान हमको मिलता है तो उससे सुख, आनन्द, मानसिक शान्ति की प्राप्ति होती है इसलिए हम आत्माओं को प्रेरित करते हैं कि जो आपको मिला है वह दूसरों को बाँटो। अगर आप बाँटेंगे नहीं तो स्वार्थी, कंजुस कहलायेंगे, ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। तो उसके लिए हम सेवा करते हैं। सेवा करने की विधि है – हम यहाँ पर जो सेवा करते हैं पहले आप सात रोज सुन लो, उस कार्य को पहले आप सीख लो। उसमें फिर किसी को Course कराने ले आ सकते हो, किसी को Literature दे सकते हो, आप कोई Programme Organise कर सकते हो। (बाकी Detail की सेवा जो है जैसे - कर्मणा, धन की सेवा वह बाद में बताना है)।

[5] जिज्ञासु को कैसा लगा?

फिर उनसे पूछना है कि आपको कैसा लगा? अगर कोई Normal Question पूछता है तो उसका जवाब आप दो, नहीं तो मत दो। फिर बाद में उनसे Form भरवाना है।

[6] जिज्ञासु से फॉर्म भरवाना क्यों जरूरी है?

खास करके ऑफिसर्स (Officers) फॉर्म (Form) भरवाना पसन्द नहीं करते क्योंकि उनको ऐसा लगता है कि हमारा Record में आ जायेगा। लेकिन आप उनको बताओ यहाँ कोई और भाव से फॉर्म नहीं भरवाते हैं, सेवा के हेतु से भरवाते हैं। अगर आपको Programme में Invite करना है तो बुला सकते हैं।

इस फॉर्म में कुछ बातें General परिचय की होती हैं साथ-साथ यह बातें होती हैं – क्या आप भगवान को मानते हैं? भक्ति करते हैं? क्या परमात्मा सर्वव्यापी है? तो इन Questions के Answers से हमें Idea आ जाती है कि यह आस्तिक है या नास्तिक है। जैसा Student होता है वैसे ही हमें समझाना सहज हो जाता है।

ईश्वरीय पढ़ाई का पहला विषय
ज्ञान

पहला पाठ

मैं कौन हूँ?
(आत्मा की पहचान)

[1] मैं कौन हूँ? – जीवन की प्रथम पहेली

[2] मैं कौन हूँ? – इस प्रथम पहेली को जानना जरूरी क्यों है?

[3] मैं कौन हूँ? – एक आत्मा हूँ

(1) कुछ लोग की मान्यता – आत्मा कुछ भी नहीं है, दिमाग़ ही सब कुछ है

[4] मनुष्यात्मा जड़ शरीर चैतन्य आत्मा

(1) हम सब मनुष्य अलग-अलग क्यों हैं?

[5] आत्मा सत्-चित-आनन्द स्वरूप है, अजर-अमर-अविनाशी है, मन-बुद्धि-संस्कार सहित है

[6] आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ – मन, बुद्धि, संस्कार

(1) आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ – मन

1. मन की गति

2. चार प्रकार के विचार

① श्रेष्ठ चिन्तन (Positive Thoughts / Positive Thinking)

② आवश्यक विचार (Necessary Thoughts)

③ बुरे विचार (Negative Thoughts)

④ व्यर्थ विचार, फालतु विचार (Waste Thoughts)

3. सबसे ज्यादा विचार कौनसे चलते हैं?

- कहानी – एक राजा की जिसकी भगवान के साथ भी पाज़िटीव फीलिंग नहीं थी

4. मन दिनोंदिन कमजोर होता जा रहा है, क्यों?

5. शरीर कमजोर हो जाये तो उसकी निशानी?

6. मन कमजोर हो जाये तो उसकी निशानी?

(2) आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ – बुद्धि (Intellect)

1. बुद्धि धीरे काम क्यों कर रही है?

(3) आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ – संस्कार

1. दुनिया के सभी मनुष्य अलग-अलग हैं, क्यों?

2. पाँच प्रकार के संस्कार

① मूल संस्कार (Original Sanskar)

② पूर्वजन्म के संस्कार (past life)

③ खानदानी संस्कार (Hereditary Sanskar)

- उदाहरण – एक छोटे बच्चे का जो झुठ बोलता था

④ संग के संस्कार (Sanskaras of Company)

⑤ विल पॉवर को जागृत करने के संस्कार

♦ विल पॉवर को जगाने की विधि

♦ विल पॉवर को जगाने के लिए कोई आयु की बाधा (Age Barrier) नहीं

- उदाहरण – स्वामी विवेकानन्द का
- उदाहरण – महात्मा गाँधी का
- उदाहरण – मदर टेरेसा का

[7] आत्मा का स्थान – हायपोथेलमस और पीट्युटरी ग्लैण्ड के बीच में/मस्तक में/भृकुटी में

- उदाहरण – मेडिकल साइन्स का
- उदाहरण – ड्राईवर और गाड़ी का
- उदाहरण – तिलक का

[8] आत्मा का रूप

[9] आत्मा के गुण

(1) सात गुण

1. शान्ति
2. सुख
3. आनन्द
4. प्रेम
5. ज्ञान
6. शक्ति
7. पवित्रता

(2) सात गुणों में से एक गुण भी कम हो जाए तो जीवन में Frustration

(3) सात गुणों में से दूसरों को हम जो भी देंगे वही हमें मिलेगा

(4) सात गुणों की प्राप्ति के लिए ही मनुष्य संसार के अन्दर कर्म कर रहा है

- **उदाहरण – लेडी डायना का**

(5) सात गुण अथवा चीज़ें कहीं से न मिलने पर लोग भगवान के पास जाते हैं

(6) सात गुणों अथवा चीज़ों को प्राप्त करने की विधि राजयोग सिखाता है

[10] आत्मा का कर्त्तव्य

[11] लेसन रीविज़न

[12] होमवर्क

(1) होमवर्क किस समय पर करना है?

1. सवेरे उठते ही
2. भोजन करते समय
3. जब हम कार्य व्यवहार में आते हैं
4. रात को सोते समय

[13] कल का लेसन

तीन लोक

[1] विषय प्रवेश

[2] इस सृष्टि रूपी मंच पर आत्मा कहाँ से आती है, किस लोक से आती है?

(1) तीन लोक का चित्र

1. साकारी मनुष्य लोक
2. सूक्ष्म लोक
3. निराकारी लोक/परमधाम

① आत्मा तीसरे लोक/निराकारी लोक से आती है जो आत्मा का निजधाम है

आत्मा से सम्बन्धित प्रचलित मान्यतायें और ज्ञान की बातें

[1] आत्मा से सम्बन्धित प्रचलित मान्यतायें

(1) आत्मा परमात्मा का अंश है, आत्मा परमात्मा में लीन होती है

(2) आत्मा निर्लेप है

[2] आत्मा से सम्बन्धित ज्ञान की बातें

(1) आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है, आत्मा परमात्मा में लीन नहीं होती है

(2) आत्मा निर्लेप नहीं है

पहला पाठ

मैं कौन हूँ?
(आत्मा की पहचान)

[1] मैं कौन हूँ? – जीवन की प्रथम पहेली

जीवन की प्रथम पहेली कौनसी हैं जिसको मानव आज तक भी समझ नहीं पाया है? कितना भी विद्वान हो, पंडित हो, Scientist हो लेकिन वह समझ नहीं पाया है, उस पहेली में आज तक वह उलझा हुआ है। सारा दिन मैं और मेरा का उच्चार करता है। इस मेरे में वह इतना उलझा हुआ है कि वह मेरा ही समझता है, लेकिन जाते समय वह अकेला ही जाता है। लेकिन अफसोस की बात है कि आज तक इस पहेली को कोई भी सुलझा (Solve) नहीं पाया हैं।

[2] मैं कौन हूँ? – इस प्रथम पहेली को जानना जरूरी क्यों है?

इस पहेली को सुलझाने (Solve) की जरूरत क्यों है? स्व की पहचान का महत्व क्या है? क्यों अपने आपको जानना चाहिए? जब बच्चा जन्म लेता है तो हिन्दुओं में शहद से बच्चे की जीभ पर ओम् निकाला जाता है। क्यों ओम् निकाला जाता है? वास्तव में यह प्रथा क्यों पड़ी? उस बच्चे से पूछा जाता है कि तुम कौन हो? वह बच्चा बड़ा बन जाता है लेकिन फिर भी ओम् का अर्थ नहीं जानता। इसलिए इस पहेली को जानना बहुत जरूरी है।

[3] मैं कौन हूँ? – एक आत्मा हूँ

हम कहते हैं यह मेरी आँखे हैं, मैं आँखों द्वारा देख रही हूँ, मैं मुख द्वारा बोल रही हूँ, मैं इन कानों द्वारा सुन रही हूँ। हम ऐसा कभी नहीं कहते कि मैं शरीर हूँ कहते हैं शरीर मेरा है, आँखे मेरी हैं लेकिन मैं इनसे भिन्न हूँ। तो मैं कौन हूँ?

जब आत्मा शरीर में हैं तो छोटी सी पीन चूभ जाती तो दर्द महसूस होता है और शरीर छोड़ने पर शरीर को जलाते हैं फिर भी क्यों नहीं महसूस होता हैं? Post Mortem भी करते हैं तो महसूस नहीं होता। ऐसी कौनसी ताकत थी जिसके जाने पर उसे काटने पर भी पता नहीं चल रहा हैं?

आप भोजन बना रहे हैं और गरम बर्तन पकड़ ली तो क्या होता है? हाथ जल गया ऐसा महसूस होता है और मरने के बाद शरीर को जला देते हैं, अग्नि दाह करते हैं तब कुछ भी महसूस नहीं होता तो कौनसी ऐसी शक्ति है जो चली गई?

और जब उसमें आत्मा थी तो वही शरीर कई पूजा के कार्य कराता था। शरीर छोड़ने के बाद वह शरीर अपवित्र हो जाता है। जरूर वह कोई पवित्र शक्ति है ऐसी शक्ति जिसमें महसूसता है, ताकत है वह शक्ति अब इस शरीर में नहीं है।

अगर आपको कहा जाय कि आप सब खड़े हो जाओ तो सब खड़े हो जायेंगे लेकिन जब कोई शरीर छोड़ता है तो सभी मिलकर के उसके शरीर उठाते हैं। ऐसी कौनसी शक्ति है? और वह शक्ति इतने बड़े शरीर को चलाती है। तो 'मैं' जो हूँ वह एक चैतन्य शक्ति है उसके बिना शरीर का कोई महत्व नहीं। वह न तो शरीर की Growth, Development भी बन्द हो जाती है।

आपका कोई प्रिय व्यक्ति तुरन्त जवाब देता था और अब क्या हुआ जो जवाब नहीं देता? उससे बात करते हैं, उसे उठाते हैं फिर भी वह व्यक्ति बात नहीं करता।

तो मैं कौन हूँ? अगर हम आपसे पूछे कि आप कौन हैं तो आप अपना नाम बतायेगें, व्यवसाय बतायेगें। Generally हम जिस Conscious में होते हैं वही हम बताते हैं। कोई कहेगा मैं मनुष्यात्मा हूँ, लेकिन यह मनुष्यात्मा का चोला भी आपने लिया हुआ है, कुछ समय बाद वह भी चला जायेगा। जब आपने यह मनुष्य चोला नहीं लिया था तब भी आप थे। तो वह कौन है?

सॉक्रेटिस (सुकरात) ने अपने देश में आध्यात्मिकता का प्रचार किया लेकिन उनके देश के लोगों को पसंद नहीं आया। और लोगों ने कहा आप यह प्रचार बन्द कर दें। तो उसने कहा कि ऐसा जीना जिसमें मैं अपने तरीके से नहीं जी सकू वह जीना, जीना नहीं है। तो सॉक्रेटिस को एक समय Fix करके जहर दे दिया गया और ज़हर पीने के बाद उसने कहा –

My Legs Are Dead But I Am Still Alive.

थोड़े समय के बाद मैं बोल नहीं पाऊँगा लेकिन मैं रहूँगा। यह क्या सिद्ध करता है? तो ऐसी कोई शक्ति है जो चैतन्य है, वह कभी नहीं मरती और उस शक्ति को आध्यात्मिक भाषा में 'आत्मा' कहते हैं, कुछ लोग Energy कहते हैं, कोई 'प्रकाश' कहते हैं, कोई Star कहते हैं।

(1) कुछ लोगों की मान्यता – आत्मा कुछ भी नहीं है, दिमाग़ ही सब कुछ है

ऐसे भी कुछ लोग समझते हैं कि आत्मा कुछ भी नहीं है सिर्फ दिमाग़ (Brain) है। परन्तु अभी Medical Science ने अमेरिका में सिद्ध किया है कि आत्मा है। एक शक्ति है जो आती है और जाती है। मनुष्य का Brain Computer जैसा कार्य करता है, लेकिन मनुष्य से मनुष्य बनता है, Computer से Computer नहीं बनता है (जन्म नहीं लेता)। Computer के लिए तो Operater चाहिए अगर Operater नहीं होगा तो Computer चलेगा नहीं। मस्तिष्क शरीर का बहुत Important हिस्सा है जिसके द्वारा शरीर को Message देता है, लेकिन इसको भी Programme देने वाली आत्मा है।

[4] मनुष्यात्मा जड़ शरीर + चैतन्य आत्मा

मनुष्यात्मा दो शब्दों से बनी है – एक जड़ शरीर और दूसरी चैतन्य आत्मा। शरीर अर्थात् पाँच तत्वों का बना हुआ पुतला। यह शरीर जल, वायु, आकाश, पृथ्वी और अग्नि से बना हुआ है। इसलिए शरीर जीवन जीने के लिए वही पाँच तत्वों की मांग करता है। ऑक्सीजन चाहिए जीने के लिए, ऑक्सीजन न हो तो उसकी जगह (Replacement) में दूसरा कोई गैस नहीं चलता है। ऑक्सीजन ही चाहिए क्योंकि उसी से शरीर बना है। ठीक इसी प्रकार पानी चाहिए जीने के लिए क्योंकि 60-70 प्रतिशत इस शरीर के अन्दर पानी का हिस्सा है। जब पानी पीते है तो सोच के नहीं पीते हैं कि कितना पीना है। परन्तु जैसे भीतर का Water Level Balance हो जाता है तो अपने आप गिलास छोड़ देते हैं। पानी अगर नहीं है तो उसकी Replacement में डिजल, केरोसीन, पेट्रोल नहीं चलता है, पानी ही चाहिए। और इसलिए कुदरत ने सारे संसार के प्राणी मात्र के लिए यह पाँच तत्व समान बनाकर दे दिये। कोई भेदभाव नहीं रखा कि अमेरिका वालों को अलग Quality की हवा और पानी मिलेगा, भारत वालों को अलग मिलेगा, नहीं एक समान कोई अन्तर नहीं रखा।

जब आत्मा पाँच तत्वों के शरीर में प्रवेश करती है तब वह जीवात्मा कहलाती है। आत्मा को शरीर मिलना जरूरी है, आत्मा ही नहीं तो शरीर भी कुछ नहीं करता, ना इसमें Memory है, ना Growth है केवल वह एक साधन (Instrument) है दोनों एक दूसरे के पूरक है। अकेली आत्मा है तो भी जीवन नहीं, अकेला शरीर है तो भी जीवन नहीं। जीवन अर्थात् जहाँ शरीर और आत्मा का सम्बन्ध हुआ। इसलिए जैसी आत्मा वैसा शरीर।

(1) हम सब मनुष्य अलग-अलग क्यों हैं?

हम सब अलग-अलग क्यों हैं? एक का Feature ना मिले दूसरे से, उसके मूल गुण एक ही होने के बावजूद भी शरीर भिन्न क्यों हैं? यह क्यों होता है – यह मैं आपको आगे बताऊँगी।

[5] आत्मा सत्-चित-आनन्द स्वरूप है, अजर-अमर-अविनाशी है, मन-बुद्धि-संस्कार सहित है

कई Medical Journals में यह बात प्रकाशित की गयी है जिसको वे कहते हैं Out Of Body Experience. आत्मा मरती नहीं लेकिन वह Travel करती है Light का शरीर लेकर। आत्मा सत्-चित-आनन्द स्वरूप है, अजर-अमर-अविनाशी है, मन-बुद्धि-संस्कार सहित है। अग्नि जला नहीं सकती, वायु उड़ा नहीं सकती, पानी भिगो नहीं सकता, तलवार काट नहीं सकती।

- अजर माना जो कभी बुढ़ी नहीं होती।
- अमर माना जो कभी मरती नहीं, जो Immortal है।
- अविनाशी माना जो सदा से चली आयी। इसको ना कभी किसी ने बनाया और ना ही इसका कभी विनाश होता है, यह Eternal है।

[6] आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ – मन, बुद्धि, संस्कार

आत्मा मन, बुद्धि, संस्कार से बनी हुयी है। यह आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियाँ है। जब आत्मा इच्छा करती है, सोचती है, संकल्प करती है तो यह '**मन**' है। जब आत्मा किसी बात का निर्णय लेती है उसे '**बुद्धि**' कहते हैं। और जब आत्मा पर कर्मों की छाप पड़ती है तब उसे आध्यात्मिक भाषा में '**संस्कार**' कहा जाता है। मन, बुद्धि, संस्कार आत्मा से भिन्न नहीं है। यह आत्मा के तीन Different Faculties हैं। यह तीन आत्मा की Eternal Powers है। जैसे आत्मा Eternal Truth है वैसे ही यह सूक्ष्म इन्द्रियाँ Eternal है। हमें इन तीनों सूक्ष्म इन्द्रियाँ को समझना होगा अगर हम इनके Function को नहीं समझेंगे तो इनमें जो Power है उसको Use नहीं कर सकते हैं।

(1) आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रि – मन

अब मन क्या चीज है? मन के विषय में कई बातें सुनते हैं कोई कहता है मन बड़ा दुष्ट है, मन बड़ा पापी है, मन बड़ा खराब है, मन बड़ा नीच है, मन बड़ा चंचल है, मन घोड़ा है पता नहीं क्या-क्या उपमा दे देते हैं मन को। लेकिन आज हम आपको बताते हैं मन बहुत सुन्दर है उसको समझो वो क्या है, तो वो आपको जो चाहिए वह दे सकता है। इसके पास इतनी क्षमता है, इतनी Potential उसके अन्दर है जो मनुष्य हांसिल करना चाहे जिन्दगी में वह मन की शक्ति से कर सकता है। लेकिन आज उसकी सारी शक्ति व्यर्थ जा रही है, और इसलिए Hardly हम अपने जीवन में मन की शक्ति का एक या दो परसेन्ट का प्रयोग करते हैं। इसलिए कभी-कभी तो अनुभव होता है अरे जो सोचा वही हो गया। लेकिन हर वक्त हमें यह अनुभव हो जो सोचे वह हो जाये इतनी क्षमता है। वास्तव में मन को शान्ति नहीं चाहिए, शान्ति आत्मा को चाहिए लेकिन उस शान्ति को मन के द्वारा ही हम पूरा कर सकते हैं।

तो मन क्या चीज है? मन सोचने, कल्पना करने वा इच्छा की शक्ति का दूसरा नाम है, जो हमारी आत्मा में Already Recorded है उसे इमर्ज करने की शक्ति भी मन में ही है। मन जिसे पसन्द करता है उसे Create करने की,Visualise करने की शक्ति मन में ही है।

1. मन की गति

किसी Psychologist ने Analyse किया Human Mind पर और यह Analysis में बताया कि मनुष्य अगर कम-से-कम गति से भी सोचे तो भी एक मिनट में वह 30 से 35 विचार करता है, एक मिनट के अन्दर कम-से-कम गति से सोचे तो भी, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा गति से सोचे तो कितना सोच सकता है, 24 घण्टे में कितने विचार आते होंगे। कम-से-कम गति से सोचा जाये तो भी असंख्य विचार, हजारों विचार मन के अन्दर आते हैं। एक दिन के विचारों को लिया जाये, उसको Classify किया जाये तो हर मनुष्य के मन के अन्दर चार प्रकार के विचार होते हैं।

2. चार प्रकार के विचार

① श्रेष्ठ चिन्तन (Positive Thoughts / Positive Thinking)

सबसे पहले प्रकार के विचार हैं जिसको कहा जाता है श्रेष्ठ चिन्तन (Positive Thoughts / Positive Thinking) जिसमें कोई प्रकार का स्वार्थ नहीं होता, जिसमें कोई भी प्रकार की नकारात्मक भावना नहीं होती लेकिन जो मूल्य आधारित विचार (Value Based Thoughts) हैं उसको कहा जाता है Positive Thoughts.

② आवश्यक विचार (Necessary Thoughts)

जो आवश्यक कर्मों के साथ जुड़ा हुआ है। यह करना है, यहाँ जाना है, इसको मिलना है, यह काम करना है, कराना है आदि-आदि।

③ बुरे विचार (Negative Thoughts)

तीसरे प्रकार के विचार हैं बुरे विचार। बुरे विचार हैं कोई न कोई Weakness को लेकर, कोई न कोई Evils को लेकर, स्वार्थ को लेकर, Complexities को लेकर यह सारे Negative विचार।

④ व्यर्थ विचार, फालतु विचार (Waste Thoughts)

और चौथे प्रकार के विचार हैं – व्यर्थ विचार, फालतु विचार (Waste Thoughts)। फालतु विचार किसको कहते हैं? जब मन के पास कुछ सोचने के लिए नहीं होता है, खाली बैठे हैं, तो क्या करता है मन? Past में चला जाता है। यह करते तो अच्छा था, यह करते तो अच्छा होता था, उसने ऐसा किया होता ना तो अच्छा होता। लेकिन अब तो बीत गया ना समय, अब वह सोचने से भी क्या फायदा? Waste है, तो बीती हुई बातों को उगारता रहता है, चबाता रहता है, बार-बार सोचता रहता है, जिससे कोई प्राप्ति नहीं होने वाली है। अधिकतर उसमें Regress होते हैं यह करते थे, यह करते थे, ऐसा करते थे... लेकिन अब क्या करना है यह नहीं सोचते। इसलिए उसको Waste Thoughts कहा (फालतु विचार)। हाँ बीती हुई बातों से सीख ले लें और जीवन में आगे बढ़ें बाकी वही सोचते रहने से कोई प्राप्ति नहीं है। लेकिन आज के युग में मनुष्य के मन की सबसे बड़ी कमजोरी यह हो गई है कि बीती हुई बातों को ही सोचता रहता है।

तो यह चार प्रकार के विचार सारे दिन में आ जाते हैं – Positive, Necessary, Negative and Waste.

3. सबसे ज्यादा विचार कौनसे चलते हैं?

थोड़ा सा Self Analysis करो सारे दिन में हमारे अधिकतर विचार कौनसे चलते हैं। आज के युग में हमारे विचार सबसे ज्यादा कौनसे चलते हैं? व्यर्थ और नकाारात्मक। सकारात्क विचार **ना के बराबर हैं।**

•कहानी – एक राजा की जिसकी भगवान के साथ भी पाज़िटीव फीलिंग नहीं थी

एक राजा था उसको अपने राज्य का विस्तार करना था, तो उसने दरबार बुलाई और कहा नदी के दूसरे किनारे के तरफ भी हमें अपने राज्य का विस्तार करना है, ऐसी योजना बनायें जिससे हमारी प्रजा उधर भी रह सके परंतु लोगों ने कहा उस तरफ कौन जायेगा, सारा कारोबार तो इधर चल रहा है उधर कौन जाकर बसेगा। राजा ने कहा मेरा एक महल उधर बना दो तो हमसे मिलने सारी प्रजा भी अपने आप आयेगी ।

राजा के आदेशानुसार महल बनाने का कार्य शुरू हो गया और बहुत जल्दी उस काम को पूरा कर दिया। बहुत सुन्दर महल नदी के दूसरे किनारे बना दिया। महल बनने के बाद महल के उदघाटन के लिए एक सभा का आयोजन किया जिसमे उस कार्यक्रम में सभी प्रजा को शामिल होने का निमंत्रण दिया गया।

नियत समयानुसार सभी महल के उदघाटन स्थल की ओर चलने के लिए नदी के पास एकतित्रत हुए और नावों के द्वारा सभी उस पार जाने लगे । तभी नदी में भयानक तूफान आया और नाव डूबने लगा तभी सभी ने प्रभु को प्राण रक्षा के लिए पुकारने लगे। और राजा ने भी प्रभु से प्रार्थना करने लगा - हे प्रभु अगर यह तूफ़ान शान्त हो जाये तो मैं महल को बेच दूँगा और वह पैसा राज्य में गरीबों को बाँट दूँगा। शायद भगवान ने उसका सुन लिया तूफ़ान शान्त हो गया, नाव का डगमगाना बंद हो गया।

मन तो चंचल है ही, तो राजा के मन में भी विचार आया बहुत जल्दी सौदा कर लिया। जैसे ही यह विचार आया कि फिर से तूफ़ान शुरू हो गया। तो राजा ने भगवान से कहा भगवान Trust me I was just joking विश्वास कर लीजिए मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था। मैं सचमुच वह महल बेच दूँगा और वह पैसा गरीबों में बाँट दूँगा। शायद भगवान ने फिर विश्वास कर लिया उसके बाद फिर तूफ़ान शान्त हो गया।

राजा ने जब महल की भव्यता देखी तो वे दंग हो गए, बहुत ही सुन्दर महल बना हुआ था। लेकिन अब तो सौदा हो चुका था। इसलिए उदघाटन करके राजा ने प्रजा को सम्बोधित करने गये तो सबसे पहली बात उन्होंने यही कही कि यह महल मैं बेचना चाहता हूँ। सारी प्रजा को आश्चर्य लगा राजा साहब एक दिन भी महल में रहने का सुख नहीं लिया और बेचना चाहते हैं तो बनाया क्यों? फिर राजा ने आगे कहा — लेकिन यह महल की कीमत होगी सौ रूपया, और आश्चर्य लगा, लेकिन राजा को कौन Question कर सकता है। परन्तु जो उसको खरीदेगा उसके लिए एक शर्त है कि उसको एक बिल्ली जरूर खरीदनी पड़ेगी और वह बिल्ली की कीमत होगी 5 करोड़ रूपया। सबको और आश्चर्य लगा राजा को क्या हो गया, बिल्ली की कीमत 5 करोड़ रूपया और महल की कीमत 100 रूपया।

प्रजा में ही एक साहूकार ने यह महल खरीदने को तैयार हो गया। सौ रूपया महल का उसने दे दिया और बिल्ली का 5 करोड़ बाद देने की बात पर उसने वह महल खरीद लिया। अब सौदे के हिसाब से जो भगवान के साथ वादा हुआ था महल को बेचकर उसकी कीमत गरीबों में बाँट देगा, सौ रूपया बाँट दिया।

अब सोचने की बात है कि जहाँ भगवान के साथ भी हमारी Positive फिलींग नहीं रही तो इन्सान के साथ क्या होगी। इसलिए कहां कि Positive विचार आज के युग में ना के बराबर होते हैं।

आवश्यक विचार जो हैं उसमें भी Waste और Negative ज्यादा Mix होते हैं। इसलिए सारी मानसिक Potential जो है हमारी वह Waste जा रही है। इसलिए हमें जीवन में सुख, शान्ति, आनन्द का अनुभव नहीं होता है।

4. मन दिनोंदिन कमजोर होता जा रहा है, क्यों?

जहाँ विचारों की Quality ही Negative और Waste है तो शान्ति का अनुभव हो सकता है? सुख का अनुभव हो सकता है? प्रेम का अनुभव हो सकता है? आनन्द का अनुभव हो सकता है? हो ही नहीं सकता।

यह अनुभव करने के लिए तो पहले अपने विचारों की Quality को बदलना पड़ेगा विचारों में वह Negative और Waste हटाना पड़ेगा लेकिन वही तो आज Difficult लग रहा है। Positive Thinking करना चाहिये सभी

जानते हैं, लेकिन कौन कर पाता है। परिस्थिति ऐसी आ जाती है कि Negative सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। Positive विचार चलता ही नहीं, जानते हैं करना चाहिए लेकिन नहीं होता है और इसलिए मन की सारी शक्ति का व्यय होता जा रहा है, खत्म होती जा रही है और इसीलिए मन दिनोंदिन कमजोर होता जा रहा है।

5. शरीर कमजोर हो जाये तो उसकी निशानी?

जिस प्रकार शरीर से कोई कमजोर हो जाये तो क्या होगा? बीमार हो जायेगा बाहर के विषाणु हमला (Virus attack) करेंगे, बुखार आ जायेगा। डॉक्टर के पास जायेंगे – कहेंगे कमजोरी है, विटामिन लो और ठीक से खाना-पिना करो।

6. मन कमजोर हो जाये तो उसकी निशानी?

आज इन्सान का मन कमजोर हो गया है, और मन कमजोर हो गया है उसकी निशानी क्या है? कैसे पता चले कि हमारा मन कमजोर है या शक्तिशाली? मन कमजोर हो गया है उसकी निशानी है कि मन एकाग्र नहीं हो पाता है, एकाग्रता कम होती जा रही है यादाश्त शक्ति कमजोर हो रही हैं अपनी चीज़ें कहाँ रख देते है वही भूल जाते हैं। फिर कहते हैं पहले बहुत अच्छी यादाश्त शक्ति थी आजकल भूलने की बीमारी ज्यादा हो गयी है। छोटी-छोटी बातों में गुस्सा ज़्यादा आता है,चिड़चिड़ापन बहुत आ गया हैं। सहनशक्ति नहीं है क्योंकि मन कमजोर हो गया है।

मन जब कमजोर हो जाता है तो हर छोटी बात भी तनाव उत्पन्न करती है। तनाव क्यों होता है? मन की कमजोरी है। याद नहीं रहता है दुविधा की स्थिति अनुभव होने लगती है यह करें, ऐसा करें, वैसा करें, क्या करना चाहिये? फिर दूसरे का आधार लेते हैं। आप क्या समझते हैं मुझे क्या करना चाहिये, यह करना चाहिये। अब जैसे मेरे मन की हालत है वैसे उसके मन की हालत है, सारे तो कमजोर हो गये हैं। अब वह कमजोर दिमाग, वह कमजोर मन मुझे क्या सलाह दे सकता है? फिर जब गलती होती है और कोई कहते हैं – अरे इतनी भी समझ नहीं थी, थोड़ा सोचा तो होता। तो क्या कहते हैं? यह मेरी बुद्धि का कमाल नहीं, इसकी बुद्धि का कमाल है। इसके कहने पर मैं चला ना इसलिए ऐसा हुआ। तब कोई कहते हैं – भाई उसके कहने पर क्यों चला तेरा दिमाग कहाँ गया था? यही तो समस्या है हमारा मन कमजोर हो गया है। लेकिन यह नहीं बोलते हैं, यह वाक्य नहीं बोलते हैं कि मेरा मन कमजोर हो गया है इसलिए निर्णय नहीं ले सकते हैं और इसलिए दूसरों का आधार लेना पड़ता है और इसीलिए कमजोर मन आत्मा को जो चाहिये उसका अनुभव नहीं ले सकता।

इसलिए उसका अनुभव करने के लिए अपने आप को परिवर्तन करना है तो अपने सोचने के तरीके को बदलें (**Change the quality of your thinking**) अपने विचारों की Quality को बदलें Negative and Waste से उसको Positive करें। क्योंकि कहा हुआ है –

As you think so you become. जैसा सोचोगे वैसा बनोगे। जहाँ हमारी सोच ही Negative और Waste है तो जीवन की Quality क्या होगी?

विचारों से जीवन बनता है। तो जीवन की Quality क्या हो गयी? इस तरह के सोच से हम अपने जीवन को बर्बाद कर रहे है और इसीलिए सन्तुष्टी नहीं । लेकिन अन्दर जो सन्तुष्टी होनी चाहिये, एक Purposeful, Meaningful life होनी चाहिये वह life नहीं रही हैं।

तभी तो लोगों के सामने आज सबसे बड़ा सवाल यही है – **What is the Meaning of life?** जीवन का मतलब क्या है? क्या खाया, पीया, मौज किया बस यही? या और भी कुछ मतलब है? इसका मतलब ही मालूम नहीं कि जीवन का मतलब क्या है?

राजयोग हमें सिखाता है कि जीवन का मतलब क्या हैं, और अपने विचारों को श्रेष्ठ बनाकर कैसे एक अर्थपूर्ण जीवन जीये। और फिर देखिये की जीवन में कितना समाधान मिलता है कि मैंने अपना जीवन व्यर्थ नहीं गंवाया, जीवन सफल किया।

(2) आत्मा की शक्ति – बुद्धि (Intellect)

मन तो बहुत कुछ सोच लेता है। बुद्धि क्या चीज़ है? बुद्धि है हर सोच, विचार को समझने की शक्ति, क्षमता। इसलिए कहावत है – सोच, समझ के करो। एक है सोचना दूसरा है समझना। सोचने का काम मन करता है तो समझने का काम बुद्धि करती है। इसलिए कई बार हम सोच बहुत कुछ लेते हैं लेकिन फिर उलझन में (Confuse) पड़ जाते हैं क्योंकि बुद्धि जज नहीं कर पा रही है कि सही क्या है, गलत क्या है।

Intellect is the most crucial faculty of the self. इन्सान की सबसे बड़ी शक्ति बुद्धि है । मन अगर घोड़ा है तो उस घोड़े को नियंत्रण (Control) करने वाली लगाम बुद्धि है। लेकिन अगर यह बुद्धि सही नहीं है तो गलत निर्णय लेने लगेंगे और जीवन में पश्चाताप् होता है – ऐसा करते, वैसा करते, बाद में समझते हैं। सोच लेते हैं और सोचने के हिसाब से चल देते हैं, समझते नहीं है। और जब कर्म हो जाता है परिणाम आ जाता है फिर समझते हैं हमनें देर से निर्णय लिया।

1. बुद्धि समय पर उचित निर्णय क्यों नहीं कर पाती है?

क्योंकि मन बुद्धि को प्रभावित कर लेता। मन की जो Negative और Waste thinking है वह बुद्धि को अपने प्रभाव में ले लेती है। उसके प्रभाव में जब बुद्धि आ जाती है तो गलत Decision देना चालू कर देती है। इसलिए बुद्धि समझ करके जो Decision देती है ठिक निर्णय होता हैं और बुद्धि जब बिना समझे Influence में आकर Decision लेती है तो गलत होता है और इसलिए सुख-शान्ति का अनुभव जीवन में नहीं हो सकता और इसीलिए दुविधा की स्थिति बुद्धि की बनी रहती है।

(3) आत्मा की शक्ति – संस्कार

जब कर्म कर लेते हैं उसके बाद जो परिणाम आता है वह परिणाम आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव छोड़ देता है, जिसको कहते हैं संस्कार, और इसलिए हर एक के संस्कार अपने-अपने हैं, अलग-अलग हैं।

1. दुनिया के सभी मनुष्य अलग-अलग हैं, क्यों?

दुनिया में आज करोड़ों मनुष्य हैं लेकिन एक के संस्कार न मिले दूसरे से क्योंकि एक का कर्म न मिले दूसरे से। जैसा संस्कार है वैसा स्वभाव है इसलिए स्वभाव-संस्कार कहते हैं। फलाने का स्वभाव-संस्कार ऐसा ही है क्योंकि जैसा संस्कार है वैसा स्वभाव, वैसा नेचर (Nature) और जैसा नेचर (Nature) है वैसे फीचर्स (Features) हैं। इसीलिए करोड़ों लोग हैं आज दुनिया के अन्दर, लेकिन **एक का फीचर (Feature) ना मिले दूसरे से क्योंकि**

- **एक का स्वभाव ना मिले दूसरे से,**
- **एक का संस्कार ना मिले दूसरे से और**
- **एक का कर्म ना मिले दूसरे से सब कुछ अलग है।**

2. पाँच प्रकार के संस्कार

संस्कार कितने प्रकार के हैं? एक ही माँ बाप के दो बच्चे हैं, माँ खुद कहती है यह चंचल है, यह आज्ञाकारी है जबकि माँ-बाप ने दोनों बच्चों को एक जैसे संस्कार दिये फिर बच्चों में यह भिन्नता क्यों आयी? तो कहेंगे उसके संस्कार। अब उसके संस्कार कौनसे हैं? तो हर मनुष्य के अन्दर पाँच प्रकार के संस्कार होते हैं -

① मूल संस्कार (Original Sanskar)

सबसे पहले प्रकार के संस्कार हैं मूल (Original) संस्कार। जब हम भगवान के धाम से इस संसार में आये तो उस समय आत्मा अपना मूल (Original) संस्कार लेकर आती है। एक छोटा बच्चा जब सोया होता है उस समय उसका चेहरा देखो कोई टेन्शन (Tension) लगता है? कितना शान्तचित्त है। शान्ति जैसे फैल रही है उस समय उसको कोई दुःख है? सुखी जीव है। कहते हैं सुखी जीव है। तो सुख के संस्कार फैल रहे है। जब बच्चा खुश होता है तो उसके प्रति कितना प्यार उत्पन्न होता है, वह चुंबक (Magnet) की तरह अपनी ओर खिंच लेता है। महात्मा समान उसको कहा जाता है, ज्ञानी कहते हैं, उसको पवित्र कहते हैं, हर आत्मा के मूल (Original) संस्कार उस समय फैले हुये दिखाई देते हैं। यह एक परमात्मा की गिफ्ट (Gift) है जब हम संसार में आते हैं।

② पूर्वजन्म के संस्कार

दूसरे प्रकार के संस्कार हैं पूर्वजन्म के संस्कार। कोई कहाँ से आये तो कोई कहाँ से आये, तो पूर्वजन्म के संस्कार भी तो साथ ले आये और वह भी तो यहाँ चुक्तू करने पड़ेगे। तो पूर्वजन्म के संस्कार के कारण ही अलग-अलग महसूस होते हैं।

कई बार हम पढ़ते हैं पेपर आदि में कि एक छोटा बच्चा पाँच साल का शास्त्र के श्लोक बोलने लग गया, छोटा तीन साल का बच्चा कम्प्यूटर (Computer) चलाने लग गया। तो कहेंगे पूर्वजन्म के संस्कारों का उदय हो गया। लेकिन पूर्वजन्म के संस्कारों की तीव्रता बढ़ गयी इसीलिए वह असाधारण दिखाई देने लगता है। क्योंकि पूर्वजन्म के संस्कारों का प्रभाव बहुत अधिक चल रहा है। हरेक में चलता है लेकिन तीव्रता में अन्तर होता है। किसी में कम तीव्रता से चलता है, किसी में ज़्यादा तीव्रता से चलता है। लेकिन चलता हरेक में है।

③ खानदानी संस्कार (Hereditary Sanskar)

तीसरे प्रकार के संस्कार है खानदानी संस्कार (Hereditary Sanskar), खून के संस्कार भी कहते हैं। कोई बच्चे को देखो बिल्कुल माँ जैसा होता है, कोई बच्चा बाप जैसा होता है, कोई बच्चा दादा जैसा होता है।

- **उदाहरण – एक छोटे बच्चे का जो झूठ बोलता था**

एक छोटा बच्चा था बहुत झूठ बोलता था । एक दिन उसे एक सज्जन ने बुलाया और पूछा- तुम झूठ क्यों बोलता है? हँसने लगा। बस ऐसे ही बोल देता हूँ। फिर उस सज्जन ने कहा कि देखो तुम अपने जीवन को कैसे बना रहे हो? बच्चा, बहुत समझदार था। फिर उसको कई समाज में घटी सत्य घटनाओं को सुनाया, कि झूठ बोलने के बाद में व्यक्ति को कितना पश्चाताप् होता है, क्योंकि बाद में कुछ नहीं कर पाता है।

बच्चा समझदार होने के कारण आधा घण्टा, पौना घण्टा तक उनकी बात सुनता रहा शान्ति से। पौने घण्टे बाद उसको महसूस हुआ तो बच्चे ने उन सज्जन को कहा ठीक है आगे से झूठ नहीं बोलूँगा। उन सज्जन ने कहा प्रॉमिस (Promise) करो, कभी झूठ नहीं बोलोगे। कहा प्रॉमिस (Promise) करता हूँ - कभी झूठ नहीं बोलूँगा।

एक बुजूर्ग भाई उन दोनों की बात को सुन रहे थे तो हँसने लगे। उस सज्जन ने कहा आप क्यों हँस रहे हैं? तो कहा यह प्रॉमिस (Promise) जो किया ना यह भी झूठ है। सज्जन ने कहा यह आप कैसे कह सकते हैं? वह समझ करके प्रॉमिस (Promise) कर रहा है। उसने पौना घण्टा ठीक से समझा है उसके बाद प्रॉमिस (Promise) कर रहा है। बुजूर्ग भाई बोले - उसका दोष नहीं है उसका बाप भी ऐसा है और उसका दादा भी ऐसा ही था। यह उसके खानदानी संस्कार हैं। इसलिए भले यह महसूस कर रहा है लेकिन वह खून नहीं बदल जायेगा। इनके खून में नस-नस में है - झूठ बोलना। बिना मतलब के चाहे कुछ मिलता है या नहीं मिलता है उनको झूठ बोलना ही है। यह है खानदानी (Hereditary) संस्कार।

④ संग के संस्कार (Sanskars of Company)

चौथे प्रकार के संस्कार हैं संग के संस्कार।

A man is known by the Company he keeps.

'जैसा संग वैसा रंग' कई बार हम अच्छे घर के बच्चों को देखते हैं, बहुत अच्छे खानदान के बच्चे लेकिन बुरे संग में जब आ जाते हैं, कितना भी उनको समझाने की कोशिश करो कि ये संग ठीक नहीं है तुम्हारे लिए, तुम छोड़ दो। वह माँ-बाप को छोड़ने को तैयार हो जायेगा लेकिन संग को नहीं।

यह हमें घबराने की आवश्यकता नहीं हैं कि अब हम क्या करें? मूल (Original) संस्कार तो मेरे खत्म हो गये, खाली हो गया, पूर्वजन्म का संस्कार मुझे पता ही नहीं था, माँ-बाप के संस्कार मुझे मिल गये, संग में फंस गया। अब मैं क्या करूँ? लेकिन निकलने का रास्ता है। जिस प्रकार कहा जाता है – **लोहे से लोहा कटता है वैसे संस्कार से संस्कार** को भी खत्म कर सकते हैं और वह है पाँचवे प्रकार के संस्कार जिसको जागृत करना पड़ता है।

⑤ विल पॉवर को जागृत करने के संस्कार

पाँचवें प्रकार के संस्कार है - विल पावर को जागृत करने के संस्कार

जब यह संस्कार जागृत हो जाते है तो कोई संस्कार बीच में आ नहीं सकता है। न पूर्वजन्म का, न मात-पिता के, न संग का संस्कार इन सभी संस्कारों को खत्म कर सकते हैं। वह पाँचवें प्रकार के संस्कार जिसकी कमी आज महसूस हो रही है इसलिए लोग चाहते हैं विल पॉवर आ जाये तो मैं असम्भव को सम्भव कर दूँ, मेरे संस्कार को मैं परिवर्तन (Change) कर दूँ।

♦ विल पॉवर को जगाने की विधि

विल पॉवर को जगाने के लिए शक्ति चाहिए। वह शक्ति मिलेगी संकल्प शक्ति से (Thought Power) से। जैसा सोचोगे वैसा बनोगे (**As you think so you become**) तो संकल्प की शक्ति को Thinking Power कहा जाता है। यह Thought Power के माध्यम से विल पॉवर को जागृत कर सकते हैं। लेकिन उसके लिए भी अपनी संकल्प शक्ति (Thought Power) को सकारात्मक दिशा (Positive direction) में मोड़ना (Chanellise) बहुत जरूरी है। जितना संकल्प शक्ति सकारात्मक दिशा (Positive direction) में प्रवाहित (Chanellise) होगी तो हमारे अन्दर वह सोया हुआ **'विल पॉवर'** जागृत हो सकता है।

♦ विल पॉवर को जगाने के लिए कोई उम्र बाधा (Age Barrier) नहीं

यह नहीं कि अगर पहले अगर मालूम होता था तो विल पॉवर जगा देते थे। अब तो हम बुढ़े हो गये हैं अब कैसे जगायेंगे? विल पॉवर कोई भी उम्र में जागृत हो सकता है।

- **उदाहरण – स्वामी विवेकानन्द का**

एक नौ साल का नरेन्द्र जब अपने विल पॉवर को जागृत करता है तो स्वामी विवेकानन्द बन जाता है।

- **उदाहरण – महात्मा गाँधी का**

25 साल की उम्र में महात्मा गाँधी ने जब अपने विल पॉवर को जगाया तो महात्मा बन गये।

- **उदाहरण – मदर टेरेसा का**

'मदर टेरेसा' 60 साल की उम्र में जब अपने विल पॉवर को जगाया तो 60 से 90 साल में वह वर्ल्ड मधर (World Mother) बन गई। उसके पहले तो वह सिस्टर (Sister) टेरेसा थी। 60 साल में उसने अपने विल पॉवर को जागृत किया और 60 से 90 में वह 'मदर टेरेसा' बन गयी।

तो विल पॉवर को जगाने के लिए कोई उम्र बाधा (Age Barrier) नहीं बन सकती है। कोई भी उम्र (Age) में उसको जगा सकते हैं और जब जगा लेते हैं तो व्यक्ति जीवन के महान लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। उसके लिए कोई अड़चन बीच में नहीं आ सकती।

तो यह है मन, बुद्धि और संस्कार जिसके माध्यम से आत्मा की जो शक्ति (Potential) है उसको सही रूप में हम अपने जीवन में ला करके जो जीवन में अनुभव करना चाहते हैं उसका अनुभव कर सकते हैं। आत्मा की इन तीनों शक्तियों का विशिष्ट पद्धति से ही कार्य चलता है। परन्तु वह आत्मा इस शरीर में कहाँ होगी?

[7] आत्मा का स्थान – हायपोथेलमस और पीट्युटरी ग्लैण्ड के बीच में/मस्तक में/ भृकुटी में

कई मान्यतायें हैं आत्मा के स्थान के बारे में।

- कोई कहता है आत्मा हृदय में होती है,
- कोई कहता है सारे शरीर में घुमती रहती है।

लेकिन हृदय (Heart) शरीर का महत्वपूर्ण हिस्सा (Important Part) है। वह पम्प (Pump) का काम करता है। पम्प का काम क्या होता है? पानी एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना। वैसे ही हृदय का काम है खून को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना। एक दिन में 3 लाख बार हमारा हृदय (Heart) Pump करता है। अगर हृदय (Heart) को कुछ हो जाये तो आत्मा शरीर से निकल जायेगी।

अगर हृदय (Heart) ही मन होता तो हृदय (Heart) बदलने से विचार भी बदलने चाहिए। आजकल ञHeart Transplantation करते है, Open Heart Surgery करते हैं।

तो विचार करने वाली जो शक्ति है वह सूक्ष्म है, वह बहुत महत्वपूर्ण है और हृदय स्थूल शक्ति है यह भी महत्वपूर्ण है।

- **उदाहरण – मेडिकल साइन्स का**

हमारे शरीर के जितने भी हिस्से हैं उन सबको चेतना-संदेश (Message) पहुँचाने का काम मस्तिष्क (Brain) करता है। अगर पैर में काँटा चुभता है तो हृदय में पता नहीं चलता है, लेकिन ऊपर पता चलता है, मस्तिष्क में पता चलता है तो सारा नियंत्रण कक्ष (Control Room) मस्तिष्क है, नियंत्रक (Controller) भी मस्तिष्क में है। हमारे मस्तिष्क के अन्दर हायपोथेलमस (Hypothalamus) और पीट्युटरी ग्लैण्ड (Pitutary Gland) के बीच में आत्मा का स्थान है और यह मेडिकली प्रूफ (Medically Proof) किया गया है। मेडिकल विज्ञान (Medical Science) ने भी इसे माना है।

- **उदाहरण – ड्राईवर और गाड़ी का**

जिस प्रकार ड्राईवर का स्थान गाड़ी में वहीं होता है जहाँ से उसे सारी गाड़ी को नियंत्रण (Control) करना आसान हो। यह नहीं कि पीछे मोड़ना (Reverse) है तो पीछे दौड़ेगा, ब्रेक लगाना है तो आगे दौड़ेगा। जहाँ से सारा नियंत्रण (Control) कर सकता है, पीछे, दायें-बायें मोड़ सकता है एक ही जगह पर बैठ करके।

उसी तरह आत्मा का भी अस्तित्व इस शरीर में उस जगह पर है जहाँ सारी सिस्टम (System) का नियंत्रण कक्ष (Control Room) है और वह है मस्तिष्क । तो पूरा मस्तिष्क हमारा नियंत्रण कक्ष (Controlling Room) है तो जरूर कन्ट्रोलर (Controller) कहाँ बैठेगा? नियंत्रण कक्ष (Controlling Room) में ही बैठेगा ना। जहाँ से कन्ट्रोल (Control) करना उसके लिए आसान हो जाये। Surface Marking जो है भृकुटी के मध्य है, जहाँ भारत में तिलक लगाते हैं।

- **उदाहरण – तिलक का**

वैसे तिलक सौभाग्यवती की निशानी है लेकिन मन्दिर में जाओ तो भाई हो या बहन हो सभी तिलक को लगाते हैं और तिलक भी यहाँ ही लगाया जाता है और कहीं नहीं, क्यों? कभी सवाल नहीं पूछा हमने। कई बातों का सवाल हम कभी पूछते ही नहीं क्योंकि उसका उत्तर नहीं मिलेगा यह सोच करके।

लेकिन हर चीज़ का वैज्ञानिक (Scientific) कारण है। मन्दिर में जाते हैं तो यह प्रथा भारत में हर समय हम करते हैं चमड़े की चीज़ को बाहर उतारेंगे फिर अन्दर जायेंगे, तिलक लगायेंगे फिर भगवान की मुर्ति के सामने जाकर हाथ जोड़ेंगे, नमस्ते करेंगे। यह प्रथा चलती आई है। छोटों को भी सीखाते हैं।

लेकिन यहाँ ही तिलक क्यों लगाना चाहिए? क्यों चमड़े की ही चीज को बाहर उतारना चाहिए? और फिर भगवान के सामने जाकर हाथ जोड़ना चाहिए, क्यों? वह चमड़ा तो उतार दिया लेकिन यह शरीर भी एक चमड़ा है जिस चमड़े का मनुष्य इतना अभिमान करता है। वास्तव में उतारना है अभिमान का चमड़ा, अभिमान का चमड़ा बाहर उतारो। फिर अन्दर जाओ और स्वयं को आत्मा निश्चय करो कि मैं फलाना, फलाना नहीं। जो अभिमान का चमड़ा पहन के जाते हैं कि मैं फलाना हूँ, मैं यह हूँ, वह हूँ, यह नहीं कि मैं एक आत्मा हूँ। तो स्वयं को पहले आत्म-अभिमानी (Soul conscious) बनाओ, देह-अभिमान (Body conscious, ego conscious) में नहीं जाओ भगवान के सामने। हाथ जोड़के नमन करो कि मैं फलाना-फलाना नहीं लेकिन मैं आत्मा आपके सामने नमन कर रही हूँ। कितना श्रेष्ठ भाव है लेकिन कभी इस भाव को हमने समझा ही नहीं। और इसलिए खास करके चन्दन का तिलक लगाया जाता है वह भी छोटासा।

मन्दिर में चन्दन का तिलक ही क्यों लगाते हैं? क्योंकि चन्दन के कुछ गुण है जो आत्मा के गुणों को याद दिलाते हैं। चन्दन लगाते ही ठंडक लगती है। यह याद दिलाता है कि आत्मा का भी स्वधर्म शान्ति हैं, आत्मा का मूल गुण (Original nature) गुस्सा नहीं है। गुस्सा करने के बाद कोई अच्छा महसूस नहीं करता है।

हर चीज का अपना गुण होता है। पानी का गुण है शीतलता, आग का गुण है गर्मी। पानी को कितना भी उबाल दो लेकिन रख दो तो वापिस अपने मूल गुणधर्म (Original nature) में आ जायेगा, शीतल हो जायेगा। इसी प्रकार आत्मा कितना भी गुस्सा कर ले लेकिन अपने मूल स्वधर्म (Original nature) में फिर आ जाती है। क्योंकि उसका मूल गुण (Nature) ही है शान्ति और शान्ति में अकेली भी है तो उसको अच्छा लगता है, Comfortable लगता है। भीड़ में कभी-कभी क्या होता है घूटन (Suffocate) होने लगती हैं।

दूसरा चन्दन खूशबू देता है। आत्मा भी जब अपने मूल सात गुणों में है तो अपने गुणों की खूशबू अपने व्यवहार द्वारा देती है। चन्दन का कलर है गोल्डन। यह याद दिलाता है कि आत्मा अपने मूल रूप में शुद्ध है। तो यह चन्दन का गुणधर्म है।

[8] आत्मा का रूप

आत्मा का रूप क्या है? आत्मा का रूप ज्योतिर्मय बिन्दू स्वरूप है। जिसे आप आँखो से देख नहीं सकते, अनुभव कर सकते हैं। इसलिए उस की तुलना दिये की लौ से की जाती है।

[9] आत्मा के गुण

आत्मा के गुण क्या है? जैसे शरीर को जीवन जीने के लिए पाँच बातें चाहिए, पाँच तत्व चाहिए वैसे ही आत्मा को जीवन जीने के लिए सात बातें चाहिए। इसलिए आत्मा को **सतोगुणी** कहा जाता है, सात गुणों का सार (Essence) है। शरीर पाँच तत्वों का सार (Essence) है और वही उसको जीवन जीने के लिए चाहिए।

जैसे शरीर में एक तत्व भी कम हो जाये तो Suffocation होता है। वैसे ही आत्मा को अगर एक गुण की भी कमी हो जाये तो निराशा आने लगती है। इसलिए आज संसार के अन्दर इतनी निराशा है, क्योंकि सात बातों की आत्मा कमी महसूस करने लगी है, खोखली हो गयी है।

(1) सात गुण

वह सात बातें या सात गुण कौनसे है? शान्ति, सुख, आनन्द, प्रेम, ज्ञान, शक्ति और शुद्धि (पवित्रता) यह आत्मा के मूल गुण है। Originally आत्मा इन गुणों से भरी हुई है।

1. शान्ति

सबसे पहले आत्मा को शान्ति चाहिए इसीलिए इन्सान कहता है सादा भोजन चलेगा लेकिन शान्ति चाहिए। 36 प्रकार के भोजन रखे हों परन्तु खाते समय किसी ने अशान्ति मचा दी तो एक भी चीजखाने की दिल नहीं होगी। यानी भोजन जो शरीर को जीने के लिए आवश्यक है उससे भी अधिक आवश्यकता आत्मा को शान्ति की हैं। कोई भी 24 घण्टा गुस्सा नहीं करेगा क्योंकि शान्ति उसका Original गुण है, Nature है, स्वभाव है, Original state of mind है, जिसको हम कहते हैं Volcano process, Negative को बाहर करना। आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है।

2. सुख

इसी प्रकार दूसरा आत्मा को सुख चाहिए। किसी को जीवन में दुःख नहीं चाहिए सुख चाहिए।

3. आनन्द

हर एक को आनन्द चाहिए किसी को उदासी या गम नहीं चाहिए। जीवन में आनन्द हो बस।

4. प्रेम

हर एक को प्रेम चाहिए किसी को नफ़रत नहीं चाहिए। एक बच्चे को भी प्यार चाहिए, तो बड़े बुजूर्ग के साथ भी प्यार से व्यवहार करते हैं तो उनको अच्छा लगता है। यह नहीं कि सारी जिन्दगी बहुत प्यार पाया इसलिए बुढ़ापे में अगर प्यार नहीं मिला तो चलेगा। नहीं, तब भी उसे प्यार ही चाहिए।

5. ज्ञान

हर एक को ज्ञान चाहिए। इसलिए भगवान के सामने जाकर प्रार्थना करते हैं मनुष्य –

अज्ञान से हमें ज्ञान की ओर ले चलो,
अन्धकार से हमें प्रकाश की ओर ले चलो।

आज अगर संसार में देखा जायें तो ज्ञान के पुस्तकों की कोई कमी नहीं है। भारत में शास्त्रों की कोई कमी नहीं है, महापुरुषों की कोई कमी नहीं है, ज्ञान की कोई कमी नहीं है। फिर भी रोज मनुष्य भगवान के मन्दिर में गाता है – अज्ञान से हमें ज्ञान की ओर ले चलो माना ज्ञान नहीं आया ना, नहीं तो गाते ही नहीं थे।

किसी ने बहुत सुन्दर कहा है कि सारी ज्ञान की पुस्तकों को अगर इकट्ठा किया जायें और उसकी होलिका जलाई जायें तो **The heat is more than the light** अर्थात् उसकी गर्मी इतनी ज्यादा होगी जितनी कि रोशनी नहीं होगी। और सही में आज यही हो गया है कि मनुष्य ने जितना ज्यादा ज्ञान हॉसिल किया तो अभिमान की गर्मी सर पर चढ़ गई लेकिन व्यवहार में रोशनी नहीं आई कि कैसे मुझे अपनों के साथ व्यवहार करना है। इसीलिए कहा कि The heat is more than the light.

भगवान को तभी जाकर के कहते हैं कि हे प्रभु! अज्ञान से हमें ज्ञान की ओर ले चलो क्योंकि अभिमान सबसे बड़ा अज्ञान ही है।

6. शक्ति

शक्ति चाहिए। भगवान के पास जाकर यही कहते हैं –

निर्वल को बल दो प्रभु,
शक्तिहीन को शक्ति दो प्रभु।

कौनसी शक्ति चाहिए हमें? किसी से लड़ाई करने की । आत्मशक्ति नहीं है, विल पॉवर चाहिए।

7. शुद्धि

शुद्धि चाहिए, Purity चाहिए। इसीलिए मनुष्य भक्ति करता है। पूछो भक्ति क्यों करते हो? तो कहेंगे आत्म शुद्धि के लिए।

कभी भी कोई अपने जीवन में, सम्बन्धों में Manipulate करना शुरू कर दे तो हमें अच्छा लगेगा? Comfortable feel नहीं करते हैं हम। कभी-कभी देखते हैं दो व्यक्ति की आपस में बहुत दोस्ती होती है, कुछ समय के बाद वह दोस्ती टूट जाती है।

पूछो भाई दोस्ती क्यों टूट गई? तो कहेंगे बाद में पता चला वह अन्दर कुछ था और बाहर कुछ था। बाहर से तो बड़ी सफाई की बातें करता था लेकिन अन्दर मन में उसके बहुत मैलापन था। I was not Comfortable हम उसके साथ Comfortable नहीं रहे। कितनी बार उसको कहा भी कम-से–कम तुम अन्दर बाहर एक रहो, साफ रहो, शुद्ध रहो।

क्यों व्यवहार में शुद्धि चाहते हैं? क्योंकि यही मेरी वास्तविकता है, Originality है। और, जहाँ कोई अन्दर में मैला पन हो बाहर में सफाई बताता हो, कितनी भी Polish की भाषा क्यों न बोलता हो फिर भी उस व्यक्ति के प्रति नफ़रत आने लगती है, धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

तो आत्मा को क्या चाहिए? शुद्धि चाहिए क्योंकि आत्मा का वास्तविक स्वरूप ही शुद्ध और पवित्र है।

तो यह सात बातें जीवन जीने के लिए चाहिए।

(2) सात गुणों में से एक गुण भी कम हो जाए तो जीवन में हताशा और निराशा

अगर इन सात में से एक भी कम हो जाए तो **हताशा और निराशा** (Frustration) create होता है।

बाकी सब कुछ हो जीवन में प्रेम न हो तो जी सकेंगे? इसीलिए मनुष्य एक दूसरे के सम्बन्धों में यही अपेक्षा रखता है कि मुझे और कुछ नहीं चाहिए, कोई चीज़, वस्तु नहीं चाहिए लेकिन प्रेम से दो शब्द तो बोले।

सुख से जीये और जीने दें, शान्ति से रहें और कुछ नहीं चाहते हैं, तो एक दूसरे से यही अपेक्षा रखते हैं।

वह कहेगा यह मेरे साथ शान्ति से रहे, वह कहेगा यह मेरे साथ शान्ति से रहे, लेकिन दोनों एक-दूसरे को दे नहीं पाते, क्यों? क्योंकि खोखलापन है। अन्दर है ही नहीं तो क्या देंगे?

(3) सात गुणों में से दूसरों को हम जो भी देंगे वही हमें मिलेगा

और कायदा यह है संसार में, Eternal law यह है **जो देंगे वही मिलेगा।** आाप किसी को खुशी दो, तो आपको खुशी मिलेगी। आप किसी को Respect दो, तो आपको Respect मिलेगा। आप किसी को गाली दो, तो आपको गाली मिलेगी। मतलब आप जो देंगे वही आपको मिलेगा।

हम दे नहीं पाते हैं, अपेक्षा रखते हैं – यह मेरे साथ शान्ति से व्यवहार करे, यह मेरे साथ सुख से जीये, प्रेम से जीये लेकिन मिलेगा नहीं। क्योंकि जब तक देंगे नहीं तब तक मिलेगा नहीं। गुस्सा देंगे गुस्सा मिलेगा, नफ़रत देंगे नफ़रत मिलेगी, प्रेम देंगे प्रेम मिलेगा – यह संसार का कायदा है। अपेक्षा रखने से नहीं मिलता है और इसलिए ज्यादा Frustration create होने लगता है। तब कई लोग समझते हैं कर्म करो, कर्म करने से मिलेगा।

(4) सात गुणों की प्राप्ति के लिए ही मनुष्य संसार के अन्दर कर्म कर रहा है

आज मनुष्य जितने भी कर्म कर रहा है संसार के अन्दर किसलिए?

- कोई धन कमाने का काम कर रहा है, कर्म कर रहा है। धन क्यों कमा रहे हो इसीलिए ना कि सुख-शान्ति से जी सकें? तो लक्ष्य क्या है? धन कमाने का जो कर्म किया उसके पीछे भी लक्ष्य है सुख-शान्ति से जी सकें।
- कोई समाज सेवा कर रहा है उसको पूछो तुम समाज सेवा क्यों कर रहे हो? कहता है आनन्द मिलता है, तो आनन्द चाहिए ना? लक्ष्य तो यही है आनन्द।
- कोई भक्ति कर रहा है पूछो भक्ति क्यों कर रहे हो? कहेंगे कि आत्म शुद्धि के लिए।
- कोई पढ़ाई कर रहा है, खुब पढ़े जा रहा है पूछो क्यों पढ़ रहे हो? कहेंगे कि ज्ञान चाहिए।

तो इन सातों में से कोई ना कोई चीजअथवा गुण चाहिए, इसीलिए सारे कर्म कर रहे हैं। लेकिन यह सब करने के बावजूद भी प्राप्त नहीं होता है।

- **उदाहरण – लेड़ी डायना का**

आज लेड़ी ड़ायना थी कोई चीजया वस्तु की कमी नहीं थी उसके जीवन में। लेकिन खुश थी? क्या कमी थी, उसने क्यों ठूकरा दी राजाई को? प्रेम नहीं था। सारा संसार उससे प्यार करता था फिर भी प्रेम की कमी थी। क्योंकि अपनों के साथ प्यार नहीं था और जब खुद का भी नहीं था तो मिला भी नहीं उसको और इसीलिए Frustration था उसके जीवन में। न प्रेम था, न आनन्द था, न शान्ति थी, न सुख था, तो सोचो क्या जीवन है? ठूकरा दिया उस राजाई को। जहाँ मुझे सच्चा प्यार मिलेगा वहाँ जाऊँगी।

तो इन्सान को क्या चाहिए? यह प्यार चाहिए क्योंकि आज इसकी कमी जीवन में महसूस होने लगी है।

(5) सात गुण अथवा चीजें कहीं से न मिलने पर लोग भगवान के पास जाते हैं

और जब कहीं से नहीं मिलता है तब भगवान के पास जाते हैं। हे प्रभु शान्ति दो, हे प्रभु सुख दो, हे प्रभु तू प्यार का सागर है तेरी एक बूंद के प्यासे हम। एक बूंद भी मिल जायेगी ना तो जीवन जीने के लिए काफ़ी है बस। हे प्रभु शक्ति दे दो, ज्ञान दे दो.....माँगते हैं।

भगवान से भी रोज मन्दिर में जाकर माँगते हैं तो मिल जायेगा? कोई चीज है जो ऊपर से फेंक दिया उसने, यह लो शान्ति, यह लो सुख और ऐसे अगर भगवान से माँगने से मिल जाता तो आज संसार में अशान्ति होती ही नहीं। आज संसार में दुःख होता ही नहीं, आज संसार में नफ़रत होती ही नहीं। उदासी, गम होता ही नहीं। माना भगवान से भी माँगने से नहीं मिलता है। इसीलिए एक बहुत सुन्दर कहावत याद आती है – **विन माँगे मोती मिले माँगत मिले न भीख।** माँगने से भीख भी नहीं मिलती हैं।

(6) सात गुणों अथवा चीज़ों को प्राप्त करने की विधि राजयोग सिखाता है

आज दुनिया में भगवान से भी रोज़ जाकर माँग लिया, मनुष्य से रोज़ अपेक्षा कर लिया, कुछ नहीं मिलना है क्योंकि यह विधि ही नहीं है। राजयोग हमें विधि बताता है। परमात्मा स्त्रोत ज़रूर है शान्ति, सुख, आनन्द, प्रेम का लेकिन उससे प्राप्त करने की विधि माँगने से नहीं होती।

यह राजयोग तरीका बताता है कैसे उसके साथ वह Connection जोड़े। जैसे दो वायर्स का Connection जोड़ो तो Current पास होगी, लाइट आयेगी लेकिन Connection ही ना हो तो रोशनी आयेगी कहाँ से? शक्ति आयेगी कहाँ से? राजयोग यह Connection जोड़ने की विधि बताता है। कैसे Connection जोड़ करके अपने आप में वह शक्ति को भरे।

तो उसके लिए Meditation में क्या करना है? जो यह आत्मा की वास्तविकता है उसको Realise करो। इसलिए कहा जाता है Know thyself, Realise thyself. उसको Realise करो और फिर उस परमात्मा के साथ स्वयं को जोड़ना है। तो यह है आत्मा के गुण।

[10] आत्मा का कर्त्तव्य

अब आत्मा का कर्त्तव्य क्या है? आत्मा का कर्त्तव्य है कि इस सृष्टि रूपी मंच पर आकर के अपना Part accurate play करना।

[11] लेसन रीविज़न

इस Lesson को Revise कराना है, Homework देना है, और फिर कल क्या बतायेंगे वह बताना है।

[12] होमवर्क

- **आत्मा और शरीर का क्या सम्बन्ध है?**
- **आत्मा और परमात्मा में क्या अन्तर है?**
- **आत्मा और शरीर एक दूसरे के कैसे पूरक हैं?**
- **आत्मा की परिभाषा, निवासस्थान, गुण, कर्त्तव्य और स्वधर्म क्या है?**

आपको इसका अभ्यास करना है।

(1) होमवर्क किस समय पर करना है?

जो बातें आपने यहाँ सुनी उसको Practical में लाना है। कब लाना है? उसके लिए मैं आपको Time बताती हूँ जिस Time में आप बहुत Busy नहीं होते हैं –

1. सवेरे उठते ही
2. भोजन करते समय
3. जब हम कार्य व्यवहार में आते हैं
4. रात को सोते समय

1. सवेरे उठते ही

सवेरे उठते ही आप स्नान करते हो उस समय आप यह समझो मैं आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में मूर्ती हूँ और मैं आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर को साफ़ कर रही हूँ।

2. भोजन करते समय

भोजन करते समय जिस समय आप खाते हैं तो आत्मा Taste में चली जाती है उस समय यह सोचो यह Taste लेने वाली कौन? मैं आत्मा यह Taste ले रही हूँ। आत्मा ही विभिन्न प्रकार के Taste लेती है।

3. जब हम कार्य व्यवहार में आते हैं

जब हम कार्य व्यवहार में आते हैं। सड़क पर Traffic होता है तो Traffic में साईकल, कार, मोटरसाईकल भी होते हैं। तो ड्राइवर जो ड्राइविंग करता है उसे लगता है कि मुझसे Accident ना हो, अगर सामने वाला गलती भी कर रहा हो तो ड्राइवर रूक जाता है अपने आपको Safe कर लेता है। इसी प्रकार जब हम दुनिया रूपी सड़क पर

चलते हैं तो बहुत से ड्राइवर मिलते हैं जो उसमें कभी स्वभाव-संस्कार की टकराव होती। लेकिन समझदार ड्राइवर अपने आपको रोक लेता है। आत्मिक स्मृति में स्थित व्यक्ति Smooth Driving करता है। समझदार ड्राइवर अपनी गाड़ी की Maintenance रखता है। ऐसे ही हम आत्माओं में जो समझदार है वह ज्ञान से आत्मा की Servicing करता है ताकि Smoothly गाड़ी चल सकें।

4. रात को सोते समय

ड्राइवर गाड़ी को गैरेज में छोड़ देता है। वैसे ही मैं आत्मा शरीर को बेड़रूपी गॅरेज पर छोड़ कर मन-बुद्धि से विश्राम करने के लिए परमधाम जा रही हूँ।

[13] कल का लेसन

तो आज हमने खुद का परिचय प्राप्त किया कल हम खुदा का परिचय प्राप्त करेंगे।

तीन लोक

[1] विषय प्रवेश

हमने आत्मा की शक्तियाँ, आत्मा के रूप और गुणों को जाना, आत्मा के कर्त्तव्य को जाना। आत्मा का शरीर में कहाँ स्थान है उसको भी जाना। अब हम जानेंगे कि आत्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपना पार्ट प्ले करने के लिए कहाँ से आती है, आत्मा का निजधाम क्या है?

[2] इस सृष्टि रूपी मंच पर आत्मा कहाँ से आती है, किस लोक से आती है?

इस सृष्टि रूपी मंच पर Originally आत्मा कहाँ से आती है? कहते हैं, जहाँ से आये हैं वहाँ जाना है। कहाँ से आये और कहाँ जाना है?

कई लोग क्या कहते हैं कि कोई भी रास्ता ले लो जाना तो वहीं है ना पहुँच जायेंगे। अरे कोई Meditation करता है, कोई भक्ति करता है पहुँचना तो वहीं है ना ! कोई भी रास्ता अपनाओ यह गुरु ले लो, कोई भी गुरु ले लो, वह गुरु ले लो आप वहीं पहुँचेंगे। जाना तो वही है, मंजिल तो वही है।

लेकिन अगर मंजिल का पता ही न हो, तो कहीं कोल्हू के बैल की तरह चक्कर ना काट रहे हों और सोचा कि बहुत चल लिया और मंजिल तो बहुत दूर रह गई, पहुँचे ही नहीं हम तो।

कहाँ जाना है आखिर? कहाँ से आयें कहाँ जाना है?

(1) तीन लोक का चित्र

तो इसलिए इस चित्र के अन्दर दिखाया है कि तीन लोक हैं।

1. साकारी मनुष्य लोक

जहाँ ये पाँच तत्वों की दुनिया है। यह पाँच तत्वों की दुनिया चन्द्र, तारों तक सीमित है। इसी दुनिया के लिए कहा गया है **मुसाफिर खाना, रंगमंच। इस लोक को 'स्थूल सृष्टि', कर्म-क्षेत्र अथवा 'पाँच तत्वों की सृष्टि' या 'विराट नाटक-शाला'** भी कहा गया है क्योंकि इस लोक में आकर आत्मा स्थूल अर्थात् हड्डी-माँस का शरीर धारण करती है और कर्म करती अथवा सुख-दुःख का खेल खेलती है। वह जैसा कर्म करती है वैसा फल भी भोगती है। इस लोक में जन्म-मरण, सुख-दुःख, कर्म-विकर्म, संकल्प, वचन आदि सभी है। इस लोक में सदा यह विराट सृष्टि-नाटक चलता ही रहता है। इस लोक के लिए शेक्सपियर ने बहुत अच्छा कहा है –

Life is drama, World is stage,
Man is actor & God is director.

2. सूक्ष्म लोक

स्थूल लोक के ऊपर एक दूसरा लोक है जिसे **सूक्ष्म लोक, सूक्ष्म जगत** कहते हैं। भक्ति में जिसको कहते हैं **'सूक्ष्म देव लोक'** जहाँ देवतायें, जहाँ फरिश्ते रहते हैं। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, शंकर निवास करते हैं। इनका मनुष्यों की तरह हड्डी-माँस का शरीर नहीं होता लेकिन सूक्ष्म प्रकाशमय शरीर होता है जो कि इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। उस लोक को दिव्य चक्षु द्वारा ही देखा जा सकता है। इस लोक में आवाज नहीं है, इसलिए सभी कार्य इशारों से होता है अतः उसे **'मूवी-वर्ल्ड'** भी कहते हैं।

3. निराकारी लोक/परमधाम

इन दोनों लोकों के भी पार एक तीसरा लोक है जहाँ लाल प्रकाश छाया हुआ है इसे ही **ब्रह्म मह तत्व** कहा जाता है, परलोक अथवा ब्रह्म लोक भी कहते हैं। अनेक धर्मों में अनेक नाम उसको दिए गए हैं। गीता में जिसको **'परमधाम' कहा है, शान्तिधाम कहा है, मोक्षधाम कहा, किसी ने उसको मुक्तिधाम कहा, किसी ने उसको निर्वाणधाम कहा, किसी ने उसको सचखण्ड कहा, किसी ने उसको रूहानी दुनिया कहा, मुस्लिम लोग इसे सातवाँ आसमान और क्रिश्चियन कहते हैं Highest heavenly Abode** लेकिन हम उसको कहते हैं **अपना प्यारा घर।** क्योंकि घर ऐसा स्थान है जहाँ व्यक्ति का विशेष लगाव होता है। सारी दुनिया घुम के आओ अच्छी-अच्छी होटलों में रहकर आओ लेकिन अपने घर में आकर के जो आराम मिलता है, जो चैन मिलता है, जो नींद आती है कहीं आयेगी?

① आत्मा तीसरे लोक/निराकारी लोक से आती है जो आत्मा का निजधाम है

कहते हैं अपना घर दाता का दर। तो आत्मा को कभी-कभी अपना घर याद आता है। यही ब्रह्माण्ड हम आत्माओं का निजधाम है। हमारा और हमारे पिता परमात्मा का वास्तविक घर है।

यहाँ न स्थूल शरीर होता है और न सूक्ष्म, न संकल्प होता है, न वचन, न कर्म। इसलिए वहाँ न सुख होता है, न दुःख, न जन्म होता है, न मरण बल्कि वहाँ शान्ति ही शान्ति है। इस शान्तिधाम से ही हम सब आत्मायें इस धरती पर अपना पार्ट प्ले करते हैं और जब नाटक पूरा होता है तो वापस अपने घर में लौट जाते हैं।

आत्मा से सम्बन्धित प्रचलित मान्यतायें और ज्ञान की बातें

[1] आत्मा से सम्बन्धित प्रचलित मान्यतायें

(1) आत्मा परमात्मा का अंश है, आत्मा परमात्मा में लीन होती है

(2) आत्मा निर्लेप है

[2] आत्मा से सम्बन्धित ज्ञान की बातें

(1) आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है, आत्मा परमात्मा में लीन नहीं होती है

(2) आत्मा निर्लेप नहीं है

तो अब हम ज्ञान की इन बातों को सिद्ध करेंगे।

(1) आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है, आत्मा परमात्मा में लीन नहीं होती है

सागर से बुदबुदा निकला और सागर में समा गया ऐसा कई लोग समझते हैं। लेकिन आत्मा के लिए ऐसा नहीं कह सकते। **आत्मा परमात्मा का वंश है अंश नहीं।** अगर आत्मा परमात्मा का अंश होती तो मृत्यु के बाद आत्मा परमात्मा में ही लीन हो जाती और उससे ही निकलती तो आत्मा अविनाशी है यह बात ही गलत हो जाती। और आज इतनी Population बढ़ रही है वह कैसे? और जब कि आत्मा को कोई काट नहीं सकता, छेद नहीं सकता। परमात्मा भी एक आत्मा है उससे आत्मा को कैसे काट सकते हैं परमात्मा से हम आत्मायें निकली हैं तो परमात्मा तो बहुत मीठा है, रहमदिल है, गुणों का सागर है और हम आत्माओं में तो अवगुण है। और परमात्मा जब कि परमात्मा है तो हम सब भी परमात्मा हो जाते।

- **उदाहरण – जैसे आम को काटते हैं तो उसे आम ही कहते हैं।**

अगर हम सब परमात्मा है तो हम सभी परमात्मायें हो जायेंगे और परमात्मा Always Singular है Plural कभी नहीं हो सकता। **परमात्मा जन्म-मरण से न्यारा है** और आत्मा तो 'पापात्मा', 'पुण्यात्मा' बनती है। आत्मा और परमात्मा में भेद है। हाँ हम उनके बच्चे हैं उसकी Quality हम में हो सकती है परन्तु Percentage में है। Qualities की Percentage में भी हम समान नहीं है। वह सागर है हम स्वरूप हैं। सागर सागर है, नदियाँ नदियाँ है इसी प्रकार परमात्मा एक ही है हम नदियाँ भिन्न-भिन्न है। आत्मायें अनेक है। आत्मा परमात्मा में लीन नहीं होती। आत्मा परमात्मा का सानिध्य प्राप्त कर सकती है। परन्तु आत्मा परमात्मा एक हो जाए दोनो में से एक का अस्तित्व खत्म हो जाए यह हो नहीं सकता न ही ब्रह्म में लीन होती है क्योंकि ब्रह्म एक जड़ तत्व है वह चैतन्य नहीं है और आत्मा चैतन्य है और ना ही चैतन्य में मिलता है और ना ही जड़ में।

- उदाहरण — बच्चा पिता से मिलता है पिता में नहीं मिलता है।

ब्रह्मतत्व आत्मा का रहने का स्थान है। उस घर में सुनहरे लाल कलर का प्रकाश है इस प्रकाश में आत्मा लीन नहीं होती लेकिन अपनी बीज रूप अवस्था में रहती है। जब उसका पार्ट शुरू होता है तब रंगमंच पर आती है। परमात्मा भी वहीं रहता है। सिर्फ आत्मायें पार्ट बजाने के लिए आती है।

(2) आत्मा निर्लेप नहीं है

एक ओर कहते आत्मा 84 लाख योनियाँ धारण करती है। जब कोई आत्मा विकर्म करती है तो विकर्मों का फल उसे पशु योनी में जन्म मिलता है या लेना पड़ता है। ऐसा वह मानते हैं। कहते हैं यदि किसी के चोरी के संस्कार हैं तो उसे बिल्ली का जन्म मिलता है। उसको यह सजा मिलती है। अगर कोई व्यक्ति भूल करता है तो उसे सजा दी जाती है। किसलिए? सुधारने के लिए या बिगाड़ने के लिए? अगर कोई मनुष्य आत्मा ऐसा कर्म करने के बाद पशु योनी में जन्म लेने से वह आत्मा सुधरेगी या बिगड़ेगी? वास्तव में ऐसा है नहीं इसलिए कहते हैं मानव जन्म हीरे तुल्य है।

'पाप की गठरी शीश पर, अन्त समय पछतायें,
हीरा जन्म मनुष्य का, कौड़ी तुल्य गवायें।'

सब प्रकार की योनियाँ एकत्रित कर लो तो भी 84 लाख योनियाँ नहीं हो सकती।

शास्त्रों में लिखा है लख 84। लख माना अपने 84 जन्मों को देख। मनुष्य ने उसको 84 लाख ले लिया है। 84 लाख अगर है तो वह योनियों का नाम बताओ। यह हमारी एक भूल है।

भारत देश देवताओं की भूमि, पुण्य आत्माओं की भूमि है भारत पहले स्वर्ग था लेकिन धीरे-धीरे पाप की शुरूवात हुई तब ऋषि मुनियों ने ऐसा कह दिया कि अगर आप पाप कर्म करोगे तो आपको पशु योनियों में जाना पड़ेगा। बात तो वहीं रह गई और सिद्धान्त बन गया। लेकिन गलत सिद्धान्त प्रचलित हो गया। वास्तव में मनुष्य आत्मा मनुष्य जन्म ही लेती है यह हम आपको खुश खबरी सुनाते हैं – कैसी भी पाप कर्म करने वाली आत्मा हो वह मनुष्य योनी में ही जन्म लेती है। हाँ उसे जन्म उसके कर्मो के अनुसार मिलता है उसका प्रमाण है – देखो वह पशु योनी में नहीं जाती है लेकिन वह मनुष्य योनी में होते हुए पशु जैसा व्यवहार करती है। जो उसके किए हुए पाप कर्म होते हैं। आज कई ऐसे मनुष्य हैं जिन्हें खाने के लिए नहीं है, पहनने के लिए नहीं है, ऐसे मनुष्य हैं जिन्हें बचपन से ही हाथ नहीं है, पावँ नहीं है, कोई अन्धे भी हैं, भिखारी भी हैं तो कैसे उस आत्मा के कर्म होंगे? एक समय में दो बच्चे पैदा होते हैं एक Heart patient है तो एक स्वस्थ है। एक बुद्धिमान है, होशियार है तो दूसरा Mentally Retarded है। यह कर्मों का परिणाम है। तो कर्मों का परिणाम हमें इसी मनुष्य जन्म में भोगना पड़ता है। और आज हम देख रहे हैं कि गधा बोझ उठाता है और मनुष्य भी क्या कर रहा है? बोझ उठा रहा है।

यह बातें क्यों बताई क्योंकि आत्मा निर्लेप नहीं है उसको अपने पिछले जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना पड़ता है। कर्मों का लेप-छेप उसको ही लगता है। इसीलिए कहा गया है महात्मा, पुण्यात्मा, पापात्मा, देवात्मा, धर्मात्मा। **आत्मा पर ही कर्मों का लेप-छेप लगता है इसलिए आत्मा निर्लेप नहीं है।** Heart में Attack हुआ लेकिन तकलीफ़ आत्मा को होती है। महसूस करने की शक्ति आत्मा में ही है। कर्म करने के पश्चात् आत्मा को ही भोगना पड़ता है करने वाली तो आत्मा है। इसलिए कहते हैं आत्मा संस्कार लेकर आती है और संस्कार लेकर जाती है। इसलिए लोग कहते हैं पता नहीं मेरे कौनसे जन्मों का हिसाब-किताब है। आत्मा धन को लेकर जाती है? नहीं लेकिन धन किस तरह कमाया वह संस्कार लेकर जाती है। मित्र-सम्बन्धी साथ में जाते हैं? नहीं लेकिन उनके साथ जो व्यवहार करते हैं वह साथ में जाता है।

दूसरा पाठ

परमात्मा का सत्य परिचय

[1] विषय प्रवेश

[2] व्यक्ति का परिचय 5 बातों में

(1) नाम

(2) स्वरूप

(3) Qualification

(4) Address

1. Temporary
2. Permanent

(5) Present Occupation

[3] आत्मा का परिचय 5 बातों में

(1) नाम

(2) स्वरूप

(3) Occupation

(4) Address

1. Temporary
2. Permanent

(5) Present Occupation

[4] परमात्मा के बारे में कुछ मान्यतायें

(1) प्रकृति ही परमात्मा है

(2) आत्मा सो परमात्मा

(3) ब्रह्म ही ईश्वर है

(4) भगवान सर्वव्यापी है

(5) भगवान निराकार है

(6) जितने भी इष्ट देवता हो गये वह सारे भगवान हो गये

(7) भगवान जैसे कोई चीज़ है ही नहीं

[5] परमात्मा सत्य है, सत्य हमेशा एक होता है

- **कहानी – चार अन्धों की**

[6] सत्य परमात्मा को परखने की कसौटी की पाँच बातें

(1) जो सर्व धर्ममान्य है

(2) जो सर्वोच्च है

(3) जो सर्वोपरी है

1. GOD का अर्थ
   - ① G - Generator
   - ② O - Operator
   - ③ D - Destructor

(5) जो अनन्त है, एकरस है, अपरिवर्तनशील है

[7] सत्य परमात्मा को परखने की कसौटी की पाँच बातें किन पर लागु होती है?

(1) प्रकृति ही ईश्वर है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

(2) आत्मा ही परमात्मा है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

(3) ब्रह्म ही ईश्वर है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

(4) ईश्वर सर्वव्यापी है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

- **उदाहरण - सूर्य का**

1. सर्वव्यापकता की भावना किस कारण से आई?
   - ① पहला कारण – प्यार
   - ② दूसरा कारण – डर
   - • उदाहरण – छोटे बच्चे को डराने का

(5) ईश्वर निराकार है – इस मान्यता पर लागु होती है? हाँ

- **उदाहरण - हवा का (जो दिखाई नहीं देती है पर है)**

[8] निराकार ईश्वर/परमात्मा सर्वधर्म मान्य हैं और उस निराकार परमात्मा का नाम शिव है

(1) भारत के हर गाँव में निराकार शिव का मन्दिर

1. भारत में विभिन्न स्थानों पर – निराकार शिव की प्रतिमा 'ज्योर्तिलिंगम्'
   - ① North में अमरनाथ
   - ② South में रामेश्वरम्
   - ③ मथूरा वृंदावन में गोपेश्वरम्
   - ④ East में काशीविश्वनाथ
   - ⑤ West में सोमनाथ
   - ⑥ नेपाल में पशुपतिनाथ
     - ♦ ज्योर्तिलिंगम् परमात्मा का नाम – शिव
     - ♦ शिव का अर्थ – परमपवित्र, कल्याणकारी

2. भारत में सबसे पुराने से पुराने मन्दिर –12 ज्योर्तिलिंगम्
   ① शिव की आराधना राम ने की
   ② शिव की आराधना श्रीकृष्ण ने की

3. भारत में शिव के सभी मन्दिर ऊँचाई पर
   ① शिव की प्रतिमा 'ज्योर्तिलिंगम' – किसी आसन पर नहीं, लेकिन अन्दर भूगर्भ में

4. भारत में शिव के मन्दिरों के नाम का अन्त नाथ से
   ① शिव और शंकर एक नहीं
   ② शिव – सर्व का नाथ

(2) मुस्लिम धर्म

(3) गीता

(4) शिनतोनिजम – जापान में बौद्धि लोगों का एक कौम

(5) क्रिश्चियन धर्म

[9] परमात्मा का रूप

(1) क्रिश्चियन धर्म में

(2) हिन्दु धर्म में

(3) मुस्लिम धर्म में

(4) सिक्ख धर्म में

[10] परमात्मा की Attributes

[11] परमात्मा का निवासस्थान - परमधाम, ब्रह्मतत्व

[12] परमात्मा के परिचय की 5 बातें

(1) नाम – सदाशिव

(2) स्वरूप – निराकार ज्योर्तिलिंगम्

(3) Attributes – सर्वगुणों में अनन्य, सर्वज्ञ, सर्वोपरी, सर्वोच्च

(4) Address – ऊपर का निवासी, परमधाम का निवासी

(5) Occupation – अधर्म का विनाश और सत्य धर्म की स्थापना

[13] होमवर्क

[14] कल का लेसन

दूसरा पाठ

परमात्मा का सत्य परिचय

[1] विषय प्रवेश

कल हमने आपको आपके बारे में बताया था। आज हम आपको परमात्मा के बारे में बतायेंगे। परमात्मा का नाम, रूप, उनके गुण और कर्त्तव्य क्या है? वह आपको बतायेंगे।

[2] व्यक्ति का परिचय 5 बातों में

किसी भी व्यक्ति के परिचय में हम पूछते हैं कि आपका

(1) नाम

(2) स्वरूप

(3) Qualification

(4) Address

1. Temporary
2. Permanent

(5) Present Occupation

इन पाँच बातों में व्यक्ति का परिचय मिलता है।

[3] आत्मा का परिचय 5 बातों में

आत्मा के परिचय में भी

(1) नाम – आत्मा, रूह, Soul energy

(2) स्वरूप – अति सूक्ष्म, दिव्य ज्योति स्वरूप

(3) Occupation – सात गुण (ज्ञान, पवित्र, सुख, शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनन्द)

(4) Address

1. Temporary – भृकुटी के मध्य
2. Permanent – परमधाम

(5) Present Occupation

आत्मा के पास जो क्षमता है उस क्षमता को अच्छे से अच्छे कर्म में Use करना

आत्मा की वास्तविकता को हमने जाना ठीक उसी प्रकार परमात्मा की वास्तविकता को जानना, समझना भी आवश्यक है।

[4] परमात्मा के बारे में कुछ मान्यतायें

दुनिया में लोग समझते हैं कि
God is most complicated Personality to understand.

कई विद्वानों ने तो परमात्मा को नेती-नेती कह दिया अर्थात् पामात्मा का कोई अन्त नहीं है। दर असल बात ठीक भी है। जैसे एक पुत्र अपने पिता का सम्पूर्ण परिचय पिता द्वारा बतायें जाने पर ही जान सकता है ठीक वैसे ही हम आत्मायें भी पिता परमात्मा का सत्य परिचय उसी के द्वारा बतायें जाने पर प्राप्त करती है।

परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है –
'मैं जो हूँ जैसा हूँ, मैं जब आता हूँ तब ही बताता हूँ'

परमात्मा के बारे में भी कुछ ऐसी मान्यतायें हैं –

(1) प्रकृति ही परमात्मा है

(2) आत्मा सो परमात्मा

जैसे सागर से बुदबुदा निकला और सागर में समा गया वैसे ही आत्मा परमात्मा में समा जाती है।

(3) ब्रह्म ही ईश्वर है

(4) भगवान सर्वव्यापी है

(5) भगवान निराकार है

(6) जितने भी इष्ट देवता हो गये वह सारे भगवान हो गये

जब-जब संसार में आवश्यकता हुई तब भगवान ने अनेक रूप लेकर जन्म लिया।

(7) भगवान जैसे कोई चीज है ही नहीं

अगर भगवान है तो प्रूफ दीजिए।
तो आप बताइए सत्य क्या है?

[5] परमात्मा सत्य है, सत्य हमेशा एक होता है

कहते हैं – **God is truth, truth is always one**.

तो परमात्मा के बारे में भिन्न-भिन्न मान्यतायें रखना वह तो ऐसे ही हो गया जैसे वह कहानी सुनाते हैं।

- **कहानी – चार अन्धों की**

चार अन्धे थे उनको हाथी को हाथ लगाने को कहा गया। एक ने हाथी का पाँव पकड़ा तो उसने कहा खम्बे जैसा है। दूसरे ने पेट को हाथ लगाया तो कहा दिवार जैसा है। तीसरे ने पूँछ पकड़ी तो कहा रस्सी जैसा है। चौथे ने कान को हाथ लगाया तो कहा सूपड़े जैसा है। ऐसे ही परमात्मा को जिसने जैसा देखा वैसे कह दिया। इतनी सारी मतें परमात्मा के बारे में हमारे सामने है तो उसमें से सत्य क्या है? सत्य को परखने की कोई कसौटी तो होगी ना।

[6] सत्य परमात्मा को परखने की कसौटी की पाँच बातें

जैसे जौहरी सोने को कैसे परखता है कि सोना कितने कॅरेट का है। तो आज हम आपको कोई नई मत नहीं दे रहे हैं लेकिन हम आपको सत्य को परखने की कसौटी दे रहे हैं। तो वह कसौटी क्या है? उसके लिए पाँच बातें हैं कि परमात्मा वह हैं :-

(1) जो सर्व धर्ममान्य है

जिसको सब मानते हैं।

(2) जो सर्वोच्च है

जिसके ऊपर कोई नहीं होना चाहिए। उसको कोई मात-पिता, गुरू, शिक्षक नहीं होता है।
वह एक Supreme Authority है।

(3) जो सर्वोपरी है

परमात्मा वह है जो सापेक्ष बातों से न्यारा है, जन्म-मरण, लाभ-हानी, मान-अपमान से न्यारा है, सर्व से न्यारा है। जैसे हम आत्मायें संसार के अनेक चक्र में आते हैं लेकिन परमात्मा नहीं आते हैं। गीता में भगवान ने कहा है कि मैं अजन्मा हूँ, मैं मनुष्य सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ, मैं कालों का भी काल हूँ। जब परमात्मा अजन्मा है तो उसके पास देह नहीं है और देह के सम्बन्ध भी नहीं है। कर्म और कर्म के फल का चक्र नहीं है। गीता में भी कहा है मैं अकर्ता हूँ, अभोक्ता हूँ। वह पाप और पूण्य के चक्र से भी परे है, सुख और दुःख के चक्र से भी परे है। दुःख हर्ता, सुख कर्ता है। जो इन सब चक्रों से परे है उसे ही परमात्मा कहते हैं।

(4) जो पर होते हुए भी सर्वज्ञ है

जो त्रिकालदर्शी है, त्रिनेत्री है, जो मनुष्य को भी ज्ञान का चक्षु प्रदान करने वाला है, त्रिलोकीनाथ है।

1. GOD का अर्थ

① **G - Generator**
② **O - Operator**
③ **D - Destructor**

वह सर्व ज्ञाता है, सब कुछ जानते हैं, Knowledgeful हैं। संसार की सारी सनातन शक्तियों को जानते हैं इसलिए उनको सर्वज्ञ कहते हैं।
आत्माओं को अल्पज्ञ कहते हैं क्योंकि आत्मा स्मृति-विस्मृति में जाती है। परमात्मा आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं।

(5) जो अनन्त है, एकरस है, अपरिवर्तनशील है

परमात्मा उसको कहा जाता है जो सर्व गुणों में अनन्त है, जो सदा अपनी परिस्थिति, गुणों, और परम-कर्त्तव्य में एकरस रहते हैं, अपरिवर्तनशील रहते हैं। आत्माओं के गुण, स्थिति बदलती रहती है। संसार का नियम है हर चीजपुरानी से नई, नई से पुरानी होती रहती है।

माँ शारदा जो रामकृष्ण परमहँस की युगल थी उसने अपने वचनों में कहा है कि धरती को कागज बना लो, सागर को स्याही बना लो, जंगल को कलम बना लो और स्वयं सरस्वती माँ अपने मुख से परमात्मा की महिमा करने बैठे तो भी कम है।

[7] सत्य परमात्मा को परखने की कसौटी की पाँच बातें किन पर लागु होती है?

यह पाँच बातें जिसको लगे वह सत्य है। यह किसके साथ लगती है?

(1) प्रकृति ही ईश्वर है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

सबसे पहले क्या Nature को परमात्मा के रूप में संसार के सभी धर्म वाले स्वीकार करेंगे?

कहीं मैंने गीत सुना था कि वह कौन चित्रकार है... यह प्रकृति के लिए बहुत ही सुन्दर गीत बना है। चित्रकार और चित्र एक नहीं है। वह कौन चित्रकार है जिसने प्रकृति का इतना सुन्दर चित्र निकाला? वह कौन है जिसने इतना सुन्दर चित्र निकाला। चित्र चित्रकार की रचना है। तो प्रकृति को परमेश्वर मानना अज्ञान है। प्रकृति चित्र है तो परमात्मा चित्रकार है।

कहते हैं परमात्मा अपरिवर्तनीय है वह जो है जैसा है वैसा ही है वह कभी बदलता नहीं है। जबकि प्रकृति तो परिवर्तनीय है उसमें विभिन्न मौसम आते हैं। जो कहते हैं Nature is God तो प्रकृति भी परमात्मा नहीं है। आज हमें प्रकृति भी दुःख देती है। Natural calamities होती है, कहीं सुखा पड़ गया, तो कहीं बाढ़ आ गई, अतिवृष्टि और अनावृष्टि होती है। क्या परमात्मा अपने बच्चों को ऐसा दुःख देगा? कोई भी पिता अपने बच्चों को ऐसा दुःख नहीं देगा और यह तो परमपिता है उसको तो दुःख हर्ता, सुख कर्ता कहते हैं। प्रकृति तो विनाशकारी काम कर रही है जबकि परमात्मा तो कल्याणकारी हैं।

(2) आत्मा ही परमात्मा है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

आत्मा सो परमात्मा यह कहाँ तक सत्य है? आत्मा को परमात्मा के रूप में सभी धर्म वाले स्वीकार करेंगे? क्या आत्मा को सर्वोच्च शक्तिशाली कहा जायेगा? क्या आत्मा को सर्वोपरी कहा जायेगा? मन्दिर में गाते हैं – तुम मात-पिता हम बालक तेरे....

क्या आत्मा सो परमात्मा मानना सत्य है? या आत्मा परमात्मा की सन्तान है – यह कहना सत्य है? तो आत्मा सो परमात्मा समझना अज्ञान है।

परमात्मा कोई डिग्री नहीं है जो हम बन जायेंगे। दुनिया में मनुष्य कोई भी डिग्री पा सकता है लेकिन कोई मनुष्य खुद का बाप नहीं बन सकता है, बाप जैसा बन सकता है। वैसे ही आत्मा परमात्मा जैसा बन सकती है लेकिन परमात्मा नहीं।

मनुष्य आत्मा परमात्मा की याद से महात्मा, देवात्मा, पुण्यात्मा, धर्मात्मा बन सकती है लेकिन परमात्मा नहीं बन सकती। जो भी साधु, सन्त, गुरु आदि हैं उनको महात्मा कह सकते हैं लेकिन परमात्मा नहीं कह सकते। संसार में जो भी धर्म स्थापक हुए हैं उनको भी धर्मात्मा कह सकते हैं परमात्मा नहीं। जो भी देवी-देवतायें हुए हैं हम उन्हें देवात्मा कहेंगे परमात्मा नहीं क्योंकि देवी-देवतायें अनेक हैं परमात्मा एक है।

देवी-देवताओं को विश्व के सभी धर्म वाले मान्य नहीं करते देवी-देवताओं की कहानी बताते हैं। पुण्यात्मायें, धर्मात्मायें, महात्मायें कहा जाता है क्योंकि परमात्मा एक है। इसीलिए आत्मा सो परमात्मा कहना अज्ञान है।

(3) ब्रह्म ही ईश्वर है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

परमात्मा कोई तत्व नहीं है उस तत्व में रहने वाला है। जिस प्रकार मकान का मालिक होता है ठीक उसी प्रकार परमात्मा तत्व में रहने वाला है। उसकी महिमा में गाया हुआ है पार ब्रह्म में रहने वाला ईश्वर।

(4) ईश्वर सर्वव्यापी है – इस मान्यता पर लागु होती है? नहीं

सर्वव्यापकता की बात कहाँ तक सत्य है? कण-कण में भगवान है यह कहाँ तक सत्य है? यह भावनात्मक सत्य है लेकिन सैद्धान्तिक रूप में नहीं है।

भावनात्मक रूप में भी हम स्वीकार करते हैं जैसे कोई पूछते हैं कि बहनजी आप अकेले कहाँ जा रहे हो तो हम भी कहते हैं नहीं हम अकेले कहाँ जा रहे हैं भगवान हमारे साथ है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का खून करता है तो उस समय परमात्मा अन्दर बैठकर क्या कर रहा था? प्रकृति में भी गुण है, अगर वह अपने गुण को Transfer कर सकती है जैसे कि अग्नि का गुण लोहे में आ जाता है। तो कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है, कण-कण में है तो परमात्मा के गुण Transfer नहीं हो सकते? जब कोई बात होती है तो अन्जाने पन में भी हम कहते हैं कि ऊपर वाला जाने। ऊपर से वह सब कुछ जान सकता है जरूरत नहीं है परमात्मा को सबके अन्दर बैठने की।

- **उदाहरण – सूर्य का**

जैसे सूर्य एक है लेकिन उसका प्रकाश सब जगह फैलता है ठीक उसी प्रकार परमात्मा की किरणें आती है। सूर्य का प्रकाश घर के अन्दर आता है तो हम यह नहीं कहते कि सूर्य आया। किसी में गुणों का दर्शन करते हैं तो यह नहीं कहते कि परमात्मा आ गया। **गीता में कहा है – यदा-यदा ही धर्मस्य....** अगर यहाँ ही व्यापक है तो कहाँ से आयेगा? भगवान भी वायदा देकर चला गया है कि फिर से अधर्म के समय आऊँगा। अगर यहाँ होता तो उसकी Presence में इतना अधर्म होता ही नहीं था। जैसे घर में बच्चे खिलौने के लिए लड़ते हैं तो माँ-बाप क्या करते हैं? छुड़ाते हैं ना। इसी प्रकार भगवान भी लड़ाई-झगड़ा कैसे देख सकता है? इतनी संसार में मारामारी चल रही है तो क्या भगवान देख सकता है?

1. सर्वव्यापकता की भावना किस कारण से आई?

सर्वव्यापकता की भावना आने के पीछे दो कारण हैं।

① पहला कारण – प्यार

Middle age में कुछ ऐसे भक्त लोग (आत्मा) हो गए। जैसे मीराबाई इस संसार में आई इतना भगवान के प्रति बेहद प्यार था। इस बेहद प्यार के कारण मीराबाई ने कहा जहाँ देखूँ वहाँ तू ही तू है। इसी प्रकार हर कर्म करते मीराबाई को कृष्ण ही दिखाई देता था क्योंकि उसके मानसपटल पर वह छपा हुआ था।

② दूसरा कारण – डर

मध्ययुग में कुछ ऋषीमुनी भी आए, वह तपस्या करते थे जो अपनी तपस्या की शक्ति से आने वाले भविष्य को देख सकते थे। कलियुग में उन्होंने देखा कि अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार हो रहा है तो मनुष्य को पाप कर्म से कैसे बचाया जा सकता है। तो मनुष्य को पाप से बचाने के लिए उन्होंने लिख दिया कि – **'हे मानव तू जब पाप कर्म कर रहा है तो तू ऐसा नहीं समझ कि तुझे भगवान नहीं देख रहा है वह सब जगह है।'** इसलिए यह सर्वव्यापकता की भावना फैलने लगी।

- **उदाहरण – छोटे बच्चे को ड़राने का**

एक छोटे बच्चे को ड़र देते हैं कि जब वह चलने लगता है तो माँ कहती है कि तू गेट के बाहर गया तो कुत्ता उठा के ले जायेगा। लेकिन जब बच्चा बड़ा हो जाए, समझदार हो जाए तो वह सुनेगा? बल्कि वह तो हँसेगा। ठीक इसी प्रकार कलियुग शुरू हुआ तो मनुष्य की बुद्धि कम थी और जब ऋषीमुनियों ने कहा तो डर बैठ गया। Middle age (मध्ययुग) में बुद्धि थोड़ी अविकसित होती है और आज के युग में बुद्धि विकसित हो गई है। जब मनुष्य को कहा जाता है कि अरे भगवान तुझे देख रहा है तो वह हँसता है और ड़र भी कम हो गया है।

तो सर्वव्यापकता की बात भावनात्मक सत्य है।

(5) ईश्वर निराकार है – इस मान्यता पर लागु होती है? हाँ

निराकार का शाब्दिक अर्थ लिया जाए तो ना नाम है, ना रूप है। नाम, रूप के बिना संसार में कोई चीज नहीं है।

- **उदाहरण – हवा का (जो दिखाई नहीं देती है पर है)**

हवा दिखाई देती नहीं, लेकिन फिर भी उसका स्वरूप है। एक चित्रकार अपने चित्र में Cyclone का चित्र दिखा सकता है फिर वह स्वरूप दे देता है। शान्त प्रकृति दिखानी है, तो दिखाता है या नहीं? जो हवा का स्वरूप है चित्रकार ढ़ाल देता है।

स्वयं परमात्मा को कोई नाम, रूप नहीं मिला उसका भी स्वरूप है। जिस प्रकार आत्मा सूक्ष्म ज्योति है तो परमात्मा भी ज्योति है, लेकिन वह परम है। परम का मतलब Size में बड़ा नहीं लेकिन गुणों में श्रेष्ठ है, कर्त्तव्य में बड़ा है। आजकल कहते हैं ना कि तू बड़ा आदमी बन गया है माना गुण में, Post में बड़ा आदमी बनता है। ठीक उसी प्रकार परमात्मा अपने गुणों में, कर्त्तव्य में श्रेष्ठ है।

[8] निराकार ईश्वर/परमात्मा सर्वधर्म मान्य हैं और उस निराकार परमात्मा का नाम शिव है

निराकार को सभी धर्मों वाले मान्य करते हैं।

(1) भारत के हर गाँव में निराकार शिव का मन्दिर

1. भारत में विभिन्न स्थानों पर – निराकार शिव की प्रतिमा 'ज्योर्तिलिंगम्'

भारत में विभिन्न स्थानों पर निराकार की प्रतिमा की पूजा करते हैं।

① **North में अमरनाथ**

② **South में रामेश्वरम्**

स्वयं श्रीराम ने भी शिव की पूजा की। राम को जब सीता नहीं मिली तब राम ने सागर के किनारे लिंग बनाकर उसकी पूजा की। राम अगर भगवान होता था तो उसने शिव की पूजा क्यों की? राम शिव से श्रेष्ठ था क्या? राम के पास रावण को मारने की शक्ति नहीं थी? अगर राम भगवान होता था तो वह शक्तिवान नहीं था? राम ने शिव की पूजा क्यों की?

③ **मथूरा वृंदावन में गोपेश्वरम्**

श्रीकृष्ण ने किसी काल में शिव की पूजा की थी।

④ **East में काँशीविश्वनाथ**

⑤ **West में सोमनाथ** का मन्दिर है।

राजा विक्रमादित्य ने सबसे पहले शिव लिंग की स्थापना की है जिसे मोहम्मद गजनवी ने लूट लिया।

⑥ **नेपाल में पशुपतिनाथ** का मन्दिर है वहाँ पर ज्योर्तिलिंगम् की ही पूजा होती है।

◆ **ज्योर्तिलिंगम् परमात्मा का नाम – शिव**

ज्योर्तिलिंगम् माना ज्योति का आकार, जिसको भारतवासीयों ने नाम दिया **सदाशिव।** यह गुणवाचक, कर्त्तव्यवाचक नाम है। इन्सान का नाम कर्त्तव्यवाचक, गुणवाचक नहीं है। **उदाहरण –** किसी का नाम हो शान्ति और फैलाता हो अशान्ति।

◆ **शिव का अर्थ – परमपवित्र, कल्याणकारी**

शिव का अर्थ ही है परमपवित्र, जैसे छोटे बच्चे को देखकर कहते हैं कि शिवबालक है। शिव का मतलब है कल्याणकारी इसलिए सदाशिव कहते हैं।

2. भारत में सबसे पुराने से पुराने मन्दिर –12 ज्योर्तिलिंगम्

भारत में सबसे पुराने से पुराने मन्दिर 12 ज्योर्तिलिंगम् है जो तीर्थ स्थान माने जाते हैं। इन 12 ज्योर्तिलिंगम् के साथ देवताओं की कहानी जुड़ी हुई है अर्थात् देवताओं ने भी शिव की आराधना की है।

① शिव की आराधना राम ने की

जिस प्रकार राम को पूजा, आराधना करते हुए दिखाया है। राम ने शिव की पूजा इसलिए की क्योंकि स्वयं राम जानता था जिसके साथ युद्ध करने जा रहा हूँ, रावण की स्वयं की शक्ति नहीं थी। वह शिव का बहुत बड़ा भक्त था उसको घमंड था कि मुझे कोई मार नहीं सकता है।

स्वयं श्रीराम को मालूम था कि रावण के पास शिव की शक्ति है और सामना करने के लिए मुझे भी शिव से शक्ति प्राप्त करनी होगी। मैं अपनी शक्ति से रावण पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। शिव से शक्ति प्राप्त करने से शक्ति Equal होगी। फिर रावण के साथ युद्ध किया और विजय प्राप्त की।

② शिव की आराधना श्रीकृष्ण ने की

इसी प्रकार कुरूक्षेत्र में भी श्रीकृष्ण ने महाभारत की स्थापना से पहले शिव की पूजा की। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से शिव की पूजा कराई। उस मन्दिर का नाम है स्थानेश्वर। कुरूक्षेत्र में यह मन्दिर है। वहाँ की मिट्टी लाल है। खून से रंगी हुई है। बीच में ही मन्दिर की स्थापना की है। मन्दिर की स्थापना के बाद ही महाभारत युद्ध किया आज भी मौजूद है। पाण्डवों को शक्ति दिलाई। इतनी अथाह शक्ति है शिव के पास।

3. भारत में शिव के मन्दिर ऊँचाई पर

भारत में जितने भी शिव के मन्दिर हैं ऊँचाई पर होते हैं, क्योंकि वह सर्वश्रेष्ठ है।

① शिव की प्रतिमा ज्योर्तिलिंगम् – किसी आसन पर नहीं, लेकिन अन्दर भूगर्भ में

शिव की प्रतिमा किसी आसन पर नहीं होती हैं, लेकिन अन्दर भूगर्भ में होती है, क्योंकि वह गुप्त है और प्रत्यक्ष देवताओं को किया है। इसलिए उसको आसन पर नहीं दिखाते हैं, इतना गुप्त और निर्माण है इसलिए सर्वश्रेष्ठ है।

4. भारत में शिव के मन्दिरों के नाम का अन्त नाथ से

जितने भी भारत में मन्दिर है उन सबके नाम का अन्त (Ending) नाथ से होता है क्योंकि सर्व का नाथ ईश्वर है।

① शिव और शंकर एक नहीं

लेकिन भारतवासी एक थोड़ी गलती करते हैं शिव और शंकर को एक कर देते हैं जबकि दोनों में बहुत अन्तर है। दोनों का

- नाम अलग है,
- कर्त्तव्य अलग है और
- स्वरूप अलग है।

फिर दोनों एक कैसे हो सकते हैं?

अगर शंकर ही महादेव, भगवान होते तो कैलाश पर्वत पर बैठकर उसने किसकी तपस्या की? शंकर को शान्ति की आवश्यकता क्यों पड़ी?

जितने भी चित्र दिखाते हैं, तपस्वी के ही हैं। शंकर के आगे हमेशा शिवलिंग होता है अर्थात् उसने भी शिव की पूजा की। किसलिए की? आँख खोलकर सारे संसार का विनाश करना होगा तो कितनी शक्ति चाहिए? इतनी बड़ी जवाबदारी संसार के विनाश की होती है। इसलिए वह कैलाश पर्वत पर चला गया, इतनी शक्ति एकाग्रता के द्वारा प्राप्त की।

शास्त्रों की कहानी में दिखाते हैं कि जब देवताओं को Problem आते हैं, तो ब्रह्मा के पास जाते हैं फिर बाद में विष्णु के पास जाते हैं। वहाँ भी Problem Solve नहीं हुआ तो फिर कैलाश पर्वत पर शंकर के पास जाते हैं और वहाँ शंकर ध्यान में बैठा हुआ होता है अर्थात् उसने भी वह शक्ति शिव से ली।

भारत में एक गाँव भी ऐसा नहीं होगा कि शिव का मन्दिर ना हो।

② शिव – सर्व का नाथ

देवताओं की पूजा Zone wise होती है –

- South में श्री व्यंकटेश बालाजी,
- East में दुर्गा और काली,
- West में गणेश।

इससे सिद्ध होता है कि सर्व का नाथ शिव है।

(2) मुस्लिम धर्म

मुसलमान धर्म में जाओ वहाँ पर वो मूर्ती पूजा को नहीं मानते परन्तु अल्लाह को ज़रूर मानते हैं। इसलिए मक्का में काबा का पत्थर है कोई आकृती है, निराकार है। उसके पीछे कहानी है –

जब मुसलमान धर्म में परमात्मा को लेकर मतभेद हुआ तब एक आकाशवाणी हुई कि आप लड़ाई-झगड़ा नहीं करो। तब एक पत्थर ऊपर से गिरा था जब यह पत्थर ऊपर से गिरा था तब बिल्कुल सफ़ेद था। लेकिन लोगों के पाप धोते-धोते यह पत्थर भी काला पड़ गया।

जीवन में एक बार इस पत्थर का दर्शन करना चाहिए जिससे पाप नष्ट हो जाते हैं। हज यात्रा होती है और वो लोग यह हज यात्रा करते हैं। इस पत्थर को लोग चुमते हैं इसलिए इस पत्थर का नाम **संग-ऐ-असवद** दूसरा नाम है **नूरे-इलाही।** नूर अर्थात् तेज, जो तेजोमय है, जिसको भारतवासियों ने ज्योर्तिलिंगम् कहा। ज्योति माना तेज, तो दोनों एक ही हो गया।

(3) गीता

जब अर्जुन गीता का ज्ञान सून रहा था कि मैं अकर्ता, अजन्मा हूँ तब अर्जून को संशय आया – **हे प्रभु मुझे आपका असली स्वरूप दिखाओ।** तब भगवान ने उसको साक्षात्कार कराया जिसका रूप हजारों सूर्य से भी तेजोमय था। तो गीता में भी तेज का ही साक्षात्कार दिखाया है।

गीता में भी कहा गया है कि मैं परकाया प्रवेश करता हूँ। गीता में कभी श्रीकृष्ण वाच नहीं कहा है। **भगवानुवाच है – मैं मनुष्य सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ।**

(4) शिनतोनिजम – जापान में बौद्धि लोगों का एक कौम

जापान में बौद्धि लोग हैं। एक कौम है जिसका नाम (Shintonism) कहते हैं वह लोग।

3 फूट की ऊँचाई पर 3 फूट दूर बैठकर थाली में लाल रंग के पत्थर की प्रतिमा रखते हैं जिसको कहते हैं करणी का पवित्र पत्थर जिसका नाम है **चिनकोनसेकी (Chinkonseki)। इसका मतलब है जापानी भाषा में शान्ति का दाता Giver of Peace जिसका ध्यान लगाने से शान्ति मिलती है।** उन्होंने भी भगवान का ध्यान किया।

(5) क्रिश्चियन धर्म

क्रिश्चियन धर्म में कहा है बाइबल में दो भाग है Old testament & New testament. Jesus Christ के पूर्व Old testament था और Jesus Christ के बाद new testament। Old testament में 10 सिद्धान्त लिखे हुए हैं जो क्रिश्चियन को पालन करना है। यह 10 सिद्धान्त के आदेश मूसा को मिले थे, जब वह Mountain पर तपस्या, प्रार्थना के लिए गया था तो उसे साक्षात्कार हुआ था परम प्रकाश का और उस परम प्रकाश ने कहा कि मेरा नाम **'जेहोवा'** है और मेरा यह आदेश सबको देना है।

वहाँ पर दो पत्थर थे उन पत्थर पर आदेश आये। एक पत्थर में 5 Commandments आये और दूसरे में 5 Commandments आये। इसलिए चर्च में आज भी मोमबत्ती जलाते हैं। वहाँ पर छोटी-छोटी और बड़ी Candle होती है। बड़ी Candle परमात्मा का प्रतीक है और छोटी Candle आत्मा का प्रतीक है। **God is light I am son of God.**

[9] परमात्मा का रूप

(1) क्रिश्चियन धर्म में

क्रिश्चियन धर्म में परमात्मा को लाइट (light) कहा।

(2) हिन्दु धर्म में

हिन्दु धर्म में परमात्मा को ज्योर्तिलिंगम् कहा।

(3) मुस्लिम धर्म में

मुसलमान धर्म में परमात्मा को नूरे इलाही और . . .

(4) सिक्ख धर्म में

सिक्ख धर्म में गुरूनानक ने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा की महिमा की है – परमात्मा एक ओंकार, निराकार, निर्वेर, सत्‌नाम, अकालमूर्त, अजोनि।

[10] परमात्मा की Attributes

शिव के साथ शब्द दिया है शंभू आर्थात् शिवशंभू। शिवशंभू का मतलब स्वयंभू अर्थात् जिसको किसी ने भी Create नहीं किया है।

शिवलिंग के

- ♦ ऊपर तीन लकीर लगती है जो आदि-मध्य-अन्त को जानने वाला है
- ♦ बीच में जो आँख है उसका अर्थ हैं कि जो मनुष्य को ज्ञान का नेत्र देने वाला है।
- ♦ ऊपर तीन बेलपत्र दंडी के साथ चढ़ाते हैं जो इस बात का प्रतीक है कि ब्रह्मा-विष्णु-शंकर परमात्मा के साथ जुड़े हुए हैं।

[11] परमात्मा का निवासस्थान – परमधाम, ब्रह्मतत्व

परमात्मा का निवासस्थान, उसका घर कौनसा है? बहुत से लोग मानते हैं कि परमात्मा सब जगह है, सर्वव्यापी है। कितनी ऊँची भावनायें हैं। लोग कहते हैं जिधर देखूँ उधर तू ही तू है। यह भावनात्मक सत्य है।

परमात्मा का रहने का स्थान एक ही है और वह है — परमधाम, ब्रह्मतत्व।

[12] परमात्मा के परिचय की 5 बातें

तो परमात्मा के परिचय की 5 बातें इस प्रकार से हैं —

(1) नाम – सदाशिव

(2) स्वरूप – निराकार ज्योर्तिलिंगम्

(3) Attributes – सर्वगुणों में अनन्य, सर्वज्ञ, सर्वोपरी, सर्वोच्च

(4) Address – ऊपर का निवासी, परमधाम का निवासी

(5) Occupation – अधर्म का विनाश और सत्य धर्म की स्थापना

[13] होमवर्क

परमात्मा हमारा पिता है तो हमें याद करना है कि मैं आत्मा परमात्मा की सन्तान हूँ, वह मेरा रक्षक है।

[14] कल का लेसन

तो आज हमने परमात्मा के परिचय की चार बातों को देखा। कल हम परमात्मा के परिचय की पाँचवी बात को अर्थात् परमात्मा के कर्त्तव्य (Occupation) को देखेंगे।

तीसरा पाठ

परमात्मा का कर्त्तव्य
(त्रिमूर्ती)

[1] विषय प्रवेश

[2] परमात्मा का कर्त्तव्य

(1) तीन कर्त्तव्य

1. स्थापना
2. पालना
3. विनाश

[3] परमात्मा आत्मा को Create नहीं करते हैं लेकिन उसे Mold करते हैं

(1) आत्मा, परमात्मा और पाँच तत्व – तीनों Eternal हैं

[4] स्थापना, पालना और विनाश – नई सृष्टि की रचना में इन तीनों कार्यों का महत्व

(1) स्थापना का कार्य – परमात्मा कैसे करते हैं?

- उदाहरण – Cassette Recording का

(2) विनाश का कार्य किस प्रकार से होगा?

1. विनाश तीन प्रकार से होगा
   ① अणुयुद्ध (Atomic war)
   ② गृहयुद्ध (Civil war)
   ③ नैसर्गिक/प्राकृतिक आपदायें (Natural Calamities)
2. विनाश के पूर्व क्या तैयारी करनी है?

[5] प्रजापिता ब्रह्मा कौन है?

(1) त्रिमूर्ती (तीन मुख वाला)

(2) चतुरानन्द ब्रह्मा

(3) पंचानन्द ब्रह्मा

(4) प्रजापिता ब्रह्मा

[6] शंकर कौन है?

(1) शंकर के अलंकार

1. मृगछाला
2. डमरु

3. त्रिशुल

4. सर्प

5. चन्द्रमा

6. नीलकण्ठ

7. जटाओं से गंगा

8. ताण्डव नृत्य

9. भस्म

10. कोई वस्त्र नहीं दिखाते

[7] विष्णु कौन है?

(1) विष्णु के अलंकार

1. गदा

2. स्वदर्शन चक्र

3. शंख

4. कमल/पदम

5. क्राऊन/डबल ताज

6. मालायें

① 8 की माला

② 108 की माला

③ 16108 की माला

तीसरा पाठ

परमात्मा का कर्त्तव्य
(त्रिमूर्ती)

[1] विषय प्रवेश

कल हमने परमात्मा के परिचय की चार बातें ली थी। आज हम परमात्मा के परिचय की पाँचवीं बात लेंगे और परिचय की वह पाँचवी बात है – परमात्मा का कर्त्तव्य।

[2] परमात्मा का कर्त्तव्य

परमात्मा जो कर्त्तव्य करते हैं वह दिव्य करते हैं, उनके साधारण कर्त्तव्य हो नहीं सकते क्योंकि वह परम आत्मा है। परमात्मा जो स्वयं निराकार हैं वे मुख्य रूप से तीन कर्त्तव्य करते हैं और वह तीन मुख्य सूक्ष्म देवताओं के द्वारा कराते हैं, इसलिए परमात्मा को करनकरावनहार कहा गया है, वह कराने वाला है।

(1) तीन कर्त्तव्य

वह तीन कर्त्तव्य हैं –

1. स्थापना

2. पालना

3. विनाश

- ब्रह्मा द्वारा स्थापना,
- विष्णु द्वारा पालना और
- शंकर द्वारा विनाश।

[3] परमात्मा आत्मा को Create नहीं करते हैं लेकिन उसे Mold करते हैं

जैसे सुनार सोना नहीं बनाता उससे जेवर बनाता है। कुंभार मिट्टी से बर्तन बनाता है मिट्टी नहीं बनाता। मिट्टी Raw Material है।

फिर भी सुनार और कुंभार और जो भी Artist है उनको Creator कहा जाता है। वैसे ही परमात्मा Creator है लेकिन वह आत्माओं को नहीं बनाते हैं क्योंकि आत्मा Eternal है, अनादि है। Raw Material के रूप में Ready है। परन्तु आत्मा को Mold किया जा सकता है, आत्मा को परिवर्तन किया जा सकता है। कैसे? उसके स्वभाव-संस्कार को बदलकर। परमात्मा भी आत्माओं के स्वभाव-संस्कारों को बदलते हैं इसलिए उनको Creator कहा जाता है।

(1) आत्मा, परमात्मा और पाँच तत्व – तीनों Eternal हैं

संसार में तीन चीज़ें Eternal हैं –

- **आत्मा,**
- **परमात्मा और**
- **पाँच तत्व।**

यह Eternal truth है जिसे कोई नकार नहीं सकता।

[4] स्थापना, पालना और विनाश – नई सृष्टि की रचना में इन तीनों कार्यों का महत्व

परमात्मा जो नई सृष्टि रचते हैं उस रचना में तीनों कार्यों का महत्व है। जब नया बनना है तो पुराने का विनाश करना पड़ता है। ऐसे ही संसार में एक धर्म की स्थापना करनी है तो अधर्म का विनाश करना ज़रूरी है। और जब किसी चीजकी अति हो जाती है तो अन्त ज़रूर है। पाप का घड़ा भर जाता है तो वह फूटता ज़रूर है। इसलिए तीनों ही कार्यों में रचना समाई हुई है, Creator की Creation समाई हुई है।

(1) स्थापना का कार्य – परमात्मा कैसे करते हैं?

स्थापना करना माना आत्माओं में श्रेष्ठ संस्कारों की स्थापना, रचना करना। नई सतयुगी दुनिया की स्थापना करना माना मनुष्य के अन्दर नये दैवी गुण भरना।

परमात्मा कहते हैं और करना हमें है। जब मनुष्यात्मा मददगार बने तब हो सकता है। आप किसी बच्चे को कहो कि गुस्सा छोड़ दो जब तक वह मेहनत नहीं करता, खुद Realise नहीं करता तब तक वह गुस्सा नहीं छोड़ता। ऐसे ही परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं, उस ज्ञान को धारण कर हम अपने संस्कारों को Change करते हैं। इसलिए प्रजापिता ब्रह्मा को भी Creator कहा जाता है। कहते हैं कि ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची।

जैसे-जैसे दिव्य गुणों की धारणा होगी वैसे-वैसे पुराने संस्कार, आसुरी संस्कार खत्म हो जाते हैं। कभी भी पुराने संस्कारों को दबाना नहीं है, उसको जलाना है जलाकर मिटा देना है, अन्दर से खत्म करना है। जैसे-जैसे नये संस्कार आते हैं वैसे-वैसे पुराने संस्कार खत्म होते जाते हैं।

- **उदाहरण – Cassette Recording का**

जैसे Cassette Record करते समय पुराना अपने आप मिटता जाता है और नया Record होता है। यह दोनों Process Simultaneous है एक साथ ही चलती है।

जिस प्रकार पुराने संस्कार मिटते जा रहे हैं और नये आते जा रहे हैं इसी प्रकार स्थुल रूप में स्थापना और विनाश का कार्य साथ-साथ चल रहा है और विनाश की तैयारी शुरू है।

(2) विनाश का कार्य किस प्रकार से होगा?

1. विनाश तीन प्रकार से होगा

① अणुयुद्ध (Atomic war)
② गृहयुद्ध (Civil war)
③ नैसर्गिक/प्राकृतिक आपदायें (Natural Calamities)

2. विनाश के पूर्व क्या तैयारी करनी है?

ऐसी घड़ी विनाश की आयेगी, इसलिए आप अपने अन्दर दैवी संस्कारों को धारण कर लो। परमात्मा इशारा दे रहे हैं – अब यह पूरा सृष्टि रूपी मकान टूटने वाला है। अभी भी देर नहीं हुई है। अब भी सम्भल जाओ। Now or Never। विनाश तो होगा, यह निश्चित है।

हम आपको ड़रा नहीं रहे है, सावधान कर रहे हैं। इसलिए परमात्मा हमें ताकतवर बना रहे हैं क्योंकि आने वाली घड़ी में हम डरे नहीं।

यह संसार का नियम है पुराना जो है वह नया बनता ही है। परमात्मा हमें सावधान कर रहे हैं। इसलिए हमें आदेश देते हैं कि अब चलने की तैयारी करनी है।

क्या तैयारी करनी है? अपने अन्दर अच्छे संस्कारों की तैयारी कितनी है? वहाँ न कोई Bank balance चाहिए, न कोई जेवर चाहिए। वहाँ चाहिए हमारे अच्छे कर्म। इसलिए परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा को चुना हम सबको ज्ञान देने अर्थ और उसमें भी मुख्य ज्ञान है आत्मा समझकर मुझे याद करो। गीता में इसको एक ही शब्द में कहा है **'मनमनाभव'।** याद करने से विकर्मों का खाता समाप्त होगा और सुकर्म बनते जायेंगे।

[5] प्रजापिता ब्रह्मा कौन है?

(1) त्रिमूर्ती (तीन मुख वाला)

लोग समझते है ब्रह्मा माना तीन मुख वाला। क्या किसी मनुष्य के तीन-चार मुख हो सकते हैं? तो यह Symbolic है। परमात्मा शिव जिस तीन देवताओं की रचना करते है इसलिए ब्रह्मा को त्रिमूर्ती कह देते।

(2) चतुरानन्द ब्रह्मा

परमात्मा का सन्देश चारों ही दिशाओं में दिया जाता हैं, इसलिए ब्रह्मा को **चतुरानंद** कहा जाता है।

(3) पंचानन्द ब्रह्मा

पाँच युगों से गुजरते है इसीलिए ब्रह्मा को **पंचानंद** कहा जाता है।

(4) प्रजापिता ब्रह्मा

अभी हम जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं वे पहले दादा लेखराज के नाम से जाने जाते थे और सिंध हैदराबाद कराची में रहते थे। बचपन में ही उनके पिताजी की मृत्यु हो गयी थी। वह अपने चाचा के साथ रहते थे। वह एक हीरों के व्यापारी थे। केवल बुद्धि से उन्होंने हीरों का व्यापार शुरू किया।

सन् 1936 साल की बात है कि जब उनकी आयु 60 वर्ष की थी और जब उनके अपने घर में गुरू आए हुए थे। गुरू प्रवचन कर रहे थे कि अचानक दादा लेखराज को खिंच हुई, उनको Internal Feeling हुई तब वह उठ करके अपने कमरे में चले गए। उन्होंने देखा कि एक प्रकाश था और आवाज आयी –

निजानंद स्वरूपम् शिवोहम्
ज्ञान स्वरूपम् शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम्...

.........यह उनको सुनायी दिया।

वे धनवान होते भी कभी मांसाहार या शराब नहीं लेते थे। वह बहुत दानी स्वभाव के थे। रोज सोना दान करते थे। रहमदिल स्वभाव के थे। वह कभी भी कॉकटेल पार्टीज में नहीं जाया करते थे। वह पार्टी कभी भी अपने घर में Arrange नहीं करते थे। श्रीनारायण की वह बहुत भक्ति करते थे, गीता का अध्ययन करते थे। दो घण्टे भक्ति करना उनका Fix था।

ऐसे में परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। धीरे-धीरे परमात्मा ने स्पष्ट किया।

- एक बार मुम्बई में विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ।

- एक बार कलकत्ते में विनाश का और स्थापना का साक्षात्कार हुआ

शुरू में ओम की ध्वनी लगाते थे। जैसी ही ओम की ध्वनी लगाते तो अनेकों को साक्षात्कार होता था। फिर दादा लेखराज ने **ओम् मंडली** के नाम से उसको चलाया। 1950 में Mount Abu में आये। 1951 में सेवा शुरू हुयी, सबसे पहले दिल्ली में सेवाकेन्द्र खुला।

[6] शंकर कौन है?

शंकर है हमारे **तपस्या का प्रतीक।**

शास्त्रों में कहते है शंकर ने तीसरा नेत्र खोला और विनाश हो गया। लेकिन यह तपस्या का प्रतीक है। हम आत्माओं को ज्ञान का दिव्य नेत्र मिलता है, बुद्धि में स्पष्ट होता है तब जीवन में हम धारण कर तपस्या करते है। काम, क्रोध को हमारे अन्दर आने न देना यह हमारी तपस्या है। जैसे-जैसे आत्मायें ज्ञान धारण करती हैं तो अज्ञानता का विनाश होता है। शंकर कोई मनुष्य नहीं है यह हम सभी आत्माओं की तपस्या का प्रतीक है। वास्तव में यह हमारी निशानी है। हमें इनके जैसा तपस्वी बनना है।

(1) शंकर के अलंकार

1. मृगछाला

जिसके ऊपर तपस्या करता है, तपस्या की निशानी है।

2. ड़मरु

उनका ड़मरु ड़म ड़म बोले, अगम-निगम के भेद खोले अर्थात परमात्मा ने कहा है कि आत्मायें इस संसार में कैसे आती है और जाती है यह भेद खोला है।

3. त्रिशुल

तीन तरीके से विनाश होता है –

① **अणुयुद्ध (Atomic war)**

② **गृहयुद्ध (Civil war)**

③ **प्राकृतिक आपदायें (Natural calamities)**

त्रिशुल उसका प्रतीक है।

4. सर्प

विकारों को वश में करने का प्रतीक है।

5. चन्द्रमा

सम्पूर्णता, शीतलता की निशानी है।

6. नीलकण्ठ

परमपिता परमात्मा हमारा सारा विष अर्थात पॉच विकार ले लेते हैं।

7. जटाओं से गंगा

परमात्मा शिव ब्रह्मा के द्वारा उनके मस्तक पर विराजमान होकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं।

8. ताण्डव नृत्य

वास्तव में मन के अन्दर चलने वाले द्वंद या विनाशकारी की निशानी।

9. भस्म

देहभान समाप्त करना है।

10. कोई वस्त्र नहीं दिखाते

अशरीरी की निशानी।

[7] विष्णु कौन है?

विष्णु कौन है? विष्णु अर्थात No विष। लक्ष्मी और नारायण का Combined स्वरूप।

(1) विष्णु के अलंकार

1. गदा

रॉयल्टी की निशानी है और समझदारी से अपने संस्कार को समाप्त करना है, जीतना हैं। परमात्मा से योग लगाकर विकारों पर विजय प्राप्त करने का प्रतीक। गदा नीचे दिखाई है क्योंकि विजय प्राप्त की है इसलिए।

2. स्वदर्शन चक्र

कालचक्र में आत्मा की यात्रा का बोध कराता है। स्व का दर्शन होता है कि मै आत्मा क्या थी?

3. शंख

परमात्मा का सन्देश विश्व की चारों ही दिशाओं में पहुँचाने का सूचक हैं।

4. कमल/पदम

घर-गृहस्थ में रहते हमें न्यारा ओर प्यारा बनना हैं। पवित्रता का प्रतीक हैं। जैसे कमल का फूल किचड़ में होते हुए भी न्यारा और प्यारा होता है ठीक इसी प्रकार हमें भी इस किचड़ रूपी संसार में रहते हुए न्यारा-प्यारा और पवित्र रहना हैं। क्योंकि बिना पवित्रता के सम्पूर्णता आ नहीं सकती ये भगवान ने कहाँ हुआ हैं।

5. क्राऊन/डबल ताज

लाइट और माइट का ताज।

6. मालायें

① **8 की माला**

② **108 की माला**

③ **16108 की माला**

आप कौनसी माला का दाना बनोगे?

चौथा पाठ

कल्पवृक्ष (झाड़)

[1] विषय प्रवेश

[2] धर्म और कर्म

(1) धर्म और कर्म – इन दोनों के समन्वय की आवश्यकता

(2) धर्म का अर्थ

(3) धर्म और अधर्म के बारे में लोगों की मान्यता

[3] कल्पवृक्ष – धर्म के उत्तम और विकृत स्वरूप का इतिहास / 5000 वर्ष के सृष्टि का इतिहास का दर्शाता है

(1) कल्पवृक्ष का बीजरूप –निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव

(2) कल्पवृक्ष का मूल – संगमयुग को दर्शाता है

- उदाहरण – एक ही **Hospital** में एक ही **Room** में दो अलग-अलग धर्म के बच्चों को

(3) कल्पवृक्ष का तना – सतयुग और त्रेतायुग को दर्शाता है

1. सतयुग और त्रेतायुग के एक धर्म के स्थापना का कार्य कब होता है?

① एक धर्म वाली सतयुगी-त्रेतायुगी दुनिया में कौन आयेंगे?

♦ सतयुगी दुनिया का गायन सभी धर्म में

- हिन्दु धर्म
- मुस्लिम धर्म
- क्रिश्चियन धर्म
- सिक्ख धर्म

② एक धर्म वाली दुनिया में सारे विश्व की राजसत्ता किसके हाथ में होगी?

③ एक भाषा वाली दुनिया में कौन आयेंगे?

④ एक कुल वाली दुनिया में कौन आ सकेंगे?

⑤ एक मत वाली दुनिया में कौन आ सकेंगे?

2. सतयुग और त्रेतायुग में एक धर्म

① आदि सनातन देवी-देवता धर्म

② आदि सनातन देवी देवता धर्म का अर्थ

③ आदि सनातन देवी देवता धर्म की शक्ति अपार

(4) कल्पवृक्ष की मुख्य शाखायें – द्वापरयुग को दर्शाती हैं

1. द्वापरयुग – हिन्दु धर्म और उसका चार वर्णों में विभाजन, विभाजन के कारण धर्म की शक्ति में कमी, साथ ही अन्य धर्मों का आगमन

① हिन्दु धर्म का चार वर्णों में विभाजन

② अन्य धर्मों का आगमन

③ हिन्दु धर्म का चार वर्णों में विभाजन होने के कारण धर्म की शक्ति में कमी

2. द्वापरयुग का पहला मुख्य धर्म – ईस्लाम धर्म

3. द्वापरयुग का दूसरा मुख्य धर्म – बौद्ध धर्म

4. द्वापरयुग का तीसरा मुख्य धर्म – क्रिश्चियन धर्म

(5) कल्पवृक्ष की अनेक उलझी हुई शाखायें और उपशाखायें – कलियुग को दर्शाती हैं

1. सन्यास धर्म

- **जैन धर्म – कल्पवृक्ष में इसका चित्रण नहीं**
- **हिन्दु धर्म के पतन का कारण – वर्णाश्राम**

2. सिक्ख धर्म

3. मुस्लिम धर्म

[4] किस युग में कौनसा धर्म

[5] संगमयुग पर परमात्मा आकर धर्म का सही अर्थ बताते हैं

[6] वर्तमान समय महाभारी महाभारत का युद्ध का समय चल रहा है

(1) महाभारत और पाण्डव, कौरव व यादव

1. पाण्डव कौन?
2. कौरव कौन?
3. यादव कौन?

(2) आपको किस सेना से जुड़ना है?

(3) विजय पाण्डवों की है

[7] आज के लेसन का सार

चौथा पाठ

कल्पवृक्ष (झाड़)

[1] विषय प्रवेश

आज के इस Lesson में हम मुख्य धर्मो का इतिहास समझेंगे। वास्तव में असली धर्म, सत धर्म कौनसा था? उसमें से अनेक धर्म कैसे हुए? धर्म, अधर्म का स्वरूप कैसे बनते गये? और फिर अनेक अधर्मो का अन्त होकर पूनः सतधर्म की स्थापना कौन और कैसे करते है? हर युग में धर्म का स्वरूप क्या होता है? – इस विषय पर आज हम देखेंगे।

[2] धर्म और कर्म

मनुष्य के जीवन में दो बातें महत्त्वपूर्ण है – एक है धर्म और दूसरा है कर्म।

(1) धर्म और कर्म – इन दोनों के समन्वय की आवश्यकता

हम कर्म को भी छोड़ नहीं सकते है। मनुष्य आत्माये चैतन्य शक्ति है इसलिए सृष्टि कर्मक्षेत्र पर आकर शरीर धारण करने के बाद आत्मा एक क्षण भी कर्म किये बिगर रह नहीं सकती, इसलिए कर्म हमें करना है।
इस प्रकार धर्म को भी हम छोड़ नहीं सकते क्योंकि धर्म की धारणा बिगर हम कर्म को भी श्रेष्ठ नहीं बना सकते। तो जीवन में आवश्यकता है कर्म की भी और धर्म की भी। बल्कि कर्म और धर्म के समन्वय की आवश्यकता है, जरूरत है।

(2) धर्म का अर्थ

आज हमने धर्म को क्रियाओं में, शास्त्रों में, आश्रमों में सीमित कर दिया है। वास्तव में धर्म का अर्थ है धारण करना। धृ धातू से धर्म शब्द आया है।
तो आज के Lesson में हम धर्म के बारे में विस्तार से समझेंगे।

(3) धर्म और अधर्म के बारे में लोगों की मान्यता

कुछ लोग ऐसा मानते है संसार के अनादि काल से ही धर्म और अधर्म के झगड़े चलते आ रहे है। धर्म और अधर्म, दैवी और आसुरी वृत्ति के संघर्ष चलते ही रहते हैं। वह कहते हैं कृष्ण के समय भी कंस था, राम के समय भी रावण था। तो अनादि काल से यह धर्म, अधर्म के संघर्ष चलते आ रहे हैं, ऐसा लोग मानते है।
यहाँ हमें विवेक से समझने की आवश्यकता है कि धर्म के नाम पर लड़ाई, झगड़ा युद्ध ही है तो हम धर्म को क्यों मानते हैं। व्यक्ति अपने गृहस्थ संसार के संघर्ष से थक जाता है, तो आखिर धर्म की शरण में जाता है। अगर धर्म के नाम पर भी संघर्ष है, तो क्यों हम धर्म के शरण में जायें? जरूर धर्म का कोई ऐसा समय रहा है जब धर्म के द्वारा मनुष्य को पूर्ण सुख मिला है, तब तो आज भी हम धर्म की शरण में जाते है।

[3] कल्पवृक्ष – धर्म के उत्तम और विकृत स्वरूप का इतिहास / 5000 वर्ष के सृष्टि का इतिहास का दर्शाता है

धर्म का वो उत्तम स्वरूप कब रहा था और कैसे विकृत होता चला गया? — वह सारा इतिहास इस चित्र में बताया है। यहाँ संसार की तुलना वृक्ष के साथ की गयी है। 5000 वर्ष को कल्प कहते है। कल्पवृक्ष माना 5000 वर्ष के सृष्टि का इतिहास।

(1) कल्पवृक्ष का बीजरूप –निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव

इस कल्पवृक्ष का बीजरूप है स्वयं निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव। जैसे स्थूल बीज में भी सारा वृक्ष समाया हुआ है। एक छोटे से बीज से कितने बड़ा वृक्ष का विस्तार होता है। इस कल्पवृक्ष का चैतन्य बीज है परमात्मा शिव जो आकर के हमे आदि-मध्य-अन्त का पूरा इतिहास बताते हैं। वह इसके नॉलेजफूल है, इस दृष्टि से उनको बीजरूप कहा जाता है। ऐसे नहीं है कि परमात्मा से सारा संसार बनता है, लेकिन परमात्मा बीजरूप इसलिए है क्योंकि वह आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं।

(2) कल्पवृक्ष का मूल – संगमयुग को दर्शाता है

सृष्टि कल्पवृक्ष के नीचे कौनसा युग दिखाया है? कल्पवृक्ष के नीचे संगमयुग दिखाया हुआ है।

इस कल्पवृक्ष के बारे में शास्त्रों में कहानी है कि ऐसा एक वृक्ष है जिसके नीचे बैठकर मनुष्य जो संकल्प करे वह पूर्ण/सिद्ध हो जाते हैं।

कल्पवृक्ष के बारे में कहानी बताते हैं कि एक व्यक्ति था और वह गर्मी के दिनों में मुसाफ़िरी करके जंगल पार कर रहा था। थका हुआ था बड़ी धूप थी। उसको बहुत प्यास लगी थी, तो वह एक वृक्ष के नीचे जाकर बैठता है। तो उसको विचार आता है कि बहुत प्यास लगी है कहीं पानी मिल जाये तो अच्छा होगा, तो फिर पानी का घड़ा आ जाता है। फिर विचार आता है भुख लगी है, तो भोजन की थाली आ जाती है। फिर संकल्प आता है कि आराम कर लूँ तो बहुत अच्छा होगा, तो खटिया आ जाती है। फिर संकल्प आता है कि जंगल है कोई हिंसक प्राणी आकर खा न जाये, तो शेर आकर खा गया। अच्छे संकल्प किये तो अच्छे सिद्ध हुये।

वास्तव में ऐसा कोई स्थूल वृक्ष हो नहीं सकता। ऐसा संसार में वृक्ष हो तो लोग उस वृक्ष के नीचे जाकर अवश्य बैठते। लेकिन यह संसार वृक्ष की बात है।

दूसरा, वृक्ष के नीचे बैठना यह संगमयुग की बात है, जिस संगमयुग में संकल्प सिद्धी का वरदान है। क्योंकि इस युग में स्वयं परमात्मा धर्म स्थापक बनकर सतधर्म की स्थापना का कार्य करते हैं। और, सतधर्म की स्थापना के लिये निमित्त प्रजापिता ब्रह्मा, मातेश्वरी जगदम्बा और राजयोगी ब्रह्माकुमार और ब्रह्मकुमारीयों के द्वारा स्वयं परमात्मा शिव सत धर्म की स्थापना का कार्य करते हैं और सतधर्म की स्थापना के लिये हमे परमात्मा आत्मधर्म में स्थित करते हैं, स्वधर्म में स्थित करते हैं।

और, हम सभी आत्माओ का स्वधर्म है शान्ति और पवित्रता। तो परमात्मा आकर हमें देह धर्म से मुक्त कर आत्म धर्म में स्थित करते हैं। उसके लिये विश्व की सभी धर्म की आत्माओं को परमात्मा यही आदेश देते हैं कि अब देह के धर्म को भूल जाओ। चाहे हिन्दु धर्म वाला हो, मुस्लिम धर्म वाला हो, क्रिश्चियन धर्म वाला हो यह सब देह के धर्म है क्योंकि जो जिस परिवार में शरीर धारण करता है तो उसका वह धर्म हो जाता है।

- **उदाहरण – एक ही Hospital में एक ही Room में दो अलग-अलग धर्म के बच्चों को ......**

मान लो एक ही Hospital में एक ही Room में दोनो धर्म के बच्चों को एक ही साथ रख दिया जाए, तो पहचान सकते हो? नहीं, क्योंकि जैसे ही व्यक्ति Body conscious में आता है वैसे धर्म कहता है कि मैं इस धर्म का हूँ, इस जाति का हूँ। आज सारा विश्व देह के धर्म में, जाति में फँसा हुआ है इसलिए परमात्मा आकर के सतधर्म की स्थापना के लिये हम सभी आत्माओं को यही आदेश देते हैं कि अब देह धर्म को भूल जाओ और आत्मधर्म में स्थित हो जाओ। **संगमयुग की इस परिवर्तन वेला में परमात्मा की आज्ञा को मानकर जो देहधर्म को छोड़कर आत्मधर्म में स्थित होते हैं तो दैवी धर्म की दुनिया में आ सकते हैं।**

(3) कल्पवृक्ष का तना – सतयुग और त्रेतायुग को दर्शाता है

सतयुग और त्रेतायुग दोनो को वृक्ष के तने में बताया है। जैसे वृक्ष का तना एक ही होता है, मज़बूत होता है और उस पर सारे वृक्ष का विस्तार होता है। तो ऐसे ही इस सतयुगी दुनिया का गायन करते हैं जहाँ एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक कुल, एक मत होती है।

1. सतयुग और त्रेतायुग के एक धर्म के स्थापना का कार्य कब होता है?

ऐसी सतयुगी दुनिया का कार्य संगमयुग में होता है।

① एक धर्म वाली सतयुगी-त्रेतायुगी दुनिया में कौन आयेंगे?

परमात्मा के इस सतधर्म के स्थापना के कार्य में जो मददगार बनते हैं वे ही सतयुग, त्रेतायुग की प्रालब्ध के अधिकारी बनते है। इसलिए अभी जो देह धर्म को भूल आत्मधर्म में स्थित होने की साधना करेगा वही सतधर्म की दुनिया में आ सकेगा। ऐसे नहीं केवल हिन्दू सतयुग में आयेंगे।

♦ **सतयुगी दुनिया का गायन सभी धर्म में –**

- **हिन्दु धर्म**

भारतवासी हिन्दु भाई-बहनें उसको वैकुण्ठ, सुखधाम, कृष्णपूरी, सतयुगी दुनिया, स्वर्ग कहते हैं।

- **मुस्लिम धर्म**

मुस्लिम भाई-बहनें उसे जन्नत, बहिश्त, Garden of Allah कहते हैं।

- **क्रिश्चियन धर्म**

क्रिश्चियन उसे Heaven, Paradise कहते हैं

- **सिक्ख धर्म**

सिक्ख भाई-बहनें उसे सचखण्ड कहते हैं।

सतयुग में सभी धर्म की आत्माओं में से वह आत्मायें आयेंगी जिन्होंने अपने देहधर्म को छोड़कर आत्मधर्म को स्वीकारा। परमात्मा जो सतधर्म स्थापना करते है उसमें सभी धर्म की आत्मायें आयेगी लेकिन उसमें से भी वही आत्मायें जो अभी कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करेंगे, स्वराज्य अधिकारी बनेंगे, वही आयेंगे।

② एक धर्म वाली दुनिया में सारे विश्व की राजसत्ता किसके हाथ में होगी?

आज के राज्य को पंचायती राज्य कहते हैं। सतयुग में सारे विश्व की राजसत्ता एक के हाथ में होती है।

③ एक भाषा वाली दुनिया में कौन आयेंगे?

उस एक भाषा वाली दुनिया में वही आयेंगे जो अभी भाषा भेद को भूलकर आत्मा की भाषा में आयेंगे। आत्मा की भाषा है साइलेन्स की, प्यार की। इस विश्व विद्यालय में आप देख सकते हैं अनेक धर्मो की आत्मायें हैं, अनेक जाति वाले भाई-बहनें हैं फिर भी सारे भाई-बहनें मिलकर काम करते हैं।

हमारे विदेश के सेवाकेन्द्र पर एक काली है तो दूसरी गोरी है, तो कोई जापानी हैं लेकिन सभी मिलकर के कार्य करते हैं। बच्चा माँ के प्यार को आँखों से समझता है। जो भाषा भेद को भूल स्नेह की भाषा, साइलेन्स की भाषा जानते हैं वही आयेंगे।

④ एक कुल वाली दुनिया में कौन आ सकेंगे?

एक कुल वाली दुनिया में, उस एक देवताई कुल की दुनिया में वो ही आ सकेंगे जो देह के, जाति के, कुल के भेद को छोड़कर ईश्वरीय कुल की मर्यादाओं को अपनायेंगे।

⑤ एक मत वाली दुनिया में कौन आ सकेंगे?

और, एक मत वाली दुनिया में कौन आ सकेंगे? कोई मन मत चला रहा, कोई शास्त्र मत, गुरू मत। तो अनेक प्रकार की मतों को छोड़कर एक परमात्मा की श्रीमत पर जो चलेगा, श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत पर चलेगा, वही एक मत वाली दुनिया में जा सकेगा।

कहने का भावार्थ यह है कि संगमयुग में स्थापना के समय मन, वचन, कर्म से जो पुरुषार्थ करेंगे और तन-मन-धन से जो सहयोग देंगे उसी की प्रालब्ध हमें सतयुग में मिलेंगी।

यह वह समय है जो हम संकल्प करेंगे वह सिद्ध होंगे। अगर हम परमात्मा की याद में रहकर शुभचिन्तन करेंगे तो वह सफल होंगे। अगर हम अपने चिन्तन को दुनियावी चीजों में लगायेंगे तो वो Waste हो जायेंगे। इसलिए यह संकल्प सिद्धी का समय है, परमात्मा से जो गुण, शक्ति, ज्ञान प्राप्त करना है तो वह मन-बुद्धि से ही प्राप्त कर सकतें हैं। तो यह Most Important & Most valuable समय है।

अब तक धर्म की स्थापना का कार्य धर्मपिताओं ने किया उन्होंने अपने-अपने धर्म का ज्ञान दिया लेकिन उस ज्ञान को जीवन में धारण नहीं किया। जैसे ही वह गये तो पतित होना शुरू हो गया लेकिन परमात्मा जिस धर्म की स्थापना करते है तो वह ज्ञान को केवल सुनते नहीं लेकिन धारण करते हैं, आचरण में लाते हैं।

2. सतयुग और त्रेतायुग में एक धर्म

① आदि सनातन देवी-देवता धर्म

सतयुग, त्रेतायुग में एक सतधर्म होता है जिसका नाम है आदि सनातन देवी देवता धर्म।

② आदि सनातन देवी-देवता धर्म का अर्थ

आदि अर्थात् जो सृष्टि के प्रारम्भ से ही चलता है।

सनातन अर्थात् जो चलता ही रहता है, जिसके विनाश से पूर्व परमात्मा पूनः स्थापन करते हैं, जिस धर्म की स्थापना को जीवन में लाने से हम देवी-देवता ऊँची कक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

③ आदि सनातन देवी-देवता धर्म की शक्ति अपार

तो सतयुग और त्रेतायुग में धर्म अपनी सत्यधर्म में होता है। Religion is might – वह इस सतधर्म के लिए कहा है। क्योंकि इस धर्म के प्रभाव से सारे विश्व में सुख, शान्ति, पवित्रता होती है, अन्य कोई धर्म से नहीं होती है।

इस धर्म की शक्ति इतनी है जो सतयुग और त्रेतायुग में अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और सुखकारी राज्य होता है। यहाँ धर्म जीवन में समाया हुआ है अर्थात् हम धर्मश्रेष्ठ कर्मश्रेष्ठ होते हैं। यहाँ धर्म का कर्म से अलग स्वरूप नहीं है। सतयुग में धर्म के नाम, ना ज्ञान है, ना योग है, ना गुरु है, ना शास्त्र है, ना मन्दिर है। यहाँ धर्म धारणा स्वरूप है। राजसत्ता भी धर्म की मर्यादाओ में चलने वाली है। यहाँ परमात्मा का भी ज्ञान नहीं है, भगवान को याद करने का भी कोई पुरुषार्थ नहीं है क्योंकि परमात्मा की याद से जो सर्वोत्तम पद प्राप्त कर सकते हैं यह हमारी प्रालब्ध का समय है। जन्म बाइ जन्म 2 युग अर्थात् 2500 वर्ष हम अपनी प्रालब्ध भोगते जाते हैं। यहाँ कोई हम नया पुरुषार्थ नहीं करते हैं, तो स्वाभाविक है त्रेता के अन्त में हमारी प्रालब्ध समाप्त होने लगती है। तो सतयुग और त्रेतायुग में धर्म का स्वरूप है सतधर्म।

(4) कल्पवृक्ष की मुख्य शाखायें – द्वापरयुग को दर्शाती हैं

त्रेता के अन्त में द्वापर के प्रारंभ में पुनः हम अपने आत्म स्वरूप को भूल जाते है, देह-अभिमान में आ जाते हैं उसके कारण विकारों में चले जाते हैं, वाममार्ग में चले जाते हैं। पवित्रता हमारी समाप्त हो जाती है, यहाँ हम अपने को देवता नहीं कहला सकते हैं।

1. द्वापरयुग – हिन्दु धर्म और उसका चार वर्णों में विभाजन, विभाजन के कारण धर्म की शक्ति में कमी, साथ ही अन्य धर्मों का आगमन

द्वापर युग से हम खुद को हिन्दु कहने लगते हैं। इसलिए शास्त्रों में कहा है देवतायें वाममार्ग में चले गये माना उल्टे मार्ग पर चले गये। तो द्वापर युग से आरम्भ कर दिया देवता धर्म को हिन्दु धर्म कहना।

① हिन्दु धर्म का चार वर्णों में विभाजन

उसके बाद का इतिहास तो आप सब जानते हो कि कैसे हिन्दु धर्म में मुख्य चार वर्ण हो जाते हैं। ये चार वर्ण हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र।

उसमें ब्राह्मण वर्ण जो है यह मुख्य वर्ण बन जाता है। तो शास्त्र रचना, मन्दिर रचना, यज्ञ, तप, हवन यह सारी धर्म नाम पर क्रियायें हैं वह द्वापर युग से शुरू होता है। आम जनता न समझ सके ऐसे संस्कृत भाषा में साहित्य रचना थी इसलिए आम दुनिया के समझ से बाहर था। इसलिए ब्राह्मण मुख्य बन गये। धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, अन्धश्रद्धा शुरू होती है।

② अन्य धर्मों का आगमन

उसके साथ-साथ विश्व में अन्य धर्मो का आगमन आरम्भ हो जाता है।

एक तरफ़ पश्चिम में इब्राहीम के द्वारा ईस्लाम धर्म की स्थापना हुई। ईस्लाम धर्म Laws सिखाता है। ईस्लाम में नियम के बहुत चुस्त हैं **'मरो या मिटो'**, लेकिन पालन करना ही है। जब विस्तार हो जाता है तो व्यवस्था को बनाये रखने के लिये नियम मर्यादायें बनाने पड़ते हैं।

③ हिन्दु धर्म का चार वर्णो में विभाजन होने के कारण धर्म की शक्ति में कमी

सतयुग में जो एक सतधर्म था वह द्वापर युग से चार हिस्से में विभाजित हो जाता है। स्वाभाविक है कि एक चीज चार हिस्सो में विभजित हो जाये तो उसकी शक्ति में अन्तर पड़ जाता है। जो सनातन देवी-देवता धर्म था आखिर प्रालब्ध भोगते-भोगते कर्मो का खाता क्षीण होता है, तो हम पुनः Body Conscious में आ जाते हैं। त्रेता के अन्त में पुनः आत्मा Body Conscious में आ जाती है। जन्म बाइ जन्म हम अपनी प्रालब्ध भोगते हैं और नया कोई पुरुषार्थ हम करते नहीं है। तो पुण्य का खाता कम हो जाता है।

परिवर्तन संसार का नियम है। देह-अभिमान के कारण विकारी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती है, मुख्यतः हम पवित्रता को गवाँते हैं। पवित्रता की शक्ति क्षीण होती है।

द्वापर में हम स्वयं को हिन्दु कहलाने लगे। **इतिहास कहता है कि सिन्धु के किनारे रहनेवाले हिन्दु।** सिन्धु को English में कहते हैं Indus उससे हिन्दु कहलाने लगे, फिर हिन्द नाम देश का पड़ा।

वास्तव में धर्म का नाम या तो धर्मस्थापक के नाम से आता है, जैसे क्राइस्ट ने धर्म स्थापित किया तो उसको क्रिश्चियन कहते हैं या तो धर्म सार रूप उनका नाम होता है, जैसे कि जैन उनकी मुख्य शिक्षा से जिन माना जितेन्द्रिय जीता। हिन्दु शब्द से ना हमे धर्मस्थापक का ख्याल आता है, ना धर्म का सार दिखाई देता है। वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है लेकिन द्वापर से हिन्दु कहलाने लगते है।

2. द्वापरयुग का पहला मुख्य धर्म – ईस्लाम धर्म

अब द्वापर युग से हमारे पास इतिहास है कि कैसे विश्व के अन्दर और भी धर्म की स्थापना हुई। सर्व प्रथम इब्राहीम द्वारा ईस्लाम धर्म की स्थापना हुई। उस समय समाज में जो आवश्यकता थी उसी अनुसार धर्म की स्थापना हुई। कोई भी व्यवस्था ढ़ीली पड़ती है तो नियम बनाने पड़ते हैं।

3. द्वापरयुग का दूसरा मुख्य धर्म – बौद्ध धर्म

पूर्व तरफ़ हिन्दु धर्म में भी चार वर्ण होते हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र। उसमें से ब्राह्मण धर्म मुख्य कार्य करने लगते हैं। धर्म के नाम पर सारे क्रियाकाण्ड शुरू हो जाते हैं। इसलिए वह प्रजा पर राज्य करने लगते हैं। शास्त्रों की बातों को साधारण मनुष्य समझ नहीं सकते थे। मुख्य अन्धश्रद्धा, भय, हिंसा यह द्वापर युग से हिन्दु धर्म में बढ़ने लगा। तब बौद्ध धर्म की स्थापना हुई।

गौतम बुद्ध ने क्रियाकाण्ड को महत्व नहीं दिया, उसने आत्मा और परमात्मा को महत्व नहीं दिया, उसने जीवन के मूल्यों के बारे में, कर्मो को श्रेष्ठ बनाने के बारे में, करूणा, अहिंसा, दया यह सिखाया, वास्तविक जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए। लेकिन आज हम देखते हैं कि बुद्ध के जाने के बाद सबसे अधिक प्रतिमा बुद्ध की बनी। **हेनयान और महायान यह बौद्ध धर्म के पंथ पड़े।** मानव मन की एक सनातन जिज्ञासा है कि आखिर हम कौन हैं? परमात्मा कौन हैं?

4. द्वापरयुग का तीसरा मुख्य धर्म – क्रिश्चियन धर्म

वेस्ट में क्राइस्ट द्वारा क्रिश्चियन धर्म की स्थापना हुई। उस समय दमन, तनाव का वातावरण था। तो क्राइस्ट ने प्रेम और भाईचारे की बातें सीखायी। लेकिन जैसे ही क्राइस्ट गये आज वही क्रिश्चियन आपस में लड़ रहे हैं। मुख्य दो पंथ में विभाजित हुये – **(1) कैथेस्टर और (2) प्रोटेस्टर**।

(5) कल्पवृक्ष की अनेक उलझी हुई शाखायें और उपशाखायें – कलियुग को दर्शाती हैं

1. सन्यास धर्म

भारत में द्वापर युग में भल Body Conscious बने लेकिन साधन, सम्पत्ती, धनाढ्य थे। चन्द्रगुप्त का इतिहास तो बताता है कि भारत में धन, सम्पत्ती, वैभव बहुत था। तो इस वैभव का असर धर्म के अधिकारियों पर भी आने लगा। वह भी विलासी बनने लगे, चरित्र शिथिल बनने लगे।

शंकराचार्य ने देखा की ऋषीमुनी भी विलासी होने लगे, तो उसने संन्यास मार्ग स्थापन कर हिन्दु धर्म को पुनः जीवित किया।

लोगो में वैराग्य लाने के लिये और भी बातें उन्होने कही हैं, जैसे कि नारी नर्क का द्वार है, नारी सर्पणी है। लेकिन यह बाते सत्य नहीं है। वास्तव में जीवन जी रहे हैं, संसार वास्तविक है उसको मिथ्या कैसे कह सकते हैं। लेकिन उन्होंने जो बात कही वह सिद्धान्तिक रूप से सत्य नहीं थी। अगर जगत मिथ्या है तो अपने को जगतगुरू कहलाने वाले वह स्वयं ही मिथ्या है। संन्यास मार्ग जो शुरू हुआ उसमें मुख्य त्याग की भावना सीखायी।

♦ जैन धर्म – कल्पवृक्ष में इसका चित्रण नहीं

कल्पवृक्ष में जैन धर्म नहीं दिखाया क्योंकि वह हिन्दु धर्म का ही एक मार्ग है। जैन कोई धर्म नहीं है। जैन माना जितेन्द्रिय स्थिति प्राप्त करने का मार्ग।

महावीर अपनी आत्मिक स्थिति में मग्न थे तो उन्हें अपने शरीर का भान नहीं था। लेकिन आज जैन लोग उल्टा कर रहे है।

जितेन्द्रिय बनने की सहज विधि यहाँ सीखायी जाती है।

♦ हिन्दु धर्म के पतन का कारण – वर्णाश्राम

हिन्दु धर्म के पतन का कारण है वर्णाश्रम। वर्ण माना आत्मा की Qualities के आधार पर काम विभाजित किया, निश्चित किया। तो पहले वर्णाश्रम था, लेकिन Body conscious होने से जातिभेद शुरू हुआ। जाति शरीर से सम्बन्धित है।

2. सिक्ख धर्म

उसके बाद गुरूनानक आते हैं और सिक्ख धर्म की स्थापना करते हैं। वह हमें भाईचारा सीखाते हैं।

3. मुस्लिम धर्म

फिर इस्लाम धर्म को मजबूती का, शक्तिशाली का जो स्वरूप दिया वह मोहम्मद पैगंबर ने। तब से मुस्लिम कहलाने लगे। ईस्लाम का अर्थ है शान्ति। उसके बाद नियमों के पालन की जबरदस्ती होने लगी।

अगर यह धर्म स्थापक नहीं आते तो यह विश्व कबसे विकारों के मार्ग में चला जाता। उस समय समाज को जो आवश्यकता थी उस मूल्य को लेकर वे धर्म स्थापित किये। उन्होंने मर्यादित समाज और Limited समय में परिवर्तित किया।

लेकिन वह धर्मात्मा थे परमात्मा नहीं। धर्म अपनी मूल धारणा की शक्ति खो चूका है। आज धर्म के नाम पर अनेकानेक युद्ध हुये हैं। क्योंकि धर्मस्थापक ने अपनी-अपनी बात सुनायी इसलिए विचार भेद हो गये, मत-मतान्तर हुयी। धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े हुये हैं। 70 से भी ज्यादा युद्ध धर्म के नाम पर हुये।

आज हम देख रहे हैं कि भक्ति भी स्वार्थ के लिए करते हैं। इसलिए कलियुग में धर्म, अधर्म का स्वरूप ले लेता है।

[4] किस युग में कौनसा धर्म

तो इस प्रकार हम देखते हैं कि

- सतयुग में — आदि सनातन देवी देवता धर्म होता है,
- त्रेतायुग में — आदि सनातन देवी देवता धर्म होता है,
- द्वापर युग में — देह धर्म होता है और
- कलियुग में — अधर्म होता है।

[5] संगमयुग पर परमात्मा आकर धर्म का सही अर्थ बताते हैं

परमात्मा आकर धर्म का सही अर्थ बताते हैं। धर्म माना धारण करना, कमल फूल समान जीवन जीना। Practical धर्म माना विकारों से आत्मिक पवित्र जीवन — यही धर्म है। इसलिए परमात्मा का विश्व के सभी धर्म की आत्माओं को सन्देश है कि पवित्र बनो, योगी बनो। जो पवित्र बनेगा वही पवित्र दुनिया का मालिक बनेगा। फिर से परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश कर धर्म की व्याख्या बताते हैं। पवित्र आत्मायें ही पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।

एक तरफ धर्म की स्थापना का कार्य चल रहा है और आज लाखो भाई-बहनों ने अपना जीवन धर्म के स्थापना अर्थ समर्पित किया है। इन समर्पित भाई-बहनों में से जो विकारों पर पूरा विजय प्राप्त करते हैं वही विजयमाला का दाना बनते हैं।

जो भक्ति में माला फेरते हैं वह उन आत्माओं की यादगार है जिन्होंने सत धर्म के लिये अपना जीवन समर्पित किया, विकारों पर विजय प्राप्त किया। इसलिये इसको विजयमाला, वैजयन्ती माला कहते हैं। लेकिन अब हमें माला फेरना नहीं है, लेकिन माला का मणका बनना है। विकारों पर विजयी, सच्ची विजयी आत्मा बनना है।

[6] वर्तमान समय महाभारी महाभारत का युद्ध का समय चल रहा है

एक तरफ वर्तमान समय सत धर्म का कार्य चल रहा है और दूसरी तरफ अधर्म के महाविनाश की तैयारी भी हो रही है। मुख्य तीन रीति से इस अधर्म की दुनिया का परिवर्तन होगा। तो यह कौनसा समय है? इस समय यही महाभारी महाभारत का युद्ध का समय है।

(1) महाभारत और पाण्डव, कौरव व यादव

महाभारत में क्या दिखाते हैं? एक तरफ धर्म की सेना दूसरी तरफ अधर्म की सेना थी। हम महाभारत देखते हैं, पढ़ते हैं लेकिन पढ़कर सो जाते हैं। पुनः महाभारत की स्थिति बन गयी है। हमारे में से ही कोई कौरव है, कोई पाण्डव है, कोई यादव है।

1. पाण्डव कौन?

भगवान जब इस सृष्टि पर आते हैं तब उनकी आज्ञा पर चलने वाले, उन्हें पहचानने वाले, उन्हें साथी सारथी बनाने वाले ही पाण्डव हैं। उनके लिए कहावत है कि विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति।

2. कौरव कौन?

और इस परिवर्तन की वेला में भगवान को न पहचानने वाले, देह-अभिमान में रहने वाले, विनाशकाले विपरीत बुद्धि वाले ही कौरव है। इसलिए भारतवासी अनेक आत्मायें जो आपस में ही लड़-झगड़ कर विनाश को पायेंगे। विशेष भारत का महाविनाश प्राकृतिक आपदायें और गृहयुद्ध Civil war से ही होगा।

3. यादव कौन?

युरोपवासी हैं यादव, जिन्होंने विनाशकाले विनाशक शस्त्रों का निर्माण किया है। विशेष अमेरिका, आस्ट्रेलिया और युरोप का विनाश अणुबम से होगा। उन्होंने इतने शस्त्र बनाये हैं वह Show case में रखने के लिये नहीं।

वास्तव में कोई स्पेशल कौरव, पाण्डव, यादव नहीं हो गये लेकिन ये हमारे ही यादगार है।

(2) आपको किस सेना से जुड़ना है?

आज आपको निर्णय करना है कि आपको कौनसी सेना में जुड़ना है।

(3) विजय पाण्डवों की है

हाँ, इतना हम जरूर कहेंगे विजय पाण्डव की है। भगवान की आज्ञा पर चलने वाले बहुत कम हैं इसलिए पाण्डव को 5 दिखाते हैं। विजय पाण्डवों की है क्योंकि भगवान उनका साथी है। हम हजारों को सन्देश देते हैं इसमें से सैकड़ो लोग कोर्स करने आते हैं लेकिन ब्रह्माकुमार कोई विरला ही बनता है।

[7] आज के लेसन का सार

आज के लेसन (Lesson) का सार यही है कि वर्तमान समय ही अधर्म का समय है।

हमारा लक्ष्य केवल ज्ञान सुनाना नहीं है बल्कि हर लेसन पर पुरुषार्थ करना है।

पाँचवाँ पाठ

सृष्टि चक्र
(गोला)

[1] विषय प्रवेश

[2] समय के विषय में

(1) समय के विषय में भगवानुवाच

(2) समय के विषय में दुनिया में कही जा रही बातें/कहावतें

[3] समय कौनसा परिवर्तन चाहता है और समय का चक्र क्या है?

- उदाहरण – पतंग का

[4] सृष्टि चक्र (समय का चक्र) का विषय महत्त्वपूर्ण विषय क्यों है?

[5] सृष्टि चक्र का सम्बन्ध जीवनचक्र के साथ

[6] चक्र का अर्थ

[7] कुदरत के विविध चक्र

(1) दिन और रात का चक्र

(2) ऋतुओं का चक्र

(3) जन्म-पुनर्जन्म का चक्र

(4) जल चक्र

(5) कालचक्र

[8] हर चक्र की चार अवस्थायें

(1) दिन और रात के चक्र की चार अवस्थायें

(2) ऋतुओं के चक्र की चार अवस्थायें

(3) जन्म-पुनर्जन्म के चक्र की चार अवस्थायें

(4) सृष्टि चक्र/कालचक्र की चार अवस्थायें – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग

1. कलियुग के बाद क्या होगा?

[9] हर चक्र की एक अवधि होती है

(1) दिन और रात के चक्र की अवधि – 24 घण्टे

(2) साल के चक्र की अवधि –365 दिन

(3) कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष

1. कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष – यह ईश्वर द्वारा बताया हुआ रहस्य है
2. कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष – यह बात हर धर्म में कोई न कोई रूप में है

① हिन्दु धर्म में
② इस्लाम धर्म में
③ ईसाई धर्म में
④ नास्त्रोंडोमस

[10] सृष्टि चक्र – स्वास्तिका के रूप में

(1) स्वास्तिका शब्द का अर्थ

(2) स्वास्तिका – शुभ का चिन्ह

- कहानी – एक राजा और मंत्री की जो जंगल में शिकार खेलने जाते हैं
- प्रसंग – एक भाई कि जिसका एक्सीडेण्ट हो गया

(3) स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड से शुरू होता है

[11] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का पहला भाग – सतयुग

(1) सतयुग – स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड साइड पर

(2) सतयुग – भगवान-भगवतियों की दुनिया

(3) सतयुग – सत्यता का युग

(4) सतयुग – सूर्यवंशियों की दुनिया

1. सूर्यवंशी क्यों कहते है?
2. सूर्यवंशियों में सोलह कलाएँ कौनसी थी?

(5) सतयुग – श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज

[12] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का दूसरा भाग –त्रेतायुग

(1) त्रेतायुग – स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड साइड पर लेकिन नीचे की ओर

(2) त्रेतायुग – चौदह कलाधारी

1. त्रेतायुग –चौदह कला क्यों कहा
2. त्रेतायुग में कलाएँ कम क्यों हुई जबकि सतयुग में तो इतने अच्छे कर्म किये?

(3) त्रेतायुग – श्री राम और श्री सीता का राज, चन्द्रवंशीयों का राज

[13] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का तीसरा भाग – द्वापर युग

(1) द्वापर युग – स्वास्तिका का हाथ लेफ्ट हैण्ड साईड पर घुम गया

(2) द्वापर युग – दो पुरों का आरम्भ/जीवन में अनराइटीयसनेस और राइटीयसनेस दोनों साथ-साथ चलने लगे

(3) द्वापर युग – द्वैतता का राज

(4) द्वापर युग – दुःख का समय आया और भगवान को याद करना व उनसे माँगना चालु हुआ

1. हमारे पूर्वज बन्दर थे या देवता थे?
   - उदाहरण – कपड़े का

♦ मॉडर्न साइन्स और डार्विन की थ्योरी
   - प्रसंग – बंदरों का

(5) द्वापरयुग – दुःखी होकर परमात्मा को पुकारने पर परमात्मा ने धर्म पिताओं को भेजा

(6) द्वापरयुग – इब्राहीम, बुद्ध तथा क्राइस्ट इन तीन धर्म पिताओं का आगमन

1. इब्राहीम

① लॉज़ टू गवर्न ह्युमन लाइफ (Laws to govern human life)

② धर्म पुस्तक

2. महात्मा बुद्ध

① कर्म ही धर्म है

② दया ही धर्म है

③ अहिंसा परमोधर्म

♦ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का जहाँ प्रचार हुआ वहीं भ्रष्टाचार ज्यादा, क्यों?

3. क्राइस्ट

① ट्रूथ इज गॉड (Truth is God)

② लव इज गॉड (Love is God)

♦ क्राइस्ट की शिक्षाओं का जहाँ प्रचार हुआ वहीं नफरत/लड़ाई-झगड़ा ज़्यादा, क्यों?

[14] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का चौथा भाग – कलियुग

(1) कलियुग – स्वास्तिका का हाथ लेफ्ट हैण्ड साईड पर ऊपर की ओर

(2) कलियुग – कलह क्लेष वाला युग/अधर्म का युग

(3) कलियुग – धर्म की अति ग्लानि होने पर अर्थात् अधर्म के बढ़ने पर उसका विनाश कर वापस कलियुग से सतयुग को ले आने के लिए परमात्मा का आगमन

(4) कलियुग अभी बच्चा नहीं है लेकिन थोड़ा-सा बचा हुआ है

(5) कलियुग की अन्तिम निशानियों का वर्णन शास्त्रों में

1. कलियुग के अन्तिम समय की कई निशानियों में से एक निशानी
   - उदाहरण – कलियुग की अति का/मदर टेरेसा मदर कैसे बन गयी इस बात का

(6) परमात्मा ने ज्ञान दिया लेकिन विनाश की डेट और टाइम नहीं बताया

(7) युग परिवर्तन में अभी बहुत कम समय बाकी रह गया है

[15] स्वास्तिका/सृष्टि चक्र के परिवर्तन का समय – संगमयुग

(1) संगमयुग में भगवान सहयोग माँगते हैं

(2) भगवान का सन्देश – पवित्र बनो, योगी बनो

(3) पवित्रता की शक्ति – आत्मरक्षा का साधन

(4) आत्मरक्षा के लिए भगवान की मदद पाने की पात्रता – आत्मशुद्धिकरण

- उदाहरण – सीता का

(5) आत्मशुद्धिकरण का समय – संगमयुग का समय

[16] अन्तिम निर्णय आपके अपने ऊपर

पाँचवाँ पाठ

सृष्टि चक्र
(गोला)

[1] विषय प्रवेश

अभी का जो विषय है वह ज्ञान के गुह्य रहस्य को स्पष्ट करता है और वह है कालचक्र का रहस्य।
समय का चक्र कैसे फिरता है? आज के युग में सभी को अधिक जिज्ञासा समय के विषय में है, क्योंकि कई प्रकार की Predictions भी सुनते रहते है। कई कहते हैं प्रलय हो जायेगा आदि-आदि इसीलिए समय के विषय में जिज्ञासा होती है।

[2] समय के विषय में

(1) समय के विषय में भगवानुवाच

परिवर्तन संसार का नियम है। परिवर्तन होता आ रहा है, प्रलय नहीं होती है – यह भगवानुवाच है।

(2) समय के विषय में दुनिया में कही जा रही बातें/कहावतें

समय के विषय में दुनिया में बहुत कहा जाता है। आज समय के महत्व को सब जान गए हैं। इसीलिए दुनिया में Time management के कोर्सेस लेते हैं।
समय के विषय में बहुत-सी कहावतें हैं – समय बड़ा बलवान है, समय के आगे किसी का जोर नहीं चलता, समय के अनुकूल हो जाओ, समय जो मांग करता है उसका Respond दो अगर Respond नहीं देंगे तो समय कठोर बन जाता है, काल रूप धारण कर लेता है इसलिए समय को काल कहा जाता है। इसलिए समय को पहचानते हुए समय के अनुकूल चलना समझदारी है।

इसलिए कहावत है –
If you do not change according to time, time will kill you.
समय के अनुसार परिवर्तन को नहीं अपनाया तो समय आपको नष्ट कर देगा।
If you don't change according to time, time will force you to change.
समय चाहता है परिवर्तन करें लेकिन हमारी इच्छा नहीं है परिवर्तन की तो समय मजबूर करेगा करने के लिए। अगर इच्छा नहीं है तो समय दर्दनाक हो जाता है।

[3] समय कौनसा परिवर्तन चाहता है और समय का चक्र क्या है?

यह समय तीव्र गति के परिवर्तन का समय है। दुनिया में तो मानते ही हैं कि समय तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है, तो हम भी समय के साथ-साथ क़दम पर क़दम रखकर परिवर्तन करें, नहीं तो समय नष्ट कर देगा। लेकिन कई बार इन्सान समझ नहीं पाता है कि समय क्या परिवर्तन चाहता है, तब मनुष्य मूँझता है, दुविधा में पड़ जाता है।

समय के साथ क़दम पर क़दम मिलाकर नहीं चलते है इसलिए परिस्थिति Create हो जाती है और वह हमको ही भोगनी पड़ती है। जितना हम समय के पीछे हो जाते हैं तो परिस्थिति आगे हो जाती है, तब समस्यायें आती हैं। जितना परिस्थिति आगे हो जाती तब व्यक्ति परिस्थितियों का शिकार हो जाता है। जब व्यक्ति समझ नहीं पाता तब Frustration आता है।

इसीलिए हमारे मन में कई सवाल उत्पन्न होते हैं – बार-बार मेरे साथ ही ऐसा क्यों? दूसरों के साथ क्यों नहीं? मेरा नसीब ऐसा क्यों? इतने सवालों की क्यू लग जाती है। उसका उत्तर देने वाला कोई नहीं। उसका एक ही उत्तर है कि हम समय के साथ क़दम से क़दम मिलाकर नहीं चलते। इसीलिए कई लोग समय पर छोड़ देते हैं।

- **उदाहरण – पतंग का**

जब पतंग उड़ती है तो ड़ोर को खिंचते हैं। जब खास करके दूसरों की पतंग क्रास करते हैं तब पतंग की ढ़ील छोड़नी पड़ती है। हमारी Life भी ऐसी है, समय की ड़ोर को तीव्र करके पुरुषार्थ में तीव्र उड़ जाना है। कभी-कभी हमको भी कुछ बातें Let go करनी पड़ती हैं, समय पर छोड़ना पड़ता है, समय की ढ़ील छोड़नी पड़ती है।

हमें किसी को पाठ पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। हमने उसका बिगाड़ा नहीं फिर मेरे साथ ही ऐसा क्यों करता है? ऐसे कई सवाल हैं जिसके कारण Frustration निर्माण होता है। आपको पाठ पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, समय पर छोड़ दो। समय उसको आपे ही पाठ पढ़ायेगा। जहाँ खुद के परिवर्तन की बात है वहाँ ड़ोर को खिंचो और पुरुषार्थ के बारे में ढ़ील नहीं छोड़नी है। स्वयं के परिवर्तन के लिए ड़ोर को खिंचो, जहाँ दूसरों की बात आती है वहाँ ढ़ील छोड़ दो। तो हमारे मन के अन्दर के सवालों का जवाब यह सृष्टि चक्र है।

[4] सृष्टि चक्र (समय का चक्र) का विषय महत्त्वपूर्ण विषय क्यों है?

समय का चक्र कैसे घूमता है अगर इस बात को हम समझ लें, इसकी स्पष्टता हो जाए तो जीवन की उलझी हुई कई बातें जिसको कहा जाता है Mysteries of life, जो Unsolved हैं अभी तक Solved नहीं हुई है, ऐसी Unsolved Mysteries of life को स्पष्ट कर देती हैं। जीवन जीने का जो तरीका है शायद वह बदल जाता है इस एक बात के रहस्य को समझ लेने से। इसीलिए इस विषय को कहा महत्वपूर्ण विषय।

[5] सृष्टि चक्र का सम्बन्ध जीवनचक्र के साथ

समय का Connection हमारे जीवन के साथ है इसीलिए समय को भी कहा गया चक्र – कालचक्र और जीवन को भी कहा जाता चक्र – जीवनचक्र। जीवनचक्र, कालचक्र के साथ कैसे जुड़ा हुआ है और इसका जो Connection है यह समझना हमारे लिए बहुत ही Important है आज के युग में खास करके।

[6] चक्र का अर्थ

वैसे ही इसको कहा हुआ है चक्र। चक्र अर्थात् जिसकी कोई आदि या अन्त नहीं है, जो नित्य चलता है उसको कहा गया है चक्र।

[7] कुदरत के विविध चक्र

कुदरत के जितने भी चक्र बने हुए है कोई चक्र आप देखेंगे बन्द नहीं होते है, नित्य चलते रहते है।

(1) दिन और रात का चक्र

दिन और रात का चक्र है नित्य चलता है, कब शुरू हुआ था मालुम नहीं। सुबह 6 बजे शुरू हुआ था, रात को 12 बजे चालु हुआ था, यह मालुम नहीं। यह तो मनुष्य ने अपने जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए रात को 12 बजे के बाद दूसरा दिन आरम्भ करना यह सोच लिया और इस प्रकार अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर लिया। परन्तु चक्र 12 बजे शुरू हुआ यह तो नहीं कह सकते? मालुम ही नहीं कब चालू हुआ। चलता ही रहता है, दिन के बाद रात, रात के बाद दिन।

(2) ऋतुओं का चक्र

इसी तरह देखो ऋतुओं का चक्र है चलता ही रहता है।

(3) जन्म-पुनर्जन्म का चक्र

इसी तरह मनुष्य जन्म-पुनर्जन्म का चक्र है वह चलता रहता है।

(4) जल चक्र

कुदरत की Cycle में भी देखो पानी जब Evaporate होता है, सागर से बादल बनते हैं वह बादल बरसते हैं। वह पानी नदियों के माध्यम से फिर से सागर में पहुँचता है, Evaporation चलता रहता है। इस कुदरत की Cycle की भी ना Begining है ना End है, नित्य चलता है।

(5) कालचक्र

तो कोई भी चक्र ले लो, कोई भी चक्र बन्द नहीं होता है। इसीलिए कालचक्र भी चलता रहता है।

[8] हर चक्र की चार अवस्थायें

हर चक्र की चार अवस्थायें होती है, हर चक्र के चार Phases होते हैं, जिसमें से उसको गुजरना पड़ता है।

(1) दिन और रात के चक्र की चार अवस्थायें

दिन और रात का जो चक्र है उसकी भी चार अवस्थायें है – सुबह, दोपहर, शाम, रात्रि फिर सुबह।

(2) ऋतुओं के चक्र की चार अवस्थायें

ऋतुओं में भी चार अवस्थायें है।

(3) जन्म-पुनर्जन्म के चक्र की चार अवस्थायें

मनुष्य जन्म-पुनर्जन्म के चक्र की भी चार अवस्थायें है – बचपन, युवा, गृहस्थ व वृद्ध।

(4) सृष्टि चक्र/कालचक्र की चार अवस्थायें – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग

इसी तरह यह कालचक्र जो घुमता है वह भी नित्य चलता है। उसकी भी चार अवस्थायें हैं जिसको कहा जाता है – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग।

1. कलियुग के बाद क्या होगा?

कलियुग के बाद क्या होगा? फिर से सतयुग।

रात के बाद क्या होगा? फिरसे दिन होता है यह चक्र भी नित्य चलता है। यह विनाश नहीं है, परिवर्तन है। इतनी घोर रात्रि सुनहरे सुबह में कैसे बदल जाती है? कोई इन्सान का काम है? अपने आप कुदरत ने इस प्रकार की सेटींग की है कि घोर रात्रि भी धीरे-धीरे सुनहरे सुबह में बदल जाती है। कोई रोकना चाहे तो भी रोक नहीं सकता।
ऋतुओं के चक्र में जो परिवर्तन आता है वह नैचुरल है। दिन को जल्दी लाना चाहे तो भी ला नहीं सकता है, रात को रोकना चाहे तो भी रोक नहीं सकता।
इस तरह समय का चक्र है, कोई सोचे यह कलियुग पूरा ही न हो या यह कलियुग जल्दी पूरा हो जाये और सतयुग जल्दी आ जाये, नहीं। ना कोई इन्सान का काम है यह करना, ना किसी के रोकने से यह रूकने वाला है।
परिवर्तन की प्रक्रिया नित्य चलती है और यह चलते-चलते कैसे बदल जायेगा शायद हमको पता भी न चले। जैसे रात्रि से सुबह कब हो जाती है, सुर्योदय कब हो जाता है। कई लोग सोये रहते हैं दिखाई नहीं पड़ता है। उन्होंने सुर्योदय देखा ही नहीं है। जब उठते हैं तो देखते हैं सूर्य चढ़ गया है। इसी तरह कलियुग बदल जाता है तो पता भी न चले इसीलिए कहते हैं परिवर्तन की प्रक्रिया नित्य है, चलती रहती है।

[9] हर चक्र की एक अवधि होती है

हर चक्र की देखो एक अवधि (Duration) होती है जिसमें वह चक्र पूरा होता है। चलता तो रहता ही है लेकिन फिर भी एक अवधि है।

(1) दिन और रात के चक्र की अवधि – 24 घण्टे

जैसे दिन और रात का चक्र है 24 घण्टे का। 24 घण्टे में यह चक्र पूरा होता है। कहाँ से आया 24 घण्टा? जिसने भी बनाया किस हिसाब से 24 घण्टे ले आये? कभी हमने प्रश्न पूछा कि यह 24 घण्टे कहाँ से आये? 60 सेकेण्ड का एक मिनट और 60 मिनट का एक घण्टा। यह 60 क्यों फिगर ले आये? 100 सेकेण्ड का एक मिनट बनाते थे तो नहीं चलता था क्या? चल सकता था ना? या 100 मिनट का एक घण्टा बनाते थे तो नहीं चलता था? चलता था। लेकिन कभी हमने प्रश्न नहीं पूछा, उसको स्वीकार कर लिया। किसी ने कहा 60 सेकेण्ड का एक मिनट, हाँ ठीक है। 60 मिनट का एक घण्टा, ठीक है। 24 घण्टे का यह चक्र है, हाँ यह भी ठीक है। No arguments, No questioning.

(2) साल के चक्र की अवधि –365 दिन

इसी तरह साल का चक्र 365 दिन का। अब देखो हर धर्म के कैलेण्डर्स अलग-अलग है। क्रिश्चियन कैलेण्डर के हिसाब से 365 दिन आ गये और हिन्दु कैलेण्डर के हिसाब से 360 दिन होते हैं, तो पाँच दिन कहाँ गये? यह हम नहीं कह सकते कि वह गलत है। हिन्दु कैलेण्डर के हिसाब से जरा भी आगे पीछे नहीं होता है। दुनिया का कारोबार चलाने के लिए इंग्लिश कैलेण्डर को मानते हैं और त्यौहार मनाने के लिए हिन्दु कैलेण्डर को मानते हैं। दोनों कैलेण्डर को Accept किया है लेकिन पाँच दिन का Difference है। इस पर हमने कभी सवाल नहीं किया, हिन्दु कैलेण्डर भी प्राचीन विज्ञान के अनुसार बना हुआ है। स्वीकार किया ना।

(3) कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष

इसी तरह काल चक्र भी नित्य चलता है। इसकी भी एक अवधि है जो है 5000 साल।

1. कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष – यह ईश्वर द्वारा बताया हुआ रहस्य है

परन्तु इस कालचक्र की अवधि 5000 साल सुनते हैं तो पूछते हैं कि किसने कहा? कहाँ लिखा हुआ है? कौनसे शास्त्र में बताया है? यह हम नहीं मानते। यह चक्र को हम नहीं मानते हैं, तो लोग क्या कहेंगे? नहीं मानो, हमारा क्या जाता है।

24 घण्टा है – यह वास्तविकता है अगर तुम्हें मानना है तो मानो। अपने जीवन को सुव्यस्थित कर लेंगे। नहीं मानता है तो वह उसका Problem है। वह अपने जीवन को सेट नहीं कर पायेगा अगर नहीं स्वीकार करता है तो। इसीलिए स्वीकार कर लेते हैं लोग।

इसी तरह कोई कहे कि 5000 साल को मैं नहीं मानता हुँ, तो नहीं मानो। किसने कहा मानो? यह आपके ऊपर है, लेकिन यह एक Divine revelation है। ईश्वर द्वारा बताया हुआ रहस्य है और रहस्य के लिए कोई Proofs नहीं होते हैं। आपको स्वीकार करना हो तो कर लो, नहीं करना हो तो आप अपने जीवन में उलझी हुई बातें सुलझा नहीं सकेंगे। जब स्वीकार कर लेते हैं इस रहस्य को तो कई उलझी हुई बातें सुलझने लगती हैं। इसीलिए उसको जानना और उसके महत्व को समझना अति आवश्यक है क्योंकि इसका अपना जीवन के साथ गहरा ताल्लुक है।

2. कालचक्र की अवधि – 5000 वर्ष – यह बात हर धर्म में कोई न कोई रूप में है

5000 साल की बात वैसे हर धर्म में कोई न कोई रूप में कही हुई है।

① हिन्दु धर्म में

हिन्दु धर्म के हिसाब से देखा जाए तो महाभारत युद्ध हुआ था, कितना साल हुआ? 5000 साल। 5000 साल पहले महाभारत युद्ध हुआ था और उस समय भगवान के यह महावाक्य थे – यदा-यदा हि धर्मस्य....

यह समय को अगर देखें तो फिर से वही महाभारत का काल, अधर्म का युग आ चुका है। घोर धर्म की ग्लानि होती जा रही है। इसलिए गीता के महावाक्य अनुसार जैसे कहा जाता है कि घर-घर में जब महाभारत हो जायेगा तब वास्तविक महाभारत का समय समझ लेना। इस समय हम देखते हैं, हर घर में क्या चलता है? महाभारत कभी ना कभी चलता है कि नहीं चलता है? वही समय आ चुका है। पापाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार का युग आ चुका है। इसलिए गीता के अनुसार वह महाभारत का समय फिर से आ चुका है। 5000 साल हो गये।

महाभारत युद्ध द्वापर में नहीं हुआ। अगर द्वापर युग में यह युद्ध होता तो द्वापर के बाद कौनसा युग आता है? कलियुग आता है। अगर द्वापर में गीता का ज्ञान दिया तो सत धर्म आना चाहिए। तो क्या गीता के ज्ञान से अधर्म आया? वास्तव में द्वापर के अन्त में यह युद्ध नहीं हुआ। कलियुग के अन्त में हुआ है, तभी तो अधर्म का नाश और सत धर्म की स्थापना होगी।

② ईस्लाम धर्म में

इसी तरह अगर देखा जाए ईस्लाम धर्म में भी कहा हुआ है कि हर 5000 साल के बाद कयामत का समय आता है, स्पष्ट है और कई Predictions यही बता रहे हैं कि वह 5000 साल अब पूरे होने जा रहे हैं। इसलिए कयामत का समय फिर से आ रहा है। जब सब कब्रें खुलेगी और सबका हिसाब-किताब लिया जायेगा और उस अनुसार उनको सजा दी जायेगी, उनके धर्म के हिसाब से वह समय फिर से आ रहा है

③ क्रिश्चियन धर्म में

इसी तरह क्रिश्चियन धर्म के हिसाब से भी देखा जाये तो दिखाया जाता है कि क्राइस्ट के 3000 साल पूर्व सृष्टि पर Paradise था, स्वर्ग था। 3000 साल पूर्व Paradise था और ईसाई धर्म की स्थापना होकर 2000 साल हो गये। इस तरह कुल 5000 साल हो गये।

④ नास्त्रादेमस

नास्त्रादेमस ने कहा है – तीसरे महायुध्द के बाद Golden dawn आनेवाला है, तो वह समय फिर से आ रहा है। इसीलिए हर धर्म में Indirect way में कोई ना कोई रूप में यह कहा हुआ है कि 5000 साल का कुछ महत्व है।

तो यह Revolution परमात्मा द्वारा किया हुआ है कि सृष्टिचक्र की अवधि 5000 वर्ष की है और उसके चार Phases हैं – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। कलियुग के बाद वह चक्र फिर से फिरते रहना है।

[10] सृष्टि चक्र – स्वास्तिका के रूप में

लेकिन इस सृष्टि चक्र को दिखाया हुआ है स्वास्तिका के रूप में। स्वास्तिका हर शुभ कार्य के लिए दिखाते हैं। भारतवासियों में इसकी बहुत बड़ी मान्यता है कि यह शुभ का चिन्ह है।
लेकिन अगर कोई सवाल पूछे कि यही शुभ का चिन्ह क्यो है? ऐसे कोई उल्टा निकाल दे तो कहेंगे कि यह उल्टा है, इसे मिटा दो सुल्टा निकालो। इसको ही सुल्टा माना गया।
कहा जाता है हिटलर ने भी स्वास्तिका का प्रयोग किया था लेकिन वह हमेशा उल्टा निकालता था और वह उसको सुल्टा कहता था और भारतवासी इसको सुल्टा कहते है। अब सही कौन है?
भारतवासी क्या कहते हैं कि उसने उल्टा निकाला ना इसलिए उसका सत्यानाश हुआ। इसीलिए यह सुल्टा है। अब यह तो कोई Logic नहीं हुआ कि इसलिए यह सुल्टा है। लेकिन इसके पिछे भी एक अर्थ है।

(1) स्वास्तिका शब्द का अर्थ

स्वास्तिका शब्द दो शब्दों से बना है सु और अस्ति। सु यानि शुभ, अस्ति माना जो है। जो सदा ही शुभ है, इसीलिए उसको शुभ का चिन्ह कहते हैं। श्री गणेश भी इसको कहते हैं।

(2) स्वास्तिका – शुभ का चिन्ह

यह शुभ का चिन्ह कैसे है?
गीता के महावाक्यों में एक महावाक्य है जो कई घरो में भी लगाते हैं। जब भगवान ने अर्जुन को कहा –
हे अर्जुन! जो हुआ वह अच्छा, जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होनेवाला है वह ... भी अच्छा। इसलिए तुम निश्चिन्त रहो, तुम चिन्ता नहीं करो।
इसीलिए कई लोग इस महावाक्य को घर में लगाते हैं क्योंकि आजकल सारी चिन्ताओं का कारण यह है कि हम इस महावाक्य को भूल जाते हैं यानि यह कालचक्र की एक क्षण भी जिसको हम कहे अशुभ है, यह कहना हमारी अज्ञानता को स्पष्ट करता है कि कितनी हमारे अन्दर अज्ञानता है। नहीं तो भगवान ने जब कहा कि कुछ भी अशुभ नहीं है, जो गई क्षण वो अच्छी, जो आई है वह भी अच्छी और जो आनेवाली है वह और भी अच्छी। निश्चिन्त रहो, तुम कुछ भी नहीं कर रहे हो। समय का चक्र चल रहा है और उसको चलना ही है। इसमें एक क्षण भी अशुभ नहीं है।

यह कहना ही बहुत बुरा हो गया – ऐसा तो नहीं होना चाहिए। माना हम सिर्फ वर्तमान को देखते है इसीलिए हमने यह शब्द उच्चारण किये ना। हम भूतकाल को रेफर कर रहे है, भविष्य को समझ पा रहे है इसीलिए हमारे मुख से निकल जाता है – यह तो नहीं होना चाहिए था। वो कहानी याद आती है, आप लोगो ने सुनी होगी। एक राजा की कहानी है।

- **कहानी – एक राजा और मंत्री की जो जंगल में शिकार खेलने जाते हैं**

राजा जंगल में शिकार खेलने गया। शिकार खेलते-खेलते उसकी अंगुली कट गयी। जब अंगुली कट गयी तो उसका एक मंत्री साथ में था। मंत्री बड़ा होशियार था, बड़ा ज्ञानी था इसीलिए मंत्री ने कह दिया जो हुआ वह अच्छा हुआ।

अब राजा महा अज्ञानी था इसीलिए इस रहस्य को समझ नहीं पाया। उसको गुस्सा आ गया। अरे मेरी अंगुली कट गयी, इतना खून बह रहा है और तुम कहता है जो हुआ अच्छा हुआ। क्या अच्छा हुआ? बड़ा गुस्सा आया और जेल में डाल दिया। उसने सिपाही को कहा ले जाओ इसको, मुझे इसको नहीं देखना। ले गये उसको।

राजा अकेला जंगल में रहा। जंगली लोगों ने उसको पकड़ लिया और उसे बलि चढ़ाने के लिये ले जा रहे थे, लेकिन जब वह देवी को बलि चढ़ाने ले जा रहे थे तो पंडित ने देखा कि इसकी अंगुली नहीं है। कहा कि यह तो खंडित बलि है। उसका पूरा अंग नहीं है, एक अंग कटा हुआ है। देवी खुश नहीं होंगी यह बलि देने से और ही मुसीबत आ जायेगी। छोड़ दो उसको तब राजा को छोड़ दिया।

तब राजा को ज्ञान हुआ कि मंत्री की बाते बड़ी ज्ञानयुक्त थी। मैं उस ज्ञान के रहस्य को समझ नहीं पाया। जाते ही उसने अपने मंत्री को छुड़ा दिया। माफ करना मैं तेरी ज्ञानयुक्त बातों को, विवेकपूर्ण बातों को समझा नहीं। मेरे से गलती हो गयी जो तुमको इतनी सजा दी, कष्ट दिया। उसने कहा नहीं, राजा आपने मुझे कोई कष्ट नहीं दिया। जो हुआ वह अच्छा हुआ। उसमें क्या अच्छा हुआ? मैंने तुमको इतना कष्ट दिया, मंत्री ने कहा अगर आप मुझे जेल में नहीं भेजते तो जंगली लोग मुझे पकड़ लेते और मेरी बलि चढ़ा देते, इसीलिए कहा कि जो हुआ अच्छा हुआ।

जब इसका प्रैक्टिकल अप्लिकेशन हम अपने लाइफ में नहीं कर पाते हैं तो कितना टेन्शन हो जाता है, चिड़चिड़ापन भी आता है, गुस्सा आता है उसी को लेकर के। एक और प्रसंग मुझे याद आता है यहाँ पर।

- **प्रसंग – एक भाई का जिसका एक्सीडेण्ट हो गया**

एक भाई था उसको हॉस्पिटल में एडमिट किया था। उसको मिलने गये। एक्सिडेंट हुआ था, उसके दोनों पैर फ्रैक्चर हुए थे। जब हम हॉस्पिटल में मिलने गये तो बड़ा चिड़चिड़ापन और गुस्सा कर रहा था। कुछ हमने ज्ञान की बातों को सुनाना चालू किया तो कहा बहनजी, मैं आपके ज्ञान को बिल्कुल नहीं मानता हूँ।

क्या हो गया? रोज क्लास में आता था और अचानक कहता है कि मैं आपके ज्ञान को बिल्कुल नहीं मानता हूँ। तो हमने कहा कि क्या हुआ? कहा कि आप लोग कहते हैं कि जो हुआ अच्छा हुआ। अब मेरा कार एक्सिडेंट हुआ, यह दोनों पैर फ्रैक्चर हो गये इसमें क्या अच्छा हुआ?अब यह तो हम क्या जाने कि इसमें क्या अच्छा होगा। यह तो समय ही स्पष्ट करेगा कि क्या अच्छा हुआ?

इसमें फिर पता चला कि बड़े गुस्से में वह भगवान को भी गाली देने लगा – भगवान बड़ा कष्ट देनेवाला है, सबको दुःख देनेवाला है, भगवान कोई रहमदिल नहीं है, भगवान ऐसा है, वैसा है बहुत बोल रहा था। इसकी पत्नी ने साईड में ले जाकर कहा बहनजी क्षमां करना आप इनकी बातों को ध्यान पर नहीं लेना। इसकी मानसिक स्थिति थोड़ी ऐसी हो गयी है।

हमने कहा क्या बात है? इतना अच्छा भाई है, इसकी मानसिक स्थिति ऐसी क्यो हो गयी? इतना चिड़चिड़ापन, गुस्से में कैसे आ गया?

क्या हुआ कि वह कुछ लायन्स या रोटरी का शायद गवर्नर था तो उसने अपने टेन्युअर में कुछ अच्छी सेवा का कार्य किया था और उसको उस कारण से अवार्ड मिलना था, तो जब उनका एन्युअल समय होता है, मीटिंग होती है और उसमें सारे वर्ल्ड के गवर्नर इकट्ठे होते हैं और कुछ चेंज होता है उस समय उसका सन्मान समारोह रखा हुआ था और 15 दिन के बाद लण्दन में भी सम्मान समारोह रखा हुआ था। इसको जाना था और अटैण्ड करना था।
पंद्रह दिन पहले कार एक्सिडेण्ट हुआ। जब दोनों पैर फ्रैक्चर हो गये अब वो जा नहीं सकता। बार-बार लेटे हुए ही उसको वह दृश्य दिखाई देता है और उसको बार-बार अन्दर में आता है कि अरे मेरे जीवन का एक ही तो गौरव का समय था ये। कितना मैं गर्व महसूस करता था और भगवान ने ये छीन लिया मुझसे। मैंने किसी का छीना तो नहीं था। मैंने खुद कर्म किया था और मुझे यह खुद मिलना था। तो भगवान को यह ईर्ष्या क्यों आ गयी? उसका यह कहना था। अब उसे यह सहन नहीं होता था, जब-जब उसे वह दिखता था और अपनी हालत देखता था तो भगवान पर उसको बड़ा गुस्सा आता था। जो भी सहानुभूति की बातें सुनाने आये तब सबके ऊपर ऐसा ही करे। अब उसके लिए तो क्या कोई कह सकता है? सहानुभूति की बातें भी नहीं बोल सकता है क्योंकि उसको गुस्सा आना ही है।
आखिर हम तो चले गये वहाँ से। दस दिन के बाद हम फिर से उसको मिलने के लिये गये। जब मिलने गये तो बड़ा खुश था। इतना खुश था कि बात मत पूछो। कहता है बहनजी, सौ परसेण्ट आपकी बात को मानता हूँ। अरे भाई क्या हो गया दस दिन के अन्दर? पता चला कि अखबार में आया कि जिस दिन फ्लाईट से वह जानेवाला था, वह फ्लाईट क्रैश हो गया। तब उसको समझ में आया और दस दिन के बाद पता चला कि अगर उसी फ्लाईट में मैं जाता था तो सन्मान जो उसको मिलना था, वह उसके भाग्य में ही नहीं था इस जन्म में।
अब देखो कैसे उसकी बुद्धि परिवर्तित हो जाती है और वह मुझे ज्ञान देने लगता है। कहता है – बहनजी, भगवान जो करता है वह बहुत अच्छा करता है। वैसे भी शायद मैंने जो सेवा का काम किया है उसका फल भगवान मुझे और अच्छे रूप में देना चाहता है, इसलिए यह छोटा-सा सम्मान का जो कार्यक्रम था उसने मुझे जाने नहीं दिया क्योंकि अगर मैं वह ले लेता था तो कर्म के सिद्धान्त के अनुसार भगवान मुझे और बढ़िया रूप में देना चाहता था वह तो नहीं मिल पाता। इसलिए और अच्छे रूप में वो देना चाहता है। क्योंकि जो किया वह तो जरूर मिलना ही है, जानेवाला है नहीं। लेकिन और अच्छे रूप में भगवान मुझे देना चाहता है। इसीलिए यह छोटा-सा एक्सिडेण्ट करके मुझे रोक लिया क्योंकि एक पैर भी ठीक होता था तो भी मैं लंगड़ाते हुए जाता था इसीलिए दोनों पैर फ्रैक्चर करके मुझे रोक लिया।
अब एक्सिडेण्ट छोटा हो गया। जो उसे बड़ा लगता था वह अब छोटा लगने लगा उसको। जो टेन्शन और गुस्सा आ रहा था अब उसका मन शान्त हो गया।
इसकी पत्नी ने मुझे कहा कि बहनजी, यही ज्ञान मुझे दस दिन पहले आ जाता था तो कितना अच्छा हो जाता था। यह दस दिन जो मेरे गये हैं वह सबसे बुरे दिन गये हैं। ऐसा तो मैंने कभी जीवन में इतने बुरे दिन नहीं देखे हैं। मैंने कहा बहनजी शुक्र करो भगवान का कि दस दिन में पता चल गया, अगर एक मास के बाद पता चलता था तो वह मास कैसे जाता था? जीवन में कई ऐसी बातें आती हैं जिसका रहस्य एक साल के बाद स्पष्ट होता है, लेकिन वह साल हमारा कैसे जाता है? जब वो घटना होती है, तब उस समय हम यह सोच नहीं सकते कि भगवान ने जो किया वह अच्छा किया। यह अप्लाय नहीं कर सकते हैं और अप्लाय नहीं कर सकते तो इतना टेन्शन, इतना गुस्सा, चिड़चिड़ापन, सम्बन्ध खराब कर देना, कुछ उलट-पुलट बोल देना और बाद में पश्चाताप करना।
उसकी पत्नी ने कहा बहनजी वह दस दिन मेरे ऐसे गये हैं पता नहीं इसने कितने लोगों के साथ सम्बन्ध खराब किये हैं। जिसने अच्छी बात सुनायी, सहानुभूति की बात सुनायी उसके साथ झगड़े में आ गये, गुस्से में आ गये। मेरे को हर एक के सामने हाथ जोड़कर माफी मांगते रहना पड़ा। आप मेहरबानी करके उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना। कितनी बार मैंने लोगों के सामने झुक-झुककर माफ़ी मांगी होगी।
तो इस रहस्य को पहले मनुष्य क्यों नहीं अप्लाय कर सकता है? लेकिन यह तो अज्ञानता है।

भगवान ने अगर यह जो नाटक रचा है जितना भगवान परफेक्ट है उतना उसकी क्रियेशन भी परफेक्ट ही होंगी। तो इस नाटक के अन्दर एक क्षण भी ऐसी नहीं है जिसको हम कहे वो अशुभ है। उसकी क्रियेशन में इमपरफेक्शन, अशुभ नाम की कोई चीज नहीं है। कई बार हम बाद में महसूस करते हैं अरे अच्छा हुआ, ऐसा हुआ नहीं होता था तो पता नहीं आज क्या हो जाता था। जब होश आता है ना हमको, तब हम अप्लाय करते है दस दिन के बाद, पंद्रह दिन के बाद या एक मास के बाद। लेकिन जब वो घटना का रहस्य स्पष्ट होता है तब उसे अप्लाय करो।

इसीलिए कहा कि कालचक्र का कनेक्शन जीवन चक्र के साथ है और इस बात को अगर इन्सान अप्लाय करना सीख ले, तो जीवन में कभी भी दुःख नाम की चीजआ नहीं सकती। इसीलिए कहा जाता है सुख और दुःख दोनों मन की स्थिति पर आधारित है। क्योंकि मन की स्थिति अगर इस रहस्य को समझ ले तो सुख ही सुख है। कोई दिन उसके दुःख के नहीं हो सकते हैं। लेकिन मन की स्थिति पर इसका अप्लिकेशन नहीं होता है तो क़दम-क़दम पर हर एक की बात को फील करके बड़े दुःखी होते रहेंगे। इसने ऐसा क्यों कहा? इसने ऐसा नहीं करना चाहिए। हर बात में क्यों शब्द आ जायेगा और क्यों माना अज्ञानता कि इस बात को उसने समझा नहीं है।

तो इसीलिए कहा सु अस्ति – कोई क्षण भी अशुभ नहीं है।

(3) स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड से शुरू होता है

दूसरी बात यह स्वास्तिका का जो हाथ है राइट हैण्ड से शुरू होता है। राईट माना रायटियस। शुभ कार्य हमेशा राईट हैण्ड से किये जाते हैं। पूजा करना है, आशिर्वाद देना है, प्रसाद लेना है या कुछ भी करना है, अच्छा कार्य करना है तो राइट हैण्ड से ही करते हैं। तो यह स्वास्तिका की जो शुरूवात है वह भी राईट हैण्ड से शुरू हुई है और उसका पोजिशन है – यह पोजिशन है।

[11] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का पहला भाग – सतयुग

(1) सतयुग – स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड साइड पर

वैसे यह चक्र नित्य चलता है, पता नहीं यह कब शुरू हुआ था और कब पूरा होना है। यह अनादि है जिसकी न कोई आदि है, न अन्त है। जो नित्य चलता है। लेकिन जो पहला प्रहर माना जाता है जैसे दिन और रात का चक्र है नित्य चलता है, लेकिन पहला प्रहर किसको कहते हैं? सुबह पहला प्रहर है। इसी तरह सतयुग पहला प्रहर है, पहला प्रहर है स्वास्तिका का।

यह पहला प्रहर जो है उसमें स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड साइड पर है, उसका पोजिशन इस तरह है और यह पोजिशन माना आशिर्वाद। इसीलिए कहा जाता है – भगवान ने जब इस सृष्टि को रचा था उस सृष्टि के अन्दर हर आत्मा आशिर्वाद प्राप्त करके आयी, परमात्मा का आशिर्वाद लेकर के नीचे आयी। इसीलिए उसका अशुभ कभी नहीं हो सकता है।

(2) सतयुग – भगवान-भगवतियों की दुनिया

बाइबल में जेनिसिस चैप्टर वन में एक बहुत सुन्दर लाइन आती है – जब भगवान ने सृष्टि बनायी थी तो वह समय कैसा था? तो कहा कि गॉड मेड मैन इन हिज ओन इमेज (God made man in his own image) भगवान ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया था। इसीलिए उसको कहा जाता है गॉड-गॉडेज़ (god-godesses). तब कहते हैं गॉड गॉडेज़ आर मेनी बट गॉड इज वन (god-godesses are many, but God is one). भगवान भगवतीयाँ अनेक है लेकिन भगवान एक है। भगवान भगवती अनेक है अर्थात उसकी जो फर्स्ट क्रियेशन थी भगवान भगवती के रूप में थी।

(3) सतयुग – सत्यता का युग

जैसे परमात्मा सर्व गुणों में सम्पन्न है इसी तरह उसकी पहली क्रियेशन भी सम्पन्नता की क्रियेशन थी जिसमें कोई कमी नहीं। इसीलिए इस युग को कहा सत्यता का युग। जहाँ सम्पूर्ण सत्य था उन आत्माओं में भी सत था, सतोप्रधान थी। इस युग को कहा गया – जहाँ सत्यता वहाँ एकता। डिफरेन्स ऑफ ओपिनियन नहीं। तो एक धर्म, एक राज्य, एक मत और एक भाषा एकता की दुनिया थी।

(4) सतयुग – सूर्यवंशियों की दुनिया

इस दुनिया को दूसरा नाम भी दिया हुआ है सूर्यवंश की दुनिया कि जहाँ सूर्यवंशी थे, जो आत्माएँ उस संसार में रहती थी उनको सूर्यवंशी आत्माएँ कहा जाता है।

1. सूर्यवंशी क्यों कहते है?

क्योंकि जैसे सूर्य सदा है, परफेक्ट है, सूर्य की कला कभी कम जास्ती नहीं होती इसी प्रकार यहाँ जो आत्माएँ थी वह भी परफेक्शन की स्टेज में थी। उनकी कलाएँ कभी कम-जास्ती नहीं होती थी। वह परफेक्शन की स्टेज का वर्णन है – सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म यह उनकी महिमा है।

2. सूर्यवंशियों में सोलह कलाएँ कौनसी थी?

आप सोचेंगे कि सोलह कला कौनसी थी? कोई गिनती की नहीं होती है – एक, दो, तीन, चार, फिर भी लिमिट आ जायेगी सोलह पर पहुँचेंगे तो। जबकि वह तो गुणों में परफैक्ट थी। ऐसे सोलह फिगर परफेक्शन का है।

कोई बात 100 परसेन्ट परफेक्ट होती है तो क्या कहते हैं? सोलहआने सच्चा। या सम्पूर्ण खिला हुआ चन्द्रमा देखेंगे तो क्या कहेंगे? अरे यह तो सोलह कला सम्पूर्ण खिला हुआ है। तो इस प्रकार जो आत्माएँ थी वह सोलह कला सम्पूर्ण थी। इतनी परफेक्शन की स्टेज में थी।

(5) सतयुग – श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज

इस युग में राज करनेवाले कौन थे? श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज था। इसीलिए श्री नारायण के आगे एक प्रेफिक्स लगता है सत्य नारायण या सूर्यनारायण क्योंकि वह सम्पूर्णता का प्रतीक है। जहाँ एक ही धर्म आदि सनातन देवी-देवता था।

[12] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का दूसरा भाग –त्रेतायुग

(1) त्रेतायुग – स्वास्तिका का हाथ राइट हैण्ड साइड पर लेकिन नीचे की ओर

वह समय धीरे-धीरे बीतता गया क्योंकि समय तो बीतता जाता है और दूसरा प्रहर आता है जिसको कहा त्रेता युग। जहाँ यह स्वास्तिका का हाथ नीचे गिर गया। है राईट हैण्ड साइड पर लेकिन नीचे आ गया अर्थात जो सतयुग में इतनी सम्पूर्णता थी वह इस युग में नहीं रही।

कोई भी चीज यूज करने से क्या होती है? उसकी वैल्यु डिप्रिशिएट (depreciate) होती है, कम हो जाती है। इसी तरह जन्म लेते गये तो आत्मा की शक्ति तो यूज होती गयी तो उतनी उसकी वैल्यु कम हो गयी। इसीलिए इस युग को कहा त्रेतायुग।

त्रेता यानि जहाँ थोडी त्रुटी आ गयी। आत्माओं में त्रुटियाँ आ गयी। इसीलिए वह हाथ नीचे आ गया है राइट हैण्ड साईड पर।

(2) त्रेतायुग – चौदह कलाधारी

वह शुभ कर्म श्रेष्ठ कर्म भी है, राईटिअस एक्शन ही है परन्तु सतयुग जितनी परफेक्शन वाले नहीं हैं। दो कला कम हो गयी। चौदह कलाधारी हो गये।

1. त्रेतायुग –चौदह कला क्यों कहा

त्रेतायुग में चौदह कला क्यों कहा उसको? जैसे चन्द्रमा को दो दिन के बाद पुनम के दो दिन के बाद कहेंगे दो कला कम है लेकिन उसकी रोशनी में इतना अन्तर नहीं आता है। इसी प्रकार आत्माओं का जो तेज है, सतोप्रधानता है उसमें इतना अन्तर नहीं आता है। लेकिन फिर भी सतयुग से कम डिग्री में आ गये इसीलिए इस युग को कहा जाता है चन्द्रवंशी। जैसे चन्द्रमा की कलाएँ कम होने लगती है वैसे आत्माओं की भी कलाएँ कम होने लग गयी।

2. त्रेतायुग में कलाएँ कम क्यों हुई जबकि सतयुग में तो इतने अच्छे कर्म किये?

अब कोई-कोई कहेंगे कि सतयुग में तो इतने अच्छे कर्म किये होंगे तो क्यों कलाएँ कम हो गयी?
कोई भी चीज़ परफेक्शन के बाद और परफेक्ट नहीं हो सकती। यह कुदरत का नियम है कि परफेक्शन सदा नहीं रह सकती है। धीरे-धीरे कला कम हो जाती है। फिर कम होने के बाद अमावस्या आती है फिर वापस चढ़ने लगता है फिर पुनम आती है। फिर पुनम सदा रहेगी? नहीं। यह कुदरत का नियम नहीं है। चेंज इज ए कन्टिन्युअस प्रोसेस (Change is a continuous process) चाहे अच्छा हो या गिरने का हो लेकिन यह नियम है उसका। इसीलिए इस युग को कहा चन्द्रवंश।

(3)त्रेतायुग – श्री राम और श्री सीता का राज, चन्द्रवंशीयों का राज

तो त्रेतायुग में राज करनेवाले कौन थे? श्री राम और श्री सीता। इसका पता कैसे चला? श्रीराम के साथ हमेशा लगता है श्री रामचन्द्र इसीलिए दिखाते है श्रीराम के सभी पूर्वज सूर्य का तिलक लगाते थे। सूर्यवंशी थे परन्तु जहाँ से श्रीराम आया वहाँ से दूसरा युग आ गया और वो था त्रेतायुग या चन्द्रवंशी। इसीलिए श्री रामचन्द्र कहा।
राम राज्य तक तो पहुँचे – ऐसे महात्मा गांधी ने कहा।

[13] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का तीसरा भाग – द्वापर युग

और समय बीतता गया सृष्टि नाटक का तीसरा भाग आया जिसको कहा द्वापर।

(1) द्वापर युग – स्वास्तिका का हाथ लेफ्ट हैण्ड साईड पर घुम गया

द्वापर युग में लेफ्ट हैण्ड साईड पर स्वास्तिका का हाथ घुम गया अर्थात रायटीअस से अनराइटीअसनेस जीवन में प्रवेश होने लगा। अशुद्धि की प्रवेशता होने लगी इसीलिए इस युग को कहा द्वापर।

(2) द्वापर युग – दो पुरों का आरम्भ/जीवन में अनराइटीयसनेस और राइटीयनेस दोनों साथ-साथ चलने लगे

द्वा मान दो, जहाँ से दो पुर आरम्भ हुए। सत्य माना एकता खत्म हुई और द्वापर माना दो पुर आरम्भ हुए। जो रायटीअसनेस था वह समय बीत गया और रायटीअसनेस व अनरायटीअसनेस दोनों साथ-साथ चलने लगे। इसीलिए दो पुर हो गये क्योंकि कुछ संस्कार तो थे रायटीअसनेस के वह भी चल रहा था लेकिन अनरायटीअसनेस की जो प्रवेशता हुई वह भी आरम्भ हो गया।

(3) द्वापर युग – द्वैतता का राज

द्वापर यानी द्वैत भावना शुरू हो गयी इसीलिए कहा जाता है कि सतयुग और त्रेतायुग यह अद्वैत का राज्य था और द्वापर से द्वैतता मनुष्य के अन्दर आने लगी।

(4) द्वापर युग – दुःख का समय आया और भगवान को याद करना व उनसे माँगना चालु हुआ

यह स्वास्तिका का पोजिशन देखेंगे तो कौनसा पोजिशन है? माँगना। माँगना चालु किया क्योंकि दुःख-अशान्ति चालु हो गयी, द्वैतता का राज चालु हुआ तो जब दुःख का समय आता है तो कहावत है –

दुःख में सिमरण सब करे, सुख में करे न कोय,
अगर सुख में करे तो, दुःख काय को होय ।

जब सुख का राज था सतयुग और त्रेतायुग वहाँ भगवान को याद करने की आवश्यकता नहीं थी।

उनको भगवान भगवती क्यों कहा गया? भगवान शब्द को अगर अलग करो आप तो भाग वान भागवान यानि जिन आत्माओं ने श्रेष्ठ भाग्य भाग्यविधाता से प्राप्त किया हुआ था ऐसी भाग्यवान जो आत्माएँ हैं उनको कहा गया भगवान भगवतियाँ।

तो उन्होंने भगवान को याद करने की आवश्यकता समझी ही नहीं और इसलिए जब द्वापरयुग आया तब दुःख का समय आ गया। अगर सुख में करते थे तो दुःख का समय आता ही नहीं था।

अब यहाँ दुःख का पिरियेड़ आया तो भगवान को याद करने लगे – हे प्रभु! शान्ति दे दो, हे प्रभु! सुख दे दो, धन दो, ज्ञान दो, सद्गति दे दो, सद्बुद्धि दे दो, माँगना चालू किया। यहाँ से अधर्म का राज शुरू होता है। इस हिसाब से हमारे पूर्वज बन्दर थे या देवता थे?

1. हमारे पूर्वज बन्दर थे या देवता थे?

साइन्स के आधार पर लॉ ऑफ इन्ट्रापी (Law of Entropy) में कहा गया है – संसार में कोई भी चीजनई से पुरानी होती है लेकिन कोई चीजपुरानी से नयी अपने आप नहीं होती। एवरीथिंग मूव्हज फ्रॉम ऑर्गेनाइज़ टु डिसऑर्गेनाइज़ स्टेज (Everything moves from organised to disorganised stage) । तो इसी प्रकार संसार व्यवस्थित से अव्यवस्थित हुआ है।

- **उदाहरण – कपड़े का**

कोई भी नया कपड़ा लो, उसको दस साल रख लिया तो पुराना ज़रूर होगा। इस प्रकार संसार भी व्यवस्थित से अव्यवस्थित हो गया है, सभ्य से असभ्य बनें। इसलिए हमारे पूर्वज बहुत सभ्य थे।

♦ मॉडर्न साइन्स और डार्विन की थिऑरि

मॉडर्न साइन्स (Modern Science) ने डार्विन की थ्योरी (Darwin Theory) को गलत रूप कर दिया। हायपोथेसीस (Hypothesis) के रूप में पढ़ाया जाता है, ऐसी भी मान्यता है। वह थिऑरि राँग सिद्ध हो गयी है।

- **वंदरों का एक प्रसंग**

एक बार तीन बन्दरों की आपस में बातचीत होती है।

एक बन्दर दूसरे को कह रहा था कि मनुष्य कहते हैं कि हम उनके पूर्वज हैं। अपने आप को कहते हैं कि हम बन्दरों की वंशावली है।

दूसरा कहता है क्या मनुष्य की प्रमोशन हो गयी है? मनुष्य तो एक दूसरे के खून के प्यासे हैं।

तीसरा बन्दर कहता है कि मैं तो उनको अपने वंशज के रूप में भी स्वीकार नहीं करता। मनुष्य कितना गिर गया है। एक दूसरे को मारने के लिए उतर आया है क्या यही सभ्यता है? आज का इन्सान असभ्य हो गया है।

हमारे पूर्वज बन्दर नहीं लेकिन देवतायें थे।

(5) द्वापरयुग – दुःखी होकर परमात्मा को पुकारने पर परमात्मा ने धर्म पिताओं को भेजा

द्वापरयुग में दुःखी हुए तो परमात्मा को पुकारना शुरू किया। परमात्मा अपने बच्चों का दुःख देख नहीं सकता लेकिन उसका आने का समय है – यदा यदा हि धर्मस्य.............

इसीलिए परमात्मा ने समय प्रति समय अपने पैगम्बरों को भेजा, धर्म पिताओं को भेजा और कहा कि मेरे बच्चों की रक्षा करो।

(6) द्वापरयुग – इब्राहीम, बौद्ध, क्राइस्ट इन तीन धर्म पिताओं का आगमन

इब्राहीम, बौद्ध, क्राइस्ट – यह तीन धर्म पितायें भारत के बाहर गये परमात्मा का सन्देश देने के लिए, अपना प्रचार फैलाने के लिए गये।

1. इब्राहीम

① लॉज टू गवर्न ह्युमन लाइफ (Laws to govern human life)

सबसे पहले इब्राहीम को भेजा मिडल इस्ट के तरफ़ जिसने इस्लाम धर्म की स्थापना की। वहाँ पर बहुत ही धर्म भेदभावना आ गयी तब उसने आकर के परमात्मा का सन्देश सुनाया और समय के महत्व को देख बताया। उस समय उसने देखा कि लोग इस प्रकार लड़ाई-झगड़ा कर रहे हैं और ऐसा उनका जीवन है कि जीवन में कोई सिद्धान्त नहीं, नियम नहीं है इसीलिए कुछ नियम बनाकर देने चाहिए तो उन्होंने लॉज टू गवर्न ह्युमन लाइफ (Laws to govern human life) दिये।

② धर्म पुस्तक

मनुष्य जीवन के लिये आवश्यक सिद्धान्त, उनकी किताब जो धर्म पुस्तक है उसमें यह बातें आती हैं कि मनुष्य जीवन के लिए कौनसे सिद्धान्त हैं, जो कुदरत ने बनाये हैं जिस अनुसार हमें जीना चाहिए यह बताया। क्योंकि समय की आवश्यकता अनुसार उसने यह महसूस किया लेकिन अफसोस की बात यह है कि वहाँ के लोगों ने बात को समझा भी नहीं इसीलिए धारण नहीं कर पाये।

2. महात्मा बुद्ध

जैसे समय बीतता गया, महात्मा बुद्ध आये। थोड़ा समय बीता वह इस्ट के तरफ़ गये और वहाँ जाकर उसने क्या बताया? उसने भी यह कभी नहीं बताया कि मैं भगवान हूँ। उसने तो परमात्मा का सन्देश दिया। वहाँ के लोगों के कर्म को देखते हुए, समय को देखते हुए उसने अपना प्रचार आरम्भ किया। वहाँ उन्होंने तीन चीज़ें देखी।

① कर्म ही धर्म है

इस्ट में उन्होंने देखा कि लोगों के कर्म बड़े भ्रष्ट होते जा रहे हैं, इसीलिए उसने कर्म फिलासॉफी पर जोर दिया। कर्म ही धर्म है – यह ज्ञान लोगों को दिया। इसीलिए बुद्ध फिलासॉफी हैं – वर्क इज वरशीप (Work is worship). जॅपनीज़ लोग वर्क को वरशीप क्यों मानते है इतना? क्योंकि महात्मा बुद्ध ने उस समय उनको यह बात बतायी थी।

② दया ही धर्म है

इसी प्रकार वहाँ के लोगों में उसने देखा कि दया नाम की चीजही नहीं। प्राणी मात्र के प्रति भी दया नहीं है इसीलिए उसने यह बताया कि दया ही धर्म है।

③ अहिंसा परमोधर्म

तीसरा उसने बताया कि बहुत हिंसा हो रही थी आपस में तो कहा अहिंसा परमोधर्म।

इस प्रकार उसने तीन बातों की धर्म के रूप में व्याख्या की – कर्म ही धर्म है, दया ही धर्म है, अहिंसा परमोधर्म।

♦ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का जहाँ प्रचार हुआ वहीं भ्रष्टाचार ज्यादा, क्यों?

लेकिन हमेशा यह होता आया है कि जिस समय कोई भी महापुरुष समय को देखते हुए कोई बात कहता है ज्ञान के आधार पर, तो उस समय लोग स्वीकार नहीं करते। समझते हैं यह क्या कह रहे हैं? ऐसी कोई चीजहोना ही नहीं है, यह असम्भव है, इसीलिए उन लोगों ने भी महात्मा बुद्ध की इन शिक्षाओं को समझा नहीं। लेकिन वो तो समय को देख रहा था कि आनेवाला समय कैसा होगा अगर यह बातें बढ़ती गयी तो।

इसलिए आज भी भ्रष्टाचार कहाँ हो रहा है? जापान में। उन्हीं देशों (इन्डोनेशिया, चायना) में हो रहा है जहाँ महात्मा बुद्ध ने 2000 साल वर्ष पहले यह प्रचार किया था कि कर्म ही धर्म है। क्योंकि उस समय उसने कर्म में भ्रष्टता देखी थी। अंश आज वंश के रूप में वहाँ पर हो गया और उन्हीं देशों में इतना भ्रष्टाचार होता है। क्योंकि उन लोगों ने महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को समझा नहीं था और समय के महत्व को ध्यान में नहीं रखा तो आज यह समय आ गया है।

इण्डिया का चौथा नम्बर आता है भ्रष्टाचार में। भारत में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार कहाँ होता है? बिहार में। जहाँ गया में महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, जो महात्मा बुध्द की जन्मभूमि है।

3. क्राइस्ट

समय बीतता गया क्राइस्ट आया। वेस्ट में गया प्रचार करने के लिए। उसने भी यही कहा कि आइ एम दी सन ऑफ दी गॉड (I am the son of the God) अर्थात् मैं परमात्मा का पैगम्बर हूँ और मैं भी कुछ सन्देश लेकर आया हूँ।

① ट्रूथ इज गॉड (Truth is God)

उसका सन्देश क्या था? उसने जब समय को देखा और वहाँ के लोगों की स्थिति को देखा कि झूठ बोलते हैं, सफेद झूठ बोलते हैं, पॉलीश फॉर्म में बोलते हैं कि व्यक्ति को पता भी नहीं चलता इसीलिए क्राइस्ट ने प्रचार किया कि – ट्रूथ इज गॉड।

② लव इज गॉड (Love is God)

दूसरी बात समाज के अन्दर देखी कि मनुष्य की मनुष्य के प्रति नफ़रत। इतनी नफ़रत देखी इसीलिए उसने कहा लव इज गॉड (Love is God) अर्थात् प्रेम ही ईश्वर है, आप एक दूसरे से प्रेम करो।

♦ क्राइस्ट की शिक्षाओं का जहाँ प्रचार हुआ वहीं नफ़रत/लड़ाई-झगड़ा ज़्यादा, क्यों?

लेकिन उस समाज के लोगों ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। ऊपर से दिखाते हैं प्रेम है लेकिन अन्दर में इतनी नफ़रत है। आप सोचो क्राइस्ट जैसी महान आत्मा जिसने प्रेम और सत्यता का प्रचार किया, उसने कुछ बुरा तो नहीं कहा लेकिन ऐसे इन्सान के साथ भी क्या किया? जिन्दा इन्सान को क्रॉस पर चढ़ाना, कब चढ़ा सकते हैं? जब नफ़रत होगी तब। इतनी नफ़रत उसके प्रति भी जो यह शिक्षा दे रहा था उसको भी जिन्दा क्रॉस पर चढ़ा दिया, तो फिर यह नफ़रत की अति नहीं तो और क्या हों सकती है। वह नफ़रत और झूठ बढ़ता ही गया।

और, आज मनुष्य जाति को खत्म करनेवाले मिसाइल्स किसने बनाये? उन्हीं देशों ने बनाये। आज ऐसा बाम्ब बनाया है जो पूरी मानव जाति खत्म हो जायेगी। उस समय दो हजार साल पूर्व क्राइस्ट ने देखा था लेकिन क्रिश्चियन्स के अन्दर नफ़रत की भावना बढ़ती गयी। आज भारत और पाकिस्तान के बीच नफ़रत के बीज किसने बोये? ब्रिटीशों ने। जिन-जिन देशो में वो पहुँच गये आज दिन तक झगड़ा चलता आ रहा है।

[14] स्वास्तिका का/सृष्टि चक्र का चौथा भाग – कलियुग

इस प्रकार लोगों की अवस्था दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गयी और चौथा प्रहर आया।

(1) कलियुग – स्वास्तिका का हाथ लेफ्ट हैण्ड साईड पर ऊपर की ओर

कलियुग अर्थात् स्वास्तिका का हाथ लेफ्ट हैण्ड साइड को ऊपर उठ जाता है।

(2) कलियुग – कलह क्लेष वाला युग/अधर्म का युग

हाथ का लेफ्ट हैण्ड साइड को ऊपर उठना अर्थात् Unrighteousness की क्लायमेक्स (climax), मारामारी का प्रतीक, घर-घर के अन्दर झगड़ा आरंभ हो गया। इसीलिए इस युग को कहा गया कलह क्लेष वाला युग।

कलियुग के अन्दर ऐसा एक घर भी बाकी नहीं है जहाँ कलह क्लेष नहीं होता है। है ऐसा कोई घर? इसीलिए कहँ यह अधर्म का युग है।

(3) कलियुग – धर्म की अति ग्लानि होने पर अर्थात् अधर्म के बढ़ने पर उसका विनाश कर वापस कलियुग से सतयुग को ले आने के लिए परमात्मा का आगमन

और, जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है तब-तब परमात्मा को आकर अधर्म का विनाश कर सत् धर्म की स्थापना करनी पड़ती है। क्योंकि यह चक्र जो है चलते रहना है। इसीलिए अति की स्थिति जब आ जाती है तो उसका अन्त निश्चित है। लेकिन अन्त सदाकाल का नहीं होता है नयी आदि को ले आता है, न्यु डॉन (New dawn), गोल्डन इरा (Golden era) को ले आता है।

(4) कलियुग अभी बच्चा नहीं है लेकिन थोड़ा-सा बचा हुआ है

तब कई लोग क्या कहते हैं – बहनजी आप तो अन्त-अन्त करते है लेकिन शास्त्रो में तो लिखा है – अभी तो कलियुग को चार लाख बत्तीस हजार पड़े हैं।

सोचने की बात है कि चार लाख बत्तीस हजार पड़े हों, और अभी बचपन की स्थिति हो और बचपन में ही इतना घोर पाप कर्म का युग हो तो चार लाख तो छोडो, 32,000 भी छोडो, 32 साल ही ले लो, क्या 32 साल भी चलनेवाली हालत यह सृष्टि रखती है? है स्थिति ऐसी?

वैसे भी साइन्टिस्ट भी जो बताते हैं, ग्रीन हाउस इफेक्ट (Greenhouse effect) जो आ रही है, पाप्युलेशन एक्सप्लोजन (Population explosion) जो हो रहा है, इन सब बातों से भी लगता है कि अब सृष्टी ज्यादा समय चल नहीं सकती है।

पाप्युलेशन एक्सप्लोजन जिस प्रकार से हो रहा है कि हर 15 साल में सृष्टी का पाप्युलेशन डबल हो जाता है। आज 600 करोड़ है तो 15 साल बाद 1200 करोड़ को जायेंगे। अगर 1200 करोड़ हो जायेंगे, तो आज ही मनुष्य को नेसेसीटी आफ लाइफ (Necessity of life) नही मिलती है क्योंकि धरती के धन, साधन खत्म होते जा रहे हैं। तो 15 साल के बाद क्या होगा? चलने जैसी स्थिति सृष्टी की है? रिसोर्सेस (Resources) ही खत्म हो रहे हैं। इसीलिए चेन्ज इज नेसेसरी (Change is necessary), परिवर्तन जरूरी है।

इस समय संसार में 19 फॉरेस्ट है। अगर यह 13 हो गया तो ऑक्सीजन नहीं मिल सकेगा। जिस प्रकार गर्मी बढ़ती जा रही है, समुद्र का पानी बढ़ता जा रहा है, बर्फ के पिघल जाने से नॉर्थ अण्ड साउथ पोल में तो परिवर्तन जरूर आयेगा और परिवर्तन का काम हो रहा है। शास्त्रों के हिसाब से भी देखा जाये तो भी सृष्टि ज्यादा चल नहीं सकती।

(5) कलियुग की अन्तिम निशानियों का वर्णन शास्त्रों में

आपने कभी प्रदीप जी का वो गीत सुना होगा – देख तेरे संसार की हालत क्या हो गयी भगवान ......

उस गीत के अन्दर पूरा वर्णन किया है कि जब कलियुग का अन्तिम समय आयेगा तो क्या-क्या होंगा और यह वर्णन शास्त्रों के अनुसार ही किया गया है।

शास्त्रों के अनुसार कलियुग की जो अन्तिम निशानियाँ दिखायी है वो तो हम प्रैक्टिकल में देख रहे हैं।

1. कलियुग के अन्तिम समय की कई निशानियों में से एक निशानी

कई निशानियाँ है लेकिन उसमें एक निशानी बताते हैं कि कलियुग की स्थिति कब समझनी चाहिए? कलियुग का अन्तिम समय कब समझना चाहिए?

जब चार कुएँ का पानी एक कुएँ में भर जाएगा लेकिन एक कुएँ का पानी चार कुएँ में नहीं भरेगा तब समझना कि कलियुग का अन्त है।

मनुष्य समझते हैं कि चार कुएँ का पानी एक कुएँ में भर जायेगा तो क्या एक कुएँ का पानी चार कुएँ में नहीं भरेगा? भरेगा ना?

लेकिन कलियुग के अन्त में नहीं भरेगा, क्यों? क्योंकि वह जड़ कुएँ की बात नहीं है, चैतन्य कुएँ की बात है। आज चार बेटे को एक मात-पिता अपने कुएँ में जितना पानी है उससे पूरा पढ़ाई, लिखाई करा कर सैटल करेंगे, जीवन में उसको बिजनेस स्टार्ट कर देंगे, सब कुछ कर देंगे। अपने कुएँ में जितना पानी है इसी में समा लेंगे, लेकिन बुढ़ापे में एक कुएँ को समाने की बात आती है तो चार कुएँ समा सकते हैं? नहीं समा सकते हैं ना? टर्न बनायेंगे तीन-तीन मास का और हर तीन मास के बाद तीसरे बेटे के पास, चौथे बेटे के पास और वह भी नहीं हुआ तो कहेंगे अच्छा माँ को तु रख बाप को मैं रखता हूँ। माँ बाप को अलग कर दो और वह भी नहीं हुआ तो वृद्धाश्रम में रख दो – यह है कलियुग की निशानी। इससे पता चलता है कि कलियुग अन्तिम समय पर आ पहुँचा है।

- **उदाहरण – कलियुग की अति का/मदर टेरेसा मदर कैसे बन गयी इस बात का**

मदर टेरेसा की बात याद आती है कि मदर टेरेसा मदर कैसे बन गयी?

जब एक दिन वो मॉर्निंग वॉक ले रही थी कलकत्ता के रास्ते पर, दो चार सिस्टर्स साथ में थी, अचानक किसी के रोने की आवाज सुनी जैसे दुःख की, रोने की आवाज। उसने सोचा कि कहाँ से आवाज आ रही है, इधर-उधर देखा तो दिखाई नहीं दिया। कोई इन्सान की आवाज आ रही है।

उन्होंने आवाज का पीछा किया तो डस्टबीन में एक बुजुर्ग व्यक्ति पड़ा हुआ था, देखा तो उसको लेप्रेसी थी, तो बहुत रो रहा था। वहाँ से उसको मदर टेरेसा ने उठाया और उसको जानने को मिला कि उसका बेटा उससे इतना तंग हो गया क्योंकि लेप्रेसी थी इसीलिए, तो उस कारण से उसको रात को डस्टबिन में ड़ाल के गया और डस्टबिन में चूहों ने आधा शरीर तो उसका खा लिया था तो भी उसको मौत नहीं आ रही थी यही सबसे बड़ी बात थी। क्योंकि आधा शरीर चूहों ने खा लिया था तो नैच्युरल है उसको दर्द कितना होगा? इसलिए ही वो रो रहा था।

मदर टेरेसा के दिल में आया कि ऐसा कौनसा बेटा होगा जो बाप को भी डस्टबिन में ड़ाल दे। यह कलियुग की अति। तो ऐसा सीन देखा तो उसको उठाकर के ले आयी उसको साफ किया लेकिन पॉइजन तो हो ही गया था जब इतने चूहों ने खाया था उसको और वह कुछ नहीं कर पा रहा था। बुजुर्ग भी ज्यादा समय नहीं जिया। एक दिन जिन्दा रहा लेकिन मरते समय एक वाक्य बहुत अच्छा कहाँ कि सारी जिन्दगी में मैंने दुःख देखा, कभी सुख की किरण नहीं देखी लेकिन आज मैं सुख के हाथों मर रहा हूँ।

यह कलियुग की अति है, इससे आगे कलियुग क्या देखना चाहते है? इसीलिए कलियुग अभी बच्चा नहीं है थोड़ा-सा बचा हुआ है, अभी अन्तिम चरणों में पहुँच चुका है।

(6) परमात्मा ने ज्ञान दिया लेकिन विनाश की डेट और टाइम नहीं बताया

कई लोग कहते हैं कि भगवान ने इतना ज्ञान दे दिया तो विनाश की डेट भी बताई होगी कि विनाश कब होगा? आप जानना चाहते हैं? दुःखी तो नहीं हो जायेंगे? हम यही कहते हैं कि भगवान ने सारा ज्ञान दे दिया कि लेकिन यह बहुत अच्छा काम किया कि डेट नहीं बताई। क्यों नहीं डेट बताई उसमें भी कल्याण है। उसकी हर बात में कल्याण है।

उसने डेट इसीलिए नहीं बताई कि आज अगर एक व्यक्ति को कह दिया जाये कि चौबीस घण्टे के बाद तेरी मौत है डेट , समय सब बता दिया। चौबीस घण्टा तेरे पास है इन चौबीस घण्टों में जिस तरह जीना चाहते हैं जी लो, जितना भगवान का नाम लेना चाहो, जितना दान-पुण्य करना चाहो कर लो, कितना कर सकेंगे? भगवान को याद कर सकेगा? एक-एक घड़ी बीतती जा रही है कितना टाईम बाकी रहा, तो भगवान का नाम तो ले ही नहीं सकेगा, टाईम कान्सस हो जायेगा।

अच्छा, भगवान का नाम नहीं ले सकता कुछ दान-पुण्य तो करो, कुछ पुण्य तो कमाओ। कितना दान कर सकेगा? वह भी नहीं कर सकता क्योंकि चौबीस घण्टे के बाद नहीं मरा तो, अगर बच गया तो क्या होगा।

इसलिए ना दान-पुण्य कर सकता है ना ही भगवान का नाम ले सकता। इसीलिए भगवान ने डेट और टाईम नहीं बताया। क्योंकि आप कुछ नहीं कर पायेंगे, लाईफ में टेन्शन ही टेन्शन हो जायेगा, Time conscious हो जायेगा।

भगवान साठ साल पहले अगर यह कह देते थे कि साठ साल तो बीतना ही है तो क्या दादियाँ अपना जीवन समर्पित करती थी? इसीलिए भगवान ने तब से शुरू कर दिया कि बहुत कम समय है।

(7) युग परिवर्तन में अभी बहुत कम समय बाकी रह गया है

बहुत कम समय क्यों है? क्योंकि 5000 साल के हिसाब से 100 साल कितना है? बहुत कम है। लेकिन आगे अब और 100 साल नहीं है। अब सचमुच कम समय है।

कहावत है ना – बहुत गयी थोड़ी रही, थोड़ी की भी थोड़ी रही।

जैसे हार्ट पेसेन्ट को दो हार्ट अटैक आने के बाद तीसरा आये तो बचता नहीं, वैसे ही संसार को भी दो अटैक आ चुके हैं, दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं, तीसरे युद्ध में बचेगा नहीं चाहे तीसरा अटैक प्राकृतिक रूप से, वार के रूप से आयेगा।

[15] स्वास्तिका/सृष्टि चक्र के परिवर्तन का समय – संगमयुग

इसीलिए हमें क्या करना है? क्योंकि यह सन्धिकाल का समय है, Transformation का समय है, पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग है। जहाँ पुरुष में से उत्तम पुरुष परमात्मा आकर बनाते हैं ऐसा यह श्रेष्ठ समय है। इसीलिए इस जीवन की भी बहुत वैल्यु है जो और कोई जन्म में नहीं है।

(1) संगमयुग में भगवान सहयोग माँगते हैं

इसीलिए परमात्मा आकर के हम बच्चों से इतना ही सहयोग माँगते है कि बच्चे आप अगर उस दुनिया में चलना चाहते हो, ऐसी दुनिया सचमुच लाना चाहते हो तो इतना आप सहयोग दो भगवान के कार्य में।

तो कौन सहयोग देना नहीं चाहेगा? क्योंकि भगवान के कार्य में जो सहयोगी बन जाता है उसको भाग्य भी उस अनुसार मिलता है। लेकिन कई बार मनुष्य जैसे भगवान इस समय जो बात कह रहे हैं जैसे यह धर्मपिताओं ने यह बात कही कि समय को देखते हुए, उस समाज के लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। वैसे अब जो परमात्मा बात कह रहे हैं इस समय लोग स्वीकार नहीं कर पाते।

(2) भगवान का सन्देश – पवित्र बनो, योगी बनो

तो अब समय की पुकार क्या है? समय की माँग है – पवित्रता। इसीलिए परमात्मा का सन्देश सुनाते हैं – हे आत्माओं, जीवन को शुद्ध बनाना है, आत्मा को शुद्ध बनाना है। तो पवित्र बनो, योगी बनो।

लेकिन फिर भी यह कोई कम्पलशन नहीं है। ब्रह्माकुमारियाँ कोई कम्पलशन नहीं डालती। परमात्मा का सन्देश सुना देती हैं, करना न करना यह आपका काम है। न करना चाहो तो उसमें किसी के लिये नुकसान नहीं है, खुद के लिये है। क्योंकि भगवान तो जानी-जाननहार है। उसको पता है कि आनेवाला समय कैसा होगा? उसके पहले मेरे बच्चे तैयार तो हो जाये। अगर समय ने जो ईशारा दिया उस अनुसार स्वयं का परिवर्तन नहीं किया तो समय हमें नष्ट भी कर सकता है।

आज दुनिया में एड्स जैसी बीमारियाँ जो हो रही हैं यह भी क्या सिद्ध करती हैं? कितने भी लोग प्रिवेन्टिव मेजर्स (preventive measures) ले लें लेकिन यह समय की पुकार है और समय के अनुकूल नहीं चलें, उसके प्रतिकूल हो गये तब कहा जाता है समय बड़ा बलवान है। जो समय नष्ट कर देगा . . . लेकिन आनेवाले समय में और भी खतरनाक बीमारियाँ हो सकती है। इस बात की धारणा न करने से समय हमें मजबूर करेगा। इसीलिए समय हमें मजबूर क्यों करे? क्यों नहीं हम समझदार बन जाये और समय के ईशारों को समझे।

(3) पवित्रता की शक्ति – आत्मरक्षा का साधन

आजकल न्यूज़पेपर्स में जो किस्से आते हैं कामेशु, क्रोधेशु मनुष्य के कृत्य यह पढ़कर आपको अच्छा लगता है? आनेवाला समय क्या कह रहा है? यह कृत्य बढ़ेंगे या कम होगे? उस समय कोई मनुष्य किसी की रक्षा नहीं कर सकता। उस समय आत्मरक्षा का साधन क्या है? कोई इन्सान नहीं कर सकता, इन्सान में इतनी ताकत नहीं है, अगर इन्सान रक्षा करना चाहे तो भी वो क्रोध का शिकार हो जायेगा, खत्म हो जायेगा, रक्षा नहीं कर सकेगा। इसीलिए शास्त्रो में दिखाया है – द्रोपदी के पाँच-पाँच पति थे, सभी वीर थे, शक्तिशाली थे आखिर उसने क्या किया? भगवान को पुकारा। कहने का भाव यह है कि आज वो एक द्रोपदी नहीं है ऐसी हजारो द्रोपदियाँ हैं। और, कोई इन्सान किसी द्रोपदी की रक्षा के लिये समर्थ नहीं है यह समय आ रहा है। ऐसे समय में आत्मरक्षा का साधन है अपनी पवित्रता की शक्ति। आत्मरक्षा के लिये परमात्मा की शक्ति ही हमें उस समय पार करा सकेंगी।

(4) आत्मरक्षा के लिए भगवान की मदद पाने की पात्रता – आत्मशुद्धिकरण

भगवान सबको मदद करता है परन्तु भगवान की मदद लेने के लिये पात्र बनना पडता है, पात्रता चाहिए। उसकी मदद को स्वीकार करने की पात्रता क्या है? पात्रता है आत्मशुद्धिकरण। इसीलिए भगवान ने हमको कहा, पवित्र बनो, योगी बनो।

- **उदाहरण – सीता का**

सीताजी को जब रावण सम्मोहित करके लंका में ले आया तब उसे अपने महल में नहीं रखा, उसको बगीचे में रखना पड़ा। क्यों नहीं रखा महल में? क्योंकि सीता इतनी पवित्र है, उसके अन्दर पवित्रता की इतनी शक्ति है अगर उसको स्पर्श किया तो वह जल जायेगा, यह उसको पता था। इसीलिए उसे बगीचे मे रखा गया। सीताजी के पास कोई शस्त्र नहीं थे लेकिन उसके पास अपनी पवित्रता की शक्ति थी। सीताजी के पास आत्मरक्षा का साधन पवित्रता की शक्ति थी।

इसीलिए भगवान ने कहा पवित्र बनो, योगी बनो। क्योंकि आनेवाला समय इतना खतरनाक है, इतने पहले से ही यह सुरक्षा का कवच पहन लो बाकी करना या न करना यह आपके ऊपर है। महान परिवर्तन के समय से गुजरने के लिये यह आवश्यक है।

अन्त में आप काम या क्रोध का शिकार हो जाओ तो अब यह ना कहे कि भगवान पहले कहता था, तो करते थे हम। इसमें कौनसी बड़ी बात थी? यह उल्हना न दें। इसीलिए भगवान यह सन्देश दे रहा है आप मदद चाहते हो तो आपकी मर्जी और नहीं चाहते हो तो भी आपकी मर्जी।

(5) आत्मशुद्धिकरण का समय – संगमयुग का समय

संगमयुग का समय ही है आत्मशुद्धिकरण का समय। तब ही परिवर्तन के समय से गुजरते है। उदाहरण – एक देश से दूसरे देश में जाना है तो वीजा चाहिए। वैसे ही कलियुग से सतयुग में जाने का वीजा पवित्रता है। इसीलिए सम्पूर्ण पवित्र दुनिया में जाने के लिये, सत्यता की दुनिया में जाने के लिये यह आवश्यक है।

समय की पुकार यही है कि जीवन को शुद्ध बनाओ, आत्मशुद्धिकरण करो तब ही उस दुनिया में चलने के पात्र बन सकेंगे, उसकी मदद को स्वीकार करने के पात्र बन सकेंगे।

[16] अन्तिम निर्णय आपके अपने ऊपर

कहावत है –

Either you become a part of solution

Or you become a part of the Problem

समस्या स्वरूप बनो या समाधान स्वरूप बनो। क्या बनना चाहते हैं?

Either you become part of construction

Or you become part of Destruction.

विनाश को प्राप्त करना चाहते हो या नयी दुनिया के कन्स्ट्रक्शन का हिस्सा बनना चाहते हो? यह आपके ऊपर है।

छठा पाठ

– 1 –

भारत के उत्थान और पतन की कहानी
(मनुष्यात्मा 84 लाख योनियाँ नहीं लेती)

[1] विषय प्रवेश

[2] शास्त्रों में कहा गया है – लख 84, न कि लाख 84

(1) लख शब्द के तीन अर्थ

[3] ऋषीमुनियों ने पाप कर्म करने वाले लोगों को डराने के लिए कह दिया – मनुष्यात्मा पशु योनियों में जन्म लेती हैं

[4] खुशखबरी – कैसी भी पाप कर्म करने वाली मनुष्य आत्मा हो लेकिन वह मनुष्य योनि में ही जन्म ही लेती है

[5] मनुष्य आत्मा का पुनर्जन्म पशु योनि में – यह मान्यता निराधार है, इसके पीछे कोई आधार नहीं है

(1) पशु योनि से भी कहीं अधिक प्रकार के दुःख मनुष्य योनि में है तो फिर पशु योनि को भोग योनि कैसे माना जाये?

(2) मनुष्यात्मायें मनुष्य-योनि में ही अन्य योनियों से अधिक दुःखी है तो फिर दुःख भोगने के लिए योनि परिवर्तन की बात सही कैसे मानी जाये?

(3) मनुष्यात्माओं के लिए अधिक बुद्धिमान तथा संवेदनशील होने के कारण मनुष्य-योनि में ही दुःख भोगने की सम्भावना अधिक है तो फिर दुःख भोगने के लिए योनि परिवर्तन की बात सही कैसे मानी जाये?

(4) मनुष्य योनि में ही कम इन्द्रियों वाले व्यक्ति उपलब्ध हैं तो फिर दण्ड के लिए कम कर्मेन्द्रियाँ वाली निकृष्ट योनि अथवा पशु योनि में जाने की बात सही कैसे मानी जाये?

(5) मनुष्य का सुधार तो शिक्षा से होता है न कि दण्ड से तो फिर सुधार के लिए कुदरत की ओर से दण्ड के रूप में योनि परिवर्तन के नियम की बात सही कैसे मानी जाए?

(6) 'जैसा बीज वैसा फल' होता है अर्थात् जब हरेक योनि की आत्मायें अलग-अलग हैं तो फिर योनि परिवर्तन की बात कैसे मानी जाये?

(7) बुरे संस्कारों और कर्म वाली मनुष्यात्माओं का पुनर्जन्म यदि पशु योनियों में होता हो तो फिर जनसंख्या में वृद्धि क्यों?

(8) समाचार-पत्रों में आने वाली पुनर्जन्म की घटनाओं में भी जब मनुष्यात्मा स्वयं को पूर्व जन्म में भी मनुष्यात्मा के रूप मे बताती हैं तो पशु-योनि में पुनर्जन्म किस आधार पर माना जाये?

छठा पाठ

– 2 –

भारत के उत्थान और पतन की कहानी
(सीढ़ी)

[1] विषय प्रवेश

[2] भारत के उत्थान और पतन की कहानी सीढ़ी के रूप में

[3] सीढ़ी का पहला चरण – सतयुग ब्रह्मा के दिन

(1) सतयुग – 8 जन्म, 1250 वर्ष, श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का दैवी मर्यादा युक्त राज्य, देवता वर्ण, 16 कला, सूर्यवंश, सतोप्रधान स्थिति

[4] सीढ़ी का दूसरा चरण – त्रेतायुग ब्रह्मा के रात

(1) त्रेतायुग – 12 जन्म, 1250 वर्ष, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और श्री सीता का चक्रवर्ती राज्य, क्षत्रिय वर्ण, 14 कला, चन्द्रवंश, सतो स्थिति

(2) ब्रह्मा का दिन

[5] सीढ़ी का तीसरा चरण – द्वापरयुग

(1) ब्रह्मा की रात

(2) द्वापरयुग – 21 जन्म, 1250 वर्ष, अव्यभिचारी भक्ति, वैश्य वर्ण, 8 कला, वैश्य वंश, रजोप्रधान स्थिति

[6] सीढ़ी का अन्तिम चरण – कलियुग

(1) कलियुग – 42 जन्म, 1250 वर्ष, व्यभिचारी भक्ति, शूद्र वर्ण, कलाहीन, शूद्र वंश, तमोप्रधान स्थिति

[7] कलियुग का अन्तिम चरण – परमात्मा का अवतरण और ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा

[8] कलियुग का अन्त और सतयुग का पुनः आगमन

[9] जनसंख्या क्यों बढ़ रही है ?

[10] मुक्ति, जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध और मोक्ष

(1) तीन प्रकार के लोग

1. परमानेन्ट (Permanent) जाना चाहते हैं
2. टेम्प्ररी (Temporary) जाना चाहते हैं

3. जाना ही नहीं चाहते हैं

- ♦ वास्तव में Permanent कोई नहीं जाना चाहता
- ● उदाहरण – 50-60 मंजिलें वाली बिल्डिंग में रहने वाले एक बच्चे का

[11] आत्मा के Maximum जन्म 84 और Minimum जन्म 1 (एक)

छठा पाठ

– 1 –

भारत के उत्थान और पतन की कहानी (मनुष्यात्मा 84 लाख योनियाँ नहीं लेती)

[1] विषय प्रवेश

आज हम आपको भारत के उत्थान और पतन की कहानी, श्रेष्ठाचारी भारत और भ्रष्टाचारी भारत की कहानी, पूज्य सो पुजारी कैसे बने उसकी कहानी बतायेंगे।

सारे कल्प में मनुष्यात्मा 84 जन्म मनुष्य-योनि में ही लेती है, वह 84 लाख योनियों में नहीं जाती हैं। मनुष्यात्मा पशु-पक्षी आदि योनियों में जन्म नहीं लेती। अतः यह इतिहास मनुष्य-योनि में ही मनुष्यात्मा के पतन और उत्थान का इतिहास है।

[2] शास्त्रों में कहा गया है – लख 84, न कि लाख 84

शास्त्रों में कहा गया है – लख 84।

(1) लख शब्द के तीन अर्थ

तो लख शब्द के तीन अर्थ होते हैं –

1. **लख माना लाख**
2. **लख माना देखना**
3. **लख माना लक्ष्य**

तो उन्होंने लख 84 का अर्थ 84 लाख ले लिया है। वास्तव में लख माना देख।

अपने 84 जन्मों को देखो – परमात्मा ने यह कहा है। सब प्रकार की योनियाँ एकत्रित कर लो तो भी 84 लाख योनियाँ नहीं हो सकती।

[3] ऋषीमुनियों ने पाप कर्म करने वाले लोगों को डराने के लिए कह दिया – मनुष्यात्मा पशु योनियों में जन्म लेती हैं

भारत देश देवताओं की भूमि, पुण्य आत्माओं की भूमि है। भारत पहले स्वर्ग था लेकिन धीरे-धीरे यहाँ पाप की शुरूवात हुई। तब ऋषीमुनियों ने ऐसा कह दिया कि अगर आप पाप कर्म करोगे तो आपको पशु योनियों में जाना पड़ेगा। बात तो वही रह गई लेकिन वह सिद्धान्त बन गया। लेकिन गलत सिद्धान्त प्रचालित हो गया।

[4] खुशखबरी – कैसी भी पाप कर्म करने वाली मनुष्य आत्मा हो लेकिन वह मनुष्य योनि में ही जन्म ही लेती है

वास्तव में मनुष्य आत्मा मनुष्य जन्म ही लेती है – यह हम आपको खुशखबरी सुनाते हैं। कैसी भी पाप कर्म करने वाली आत्मा हो वह मनुष्य योनि में ही जन्म लेती है, हाँ उसको जन्म उसके कर्मो के अनुसार मिलता है।

आज तक तो हम यही सुनते हैं, मानते आये हैं कि 84 लाख योनियाँ भोगने के बाद ही कहीं आत्मा को मनुष्य चोला मिलता है, इसलिए मनुष्य जन्म दुर्लभ अथवा हीरे जैसा अनमोल माना गया है –

पाप की गठरी शीश पर, अन्त समय पछतायें
हीरा जन्म मनुष्य का, कौड़ी तुल्य गवायें।

[5] मनुष्य आत्मा का पुनर्जन्म पशु योनि में – यह मान्यता निराधार है, इसके पीछे कोई आधार नहीं है

(1) पशु योनि से भी कहीं अधिक प्रकार के दुःख मनुष्य योनि में है तो फिर पशु योनि को भोग योनि कैसे माना जाये?

हमारे यहाँ यह मान्यता प्रचलित है कि पशु योनि आत्मा के लिए भोग-योनि है। लेकिन जरा सोचिये कि अगर पशु-पक्षी आदि योनियाँ ही आत्मा के लिए भोग-योनियाँ है तो 84 लाख योनियाँ भोगने के बाद मनुष्य-योनि में तो आत्मा को दुःख नहीं भोगना पड़ता केवल सुख ही मिलता। परन्तु हम देखते हैं कि मनुष्यात्मा दुःख भी भोगती है और सुख भी। इसलिए यह मान्यता निराधार है।

आज हम देख रहे हैं कि मनुष्य-योनि में भी अनेक प्रकार के दुःख होते हैं, उतने तो पशु-योनि में शायद होते भी न होंगे।

उदाहरण के तौर पर – सरकार के बढ़ते हुए टैक्सों और बढ़ती महँगाई की चिन्ता, कपड़े-लत्ते, भोजन, बर्तन और शादी-शिक्षा के लिए धन इकठ्ठा करने की फिक्र मनुष्य को ही लगी रहती है पशु-पक्षी आदि इन चिन्ताओं से बचे हुए हैं। उन्हें मान-अपमान, वेश-भूषा आदि की कोई चिन्ता नहीं, न उनके यहाँ मुकदमेबाजी है, न इलेक्शन का कोई चक्कर, न उन्हें परीक्षा की चिन्ता होती है, न पुलिस का डर।

अतः मनुष्य योनि में ही अनेकानेक प्रकार की व्यवस्थाएँ, वेदनायें, चिन्तायें, चेष्टायें, आवश्यकताएँ, कामनायें, विकल्प, विचार, वासनायें, निराशायें इत्यादि होती हैं जिससे कि मनुष्य का जीवन चिन्तित रहता है।

(2) मनुष्यात्मायें मनुष्य-योनि में ही अन्य योनियों से अधिक दुःखी है तो फिर दुःख भोगने के लिए योनि परिवर्तन की बात सही कैसे मानी जाये?

जब हम देख भी रहे है कि मनुष्यात्मायें मनुष्य-योनि में ही अनेक प्रकार के दुःख तथा अशान्ति भोग रही हैं तो दण्ड के लिए उनका योनि-परिवर्तन क्यों माना जाए?

उल्टा हम देखते हैं कि बहुत से पशु-पक्षी कई मनुष्यों से भी अधिक सुखी हैं। जैसे कि पालतू कुत्ता। पालतू कुत्तों पर लोग बहुत धन खर्च करते हैं। बहुत से कुत्ते अच्छे बंगलों में रहते, कारों में घूमते हैं, पाव-बिस्कुट खाते तथा दूध पीते हैं। परन्तु आज के संसार में करोडों मनुष्य ऐसे हैं जो कि सड़कों पर भूखे रहते हैं या रोटी के टुकड़े के लिए दर-दर भीख माँगते हैं और मनुष्य उन्हें कुत्तो से भी बुरी तरह डाँट-डपटकर, धक्का देकर या तिरस्कार करके हटा देते हैं। उल्टा कुत्तों की देखभाल करने वाले तथा उनके डॉक्टर आदि भी होते हैं। परन्तु कई ऐसे भी होते हैं जिन्हें दवाई या दूध भी नसीब नहीं होता।

अतः स्पष्ट है कि मनुष्य-आत्मा मनुष्य-योनि में ही सुख-दुःख भोगती है। आत्मा के लिए योनि-परिवर्तन की कल्पना मिथ्या है।

(3) मनुष्यात्माओं के लिए अधिक बुद्धिमान तथा संवेदनशील होने के कारण मनुष्य-योनि में ही दुःख भोगने की सम्भावना अधिक है तो फिर दुःख भोगने के लिए योनि परिवर्तन की बात सही कैसे मानी जाये?

और हम यह भी देखते हैं कि मनुष्य-योनि में दुःख भोगने की सम्भावना भी अधिक होती है क्योंकि मनुष्य पशुओं की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं। जैसे कि एक मनुष्य भरी सभा में अपने बारे में दो अपमान-सूचक शब्द सुनकर भी इतना दुःखी हो जाता है कि उसके हृदय की गति रुक जाती है और एक गधे को आठ डण्डे लगाये जायें तो भी वह बड़े शान से चलता है।

इससे स्पष्ट है कि मनुष्यात्मा को दुःख भोगने के लिए दूसरी योनियों में जाने की आवश्यकता ही नहीं है। बल्कि अधिक बुद्धिमान तथा संवेदनशील होने के कारण मनुष्य-योनि में थोड़ी-सी बात में भी मनुष्य अधिक दुःख भोगता है।

(4) मनुष्य योनि में ही कम इन्द्रियों वाले व्यक्ति उपलब्ध हैं तो फिर दण्ड के लिए कम कर्मेन्द्रियाँ वाली निकृष्ट योनि अथवा पशु योनि में जाने की बात सही कैसे मानी जाये?

कई लोग मानते है कि पशु-पक्षी योनियों में मनुष्य योनि की अपेक्षा कम कर्मेन्द्रियाँ होती है और उनमें बुद्धि कम होती है। जैसे गधे को अल्प बुद्धि प्राप्त होती है।

इस बात को देखकर लोग मानते हैं कि मनुष्य-आत्मा को बुरे कर्म के दण्ड स्वरूप उसे कोई-न-कोई ऐसी निकृष्ट योनि मिलती है। परन्तु हम देखते हैं कि मनुष्यों में से भी कई व्यक्ति कम इन्द्रियों वाले होते हैं। जैसे कि अंधें, लंगडे, गूंगे, बहरे आदि। एक ही समय में दो बच्चे पैदा होते हैं एक स्वस्थ है और दूसरा अस्वस्थ है, एक बुद्धिमान है तो दूसरा Mentally retarded है। तो मनुष्य योनि में ही कम इन्द्रियों वाले व्यक्ति हम देखते हैं तो योनि परिवर्तन क्यों माने?

(5) मनुष्य का सुधार तो शिक्षा से होता है न कि दण्ड से तो फिर सुधार के लिए कुदरत की ओर से दण्ड के रूप में योनि परिवर्तन के नियम की बात सही कैसे मानी जाए?

लोग मानते कि हमारे यहाँ दण्ड की प्रकिया है जैसे सरकार दण्ड के अतिरिक्त अपराधी के सुधार के विचार से भी उसे जेल में बन्द कर देती है ताकि बन्दी होने से उसकी अपराध-वृत्ति का प्रयोग न हो सकेगा और धीरे-धीरे उसकी यह वृत्ति ढ़ीली हो जायेगी और वह बुराई छोड़ देगा। वैसे ही मनुष्यात्मा की दूषित वृत्तियों को सुधारने के लिए कुदरत की ओर से योनि-परिवर्तन का नियम है। लेकिन जेल में जाकर तो अपराधी अन्य अपराधियों के संग में और भी अधिक बुरा हो जाता है, वह सुधरता थोड़े ही है। इसलिए ही तो अपराधी के मित्र-सम्बन्धी शुरू में बहुत कोशिश करते हैं कि किसी प्रकार उसे जेल की सजा न मिले ताकि वह पक्का अपराधी न बन जाये। मनुष्य का सुधार तो शिक्षा से होता है न कि जेल से इस बात को तो आज सरकार भी मानती है।

अगर एक मिनट के लिए उदाहरण के तौर पर आपकी बात मान भी ली जाये कि चोरी करने के संस्कार वाली आत्मा का अगला जन्म बिल्ली की योनि में होता है परन्तु आप सोचिये कि बिल्ली भी तो चोरी करके दूध पिती है तब सुधार क्या हुआ?

अच्छा मान लीजिए कि चोर की आत्मा बिल्ली की योनि में जन्म नहीं लेती, शेर की योनि मे जन्म लेती है, जिसमें उसे चोरी न करनी पड़े। तब तो और भी बुरी बात है क्योंकि चोरी का संस्कार पहले था, दूसरे पर हमला करने और हिंसा करने तथा मनुष्य को मार कर खाने का संस्कार अब और हो जायेगा।

आप कहेंगे कि शेर की योनि में भी नहीं कबूतर की योनि में पुनर्जन्म होता है। परन्तु यह तो बताइये कि चोर तो चालाक होता है और सिपाही को देखने पर भाग खड़ा होता है और सामना होने पर लड़कर भी छुड़ाने की कोशिश करता है परन्तु कबूतर बड़ा भोला होता है वह तो बिल्ली के आने पर डर के मारे आँखें बन्द कर लेता है। तब भला उस चोर में शरीर छोड़ते ही इतना भोलापन कहाँ से आ गया? दूसरे यह सुधार तो न हुआ और ही degrade हुआ क्योंकि चोरी का संस्कार अब और ही आ गया।

मनुष्य, मनुष्य योनि में ही दुःखी व्यक्तियों को देखकर अच्छा बनने तथा बुराई से बचने की प्रेरणा ले सकता है, जैसे – पागल, बुद्धिहीन, अपाहिज, अंधे इत्यादि। अतः मनुष्य को बुराई से बचने के लिए उस आत्मा को दूसरी योनियों में पुनर्जन्म लेने का सिद्धान्त बताना जरूरी नहीं है। सुधार के लिए तो मनुष्य को यह ज्ञान देने की आवश्यकता है कि बुरे कर्मों का फल अटल रूप से उसे दुःख के रूप में मिलेगा जैसे गीता में कहा है कि – जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल हमें मिलेगा। इसलिए उसे सावधान रहना चाहिए।

(6) 'जैसा बीज वैसा फल' होता है अर्थात् जब हरेक योनि की आत्मायें अलग-अलग हैं तो फिर योनि परिवर्तन की बात कैसे मानी जाये?

सभी की आत्माएँ एक जैसी ही ज्योति-बिन्दु हैं, लेकिन मनुष्यात्मा दूसरी योनियों में नहीं जाती। क्योंकि जैसे हम देखते हैं कि दो वनस्पतियों (पीपल और बरगद) का बीज लगभग एक ही माप या आकार वाला होता है तब क्यों नहीं पीपल के बीज से बरगद पैदा हो जाता? स्पष्ट है कि माप या आकार का प्रश्न नहीं है। दोनों की जाति अलग-अलग है। इसलिए जैसा बीज वैसा फल होता है। जैसे आम की गुठली से आम ही पैदा होता हैं, केला नहीं, वैसे ही हरेक योनि की भी आत्मायें अलग-अलग हैं। मन-बुद्धि-संस्कार आत्मा से अलग नहीं है बल्कि स्वयं आत्मा ही में पार्ट या संस्कार भरे हुए हैं। मनुष्यात्मा ही अन्य योनियों की आत्मा से अलग है।

(7) बुरे संस्कारों और कर्म वाली मनुष्यात्माओं का पुनर्जन्म यदि पशु योनियों में होता हो तो फिर जनसंख्या में वृद्धि क्यों?

अगर मनुष्यात्मायें पशु योनियों में जन्म लेती तो जनसंख्या में वृद्धि न होती जैसे कि हम जानते हैं कि आज मनुष्य-गणना बहुत ही तीव्र गति से बढ़ रही है। अगर मनुष्यात्मायें अपने बुरे कर्मों या संस्कारों के कारण पशु-पक्षी आदि योनियों में जन्म लेती होती तब जनसंख्या इस प्रकार न बढ़ती जाती बल्कि बहुत ही कम होती क्योंकि इस कलियुग में अधिकतर आत्मायें बुरे संस्कारों और बुरे कर्म करने वाली ही तो है। इससे स्पष्ट है कि बुरे संस्कारों तथा कर्मों वाली होने पर भी मनुष्यात्माओं का पुनर्जन्म मनुष्य-योनि में ही हो रहा है इसलिए वह अधिक विकारी तथा दुःखी होती जा रही है।

(8) समाचार-पत्रों में आने वाली पुनर्जन्म की घटनाओं में भी जब मनुष्यात्मा स्वयं को पूर्व जन्म में भी मनुष्यात्मा के रूप मे बताती हैं तो पशु-योनि में पुनर्जन्म किस आधार पर माना जाये?

हमने समाचार-पत्रों में पुनर्जन्म के बारे में बहुत से समाचार पढ़े होंगे जैसे कि एक बच्ची फलाँ नगर में रहती थी और फलाँ उसके मानवी माता-पिता थे। कभी भी किसी ने यह तो नहीं बताया कि पिछले जन्मों में मैं शेरनी थी और फलाँ जंगल में रहती थी? समाचार पत्रों में ऐसे समाचार भी छपे हैं कि मैं पूर्व-जन्म में फलाँ स्त्री का पति था, मैंने अपनी स्त्री का कत्ल किया था आदि-आदि। जब कत्ल करनेवाला व्यक्ति भी मनुष्य-योनि में जन्म ले सकता है तो फिर दूसरे कर्म करने वाले का पशु-योनि में पुनर्जन्म किस आधार पर माना जाये?

खैर, हमने आपको खुशखबरी सुनाई कि मनुष्यात्मा मनुष्य-योनि में ही पुनर्जन्म लेती है पशु-योनि में नहीं आप मानो या न मानो।

छठा पाठ

– 2 –

भारत के उत्थान और पतन की कहानी (सीढ़ी)

[1] विषय प्रवेश

हमने आपको पहले ही बताया है कि हम आपको भारत के उत्थान और पतन की कहानी बतायेंगे।

[2] भारत के उत्थान और पतन की कहानी सीढ़ी के रूप में

कैसे श्रेष्ठाचारी भारत भ्रष्टाचारी बनता है, कैसे पावन भारत पतित बनता है, कैसे हम पूज्य से पुजारी बनते है – यह सीढ़ी के माध्यम से दर्शाया गया है। सीढ़ियाँ तो आपने अनेक देखी होंगी, लेकिन आज हम आपका परिचय एक ऐसी अद्‌भुत सीढ़ी से करा रहे हैं जिसका सम्बन्ध भारत के उत्थान और पतन से है।

[3] सीढ़ी का पहला चरण – सतयुग

(1) सतयुग – 8 जन्म, 1250 वर्ष, श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का दैवी मर्यादा युक्त राज्य, देवता वर्ण, 16 कला, सूर्यवंश, सतोप्रधान स्थिति

सीढ़ी के चित्र में सबसे पहले सतयुग दिखाया गया है जिसको ही 'आदि काल' कहा जाता है। आदिकाल में हमारा भारत सोने की चिड़िया था। आज भी लोग मानते हैं कि हमारा भारत पहले सोने की चिड़िया था, इसलिए वो गीत बना हुआ है कि **जहाँ डाल डाल पर, सोने की चिड़िया करती है बसेरा**....तब संसार में एक ही दैवी धर्म था और एक ही सूर्यवंश था। सतयुग के शुरू में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का दैवी मर्यादा युक्त राज्य था। तब 'यथा राजा-रानी तथा प्रजा' सभी पावन अर्थात निर्विकारी थे दैवी गुणों वाले, डबल अहिंसक थे, चूँकि वे पावन थे और श्रेष्ठ कर्म करते थे, इसलिए प्रकृति भी उनके वश में थी अर्थात् तब न प्राकृतिक प्रकोप होते थे और न उन्हें तन का रोग था, न ही अन्न-धन की कमी होती थी और न वहाँ अकाले मृत्यु होती थी। सभी तत्व सतोप्रधान और सुख के साधन थे। पवित्रता-सुख और शान्ति से सम्पन्न होने के कारण उस युग के राजा-रानी और दैवी प्रजा दो ताजों से अर्थात् एक लाइट के ताज से तथा रत्न-जड़ित मुकूट से युक्त दिखाया जाता है।

इस प्रकार स्वाभाविक रीति से धर्म-निष्ठ, कर्म-निष्ठ सतोप्रधान तथा निर्विकारी होने के कारण, उस समय वे लोग देवी-देवता कहलाते थे। उनके नाम के साथ 'श्री' की उपाधि का प्रयोग किया जाता है और उनके हरेक अंग का वर्णन करते हुए 'कमल' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि 'कमल नेत्र', 'कमल मुख' आदि-आदि। तब वहाँ लोगों में पारस्परिक प्यार इतना था कि जिसके लिए कहावत प्रसिद्ध है कि **'तव शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे'**। तब भारत में बहुत धन था और हीरे जड़ित सोने के महल थे, चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली थी।

इसलिए आज भी लोग मुहावरे में कहते हैं कि **'तव घी और दूध की नदियाँ वहती थी'**। यहाँ सोना, चाँदी और रत्न-मणि इतनी मात्रा में थे कि लोग सोने की चादरों से अपने महलों को मढ़ देते थे और उनमें रत्न जड़ देते थे, तब दास-दासियाँ भी इतने सुखी और वैभव-सम्पन्न थे जिसका आज चित्रण नहीं हो सकता।

चूँकि लोग पावन थे इसलिए उनकी आयु लम्बी थी और अकाले मृत्यु नहीं होती थी बल्कि बहुत बड़ी आयु होने पर लोग स्वेच्छा से ही शरीर छोड़ते थे। इसलिए कहा जाता है कि **'उन्हें काल नहीं खाता था और अकाल भी नहीं सताता था'**। उसी समय भारत अथवा विश्व वैकुण्ठ था। उसे ही स्वर्ग, बहिश्त, हेविन, गार्डन ऑफ अल्लाह, सचखण्ड अथवा पैराडाइज कहा जाता है। सभी लोग सम्पूर्ण पवित्र और दिव्य गुणों से युक्त थे, इसलिए उन्हें 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है। ऐसी एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा वाली इस अद्वैत स्वर्ण भूमि पर सूर्यवंशी देवात्माओं ने 8 जन्म लिये 1250 वर्ष तक राज्य किया।

[4] सीढ़ी का दूसरा चरण – त्रेतायुग

(1) त्रेतायुग – 12 जन्म, 1250 वर्ष, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और श्री सीता का चक्रवर्ती राज्य, क्षत्रिय वर्ण, 14 कला, चन्द्रवंश, सतो स्थिति

चाँद की जब 16 कलायें होती है तब वह सम्पूर्ण अवस्था और तेज से युक्त होता है। परन्तु धीरे-धीरे जैसे पूर्णिमा के बाद चन्द्रमा की कलायें घटने लगती है वैसे ही देवी-देवताओं की पवित्रता और शक्तियों की डिग्री घटने लगी। सुख-समृद्धि को भोगते हुए जब 1250 वर्ष बीते तब तक सतयुगी देवी-देवता घराने की आत्मायें स्वर्गिक जन्म-पुनर्जन्म लेते-लेते अपनी दो कलायें कम कर बैठी। देवता 16 कला से 14 कला हो गये। तब त्रेतायुग शुरू हुआ। अब सूर्यवंश के बाद चंद्रवंश अस्तित्व में आया। अब भी संसार में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकर न थे, अब भी भारत में पूर्ण सुख-शान्ति का ही राज्य था।

त्रेतायुग के शुरू में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और श्री सीता का चक्रवर्ती राज्य था। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सभी श्रेष्ठाचारी थे और इसलिए राम-राज्य की महिमा है और कहावत प्रसिद्ध है कि –

'राम राजा, राम प्रजा, राम साहूकार है,।
बसे नगरी, जिये दाता धर्म का उपकार है।'

आज भी भारत के लोग राम-राज्य चाहते हैं। बापूजी का सपना था कि रामराज्य की स्थापना होनी चाहिए। उस राज्य में सभी सुखी होते हैं।

उस युग में देवात्माओं ने 12 जन्म लेकर 1250 वर्ष तक राज्य किया।

त्रेतायुग के लोगों का वर्ण क्षत्रिय वर्ण है क्योंकि वे दो कलायें कम पवित्र है।

(2) ब्रह्मा का दिन

इस प्रकार उपरोक्त दोनों युगों की अर्थात् सृष्टि के 2500 वर्ष तक की अवधि को ब्रह्मा का दिन कहा जाता है। क्योंकि वहाँ ज्ञान का प्रकाश था।

[5] सीढ़ी का तीसरा चरण – द्वापरयुग

(1) ब्रह्मा की रात

अब हम सीढ़ी से नीचे की ओर उतर रहे हैं, जहाँ से ब्रह्मा की रात आरम्भ होती है। इस समय को द्वापर का आदिकाल कहते हैं।

(2) द्वापरयुग – 21 जन्म, 1250 वर्ष, अव्यभिचारी भक्ति, वैश्य वर्ण, 8 कला, वैश्य वंश, रजोप्रधान स्थिति

जैसे कि हमने देखा कि सतयुग, त्रेतायुग में देवतायें आत्म-अभिमानी थे अर्थात् उन्हें शरीर का भान नहीं था। परन्तु लम्बे काल तक शरीर के सम्बन्ध में रहने से वे देहाभिमानी हो गये और इस देह-अभिमान के कारण विकारों ने उनमें प्रवेश करना शुरू किया। अब देवतायें वाममार्गी हो गये, वे विषय विकारों में गोते लगाने लगे। इस प्रकार जब देवतायें अपने स्वधर्म को भूल गये और विकारों के वशीभूत हो गये तब उनका सुख-चैन, आनन्द सब छिन गया। अब वह देव पद या पूज्य पद से गिर कर पुजारी मनुष्य की अवस्था को प्राप्त होते हैं, अब वे रजोप्रधान स्थिति वाले होते हैं इसलिए उनके वर्ण को वैश्य वर्ण कहा गया है। वे दुःखी होकर भक्ति पूजा-पाठ करने लगे। सबसे पहले वे निराकार शिव की पूजा प्रारम्भ करते है। सबसे पहले सोमनाथ का मन्दिर बनाते है और शिव लिंग की पूजा आरम्भ करते हैं। धीरे-धीरे वे अपने ही पूर्व रूप अर्थात् श्री नारायण रूप की भी पूजा-भक्ति करने लगते हैं फिर अन्य देवी-देवताओं की भी आराधना व पूजा शुरू होती है जैसे कि कोई लक्ष्मी-नारायण की, कोई राम-सीता की भक्ति करते हैं। द्वापर युग में ही वेद,शास्त्रों की रचना होती है तथा यज्ञ भी होने लगते हैं। इस प्रकार भक्ति भी अव्यभिचारी से व्यभिचारी हो जाती है अर्थात् एक परमात्मा की भक्ति की बजाए अनेकों की भी भक्ति होने लगती हैं। द्वापरयुग में देवी-देवता धर्म की आत्माओं ने 21 जन्म लेकर 1250 वर्ष तक वैश्य वंश में अपना-अपना पार्ट प्ले किया। इस युग में कई छोटे-छोटे राज्य बने और बंटवारे के कारण राजाओं में कई प्रकार का मतभेद भी जन्म लेता गया।

[6] सीढ़ी का अन्तिम चरण – कलियुग

(1) कलियुग – 42 जन्म, 1250 वर्ष, व्यभिचारी भक्ति, शुद्र वर्ण, कलाहीन, शुद्र वंश, तमोप्रधान स्थिति

इसके बाद हम सब आत्मायें जन्म लेते-लेते सीढ़ी के अन्तिम चरण अर्थात् कलियुग मे आ पहुँचे हैं। अब तो रावण अर्थात् माया (पांच विकारों) का प्रभाव सृष्टि पर बढ़ने लगता है।

कलियुग में तमोगुण की प्रधानता होती है। अतः सभी नर-नारी शूद्र वर्ण के होते हैं। इस युग में वे पुजारी राजा-रानी अथवा प्रजा के रूप में कुल 42 जन्म लेते हैं।

वे आसुरी लक्षणों तथा आसुरी मर्यादाओं को अपनाते गये और अति विकारी तथा भ्रष्टाचारी बनते गये।

इस युग में वृक्ष, सूर्य, जल, अग्नि आदि तत्वों की पूजा होने लगती है। बहुत लोगों ने धर्म को भी धन्धे अथवा कमाई के साधन के रूप में अपना लिया और जात-पात के साम्प्रदायिक तथा विरोधी धर्मो के बीच खूब झगड़े होने लगे। स्त्री को भोग ही का साधन माना जाने लगा और सतयुग तथा त्रेतायुग में उन्हें जो मान और स्थान प्राप्त था उसकी बजाय अब उसका तिरस्कार होने लगा।

अब प्रकृति भी मनुष्य के लिए कष्ट देने का कारण बन गयी। रोग, शोक, वृद्धावस्था और अकाल-मृत्यु आदि से मनुष्य पीड़ित होने लगे। परमपिता परमात्मा से योग-भ्रष्ट होने के कारण, भारत जो कि पहले सम्पूर्ण सुख-शान्ति-सम्पन्न अर्थात् स्वर्ग था, अब कंगाल, मोहताज और भ्रष्टाचारी अर्थात् नरक बन जाता है।

आज यहाँ शान्ति के लिए जगह-जगह साधु-सम्मेलन होते हैं, परन्तु फिर भी शान्ति नहीं है, सतयुगी दैवी मर्यादा के विपरीत अब भारत अपने लिए दूसरे से धन और अन्न भी माँगता है। प्रजा का प्रजा पर राज्य होता है, जिनमें कि अनुशासन-हीनता, मत-भेद, धर्म-भेद, प्रान्त-भेद, भाषा-भेद आदि-आदि के आधार पर आये दिन दंगे होते रहते हैं। जनता मे भ्रष्टाचार तथा फूट बढ़ती जाती है क्योंकि वे एक-दूसरे को ‘आत्मा-आत्मा भाई-भाई’ की दृष्टि से नहीं देखते और परमपिता परमात्मा से विपरीत-बुद्धि होते हैं।

[7] कलियुग का अन्तिम चरण – परमात्मा का अवतरण और ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा

कलियुग अपनी अन्तिम श्वासें गिन रहा है, जनसंख्या, विस्फोट, बढ़ता हुआ प्रदूषण, प्राकृतिक असन्तुलन, मिलावट, बनावट, भ्रष्टाचार आदि अपने चरम सीमा पर हैं, ऐसे में सृष्टि का उद्धार करने के लिए पतित पावन सर्व के सद्गति दाता शिवपिता पुनः इस धरा पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं।

इस ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग से ही यह संसार कलियुगी नर्क से बदल सतयुगी स्वर्ग बनेगा, पतित से पावन आसुरी से दैवी, दुःखी से सुखी बनेगा। अब ऐसा ही समय चल रहा है जो भाग्यशाली आत्मायें इस समय पवित्र बनकर इस श्रेष्ठ ज्ञान-योग पर चलेंगे वही फिर भविष्य में राज्य सुख प्राप्त करेंगे तथा वर्तमान में भी उनका जीवन सुख-शान्ति एवं सफलता से भरपूर हो जायेगा।

[8] कलियुग का अन्त और सतयुग का पुनः आगमन

चित्र में अन्त में दिखाया है कि परमपिता परमात्मा जिन्हें ज्ञान देते हैं वे योग-तपस्या कर रहे हैं और शुद्र से ब्राह्मण बनकर ब्रह्मचर्य का आजीवन पालन करते हुए देव-पद प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप वे पवित्र बनते हैं और परमापिता परमात्मा योग रूपी लिफ्ट द्वारा उन्हें वापस परमधाम अथवा मुक्तिधाम ले जाते हैं जहाँ से फिर वे अपने-अपने समय पर सतयुगी सृष्टि में आते हैं।

कलियुग का अन्त होने पर यहाँ भारत में गृह-युद्धों तथा प्राकृतिक आपदाओं आदि द्वारा महाविनाश होता है और इस प्रकार अधर्म का विनाश होने के बाद सतयुग आ जाता है।

[9] जनसंख्या क्यों बढ़ रही है ?

जो आत्मा एक बार आ जाती वह वापस नहीं जाती और नयी आत्मायें भी आ रही हैं। हमेशा चीज़ नयी बनायी जाती है, वह नैचुरली पुरानी हो जाती है। जो नयी आत्मायें आती हैं उसका Already existing आत्माओं पर प्रभाव पड़ता है।

[10] मुक्ति, जीवनमुक्ति, जीवनबन्ध और मोक्ष

♦ **जीवनबन्ध** – जीवन में रहते पाँच विकारों के बन्धन में रहना।

♦ **जीवनमुक्ति** – जीवन में रहते विकर्मों से मुक्त।

♦ **मुक्ति** – मुक्ति की अवस्था में परमधाम में हमारी शक्तियाँ सुषुप्त पड़ी रहती है। मुक्ति से जीवनमुक्ति ज़्यादा अच्छी है।

♦ **मोक्ष** – मोक्ष का अर्थ है सृष्टि पर आना ही नहीं। मोक्ष किसी को भी नहीं मिलता, क्योंकि आत्मा के अन्दर पार्ट प्ले करने का संस्कार है।

(1) तीन प्रकार के लोग

आज हम दुनिया में तीन प्रकार के लोग देखते हैं –

1. **परमानेन्ट (Permanent) जाना चाहते हैं।**
2. **टेम्प्ररी (Temporary) जाना चाहते हैं अर्थात् फ्रेश होकर फिर से आना चाहते हैं।**

3. जाना ही नहीं चाहते हैं, न तो परमानेन्ट (Permanent) और न ही टेम्प्ररी (Temporary).

♦ वास्तव में Permanent कोई नहीं जाना चाहता

वास्तव में **Permanent** कोई नहीं जाना चाहता है। कैसे? इसके लिए एक उदाहरण मैं आपको देती हूँ।

- **उदाहरण – 50-60 मंजिलें वाली विल्डिंग में रहने वाले एक बच्चे का**

एक बहुत बड़ी बिल्डिंग है जिसमें 50-60 मंजिलें हैं और उस बिल्डिंग के नीचे एक प्लेग्राउण्ड है। Vacation का टाईम है सारे बिल्डिंग के बच्चे उस प्लेग्राउण्ड में खेलते है।

सुबह से उनका खेल चलता है। मान लो आप भी उस बिल्डिंग में रह रहे हो और आपका भी बच्चा है जो भी नीचे खेलने के लिए जाना चाहता है और आप जानते हो कि नीचे जो गेम चल रही है वह बड़ी रफ गेम है, आप उस बच्चे को समझाते हो क्यों नीचे जाना चाहता है मेरे पास इतने खिलौने हैं वह खेलो, उसको अच्छे लगेंगे? इतना सजीव खेल चल रहा है और ऊपर बैठकर वह बच्चा खिलौने के साथ खेलेगा? उसको खिलौने अच्छे नहीं लगते हैं, वह जिद्द करता है – मैं नीचे जाना ही चाहता हूँ।

आप बच्चे को समझाते हो, बेटा नीचे जो गेम चल रही है वह बड़ी रफ गेम है, मान लो किसी ने तुझको धक्का दे दिया, गिरा दिया, चिटींग किया, तू हार गया, फिर तू रोता हुआ आयेगा। इसलिए जाओ ही नही, मान जायेगा वह बच्चा? नहीं, क्या कहेगा? कोई बात नहीं हार गया तो हार गया, उसमें क्या हो गया, गेम ही तो है ना, दूसरी बार जीत जाऊँगा, उसको जाना ही है। अच्छा, छुट्टी दे दी गयी खेलने के लिए।

नीचे खेलने के लिए गया, खेल में Involve हो गया, बहुत अच्छा गेम चल रहा था, उसको काफी मज़ा आने लगा। वह गेम सारा दिन चलता रहा, शाम होने को आयी, चीटिंग बढ़ती गयी, बढ़ती गयी और जब इतनी चीटींग बढ़ने लगी कि आखिर उसको किसी ने जोर से ऐसा धक्का मार के गिरा दिया, वह हार गया, रोना चालू कर दिया।

आपने आवाज सुनी, क्या करेंगे आप? नीचे जायेंगे और बच्चों को कहेंगे कि अब सारा दिन बहुत खेला, सब घर जाओ, अब बहुत खेल लिया, अब कल खेलना जाओ सब। उसमें भी कई होते हैं कहेंगे नहीं-नहीं हमको खेलना है और एक गेम, कोई हैं जो चलने लगते हैं।

खुद के बच्चे को भी आप ऊपर ले आते हैं, मलहमपट्टी करके, Fresh करके, उसको कहेंगे सो जाओ। दूसरे दिन जब वह उठेगा और गेम नीचे चालू हुई तो वह बच्चा जायेगा या नहीं जायेगा, जायेगा ना। ऐसे ही भगवान ने हमको कहा, बेटे नीचे क्या करना है जाके, ऊपर इतनी शान्ति है, यहाँ ही बैठे रहो। हमने क्या कहा, हमें जाना है नीचे, नीचे इतना सजीव खेल चल रहा है, हम ऊपर बैठकर क्या करेंगे? अरे! इतनी शान्ति है। कहेंगे हमको शान्ति नहीं चाहिए, हमको नीचे जाना है क्योंकि हमने देखा, जो नीचे गया, ऊपर कोई आया ही नहीं। माना नीचे की गेम जोरदार चल रही है, इसलिए हमको जाना जरूर है।

बहुत समझाया नीचे जो गेम चल रही है ना वह बहुत रफ गेम है, धोखा मिलेगा, गिरा देंगे, तुमको चोट लगेगी, बहुत दिल को भी चोट लगेंगी। सब कुछ समझाया लेकिन हमने क्या कहा – कोई बात नहीं। अरे! तुम हार गये तो? कोई बात नहीं, हार गये तो हार गये, उसमें क्या है, दूसरी बार जीत जायेंगे। ऐसे करके, एक-एक गेम हमने खेल लिया। एक-एक जन्म हमारा एक-एक गेम थी। खेलते गये, खेलते गये और शाम हो गयी, अन्धेरा हो गया, तब चिल्लाना चालू किया, बस अब मोक्ष मिल जाये। रोना चालू किया कि बहुत चोटें लग गयी। अभी बहुत चोटें लग गयी तो क्या करते हैं?

बहुत धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट, भ्रष्टाचार, अत्याचार, पापाचार इतना बढ़ गया, इतनी चिटींग बढ़ गयी जो बात मत पूछो। तब वह भगवान भी आता है इसलिए कहा – यदा यदा ही धर्मस्य.....। वह आता है, आकर सब बच्चों को कहता है – चलो, अब घर चलो, सो जाओ, फिर से खेलने के लिए कल आना, चलो अभी और आकर के सब बच्चो को ले जाता है, मलहमपट्टी करके, साफ-शुद्ध करके, सबको ऊपर ले जाता है, आराम करो, सो जाओ घर में जाकर के। लेकिन दूसरे दिन फिर से यह गेम चालू होगी तो आयेंगे या नहीं आयेंगे? आयेंगे।

हर एक अपने समय पर आयेगा जैसे-जैसे उठते जायेंगे, नींद पूरी होगी ऊपर तो उठते जायेंगे, क्या करेंगे? अरे! नीचे गेम चालू हो गयी, चलो। चलने लगेंगे, नीचे आ जायेंगे, क्योंकि आत्मा का नीज स्वधर्म है कर्म में आना।

कितना भी थका होगा वह घर में पहुँचता है, सबको कह देगा, अब मेरे को कोई उठाना नहीं, बस अब मुझे सो जाना है, कोई फोन आवे तो फोन भी नहीं देना, इतना मैं थका हूँ। सो जायेगा 8 घण्टा, 10 घण्टा, 12 घण्टा फिर उठेगा या नहीं उठेगा? उठेगा ना। घरवाले अगर उसको कहे सोये रहो, आपको सोना था तो सोये रहो। कहेगा—वह तो थका हुआ था इसलिए कहा था, अब तो फ्रेश हो गया ना, अब क्यों सोऊँगा?

तो इन्सान का स्वधर्म है कर्म में आना, कर्म के बिना वह रह नहीं सकता है। इसलिए जब बहुत थक जाते हैं तो कहते हैं बस जाना है, सो जाना है, अब आना नहीं है, बस मोक्ष। लेकिन जब आराम कर लिया फ्रेश हो गये तो घर से फिर आयेंगे या नहीं आयेंगे? आयेंगे।

कहा न कोई नहीं चाहता है Permanent मोक्ष, आना तो पड़ेगा ना! खुद ही आयेंगे, कोई भेजता नहीं, खुद ही अपना समय हो जाता है, फ्रेश हो जाते हैं तो ऊपर बैठकर क्या करेंगे। आत्मा के अन्दर इतनी पोटेन्शियल है, वह पोटेन्शियल क्या ऊपर बैठने के लिए है? कोई व्यक्ति को माँ-बाप पढ़ायें लिखाये, योग्य बनायें, उसमें इतनी क्षमता हो, ताकत हो, सब कुछ हो और फिर वह कहे कि मैं घर में बैठ जाऊँ, शोभा देता है? यह बात वह कहेगा ही नहीं। इतनी ताकत हो उसके अन्दर, शक्ति हो, पढ़ा हो, योग्यता हो, सब कुछ हो तो क्या करेगा? कर्म मे आयेगा ही। तो इसी प्रकार आत्मा में भी इतनी क्षमता है तो ऊपर बैठने के लिए नहीं है, नीचे कर्म करने के लिये है, अच्छाई के तरफ भी आप Use कर सकते हैं।

[11] आत्मा के Maximum जन्म 84 और Minimum जन्म 1 (एक)

आत्मा Maximum 84 जन्म लेती है और Minimum एक और यह हमारा अन्तिम जन्म है।

सातवाँ पाठ

गीता का भगवान कौन

[1] विषय प्रवेश

[2] अपने धर्म को हिन्दु मानने वाले, क्या आप अपने धर्म का वास्तविक नाम, अपने धर्म-स्थापक का नाम तथा उसकी जीवन कहानी, स्थापना काल और धर्म पुस्तक का नाम जानते हो?

(1) अपने धर्म का वास्तविक नाम जानते हो?

(2) अपने धर्म के स्थापक का नाम तथा उसकी जीवन कहानी और स्थापना काल को जानते हो?

(3) अपने धर्म की पुस्तक का नाम जानते हो?

[3] अपने धर्म को हिन्दु मानने वालों के धर्म का वास्तविक नाम – आदि सनातन देवी-देवता धर्म, धर्म स्थापक का नाम – परमपिता परमात्मा शिव, धर्म स्थापना का काल – संगम युग, धर्म पुस्तक का नाम – गीता

(1) धर्म का वास्तविक नाम – आदि सनातन देवी-देवता धर्म

1. आदि सनातन देवी-देवता धर्म का अर्थ

① आदि

② सनातन

③ देवी-देवता

(2) धर्म स्थापक का नाम – परमपिता परमात्मा शिव तथा धर्म स्थापना का काल – संगम युग

(3) धर्म पुस्तक का नाम – गीता

1. गीता में भगवान ने अपने आने का समय और कारण बताया हुआ है
2. गीता में सब वेद-शास्त्रों का सार समाया हुआ है
3. गीता पर अनेकों टीकायें हुई हैं
4. गीता में भगवान की श्रीमत और वायदा दिया हुआ है

[4] गीता-ज्ञान

(1) गीता-ज्ञान किसने दिया?– देवता श्रीकृष्ण ने नहीं बल्कि ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव ने

(2) गीता-ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने किस युग में दिया? – द्वापरयुग में नहीं बल्कि संगमयुग में

(3) गीता-ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने किस रूप में दिया? – श्रीकृष्ण के रूप में नहीं बल्कि एक अन्य साधारण रूप द्वारा दिया

(4) गीता-ज्ञान के दाता परमात्मा परमपिता शिव ने कौनसा युद्ध कराया?

हिंसक युद्ध नहीं बल्कि धर्म युद्ध कराया

(5) गीता-ज्ञान के दाता परमात्मा परमपिता शिव किस रथ में बैठ ज्ञान सुनाया? घोड़े-गाड़ी वाले अर्जुन के रथ में बैठ उसका सारथी बन कर नहीं बल्कि प्रजापिता ब्रह्मा रूपी 'अर्जुन' के मानवी तन रूपी 'रथ' में प्रवेश कर प्रजापिता के साथ बैठ कर ज्ञान सुनाया

(6) गीता-ज्ञान के दाता परमपिता परमात्मा शिव को जानना और याद करना ज़रूरी क्यों?

1. गीता-ज्ञान दाता को जानना ज़रूरी क्यों?
   - ① पहली बात
   - ② दूसरी बात
   - ③ तीसरी बात
2. गीता-ज्ञान दाता को याद करना ज़रूरी क्यों?

सातवाँ पाठ

गीता का भगवान कौन

[1] विषय प्रवेश

आज हम आपको अपने असली धर्म के बारे में बताते हैं। हमारा यथार्थ धर्म कौनसा है?

[2] अपने धर्म को हिन्दु मानने वाले, क्या आप अपने धर्म का वास्तविक नाम, अपने धर्म-स्थापक का नाम तथा उसकी जीवन कहानी, स्थापना काल और धर्म पुस्तक का नाम जानते हो?

(1) अपने धर्म का वास्तविक नाम जानते हो?

आप अपने धर्म को हिन्दु मानते हैं। जैसे – जापान के लोग जापानी कहलाते हैं तो क्या उनके धर्म का नाम हम जापानी धर्म माने? फ्राँस के लोग 'फ्राँसीसी' कहलाते है तो क्या उनके धर्म का नाम हम 'फ्राँसीसी' धर्म माने? यह तो कोई बात न हुई!

सिन्धु नदी को विदेशी लोग हिन्दु या इण्डस कहने लगे और उसके आस-पास रहने वाले लोगों को हिन्दु या 'इण्डियन्स'। इसका अर्थ यह थोड़े ही है कि हमारे धर्म का नाम भी हमारे देश के ही नाम पर आधारित हो? दूसरे लोग हमारे धर्म को जो नाम दें, क्या वही नाम हम अपना लें या हम स्वयं भी इस धर्म का कोई अन्य वास्तविक नाम जानते और मानते हैं?

धर्म का नाम तो प्रायः धर्म-स्थापक के नाम से सम्बन्धित होता है, जैसे कि – बुद्ध ने जो धर्म स्थापित किया उसका नाम 'बौद्ध धर्म' और ईसा या क्राईस्ट ने जो धर्म स्थापित किया उसका नाम 'ईसाई' अथवा 'क्रिश्चियन' धर्म हुआ। या तो धर्म का नाम उस धर्म के किसी मुख्य मन्तव्य अथवा सिद्धान्त से सम्बन्धित होता है, परन्तु देश के नाम से तो धर्म का नाम नहीं लिया जाता।

(2) अपने धर्म के स्थापक का नाम तथा उसकी जीवन कहानी और स्थापना काल को जानते हो?

अच्छा, तो अब आप ही बताईये कि जैसे बौद्ध धर्म बुद्ध ने और ईसाई धर्म ईसा ने स्थापित किया वैसे ही जिसे आप 'हिन्दु' धर्म कहते है उसकी स्थापना किसने और कब की?

देखिए, आज हमारे धर्म के लोगों की क्या हालत हुयी हैं कि वे अपने धर्म के वास्तविक नाम, धर्म-स्थापक के नाम तथा उसकी जीवन कहानी और स्थापना काल को भी नहीं जानते!

अन्य धर्मों के लोग जानते हैं कि उनका धर्म किसने स्थापित किया, उसकी जीवन कहानी क्या है और उनका धर्म कब स्थापित हुआ। परन्तु हमारा धर्म चूँकि सर्व-प्राचीन है, इसलिए हम उसके स्थापक और स्थापना-काल को भूल गयें है, परन्तु सोचने की बात है कि आखिर किसी ने इसे स्थापित तो अवश्य किया होगा?

(3) अपने धर्म की पुस्तक का नाम जानते हो?

अच्छा, जिन्हें हम क्रिश्चियन मानते हैं तो उनका धर्म पुस्तक बाइबल है, जिन्हें हम मुस्लिम कहते हैं तो उनका धर्म पुस्तक है कुराण, बौद्धों का धर्म पुस्तक है धम्मपद। तो जब आप कहते हिन्दु तो आपकी धर्म पुस्तक कौनसी है?

[3] अपने धर्म को हिन्दु मानने वालों के धर्म का वास्तविक नाम – आदि सनातन देवी-देवता धर्म, धर्म स्थापक का नाम – परमपिता परमात्मा शिव, धर्म स्थापना का काल – संगम युग, धर्म पुस्तक का नाम – गीता

(1) धर्म का वास्तविक नाम – आदि सनातन देवी-देवता धर्म

तो देखिए, अब परमपिता परमात्मा शिव ने हमें इस सृष्टि चक्र और सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष का ज्ञान देते हुए समझाया है कि हमारे धर्म का वास्तविक नाम है – **'आदि सनातन देवी-देवता धर्म'।**

1. आदि सनातन देवी-देवता धर्म का अर्थ

① आदि

इसे आदि इस कारण से कहते हैं कि यह सतयुग के आदिकाल से चला आया है।

② सनातन

सनातन माना जिसका कभी विनाश नहीं होता, तो सनातन इसलिए कहते हैं कि कलियुग के अन्त में जब इस धर्म की पूर्णतः ग्लानि होती है तब भगवान इनकी पुनः स्थापना करते है और इस प्रकार सृष्टि का महाविनाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

③ देवी-देवता

इसके नाम के साथ देवी-देवता शब्द इसलिए जुड़ा हुआ है कि इस धर्म के आदिकाल के लोग अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग के लोग देवी-देवता थे। उनका आचार-विचार, आहार-व्यवहार आदि सतोप्रधान था और दिव्य गुणों से युक्त था।

(2) धर्म स्थापक का नाम – परमपिता परमात्मा शिव तथा धर्म स्थापना का काल – संगम युग

इस सर्वोत्तम धर्म की स्थापना परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा, कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ के संगम समय की। सनातन धर्म आदि है लेकिन एण्ड नहीं।

(3) धर्म पुस्तक का नाम – गीता

अच्छा, जिन्हें हम क्रिश्चियन मानते हैं तो उनका धर्म पुस्तक बाइबल है, जिन्हें हम मुस्लिम कहते हैं तो उनका धर्म पुस्तक है कुराण, बौद्धों का धर्म पुस्तक है धम्मपद। तो जब आप कहते हिन्दु तो आपकी धर्म पुस्तक कौनसी है? हमारा धर्म स्वयं भगवान ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापित किया, तो आप यह बताईये कि स्वयं भगवान के महावाक्य किस शास्त्र में है? जिस शास्त्र के वाक्य 'भगवानुवाच' – इन शब्दों से शुरू होते होंगे, जिस धर्म ग्रन्थ का नाम ही सिद्ध करता हो कि उसमें भगवान के वचन है वह ही हमारा धर्म शास्त्र होगा।

तो भगवानुवाच शब्द वाली एक ही पुस्तक है और वो है गीता। **गीता का नाम ही 'श्रीमद्भगवत गीता' है।** जिसका अर्थ होता है कि **'जिसमें भगवान के ज्ञान गीत समाहित है'।** इसी शास्त्र में वक्ता के लिए भगवानुवाच शब्दों का प्रयोग है।

1. गीता में भगवान ने अपने आने का समय और कारण बताया हुआ है

गीता में भगवान ने कहा है कि जब-जब दैवी-सम्पदा-सम्पन्न धर्म की ग्लानि होती है तब-तब मैं अधर्म का विनाश करने तथा सत् धर्म की स्थापना करने आता हूँ।

2. गीता में सब वेद-शास्त्रों का सार समाया हुआ है

गीता ही ऐसा शास्त्र है जिसमें आत्मा, परमात्मा, त्रिमूर्ती, झाड़, सीढ़ी सबका ज्ञान है। गीता ही ऐसा शास्त्र है जो वेद, शास्त्र सबका सार अपने अन्दर समाये हुए है।

3. गीता पर अनेकों टीकायें हुई हैं

बाइबल को विभिन्न भाषाओं में परिवर्तित किया गया, कुराण को भी विभिन्न भाषाओं में परिवर्तित किया गया लेकिन उस पर टीकायें नहीं हुई। टीकायें उस पर होती है जो लोकप्रिय हो। गीता पर टीकायें बहुत की गयी हैं।

4. गीता में भगवान की श्रीमत और वायदा दिया हुआ है

गीता में भगवान ने श्रीमत दी है। गीता वायदा करती है मैं तुम्हें राजाओं का राजा बना दूंगी।
तो ऐसी सर्व शास्त्रोमयी शिरोमणि गीता का भगवान कौन है?

[4] गीता-ज्ञान

(1) गीता-ज्ञान किसने दिया? – देवता श्रीकृष्ण ने नहीं बल्कि ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव ने

आप पहले ही परमात्मा के दिव्य नाम, दिव्य रूप, दिव्य धाम आदि का परिचय प्राप्त कर चुके हैं, तो उससे हम श्रीकृष्ण को 'भगवान' अथवा 'परमात्मा' मानेंगे या एक देवता मानेंगे?

- भगवान जन्म-मरण में नहीं आते, वह शिशु के रूप में लालन-पालन नहीं लेते और उनके कोई माता-पिता, शिक्षक आदि नहीं होते क्योंकि वह स्वयं ही सबके परमपिता है और अभोक्ता और कर्मातीत है। परन्तु श्रीकृष्ण ने तो जन्म लिया था और उनके माता-पिता तथा शिक्षक भी थे।
- भगवान ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर नाम वाले देवताओं के भी रचयिता अर्थात् त्रिमूर्ती हैं परन्तु श्रीकृष्ण तो विष्णु के साकार रूप थे अर्थात् एक देवता थे।
- भगवान तो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन दैवी धर्म की स्थापना, शंकर द्वारा अनेक आसुरी धर्मों का विनाश और विष्णु द्वारा सतयुगी तथा त्रेतायुगी दैवी धर्म वाली सृष्टि का पालन कराते हैं। अतः श्रीकृष्ण जो विष्णु के साकार रूप हैं, केवल पालना करने के ही निमित्त है न कि धर्म स्थापना और अधर्म का विनाश करने के निमित्त।
- भगवान तो एक है, वह शरीरधारी थोड़े ही है, वह तो ज्योति स्वरूप है और सभी धर्मों की आत्माओं के परमपिता हैं, तब क्या श्रीकृष्ण को सभी आत्माओं का परमपिता कहा जा सकता है?
- क्या भगवान की कोई स्त्री, लौकिक बच्चे आदि होते हैं? भगवान को तो अभोक्ता कहा जाता है वह तो राज्य-भाग्य अथवा सुख-सम्पत्ति के दाता हैं तब क्या श्रीकृष्ण को अभोक्ता मानेंगे?
- भगवान तो कहते हैं – 'मैं सृष्टि का बीजरूप हूँ।' तो क्या मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप श्रीकृष्ण को मानोगे या प्रजापिता ब्रह्मा के तन मे अवतरित हुए ज्योतिर्बिन्दू परमपिता परमात्मा शिव को?
- फिर भगवान तो कहते हैं – 'मैं अजन्मा हूँ, परन्तु मेरा जन्म दिव्य है और मेरे कर्तव्य दिव्य हैं' और दिव्य जन्म का अर्थ परकाया प्रवेश है। परन्तु श्रीकृष्ण का जन्म परकाया प्रवेश के रूप में तो नहीं था।

इन उपरोक्त सभी बातों से आप श्रीकृष्ण को 'देवता' मानोगे या 'भगवान' और क्या आप गीता-ज्ञान का दाता भगवान को अर्थात् शिव को मानेंगे या देवता श्रीकृष्ण को?

इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि गीता-ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने ही दिया होगा।

(2) गीता-ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने किस युग में दिया? – द्वापरयुग में नहीं बल्कि संगमयुग में

अब सवाल उठता है कि क्या गीता-ज्ञान द्वापरयुग में दिया गया था?

हमें स्वयं ही गीता ज्ञान के आधार पर तथा विवेक का प्रयोग करके सोचना चाहिये कि ऐसा कैसे हो सकता है कि गीता-ज्ञानमृत जैसा अमृत मिलने के बाद तथा स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान का अवतरण होने तथा कर्त्तव्य करने के बाद कलियुग आ गया होगा?

तो क्या आप ऐसा मान सकते हैं कि भगवान का अवतरण होने और उन द्वारा दैवी सत् धर्म की स्थापना तथा अधर्म या आसुरी धर्मों का विनाश होने के बाद कलियुग आया अर्थात् पतन का युग आया?

भगवान के अवतरित होने के बाद भी सृष्टि की हालत सुधरने की अपेक्षा बिगड़ती है, तो भला इस दुनिया का उद्धार अन्य कौन करेगा? तब तो फिर भगवान के अवतरण और कर्त्तव्य का लाभ ही क्या हुआ और भगवान की महिमा ही क्या हुई? भगवान तो पतित पावन है, वह तो मानव को देवता बनाने वाले, दुःखहर्ता और सुख-कर्ता है, अतः उनके अवतरण तथा कार्य के बाद तो सृष्टि में पवित्रता, सुख और शान्ति का युग अर्थात् सतयुग आना चाहिए।

जैसे कि हमें पता है कि भगवान का अवतरण धर्म की अत्यन्त ग्लानि के समय होता हैं। अधर्म, अज्ञानता, आसुरी गुण तथा विकार, जिन ही के निवारण अथवा विनाश के लिए परमपिता परमात्मा का अवतरण होता है, कलियुग के अन्त ही में प्रधान होते हैं। इसके अतिरिक्त, सतोगुण, सत्य-धर्म, सुख-शान्ति और दैवी सम्पदा, जिन ही की पुनः स्थापना भगवान को करनी होती है सतयुग ही के आरम्भ में प्रधान होते हैं।

अतः स्पष्ट है कि भगवान का अवतरण एक कल्प के कलियुग के अन्त और दूसरे कल्प के सतयुग के आरम्भ के बीच जो समय पड़ता है, उस संगम काल में होता है, न कि द्वापर युग में।

(3) गीता-ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने किस रूप में दिया? – श्रीकृष्ण के रूप में नहीं बल्कि एक अन्य साधारण रूप द्वारा दिया

दूसरी महत्वपूर्ण बात है जैसे ऊपर बताया गया है कि गीता के भगवान का अवतरण द्वापर युग के अन्त में नहीं होता बल्कि संगमयुग में होता है और परमपिता परमात्मा ने गीता-ज्ञान श्रीकृष्ण के रूप में नहीं दिया था बल्कि एक अन्य साधारण रूप द्वारा दिया था।

गीता ज्ञान देने के लिए भगवान का अवतरण मोर मुकुटधारी, अति सुन्दर और श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के देवताई तन में नहीं हुआ था बल्कि संगमयुग में प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मानवीय तन में हुआ था।

जरा सोचिये कि यदि परमपिता परमात्मा मनमोहन श्रीकृष्ण, जो कि सुन्दरता, दिव्य गुणों और आत्मिक शक्ति के दृष्टिकोण से 16 कला सम्पूर्ण देवता थे, के तन में अवतरित होते, तो क्या संसार में ऐसा कोई भी मनुष्य होता जो कि उन्हें न पहचान सकता अथवा उनको तुच्छ समझकर उन्हें अपशब्द कहता?

परन्तु गीता में तो भगवान के महावाक्य हैं कि **'करोड़ो व्यक्तियों में से कोई विरला ही मनुष्य मुझे पहचानता है और मेरा अवतरण साधारण मनुष्य-तन में हुआ होने के कारण अनेक मूढ़मति लोग मेरे इस शरीर को देखकर मुझे तुच्छ अथवा जन्म-मरण में आनेवाला मानते हैं'।** इन वाक्यों से सिद्ध है कि परमपिता परमात्मा का अवतरण एक सामान्य एवं साधारण मनुष्य-तन में हुआ था, न कि श्रीकृष्ण के दिव्य, आकर्षणमय, मोहिनी तथा अलौकिक रूप में।

हम सभी तो मानते ही है कि श्रीकृष्ण का रूप कोई साधारण न था, तभी तो श्रीकृष्ण को सुन्दर 'मनमोहन' भी कहा जाता है। श्रीकृष्ण का रूप तो मन को ऐसा लुभाने वाला और मोहने वाला था तथा उनका व्यक्तित्व तो इतना प्रभावशाली, क्रान्तिमय और आकर्षक था कि यदि आज भी वह कहीं प्रकट हो जाये तो सभी लोग वहाँ एकत्रित हो जायेंगे और क्या हिन्दु, क्या मुसलमान तथा क्या अन्यान्य धर्मों के अनुयायी सभी नतमस्तक होकर उनको प्रणाम करेंगे। परन्तु परमपिता परमात्मा तो साधारण एवं सामान्य रूप में अवतरित होते हैं क्योंकि उन्हें गुप्त रूप में ज्ञान देना होता है। यदि वे अलौकिक एवं अति सुन्दर रूप में व्यक्त हो जाये तब तो सभी लोग उनको पहचान लेंगे।

अतः स्पष्ट है कि परमात्मा का अवतरण श्रीकृष्ण के मोहिनी रूप में नहीं हुआ था। इसलिए ही गीता में उनके वाक्य हैं – **'करोड़ो लोगो में से कोई और कोई में से भी कोई विरला ही मुझ साधारण तन में आये को पहचानते व मानते हैं'** और इसलिए यह कहावत भी है या लोग मानते हैं कि **'न जाने भगवान किस साधारण रूप में आ जाये?'**

और अगर परमात्मा का अवतरण श्रीकृष्ण के मोहिनी रूप में हुआ होता तो अर्जुन के ये वाक्य न होते कि **'भगवान, मुझे अपने दिव्य रूप का साक्षात्कार कराइये'।** क्योंकि श्रीकृष्ण का रूप तो दिव्य था ही और वे विष्णु का साकार रूप भी थे ही।

अत: यह महत्वपूर्ण बात आपको ज्ञात होनी चाहिए कि

- **परमपिता परमात्मा शिव गीता-ज्ञान देने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुए।**
- **यही ब्रह्मा सतयुग के आदि में श्रीकृष्ण अथवा श्री नारायण थे और वे भगवान के अवतरण के समय 84 वे साधारण मनुष्य-रूप में वानप्रस्थ अवस्था में थे।**
- **वही प्रजापिता ब्रह्मा गीता-ज्ञान को धारण करने के फलस्वरूप अगले जन्म में सतयुग के आदि में श्रीकृष्ण अर्थात् श्री नारायण पद को प्राप्त हुए थे।**
- **गीता श्रीकृष्ण की भी माता है और गीता के भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी परमपिता है।**

(4) गीता-ज्ञान के दाता परमात्मा परमपिता शिव ने कौनसा युद्ध कराया? हिंसक युद्ध नहीं बल्कि धर्म युद्ध कराया

अब सवाल उठता है कि क्या गीता के भगवान ने कोई हिंसक युद्ध कराया था? जरा सोचने की बात है कि भगवान जो दैवी सम्पदा की अथवा 'सत्-धर्म' की स्थापना के लिये अवतरित हुए थे, क्या किसी हिंसा-युक्त युद्ध के लिए सारथी बने होंगे? क्या कोई पिता अपने बच्चों को आपस में लड़ाता है? क्या कोई महात्मा कभी लड़ने का उपदेश देता है? तो महात्माओं से भी महान, परमपिता परमात्मा ने क्या खून-खराबा कराया होगा?

धर्म का तो परम लक्षण ही अहिंसा है, तो क्या हिंसा के लिए उपदेश देने वाला वक्ता किसी उच्च धर्म की, दैवी धर्म की स्थापना कर सकता है? भगवान से तो लोग सद्बुद्धि और दिव्यगुण माँगते है, वह तो पतित पावन है और मानव को देवता बनाने वाले है न कि उन्हें क्रोध, प्रतिशोध, हिंसा, द्वेष और युद्ध की शिक्षा देकर पतित करने वाले।

अतः आपको मालूम रहे कि भगवान जिस समय अवतरित हुए उस समय सारे संसार के लोग अज्ञानी योग भ्रष्ट और धर्म भ्रष्ट होने के कारण एक-दूसरे के विरूद्ध थे और यह सारा संसार ही एक युद्ध क्षेत्र-सा बना हुआ था। सृष्टि रूपी कर्मक्षेत्र ही कुरूक्षेत्र है जो उस समय एक युद्ध-स्थल का रूप लिये हुए था क्योंकि घर-घर में कलह और झगड़ा था। तब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर माया अर्थात् काम, क्रोधादि विकारों से युद्ध करने की शिक्षा दी थी। यही वास्तव में 'धर्म-युद्ध' है और इस युद्ध द्वारा न कि हिंसा-युक्त युद्ध द्वारा स्वर्ग का अटल-अखण्ड तथा निर्विघ्न स्वराज्य प्राप्त हो सकता है।

(5) गीता-ज्ञान के दाता परमात्मा परमपिता शिव किस रथ में बैठ ज्ञान सुनाया? घोड़े-गाड़ी वाले अर्जुन के रथ में बैठ उसका सारथी बन कर नहीं बल्कि प्रजापिता ब्रह्मा रूपी 'अर्जुन' के मानवी तन रूपी 'रथ' में प्रवेश कर प्रजापिता के साथ बैठ कर ज्ञान सुनाया

अपने शरीर को भी आत्मा का रथ माना गया है। अतः प्रजापिता ब्रह्मा के तन में मानवी आत्मा तो थी ही, उस तन में भगवान शिव के 'दिव्य-प्रवेश' को अर्जुन का 'सारथी होना अर्थात् उसके तन रूपी रथ में एक साथ सवार होना' — ऐसा कहा गया है। लेकिन इन अव्यक्त भावों को न समझने के कारण आज लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है, मानो गीता का खण्डन कर दिया है। इस भूल के परिणाम स्वरूप ही गीता का माहात्म्य बहुत कम हो गया है।

(6) गीता-ज्ञान के दाता परमपिता परमात्मा शिव को जानना और याद करना ज़रूरी क्यों?

① पहली बात

आज यदि लोग इस सत्यता को जानते कि श्रीमद्भगवद गीता में दिया गया ज्ञान — ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर, सर्वशक्तिवान, लौकिक जन्म-मरण से न्यारे, मनुष्य सृष्टि के अविनाशी एवं चेतन बीजरूप, दिव्य बुद्धि के दाता, मुक्ति-जीवन मुक्ति के दाता, पतित पावन, सभी के एकमात्र मार्ग-प्रदर्शक ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव ने दिया था, तो आज सभी धर्मों के लोग इस शास्त्र का अत्यन्त आदर करते। वे इसे सिर पर उठाते, इसे अपने जीवन में धारण करते और वे भारत को परमात्मा की अवतरण-भूमि मानकर इसे अपना सबसे बड़ा तीर्थ मानते और उन सभी का योग एक अशरीरी ज्योतिस्वरूप परमात्मा से जुट जाता। इसके फलस्वरूप, वे सम्पूर्ण पवित्रता, सुख तथा शान्ति की अतुल एवं अविनाशी ईश्वरीय विरासत प्राप्त कर लेते। दूसरे शब्दों में आज भारत नरक न होता बल्कि स्वर्ग होता।

② दूसरी बात

आज यदि भारतवासियों को मालूम होता कि गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने साधारण मनुष्य-तन में प्रवेश करके कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ के संगम समय पर दिया था, तो वे भगवान के अवतरण के समय को तथा उनके साकार माध्यम को भी पहचान लेते और गीता-ज्ञान से लाभान्वित होते। परन्तु वे तो आशा लगाये बैठे हैं कि गीता के भगवान श्रीकृष्ण के रूप में आयेंगे। लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं है कि पहले गीता के भगवान का अवतरण धर्म-ग्लानि के समय ब्रह्मा के तन में होता हैं और जब धर्म की स्थापना हो चुकी होती है तथा भारत स्वर्ग बन जाता है तब श्रीकृष्ण का इस सृष्टि में जन्म होता है। तो देखिये इस प्रश्न को न जानने से कितना अन्तर पड़ा है और अब तक भी अन्तर पड़ रहा है। इसलिये गीता के भगवान को जानना जरूरी है।

③ तीसरी बात

गीता के भगवान के महावाक्य हैं – हे वत्स, तू एक मुझे याद कर (मन्मनाभव), मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा (सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि)। यह वाक्य किसी शरीरधारी देवता के नहीं हो सकते। क्योंकि शरीरधारी देवता को याद करने से मनुष्य भला मुक्ति की अवस्था अर्थात् शरीर के बन्धन से न्यारी अवस्था कैसे प्राप्त कर सकता है? और पतित-पावन या पापकटेश्वर तो एक परमात्मा ही है, दूसरा कोई पापों का नाश कर नहीं सकता है क्योंकि परमात्मा एक है, परमात्मा के कर्त्तव्य एक परमात्मा ही कर सकता हैं, दूसरा कोई नहीं। इसलिए यह बात जानना जरूरी है।

2. गीता-ज्ञान दाता को याद करना ज़रूरी क्यों?

और, इसलिए उस परमात्मा शिव को ही आप याद कीजिए क्योंकि उस परमात्मा से ही आपको मुक्ति-जीवनमुक्ति अथवा श्री नारायण (श्रीकृष्ण) जैसे देवपद की प्राप्ति होगी।

ईश्वरीय पढ़ाई का
दूसरा विषय
योग

आठवाँ पाठ

राजयोग का आधार तथा विधि

[1] विषय प्रवेश

(1) भौतिक भाव

(2) आध्यात्मिक भाव

[2] योग के कई स्तर

(1) भौतिक योग

(2) लौकिक योग

(3) अलौकिक योग

(4) राजयोग

[3] योग का अर्थ

(1) योग का अर्थ सम्बन्ध, मिलन....

(2) योग का सरल अर्थ याद

[4] भगवान की याद स्वाभाविक हो जाये उसके चार आधार

(1) पहला आधार – परिचय

(2) दूसरा आधार – सम्बन्ध

(3) तीसरा आधार – स्नेह

(4) चौथा आधार – प्राप्ति

[5] भगवान को याद करने के अनेक कारण/विधि

(1) स्वार्थ – हम भगवान को स्वार्थ से याद करते हैं

(2) दुःख – हम भगवान को दुःख में याद करते हैं

(3) डर – कोई भगवान को डर से याद करते हैं

(4) नियम – कई लोग भगवान को नियम से याद करते हैं

(5) अन्तर खड़ा करके – कई लोग स्वयं में और भगवान में अन्तर खड़ा करके भगवान को याद करते हैं

1. रूप की समानता – ज्योतिर्बिन्दुस्वरूप
2. गुणों की समानता – आत्मा सतोगुणी है तो परमात्मा उन्हीं गुणो के सागर हैं
3. धाम की समानता- परमधाम

[6] चार प्रकार की यादें

(1) परिचय के आधार पर याद – मेहनत वाली याद

(2) सम्बन्ध के आधार पर याद – सताने वाली याद

(3) स्नेह के आधार पर याद – स्नेह में समा जाने वाली/खो जाने वाली याद

(4) प्राप्ति के आधार पर याद – स्वार्थ भरी याद

[7] भगवान के साथ हमारी कौनसे प्रकार की याद है?

[8] भगवान से सम्बन्ध कैसे जोड़ें?

(1) मुख्य रूप से 6 सम्बन्ध

1. माता-पिता का और बच्चे का - उदाहरण – प्रल्हाद का
2. टीचर और स्टूडेण्ट का
3. गुरु और शिष्य का
4. दोस्त का - उदाहरण –अर्जुन का
5. साजन-सजनी का या पति-पत्नी का सम्बन्ध - उदाहरण –मीरा का -
6. आप खुद मात-पिता और भगवान आपके बच्च - उदाहरण – सती अनुसूईया का

[9] मेडिटेशन कोई प्रार्थना नहीं है

(1) प्रार्थना और मेडिटेशन में अन्तर

1. प्रार्थना माना भगवान को अपनी बात सुनाना
2. मेडिटेशन माना भगवान से बातें करना (अपनी बात सुनाना साथ-ही-साथ उसकी बात को भी सुनना)

① भगवान के साथ कैसे बातें करें? - कहानी – एक छोटे बच्चे और पादरी की

② भगवान के साथ चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते दिल से बातें करना है - कहानी एक छोटे ग्वालबाल और पण्डित की

[10] मेडिटेशन में कोई मंत्र नहीं है

(1) मन्त्र माना क्या?

(2) मन को क्या चाहिए? - उदाहरण – जिव्हा का

1. मन को वैरायटी खाना अर्थात् वैरायटी चिन्तन चाहिए

(3) शुरू में मन लगाने में दिक्कत होगी पर अभ्यास हो जाने के बाद नहीं

- उदाहरण – वैरायटी डिश का
- उदाहरण – एक्सरसाइज़ का

(4) मन को स्वस्थ रखने के लिए तीन चीज़ें चाहिए

1. भोजन (Proper nourishment)
2. आराम (Rest) &
3. एक्सरसाइज़ (Exercise)

♦ मन का भोजन, आराम और एक्सरसाइज़

- मन का भोजन – चिन्तन
- मन का आराम – मेडिटेशन
- मन की एक्सरसाइज़ – सकारात्मक चिन्तन की एक्सरसाइज़

(5) मन की अस्वस्थता से व्यक्ति अन्दर से टूट जाता है जबकि मन की स्वस्थता उसे विजयी बनाता है

[11] मेडिटेशन माना विचार शून्य होना नहीं

[12] मेडिटेशन क्या है और क्या नहीं है

(1) मेडिटेशन क्या है

1. मेडिटेशन माना channellising the mi arahant nd

- in a specific direction,
- in a proper direction,
- in a positive direction.

(2) मेडिटेशन क्या नहीं है

1. मेडिटेशन कोई प्रार्थना नहीं
2. मेडिटेशन में कोई मन्त्र नहीं
3. मेडिटेशन माना विचार शुन्य होना नहीं

[13] प्रार्थना और मेडिटेशन में अन्तर

(1) भगवान के साथ कैसे बातें करें?

- कहानी – एक छोटे बच्चे और पादरी की

(2) भगवान के साथ चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते दिल से बातें करना है

- कहानी – एक छोटे ग्वालबाल और पंण्डित की

(3) मेडिटेशन में कोई मंत्र नहीं है

1. मन्त्र माना क्या?
2. मन को क्या चाहिए?

- उदाहरण – जिव्हा का

① मन को वैरायटी खाना अर्थात् वैरायटी चिन्तन चाहिए

3. मेडिटेशन करने में शुरू में दिक्कत लगेगा पर अभ्यास हो जाने के बाद नहीं

- उदाहरण – वैरायटी डिश का
- उदाहरण – एक्सरसाइज़ का

[14] मन की स्वस्थता

(1) मन को स्वस्थ रखने के लिए तीन चीज़ें आवश्यक

1. भोजन (Proper nourishment),
2. आराम (Rest) &
3. एक्सरसाइज़ (Exercise)

(2) मन का भोजन, आराम और एक्सरसाइज़

1. मन का भोजन – चिन्तन
2. मन का आराम – मेडिटेशन
3. मन की एक्सरसाइज़ – सकारात्मक चिन्तन की एक्सरसाइज़

[15] मेडिटेशन क्या नहीं है और क्या है

- ♦ मेडिटेशन कोई प्रार्थना नहीं
- ♦ मेडिटेशन कोई मन्त्र नहीं
- ♦ मेडिटेशन माना विचार शुन्य होना नहीं
- ♦ मेडिटेशन माना chanellising the mind
- ♦ मेडिटेशन माना विचार शुन्य होना नहीं – इसका स्पष्टीकरण

आठवाँ पाठ

राजयोग का आधार तथा विधि

[1] विषय प्रवेश

राजयोग शब्द सुनते ही व्यक्ति के मन में दो भाव उत्पन्न होते हैं –

(1) भौतिक भाव

एक तो योग शब्द सुनते आसन बुद्धि में आते हैं और

(2) आध्यात्मिक भाव

दूसरा भाव जो आता है वह है आध्यात्मिक भाव।

यहाँ जो भाव लिया गया है वह एक आध्यात्मिक भाव है।

'योग अर्थात् आत्मा का एक सर्वश्रेष्ठ ज्योति पिता परमात्मा के साथ सम्बन्ध'।

[2] योग के कई स्तर

वैसे योग के कई स्तर होते हैं –

(1) भौतिक योग

एक स्तर है जहाँ मनुष्य का योग भौतिक चीज़ों, वस्तु के साथ होता है उसको कहा जाता है **भौतिक योग।**

(2) लौकिक योग

दूसरा स्तर है जहाँ मनुष्य का सम्बन्ध मनुष्य के साथ होता है उसको कहा जाता है **लौकिक योग।**

(3) अलौकिक योग

तीसरा स्तर है जहाँ मनुष्य का योग इष्ट देवों के साथ होता है उसको कहा जाता है **अलौकिक योग।**

(4) राजयोग

परन्तु राजयोग को सर्वश्रेष्ठ योग गीता में बताया हुआ है क्योंकि जिस योग में कोई दैहिक भाव नहीं है परन्तु स्वयं को आत्मा निश्चय करके परमात्मा के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना है, और इसलिए इसको ऊँचे ते ऊँचा योग कहा है, जिससे व्यक्ति अपने आप पर एक Mastery प्राप्त कर सकें इतनी उसमें आत्मशक्ति, आत्मविश्वास जागृत होने लगता है। परन्तु अगर यथार्थ विधि से समझ से किया जाता है तब।

[3] योग का अर्थ

(1) योग का अर्थ सम्बन्ध, मिलन....

जिस प्रकार वियोग माना अलग होना, separation. योग माना जोड़ना, किसी भी जोड़ को योग कहा जाता है। तो योग का अर्थ है सम्बन्ध, मिलन, link, connection, union, communion. तो आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन माना ही योग। लेकिन उसके लिए आत्मा का यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का भी यथार्थ ज्ञान आवश्यक है। जब दोनों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है तब उस विधि से परमात्मा के साथ मन के तार को जोड़ सकते हैं।

(2) योग का सरल अर्थ याद

लेकिन जैसे व्यक्ति-व्यक्ति को याद करता है या व्यक्ति-व्यक्ति के सम्बन्ध में जब आता है तो उसके लिए भी कुछ आधार होते हैं।

रास्ते चलते हमको हजारों व्यक्ति मिलते हैं, हरेक को हम याद नहीं करते। किस आधार पर किसको याद किया जाता है। योग का भी अगर सरल अर्थ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से लिया जाय तो वह है याद।

[4] भगवान की याद स्वाभाविक हो जाये उसके चार आधार

तो परमात्मा की याद स्वाभाविक (natural) हो जाये, मेहनत न लगे उसके लिये आधार कौनसे है? क्योंकि आज मनुष्य की यही एक शिकायत बनी रहती है की जब भगवान को याद करने बैठते हैं तो मन बड़ा चंचल है पता नहीं कहाँ-कहाँ भाग जाता है concentrate नहीं कर पाते हैं। दो मिनट भी भगवान की याद नहीं ठहरती, मन एकाग्र नहीं होता है और इसलिए कई लोग छोड़ देते हैं कि भगवान को याद करने बैठना माना टाइम वेस्ट करना है। तो किस आधार पर हम भगवान की याद को भी स्वाभाविक (natural) बना दे। तो जब व्यक्ति, व्यक्ति को याद करता है तो उसके लिए भी चार आधार है।

(1) पहला आधार – परिचय

पहला आधार है जिसको कहा जाता है परिचय। जब जिसके साथ जिसका परिचय होता है उस परिचय के आधाार पर याद किया जा सकता है। बिना परिचय के हम किसी को याद नहीं कर पाते हैं।

(2) दूसरा आधार – सम्बन्ध

दूसरा आधार है मेरा उसके साथ सम्बन्ध क्या है? सम्बन्ध है तो सम्बन्ध के आधार पर याद किया जाता है। कोई ना कोई सम्बन्ध आवश्यक है तब व्यक्ति की याद भी स्वभाविक हो जाती है। परिचय के आधार से सम्बन्ध जोड़ते हैं। जिस सम्बन्ध की आपको कमी होगी उस सम्बन्ध को आप जोड़ सकते हैं। जिस सम्बन्ध में आप close हो सके उसे जोड़ सकते है।

(3) तीसरा आधार – स्नेह

तीसरा आधार है स्नेह। जहाँ स्नेह होगा, प्यार होगा वहाँ उसको याद किया जाता है। अगर स्नेह नहीं होगा तो closeness नहीं आयेगा।

जैसे आपको आपका बच्चा कभी भी नाम से नहीं पुकारता है या तो डैडी कहेगा या पिताजी, पापा यह कहकर ही बुलाता है, क्यों? क्योंकि respect है, प्यार है। इसी प्रकार शिव हमारे परमपिता है उनके प्रति हमारा respect और प्यार होने के कारण भगवान को हम प्यार से 'बाबा' कहते हैं। भगवान के प्रति बहुत ही respect है, स्नेह, प्यार है इसलिए हम 'शिवबाबा' कहते है।

परमात्मा के साथ closeness का सम्बन्ध हो गया तो प्यार बढ़ेगा। जिससे हमे उसकी याद करनी नहीं पड़ेगी, आपे ही याद आती है। शायद हमारे प्यार में कमी है इसलिए हमें भगवान को याद करना पड़ता है।

उदा. एक व्यक्ति है जो शादीशुदा नहीं है नयी-नयी नौकरी है, धंधा और बहुत आगे बढ़ाना है। उसको बिल्कुल टाइम नहीं है। मान लो उसकी शादी हो गयी तो उसकी responsibility बढ़ गयी। Responsibility बढ़ने के बाद उसका काम बढ़ेगा या कम होगा? तो उसको अपने wife के लिये टाइम मिलेगा या नहीं? 24 घण्टे के तो ज्यादा घण्टे नहीं बढ़े ना, तो उसको टाइम मिलता है या नहीं? क्यों मिलता है? कैसे मिलता है? अगर आपने टाइम

नहीं दिया तो यह सम्बन्ध भी नहीं टिकेगा। सम्बन्ध का महत्व जान जाने के बाद समय निकल ही जाता है। ऐसे अपने जीवन में भगवान के सम्बन्ध को जोड़ लो। उसको जान लो तो स्नेह, प्यार आपे ही आयेगा।

(4) चौथा आधार – प्राप्ति

चौथा आधार है प्राप्ति (achievement)। क्या मिलना है मुझे उस व्यक्ति को याद करके? कोई फायदा है? व्यक्ति आज की दुनिया में फायदा ढूंढता है, जहाँ थोड़ा बहुत भी फायदा होगा वहाँ उसको याद किया जाता है। जहाँ स्नेह है तो प्राप्ति भी होती है। ऐसे ही भगवान के प्रति स्नेह होगा तो प्राप्ति जरूर करायेगा। भगवान से जो हमें प्राप्ति होती है वह gross level की (बाहर की) नहीं होती है। बाहर की प्राप्ति होगी लेकिन आंतरिक प्राप्ति नहीं है तो क्या फायदा? ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध के कारण बैचेनी हो तो यह सुख सुविधा के साधन बैचेन दूर कर सकते है? इसमें बाहर का सुख मिलता है लेकिन मनुष्य की दौड़ आन्तरिक शान्ति की ओर है और यह शान्ति परमात्म से मिलती है, भगवान को याद करने से सुख, शान्ति मिलती है। जहाँ पर जिसको जो मिलेगा वही मनुष्य जाता है। यह human psychology है। ऐसे ही मुझे पता होना चाहिए की भगवान से मुझे क्या प्राप्ति होगी। जब तक हमे मालुम नहीं होगा कि भगवान से मुझे क्या प्राप्ति होती है तब तक मन भी एकाग्र नहीं हो सकता है।
इस रीति से भगवान को याद करना चाहिए। लेकिन अब हम यह देखेंगे की परमात्मा को याद कैसे करते हैं।

[5] भगवान को याद करने के अनेक कारण/विधि

(1) स्वार्थ – हम भगवान को स्वार्थ से याद करते हैं

सबसे पहले हम भगवान को याद करते हैं स्वार्थ से। स्वार्थ पूरा होते ही याद छोड़ देते हैं। छोटेपन से ही माँ-बाप ने psychology बना दी है कि जब कुछ चाहिये तो भगवान को याद करना। जैसे कि exam के time हमेशा हम भूल क्या करते हैं? स्वार्थ के साथ-साथ सौदाबाजी भी करते हैं कि भगवान जी आप मेरा यह काम कर दोगे तो मैं आपको नारियल चढ़ाऊँगा यह करूँगा, वो करूँगा आदि-आदि। Please यह बात personally कोई नहीं लेना। हम भी पहले यही करते थे। यह तो आम नौकर को कह दिया की 10 रू.लो और यह काम कर दो। ऐसे ही हम भी भगवान को काम देते कि अगर काम किया तो नारियल चढ़ाऊँगा और हम गाते भी हैं – त्वमेव् माताच पिता त्वमेव..... हम भगवाान से कितने श्रेष्ठ सम्बन्ध जोड़ते हैं लेकिन practically निभाते नहीं हैं। कहने का कुछ और करने का कुछ और है। पहले लोग स्वार्थ से याद करते हैं और साथ-साथ सौदेबाजी भी करते हैं।

(2) दुःख – हम भगवान को दुःख में याद करते हैं

फिर भगवान को हम दुःख में याद करते है। कबीर ने कहा है –
दुःख में सिमरण सव करे सुख में करे ना कोई।
जो सुख में सिमरण करे उसको दुःख काहे को होवे।
भगवान की गैरेण्टी है अगर हम उसे सुख में भी याद करेंगे तो दुःख आयेगा ही नहीं।

(3) ड़र – कोई भगवान को ड़र से याद करते हैं

कोई ड़र से भगवान को याद करते हैं। जाने अनजाने में धर्म-पिताओं ने लिख दिया है कि अगर हम भगवान को याद नही करेंगे तो भगवान हमें श्राप दे देगा, सफलता नहीं मिलेगी जीवन में। तो inner conscious में हमारे अन्दर ड़र है कि अगर मैंने यह नहीं किया तो जीवन में नुकसान हो जायेगा। जहाँ ड़र है वहाँ हम जाते ही नहीं। मान लो अगर आप ब्रह्माकुमारिज़ से ड़रते हैं तो आप आयेंगे? तो कोई लोग भगवान को ड़र से याद करते हैं।

(4) नियम – कई लोग भगवान को नियम से याद करते हैं

कई लोग भगवान को नियम से याद करते हैं। हाँ नियम जीवन में बहुत जरूरी है। नियम नहीं तो संयम नहीं, परन्तु नियम कई बार कई लोग अंधश्रद्धा के रूप में ले लेते हैं। कई लोग नियम किसी मनुष्य के लिए रखते हैं लेकिन हम भगवान के लिए नियम रखते हैं।

(5) अन्तर खड़ा करके – कई लोग स्वयं में और भगवान में अन्तर खड़ा करके भगवान को याद करते हैं

कई लोग भगवान को अन्तर खड़ा करके याद करते है। भगवान को कहते हैं भगवान आप दयालू हो, कृपालू हो, शान्ति के सागर हो और खुद को कहते हैं हम नीच, पापी हैं। दुनिया के आधार से सम्बन्ध जोड़ने का आधार है समानता। जहाँ समानता नहीं होती वहाँ सम्बन्ध जुटता नहीं बल्की टूटता है, तो भगवान के साथ communication को कायम रखने के लिए अपने को समान बनाना पड़ेगा अगर हम उनके बच्चे है तो हममें समानता जरूर है।

1. रूप की समानता — ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप
2. गुणों की समानता — आत्मा सतोगुणी है तो परमात्मा उन्हीं गुणो के सागर हैं
3. धाम की समानता- परमधाम

(जैसे north & south में attraction होता है लेकिन आध्यात्मिकता में समानता हो तो attraction होगी।)
तो इन चार आधार पर हम परमात्मा को याद कर सकते हैं। इन चार आधारों पर चार प्रकार की यादें होती हैं। इन्सान के साथ भी इन चार आधारों पर चार प्रकार की यादें होती हैं।

[6] चार प्रकार की यादें

(1) परिचय के आधार पर याद – मेहनत वाली याद

जहाँ सिर्फ परिचय है वहाँ याद कैसी होती है? वहाँ याद करना पड़ता है। जिस प्रकार मान लो आपके घर में कोई function हो occasion हो तो हरेक परिचय वाले को भी याद करेंगे उसको बुलाना है, उसको भी invitation भेजना है, यह छूट न जाये। एक लिस्ट बनायेंगे ताकि कोई भी परिचय वाला छूट न जायें। सम्बन्धियों को तो फौरन याद कर लेंगे लेकिन परिचय वालों को याद करके बुलाना है। यह लिस्ट बनायेंगे फिर सबको निमंत्रण पत्रिका देंगे तो करना पड़ता है मेहनत लगती है।

(2) सम्बन्ध के आधार पर याद – सताने वाली याद

जहाँ सम्बन्ध है वहाँ याद कैसी होती है? वहाँ याद सताती है। आज एक माँ का बच्चे के साथ का सम्बन्ध है। बच्चा मान लो कही बाहर होस्टेल में पढ़ रहा हो और वहाँ खबर आ जाये कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है, उसको बहुत बुखार है तो माँ को क्या होगा? उसकी याद सतायेगी। क्या कर रहा होगा, कैसे ध्यान रख रहा होगा, क्या खा रहा होगा, क्या पी रहा होगा, दवाई लेता होगा या नहीं लेता होगा? ना चाहते हुये भी कोई भी कर्म कर रही है, खाना खा रही है तो वह क्या खा रहा होगा? बैठी होगी तो भी मन चला जायेगा वही, याद उसको सताती है। रात को सोने को जाती है तो नींद फिट जाती है, उसी के ख्यालात चलते रहते हैं। मान लो दो दिन के बाद उसका फोन भी आ जाये की नहीं अभी मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूँ, कुछ नहीं है, तो भी माँ क्या कहती है? नहीं आवाज ठीक नहीं लग रहा है। आखिर उसको होता है कि मैं देखकर के आती हूँ। तो जहाँ सम्बन्ध है वहाँ याद सताती है।

(3) स्नेह के आधार पर याद – स्नेह में समा जाने वाली/खो जाने वाली याद

जहाँ स्नेह है वहाँ याद कैसी होती है? वहाँ याद में समा जाते हैं, खो जाते हैं। जिस प्रकार कुमारी या कुमार है जब तक उनको मालूम नहीं कि उनका भविष्य साथी कौन है, तब तक मन भटकता है, कौन होगा, क्या होगा परन्तु जिस दिन परिचय हो जाये, सम्बन्ध जूट जाये उसके बाद उनको कहना पड़ता है? नहीं, अपने आप याद शुरू हो जाती है। स्नेह से, प्यार से माँ जब बच्चे को याद करती है तो उस याद में दुःख है। परन्तु एक व्यक्ति अपने साथी को याद करता है तो सुख है। बैठे होंगे खो जोयेंगे, समा जायेंगे उस याद में, कोई पास में से गुजर भी जाये और उनसे पूछो कि कोई यहाँ से गया, कहेगा नहीं, मालूम नहीं। अरे यहाँ ही बैठे हो, आँखे खुली है फिर कहाँ थे? किसी की याद में खोये हुये थे, समाये हुये थे। तो जहाँ स्नेह है वहाँ समाते है उस याद में। कई बार तो कोई पास में आकर बोलता है तो भी उसको पता नहीं चलता है जब वह हाथ ऐसे-ऐसे करते हैं तब उसका ध्यान टूटता है। इतनी एकाग्रता, अरे इतना आवाज किया, इतने लोग चले गये तो भी पता नहीं चला। Nothing to distract.
इतना concentration था कि वहीं आवाज था, आवाजों के बीच में बैठे थे तो भी कोई आवाज उसके मन को distract नहीं कर सका। इतना उस याद में समाये हुये थे, खोये हुये थे। तो कोई disturb करता है तो कहते हैं ये कहाँ से आ गया disturb करने के लिये। जैसे ही वो व्यक्ति चला जाता है फिर से उस याद में खो जाते हैं।

(4) प्राप्ति के आधार पर याद – स्वार्थ भरी याद

जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ याद कैसी होती है? मतलब भरी याद, स्वार्थ भरी याद। एक businessman को पता हो कि भई फलाने शहर में एक व्यक्ति आयेगा और उसके साथ अगर business deal हो जाये तो मालामल हो जायेंगे। achievement मालूम है परन्तु वह व्यक्ति निकला है शहर से बाई रोड़ कभी भी पहुँच सकता है, और फलानी होटल में रूकने वाला है तो वह businessman को नींद आयेगी? मतलब है ना उसका, स्वार्थ है तो उसको नींद आयेगी? सारी रात भी अगर उसको जागना पड़े तो भी जागेगा ताकि और कोई सौदा न कर ले। मैं ही उसके साथ सौदा करूँ, बार-बार वह होटल में फोन करता रहता है वह व्यक्ति आया कि नहीं, पहुँचा कि नहीं? मैं appointment ले लूँ कल के लिये। और फिर भी उसको ठीक जवाब नहीं मिला तो रात भर वहीं जाकर बैठ जायेगा। उसको नींद नही आती यह नहीं कि मुझे नींद बहुत आ रही है उसको आना होगा तो आयेगा मैं सो जाता हूँ। लेकिन एक बार business deal हो जाये उसको कभी याद करता है? मतलब पूरा हुआ, स्वार्थ पूर हुआ तो याद भी पूरी हो गयी।

तो इन चार आधारों पर चार प्रकार की यादें हैं –

1. जहाँ परिचय है वहाँ याद करना पड़ता है,
2. जहाँ सम्बन्ध है वहाँ याद सताती है,
3. जहाँ स्नेह है वहाँ याद में समा जाते हैं, खो जाते हैं और
4. जहाँ प्राप्ति है वहाँ मतलब भरी, स्वार्थ भरी याद है।

[7] भगवान के साथ हमारी कौनसे प्रकार की याद है?

याद करना पड़ता है, याद सताती है, याद में समा जाते है या खो जाते है या मतलब भरी याद है? कौनसे प्रकार की याद है? कौन से प्रकार की होनी चाहिए?
समा जाने वाली होनी चाहिये जिसमें खो जाये, समा जाये इतना सुख मिले उस याद में।

लेकिन है कौनसी? स्वार्थ भरी, मतलब भरी या करना पड़ता है मेहनत से, इसका मतलब मैंने ना सम्बन्ध जोड़ा है और ना मुझे भगवान के प्रति स्नेह है इसलिए यह हाल होता है।

सम्बन्ध अगर मेरा पक्का हो उसके साथ तो स्नेह अपने आप उत्पन्न होता है। जैसे कहा कि कोई कन्या या कुमार को कहना नहीं पड़ता लेकिन सम्बन्ध जोड़ा बस स्नेह अपने आप जागृत हो गया, तो हमने सम्बन्ध जोड़ा बस स्नेह अपने आप जागृत हो गया, तो हमारा सम्बन्ध ही नहीं है इसलिए स्नेह भी नहीं है, इसलिए मेहनत करते हैं, अनुभव नहीं होता है, थक जाते हैं।

तो कहते हैं भगवान जैसी कोई चीज ही नहीं है। मन तो लगता नहीं है क्या फायदा वहाँ बैठने का या टाइम वेस्ट करने का।

[8] भगवान से सम्बन्ध कैसे जोड़ें?

तो अब सम्बन्ध कैसे जोड़े? आपको आत्मा का परिचय, परमात्मा का परिचय मिल गया अब मेरा उसके साथ क्या सम्बन्ध है? क्या सम्बन्ध है? बाप-बेटे का।

आज एक बच्चा, मानो एक राजकुमार हो। राजकुमार जब अपने आपको समझता है कि मैं राजा का बेटा राजकुमार हूँ तो उसका उठना, बैठना, बोलना, चलना, फिरना कैसा होता है? रॉयल्टी के साथ।

भगवान के हम बच्चे हैं वह हमारा बाप है, तो हमारा उठना, बैठना, बोलना, चलना, फिरना कैसा है? है उस बाप के समान? है?

राजा का बेटा राजकुमार राजा के सामने गिड़गिड़ाये, हे पिता! आप तो इतने महान हो, शुरवीर हो, दानी हो, महादानी हो, ये हो, वो हो। वो समझे अगर मैं जाकर अपने पिता की बढ़ाई करूँ और खुद को उससे कम बताऊँ तो शायद मेरा बाप मुझ पर खुश हो जायेगा, और मैं आपका बेटा राजकुमार, मैं मुर्ख हूँ, मेरे में तो अक्ल नहीं, मेरे में तो बुद्धि नहीं, मैं यह हूँ, मैं वह हूँ, कमजोर हूँ – राजा यह सुनकर के खुश हो जायेगा?

आपका बेटा आपके सामने आकर कहे कि हे पिताजी! आप तो इतने महान हो, इतने great हो और मैं आपका बेटा मुर्ख हूँ। कोई बाप खुश होगा सुनकर के यह बात? क्या कहेगा अरे तू मेरी नाक कटवा रहा है। ऐसे अगर हम भी भगवान के सामने रोज़ यही प्रार्थना करे कि हे प्रभु! आप तो ऊँच हो, महान हो, सुप्रीम अथार्टी हो, दया के सागर, करूणा के सागर हो, प्यार के सागर हो – कितनी महिमा करते हैं हम, स्तुतियाँ करते हैं और खुद के लिये मैं नीच, पाप, खल, कामी... मैं तो मुर्ख हूँ, मैं तो चरणों की ही धूल हूँ, चरणों का दास हूँ – क्या भगवान खुश हो जायेगा? कभी नहीं खुश होगा, और यही हम करते आये, रोज़ प्रार्थना में हम यही गाते हैं। क्या यह बाप बेटे का सम्बन्ध है? इसलिए कहा हमने सम्बन्ध जोड़ा नहीं है। ना हमको आया, ना किसी ने हमको सिखाया।

लोगो ने भी यही सीखाया – अरे भगवान के सामने तो दास बनकर के जाना चाहिये ताकि मन्दिर में जाकर के तो कहेंगे – हे प्रभु! मैं तो नीच हूँ, पापी हूँ, कपटी हूँ, बन्दा हूँ, गन्दा हूँ, और बाहर निकलकर किसी ने कहा की तू नीच है, पापी है, कपटी है, गन्दा है, बन्दा है तो? अरे अभी तो तू अपने मुख से गाके आया – ऐसे कहा तो क्या करते हैं? तू अपने मुँह से बोल के आया भगवान के सामने। तो बाहर निकलकर कुछ और भगवान के सामने कुछ और। तो क्या कहेंगे, हम कौन है? जो बाहर दुनिया को दिखाते हैं वह है या जो भगवान के सामने गाते हैं वह? तो सत्य क्या है? मुझे यही मालूम है इसलिए कहा जाता है Know thyself तो कौन हो? जो दुनिया को दिखा रहे हो वो हो या भगवाान के सामने गा रहे हो वो हो? Realise thyself और इसलिए यह योग हुआ ही नहीं। भगवान के साथ हमारा योग ही नहीं हुआ। मन लगे ही कैसे?

तो मेरा उसके साथ क्या सम्बन्ध है? क्या मैं उसके चरणों की धुल या चरणों का दास हूँ? या मैं बच्चा हूँ? क्या बनना चाहते हैं? आज एक .... मानो कि कुछ बच्चे खेल रहे हों बाहर और एक गाड़ी खड़ी है जाकर पूछो की यह किसकी गाड़ी है? तो जिस बच्चे के पिता की गाड़ी होगी ना वह खड़ा होकर कहेगा यह मेरी गाड़ी है। क्यों? ना

उसने खरेदी की, ना उसको चलाना आता है फिर भी समझता है कि मेरी गाड़ी है क्यों? क्योंकि मेरे पिता की सो मेरी। किसी ने उसको सिखाया नहीं, समझता है अधिकार है, अपना है। इसलिए आज मेरा पिता अगर शान्ति का सागर हो और मैं शान्ति के लिए गिड़गिड़ाती रहूँ – हे प्रभु! शान्ति दे दो। तो मेरा अधिकार नहीं, माना मेरा सम्बन्ध जूटा ही नहीं। सम्बन्ध होता था तो अधिकार होता था। मेरा पिता सुख का सागर हो और मैं दुःखी हूँ, माना मेरा अधिकार ही नहीं।

यह है ज्ञान कि मैं कौन हूँ? और मेरा उसके साथ क्या सम्बन्ध है? वहीं ड्राइवर भी खड़ा है गाड़ी चलाने वाला उसको पूछो यह किसकी गाड़ी है? खुद चलाते हुये भी अपनी नहीं समझ सकता है, कहेगा मालिक की गाड़ी है। इसी तरह हमने भी उसको मालिक समझ लिया मेरा कोई अधिकार नहीं। वो दास आकर के कहे – हे मालिक आज सौ रूपयों की जरूरत थी। मालिक दे देगा? पूछेगा क्या क्यों चाहिये? क्या करना था उससे? कारण बताया तो वह 50 रूपये देकर क्या कहेगा? कहेगा ठीक है आज 50 ले जा कल कम पड़े तो और ले लेना। और, वही अगर बच्चा आया उसने कहा मुझे 10 रूपया चाहिये और 10 रूपया छूट्टा नहीं है सौ रूपये की नोट है तो क्या करेगा? दे देंगे ना? यह अन्तर है दास और बच्चे में।

तो क्या बनना चाहते है दास बनना चाहते हैं भगवान के या बच्चा बनना चाहते हैं? बच्चे बनेंगे तो माँगना भी नहीं पड़ेगा बिन माँगे मिल जायेगा। दास बनें तो गिड़गिड़ाने पर भी मिलेगा नहीं। अब क्या बनना चाहते हैं? अब तक तो हमें यही सीखाया कि वह मालिक है और हम दास है और यही सम्बन्ध जोड़ा हमने, तो प्राप्ती कहाँ से होगी? प्यार कहाँ से उत्पन्न होगा उसके प्रति? इसलिए ऐसे के ऐसे रहे। तो कौनसा सम्बन्ध हमें उसके साथ जोड़ना है?

(1) मुख्य रूप से 6 सम्बन्ध

मुख्य रूप से 6 सम्बन्ध होते हैं। 6 सम्बन्ध भगवान के साथ जोड़ सकते हैं। मनुष्य के अति निकट के जिसकी याद बार-बार आती है वह 6 सम्बन्ध होते हैं –

1. माता-पिता का और बच्चे का

सबसे पहला सम्बन्ध माता-पिता का और बच्चे का। बच्चे को स्वाभाविक याद आ जाती है।

- **उदाहरण – प्रल्हाद का**

जैसे प्रल्हाद ने किया।

2. टीचर और स्टूडेण्ट का

दूसरा सम्बन्ध है टीचर और स्टूडेण्ट का

3. गुरू और शिष्य का

तीसरा सम्बन्ध है गुरू और शिष्य का

टीचर और गुरू में अन्तर होता है। टीचर बाह्य जगत का ज्ञान देगा और गुरू अन्तर जगत का ज्ञान देगा, टीचर कमाई का रास्ता बतायेगा, गुरू आत्म-उन्नती का रास्ता बतायेगा। अन्तर है गुरू और टीचर में। तो गुरू और शिष्य में भी बहुत श्रेष्ठ भाव होता है। भगवान के साथ यह सम्बन्ध भी जोड़ सकते हैं।

4. दोस्त का

चौथा सम्बन्ध दोस्त का। इसलिए खुदा-दोस्त की कहानियाँ हैं। दोस्त का सम्बन्ध जोड़ दो बहुत प्याारा सम्बन्ध है यह भी। कोई भी बात होती है कोई बातें माँ-बाप से छिपायेंगे, नहीं बतायेंगे लेकिन दोस्त को सब कुछ बता देंगे, विश्वास होता है उस पर।

- **उदाहरण –अर्जुन का**

जैसे अर्जुन ने किया।

5. साजन-सजनी का या पति-पत्नी का सम्बन्ध

पाँचवा सम्बन्ध है साजन-सजनी का या पति-पत्नी का सम्बन्ध। भगवान भी पतियों का पति है, साथी का सम्बन्ध जोड़ सकते है।

- **उदाहरण – मीरा का**

मीराबाई ने जैसे जोड़ा, साथी समझा उसने अपना जीवन साथी ।

6. आप खुद मात-पिता और भगवान आपके बच्चे

छठा सम्बन्ध है जिसमें आप खुद मात-पिता और भगवान आपके बच्चे। भगवान को अपना बच्चा भी बना सकते हो।

- **उदाहरण – सती अनुसूईया का**

जैसे सती अनुसूईया ने किया और देखा गया है कि जिस-जिस ने जो सम्बन्ध जोड़ा उससे उसकी प्राप्ति हुई।

- **प्रल्हाद ने** मात-पिता के रूप में याद किया तो **मात-पिता** बन गया।
- **अर्जुन ने** उसको दोस्त के रूप में देखा तो **दोस्त** बन गया।
- **मीरावाई ने** उसको प्रियतम के रूप में देखा तो **प्रियतम** बन गया।
- **सती अनुसूईया ने** बच्चे के रूप में देखा तो **बच्चा** बन गया।

जिसने जिस रूप से उसको देखा उसने अनुभव किया और जिसने मालिक के रूप में देखा उसने दास का अनुभव किया।

भगवान एक ही ऐसा है, दुनिया का कोई भी ऐसा इन्सान नहीं जो वफादारी से सम्बन्ध निभा सकें। भगवान एक ही ऐसा है जो वफादारी से सम्बन्ध निभाता है, जो चाहे सम्बन्ध आप जोड़ो।

[9] मेडिटेशन कोई प्रार्थना नहीं है

(1) प्रार्थना और मेडिटेशन में अन्तर

तभी कई लोग हमें पुछते हैं – बहन जी, प्रार्थना और मेडिटेशन में क्या अन्तर है? हम यही कहते हैं –

Prathana is one way communication &
Meditation is two way communication.

1. प्रार्थना माना भगवान को अपनी बात सुनाना

प्रार्थना में हम क्या करते हैं? मन्दिर में जाते हैं, हाथ जोड़ते हैं, जो हमको बोलना है वह बोल दिया, बोल-बोल करके बाहर निकल आये।

2. मेडिटेशन माना भगवान से बातें करना (अपनी बात सुनाना साथ-ही-साथ उसकी बात को भी सुनना)

मेडिटेशन में हम क्या करते हैं? मेडिटेशन माना साइलेन्स में जब हम बैठते हैं, कुछ हम बोले फिर साइलेन्स हो जाओ, सुनो वो भगवान क्या कह रहा है।

लेकिन आज की दुनिया में फास्ट लाइफ में हमारे पास भगवान क्या कह रहा है उसको सुनने का टाइम नहीं है। सुनाई ही नहीं देता है, सम्बन्ध ही नहीं है, उस रूप से हम बातें ही नहीं करते उसके साथ तो सुनाई कैसे देगा।

तो मेडिटेशन माना बातें करो उसके साथ जो भी चाहो।

① भगवान के साथ कैसे बातें करें?

क्या बातें भगवान के साथ करना चाहिए? इस पर एक कहानी याद आती है।

- **कहानी – एक छोटे बच्चे और पादरी की**

एक बार एक छोटा बच्चा था पाँच साल का और चर्च में चला गया। वहाँ पादरी प्रेयर कर रहा था, तो बच्चे नकल करने मे होशियार होते हैं। देखा हाथ जोड़के पादरी जी खड़े हैं, होंठ फड़फड़ा रहे हैं, तो बच्चा भी बाजु में जाकर खड़ा हो गया हाथ जोड़ करके, होंठ फड़फड़ाने लगा। पादरी जी ने देखा पता नहीं यह बच्चा क्या बोल रहा है। बार-बार देखा लेकिन प्रेयर के बीच में से कैसे बात करें।

आखिर प्रेयर पूरी होने के बाद उसने बच्चे से पूछा तू क्या बोल रहा था? तो बच्चे ने पूछा आप क्या बोल रहे थे? पादरी जी ने कहाँ मैं तो प्रेयर कर रहा था। बच्चे ने कहाँ मैं भी प्रेयर ही कर रहा था। पादरी जी ने कहाँ पता नहीं कौनसी प्रेयर बोल रहा होगा पाँच साल का बच्चा। पूछा कौनसी प्रेयर बोल रहा था? बच्चे ने पूछा आप कौनसी प्रेयर बोल रहे थे। पादरी जी ने अपनी प्रेयर सुना दी। बच्चा मुस्कराने लगा और कहा मैं तो ABCD बोल रहा था।

पादरीजी ने कहा ABCD थोड़ी बोलनी होती है भगवान के सामने। बच्चे ने कहाँ मैं तो यह नहीं जानता कि ABCD बोल सकते या नहीं बोल सकते, लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि आपकी प्रेयर में भी 26 अक्षर ABCD के थे और मेरी प्रेयर में भी वही 26 अक्षर ABCD के थे। आपकी प्रेयर में ढंग से लगे हुये थे। मैंने सीधी-सीधी बोल दी और उसको कहा जैसे तुमको अच्छा लगे ना वैसे लगा देना।

भगवान को किस पर ज्यादा प्यार आयेगा? बच्चे पर आयेगा ना? बच्चा बन जाओ देखो भगवान आपको प्यार करने लगेगा। यह है मेडिटेशन कि हम प्यार करें भगवान को, उससे भी ज़्यादा भगवान हमें प्यार दे। कितना भग्यशाली होगा वो।

② भगवान के साथ चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते दिल से बातें करना है

मेडिटेशन कौनसी बड़ी बात है। चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते याद कर सकते हैं।

रोज़ जा करके प्रार्थना नहीं करते रहना है, दिल से बातें करो, जो बात करना आये वह करो भगवान के साथ।

- **कहानी – ग्वालें और पण्डित की**

एक छोटा ग्वाला था जो गायों को चराता था। जंगल में जाकर गायों को एक खूले मैदान में छोड़ देता था। सब गायें घास खाती रहती और वो लड़का एक झाड़ के नीचे जाकर बैठ जाता था। तो गायों को देखकर उसके मन में विचार आने लगा, गायें तो घास खा रही है और मैं बैठा हूँ झाड़ के नीचे। ऐसे उसके मन में विचार आया कि ऊपर वाले ने भी हम को नीचे छोड़ दिया है ना, हर एक अपना-अपना घास खा रहा है, अपना-अपना कर्म कर रहा है और वो भी कहाँ झाड़ के नीचे बैठा होगा मेरी तरह।

तो वो बातें करने लगा उसके साथ – हे भगवान तू भी कहीं बैठा ही होगा खाली, अभी मैं भी खाली बैठा हूँ। मैं तो ऊपर नहीं आ सकता क्यों नहीं थोड़ी देर के लिये तूम नीचे आ जाओ, बैठेंगे कुछ बातें करेंगे, गपशप करेंगे, टाइम पास करेंगे। ऐसे-ऐसे वो बात करने लगा अकेला-अकेला, उतने में एक पंडितजी वहाँ से गुजरे।

पंडितजी ने देखा कि लड़का किससे बात कर रहा है ये। तो पूछा ये लड़का किससे बात कर रहा है? किसी से नहीं, घबरा गया बच्चा। किसी से नहीं भगवान से बात कर रहा था। पंडितजी ने कहा, अच्छा भगवान से बात कर रहा था यह हक तूम्हे किसने दिया? भगवान से बातें करने का हक तो हमें है, फिर उसने कहा अच्छा तू क्या बात कर रहा था भगवान के साथ? तो लड़का घबरा गया, उसने कहा कि कुछ नहीं, मैं तो ऐसे ही मेरे मन में भाव आये वो भगवान के साथ बोल रहा था।

तो पंडितजी ने कहा भगवान के साथ ऐसी बातें करनी होती है क्या? अरे भगवान कितना ऊँच है तेरे को मालूम है और तूम्हारे अन्दर तो भगवान के साथ बात करने की सभ्यता भी नहीं? ऐसे कभी बोला जाता है क्या कि तुम नीचे आओ बात करेंगे, खेलेंगे, गपशप करेंगे, यह कोई manners है तुम्हारा भगवान के साथ बात करने का? लड़का घबरा गया कि पता नहीं मैंने गलती कर ली, तो पंडित जी मुझे और तो कुछ नहीं आता है, मैं तो रोज ऐसी-ऐसी बातें करता हूँ। पंडित जी गरम हो गये, बहुत गरम हो गये। फिर लड़के ने कहा – अच्छा ऐसे करो आप मुझे सीखाओ कि भगवान से कैसे बातें करनी चाहिए।

पंडित जी ने कहा – अच्छा ठीक है, बैठो सीखाता हूँ तूझे कैसे भगवान के साथ बातें करने की सभ्यता होनी चाहिए, फिर उसके पास एक प्रार्थना श्लोक के रूप में थी संस्कृत में पक्का कराना शुरू किया, बच्चा तो अनपढ़ था, गँवार था लेकिन दिमाग अच्छा था तो जो पंडित जी बोल रहे थे एक-एक शब्द को रटने लगा अन्दर में, और दो घण्टे लगे पंडितजी को भी उस एक प्रार्थना को रटाने में।

आखिर रट लेने के बाद पंडित जी ने कहा अब मैं कल फिर से यहाँ से गुजरूँगा तू याद कर लेना और यह है भगवान के साथ बात करने की सभ्यता, इसी विधि से बात करना। लड़के ने कहा – ठीक है इसी विधि से बात करूँगा। जैसे ही पंडित जी गये उसने वह प्रार्थना रटना चालू कर दिया अन्दर में बहुत रटता रहा, रटता रहा, समझ में तो आ नहीं रहा था क्या बोल रहा है लेकिन पंडित जी रटाके गये तो रटना चालू कर दिया।

मन्दिर पहुँचने के बाद पंडितजी ने भगवान से कहा भगवान आज मैंने इतना अच्छा काम किया। एक अनपढ़ गँवार लड़के को तेरे साथ बात करने की सभ्यता सीखायी। उतने में आकाशवाणी हुयी तुमने जो किया ना ठीक नहीं किया, क्यों? वह लड़का रोज़ आता था, इतनी अच्छी-अच्छी बातें करता था, मेरे साथ दिल से बात करता था, कभी तो ऐसी बातें उसकी सुनी जो मुझे भी हँसी आती थी, खुश कर देता था वो मुझे, लेकिन आज से उसे तू जो पढ़ाके आया है ना, रटाके आया है, बिना समझे वो रोज़ वही रटा-रटाया बोलता रहेगा, ना भाव होगा, ना दिल से वो बातें होंगी, ना मुझे खुशी होंगी। तो आज से तुमने बच्चे को मेरे से दूर कर दिया।

कहीं हम भी ऐसा तो नहीं कर रहे है रोज़ वही रटा-रटाया बोले जा रहे हैं जिसमें न भाव है, न प्यार है, न बातें हैं। कई बार तो हम क्या करते हैं, क्या बोल रहे हैं हम खुद ही नहीं समझा पाते हैं – ऐसी प्रार्थना हम बोले जा रहे हैं, बोले जा रहे हैं, ऐसा तो नहीं कर रहे है। भगवान को यह पसंद नहीं है।

अभी मेडिटेशन माना दिल से बातें करें, वह भी respond करेगा, जवाब देगा। तो जब हमारा ऐसा सम्बन्ध होगा तब यह याद natural हो जायेगी इसलिए मेडिटेशन और प्रार्थना में अन्तर है।

[10] मेडिटेशन में कोई मन्त्र नहीं है

(1) मन्त्र माना क्या?

दूसरा कई लोग क्या पूछते हैं बहनजी Meditation में कोई मन्त्र नहीं है? मन्त्र हमें मिल जाये बस हम जपते रहे। मेडिटेशन में कोई मन्त्र नहीं है। मन्त्र माना क्या? मन्त्र से शब्द निकला है मन्त्री । मन्त्री माना क्या? मन्त्री माना सलाहकार तो मन्त्र माना एक सलाह, मन को सलाह दी गयी है तुम ऐसा बोलो, जपो, है ना?

अब एक मन्त्र किसी ने दे दिया ओम नमः शिवाय जपते रहो, जपते रहो। ओम नमः शिवाय जपते रहेंगे सारा दिन, कुछ समय बाद मन एकाग्र तो हो जाता है लेकिन कुछ समय के बाद देखो तो मन भटकना चालू कर देता है। फिर कहते हैं इतना मन्त्र मिला, गुरू मन्त्र मिला तो भी मन इतना दुष्ट है जो मन एकाग्र नहीं होता। अरे मन का दोष क्यों निकालते हो? मन को समझो ना!

(2) मन को क्या चाहिए?

मन को वैरायटी (variety) खाना चाहिए।

- **उदाहरण – जिव्हा का**

जैसे यह जिव्हा है ना उसको एक ही प्रकार की सब्जी और रोटी रोज मिलती रहे आपको तो कितना दिन खा सकेंगे? दो-चार दिन। फिर पूछेंगे की भई और कोई चीजमिलेगी या यही मिलेगा। अब बनाने वाले ने कहा कि आपकी यह favourite dish है इसलिए हमने यही सीख लिया, अब जिन्दगी भर आपको यही मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा? क्या करेंगे? बहस करने से कोई मतलब नहीं है, यही सीखा और कोई सीखा ही नहीं है तो क्या करेंगे?

बाहर जाकर खाना चालू करेंगे। कभी होटल में, कभी मित्र-सम्बन्धियों के यहाँ खाकर आयेंगे, कभी कहाँ खाके आयेंगे, कभी-कभी पार्टी में खाके आयेंगे, कभी कोई दोस्तों के यहाँ खाके आयेंगे, और घर आके कहेंगे मुझे भूख नहीं है, घर में तो वही मिलना है। भूख नहीं है क्योंकि थक गये वह खा-खा के आखिर जो बन रहा है उसको ही खाना पड़ रहा है, वो कितना दिन खायेगा वो भी? थोड़े ही दिन।

फिर आखिर बाजार जाकर एक बुक लेके आयेंगे और रेसीपी देख-देख कर variety item बनाना चालू कर देंगे और बनाकर आपके सामने रखेंगे, तो खाकर आप क्या कहेंगे? बहुत अच्छा, नहीं। क्या कहेंगे? कुछ कम है बाहर जैसा नहीं है, फलानी होटल जैसा नहीं है। क्या कम है? नमक कम होगा या मिर्च कम होगा, जो भी कम होगा, कुछ कम है। वह बाहर जैसा टेस्ट नहीं है जबकि इतना नाप से बनाया, इतना अच्छी तरह बनाया फिर भी खाने वालों को वो बाहर जैसा टेस्ट नहीं आया, क्यों? क्योंकि बाहर का टेस्ट चढ़ गया जिव्हा के ऊपर, और इसलिए यह टेस्ट अच्छा नहीं लगा। लेकिन अगर शुरू से यह टेस्ट मिलता था तो यह अच्छा लगता या वो अच्छा लगता?

1. मन को वैरायटी खाना अर्थात् वैरायटी चिन्तन चाहिए

ठीक इसी प्रकार मन का भोजन है चिन्तन। और, रोज़ उसको भी एक प्रकार का चिन्तन दे दो ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय..... कितना दिन जपेगा वो? कुछ दिन। कुछ दिन के बाद मन भी आत्मा से पूछता है – हे आत्मा! और कुछ मिलेगा या यही है। आत्मा ने कहा अरे यह तो गुरू मन्त्र है। अब जिन्दगी भर जब तुम्हे टाइम मिले यही है। मन ने भी समझ लिया आत्मा के साथ बहस करने का कोई मतलब नहीं, आत्मा समझने वाली नहीं है, वही गुरू मन्त्र लेकर बैठ गयी।

आखिर मन भी क्या करेगा? फिर मुख को कहेगा – हे मुख! तू बोलता रह, जपता रह मैं थोड़ा घूमके आता हूँ। इसलिए मुख बोलता रहेगा ओम नमः शिवाय...... और मन बाहर चक्कर काट रहा है, कभी कहाँ चला जायेगा, कभी कहाँ चला जायेगा, कभी कौनसी बात याद आ जायेगी, फिर कहेंगे मन बड़ा दुष्ट है। लेकिन variety पकाना नही आ रहा है वही हाल है।

तो राजयोग में कोई मन्त्र नहीं है एक ही प्रकार का चिन्तन नहीं दो। हर रोज़ variety चिन्तन दो, हर रोज़ अलग-अलग चिन्तन दो, कभी आत्मा का चिन्तन दो, कभी परमात्मा का चिन्तन दो, कभी ज्ञान का कोई भिन्न-भिन्न चिन्तन दो। देखो मन कितना खुश रहने लगता है, मन कहीं बाहर नही भटकेगा। रोज़ उसको variety मिल रहा है।

(3) शुरू में मन लगाने में दिक्कत होगी पर अभ्यास हो जाने के बाद नहीं

लेकिन शुरू में दिक्कत लगेगा, बाद में नहीं।

- **उदाहरण – वैरायटी डिश का**

जैसे घर में वैरायटी डिश (variety dish) बनाने के बाद जब serve किया तो अच्छा नहीं लगता है क्योंकि बाहर का taste चढ़ गया ऐसे ही मन को जो आदत पड़ गयी है बाहर घूमने की। तो शुरू में आपको कॉमेण्ट्री दे करके भी meditation कराया जायेगा तो भी मन नहीं लगेगा। फिर कहते हैं – meditation बहुत difficult है, मन लगता ही कहाँ है? अरे आदत नहीं है इसलिए।

- **उदाहरण – एक्सरसाइज़ का**

कोई व्यक्ति ने कभी exercise ना की हो और अचानक कहा जाये अरे भाई exercise करो तब ही ठीक रहेगा, नहीं तो ठीक नहीं रहेगा। हाथ-पाँव चलाना चालू करे वो, एक दिन आधा घण्टा कर ले वो तो क्या होगा? सारा दिन दर्द चालू हो जायेगा और कहेगा exercise बहुत difficult है, सारा हाथ-पैर दर्द कर रहा है।

और छोड़ दे तो क्या होगा? healthy होगा ही नहीं। तो कुछ दिन दर्द करेगा। धीरे-धीरे चालू करेगा exercise पहले 5 मि. फिर 1 मि., 15 मि. फिर आधा घण्टे तक पहुँचेगा फिर 1 घण्टा, 2 घण्टा तक कर लेगा तो कुछ नहीं होगा, अभ्यास हो गया उसको, सारे जो limbs हैं, जो muscles है उस अनुसार अभ्यास हो गया फिर उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं कितने भी difficult exercise क्यों न हो वो आराम से कर लेता है। इसी तरह मन को भी जो exercise देनी है शुरू में लगेगा माथा दर्द करेगा लेकिन छोड़ो नहीं, अभ्यास हो जायेगा।

(4) मन को स्वस्थ रखने के लिए तीन चीज़ें चाहिए

जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए तीन चीज़ें आवश्यक हैं – **भोजन (Proper nourishment), आराम (Rest) & एक्सरसाइज़ (Exercise)** जब तीनो चीज़ें है तो शरीर स्वस्थ है।

इस प्रकार मन को स्वस्थ रखना है तो मन को भी यह तीनो चीज़ें आवश्यक हैं –

1. **भोजन (Proper nourishment)**
2. **आराम (Rest) &**
3. **एक्सरसाइज़ (Exercise)**

♦ मन का भोजन, आराम और एक्सरसाइज़

- **मन का भोजन – चिन्तन**

जैसे शरीर को भी बासी खाना दिया, सड़ा हुआ खाना दिया तो healthy रहेंगे? नहीं रहेंगे। ऐसे मन को भी मन का भोजन है चिन्तन, उसको भी फालतू विचार दे दिये, waste thoughts, negative thoughts दे दिये तो मन healthy कहाँ से रहेगा? तो मन को भी हर रोज़ – proper nourish करना चाहिए, अच्छा चिन्तन देना चाहिए। अगर रोज़ सवेरे-सवेरे Newspaper पढ़ेंगे तो murder, आतंकवाद यही चिन्तन मिलेगा और वो सुबह-सुबह अन्दर चला गया कैसे मन की healthy stage को expect कर सकते हैं। हम ये नहीं कहते कि आप Newspaper नहीं पढ़ो, पढ़ो लेकिन Do not let it be the first thing in the morning, सुबह-सुबह अपने मन को कुछ अच्छा चिन्तन दें।

जैसे एक healthy व्यक्ति कैसे भी atmosphere में चला जायेगा, बीच में सूरत मे प्लेग हुआ था, कई लोग थे भाग गये लेकिन कई लोगों ने बाहर रह कर के लोगों को treatment दिया, उनको कुछ नहीं हुआ क्योंकि वह स्वस्थ थे तो बाहर के वो किटाणु उनके शरीर को effect नहीं कर पाये और वहाँ ही उनके बीच में रह करके उनको treatment दिया। लेकिन जो कमजोर थे वो शिकार हो गये, खत्म हो गये।

इसी प्रकार जो मन से कमजोर है उसको हर परिस्थिति में कोई व्यक्ति ने कुछ कहा effect हो जायेगा, shock लग जायेगा। कमजोर है ना मन इसलिए। लेकिन मन को जब अच्छे चिन्तन से nourish करेंगे तो मन इतना healthy हो जाता है कि कैसी भी परिस्थिति, कैसा भी वातावरण, कैसे भी प्रकार के लोगों के बीच में भी वह जी करके उनको भी change कर सकता है और यह समय चाहता है। क्योंकि दिन-प्रतिदिन परिस्थिति बिगड़ती जा रही है लोगों के attitudes बिगड़ते जा रहे है, वातावरण दूषित होता जा रहा है तो उसके बीच में रहने के लिये कितना will power चाहिए, तो कितनी mental healthy stage चाहिये तब रह सकेंगे।

नहीं तो आजकल इसलिए दो लोगों की .. दुनिया में देखो छोटी-सी बात होती है तो depression में चले जाते हैं, tension में चले जाते हैं, hypertension हो जाता है, nervous break down हो जाता है। depression में चले गये क्योंकि मन स्वस्थ नहीं है।

- **मन का आराम – मेडिटेशन**

दूसरा मन को आराम भी चाहिये। जैसे शरीर को 6 घण्टा आराम की जरूरत है कम से कम, इसी प्रकार मन को भी rest करना, करना जरूरी है। Meditation means relaxing the mind क्योंकि रात को जब सो जाते हैं शरीर सो जाता है, मन नहीं सोता है। मन तो स्वप्न के रूप में चलता रहता है। तो इसलिए मन को स्वस्थ रखने के लिए Meditation के द्वारा relax करो तो spiritual nourishment is a healthy nourishment for the mind. और यह healthy nourishment के बाद उसको relax करना जरूरी है।

- **मन की एक्सरसाइज़ – सकारात्मक चिन्तन की एक्सरसाइज़**

और मन के लिये exercise कौनसी है? positive thinking की exercise चाहिए। और जितना सुबह-सुबह यह exercise करेंगे positive thinking की उतना सारा दिन कैसी भी बातें आयेंगी तो भी आप negative नहीं सोचेंगे क्योंकि अभ्यास हो गया positive सोचने का तो फिर positive ही सोचेंगे हम।

तो यह तीनों चीजें मन को भी जरूरी है – Proper nourishment, Rest & Exercise.

(5) मन की अस्वस्थता से व्यक्ति अन्दर से टूट जाता है जबकि मन की स्वस्थता उसे विजयी बनाता है

शरीर को स्वस्थ रख दिया खूब Exercise आदि करके लेकिन मन स्वस्थ नहीं तो टूट जायेगा, छोटी-सी बात होगी ऐसा टूट जायेगा अन्दर से जो बात मत पूछो। ऐसा shock लगेगा उस चीजका सहन नहीं कर पायेंगा, तो टूट जायेंगे।

तो शरीर के साथ-साथ मन की स्वस्थता सदा विजयी बनाती है। इसलिए कहा जाता है कोई भी victory ऐसे ही नहीं मिलती है। पहले तो वो victory मन के अन्दर चाहिए, विजयी मन के अन्दर निश्चित करना पड़ता है। जब मन में वो will power है कि विजयी बनेंगे ही, वो दृढ़ता है उसके बाद देखो थोड़ा-सा effort रखेंगे विजयी हो जायेंगे आप।

तो इसलिए मानसिक स्वस्थता आवश्यक है इस समय के हिसाब से। क्योंकि समय ऐसा आ रहा है चारों ओर tension का वातावरण है और उस tension वाले वातावरण के बीच में मन स्वस्थ रहना बहुत जरूरी है, तो कोई भी चीजहासिल करना बड़ी बात नहीं। तो यह है मेडिटेशन।

[11] मेडिटेशन माना विचार शून्य होना नहीं

मेडिटेशन माना विचार शून्य भी होना नहीं है।

मेडिटेशन में तो विचार generate करना है क्योंकि उसी से ही energy generate होगी अन्दर से।

प्यार से बातें करो भगवान के साथ, जो मन में आये उस हिसाब से बातें करो, जो अच्छा लगे आपको। देखो फिर आपको उसके साथ का constant अनुभव होता रहेगा। जैसे अर्जुन के साथ हुआ। कैसे भी युद्ध जैसी परिस्थिति हो लेकिन अन्दर से वो moral support देता रहा। वो moral support हमें मिलता रहेगा ईश्वर से। ईश्वर के साथ सम्बन्ध रखने से will power अन्दर में बना रहेगा।

इसलिए मेडिटेशन आज के युग में बहुत आवश्यक है। देखिये कोई इन्सान किसी को support दे नहीं पायेगा। हरेक अपने ही में उलझे हुये हैं, हरेक के सामने अपने ही tensions की बातें हैं। कोई कितना encouragement देगा? लेकिन meditation में कुछ बातें करो उसके साथ। देखो वो कैसे respond करता है, कैसे moral support देता है, कैसे encouragement देता है, अनुभव करके देखो आप। तो thinking में हमें meditation करना है फिर visualisation उसके बाद feel करना है यही मेडिटेशन है।

[12] मेडिटेशन क्या है और क्या नहीं है

(1) मेडिटेशन क्या है

1. मेडिटेशन माना chanelising the mind

- **in a specific direction,**
- **in a proper direction,**
- **in a positive direction.**

(2) मेडिटेशन क्या नहीं है

1. मेडिटेशन कोई प्रार्थना नहीं

2. मेडिटेशन में कोई मन्त्र नहीं

3. मेडिटेशन माना विचार शुन्य होना नहीं

ईश्वरीय पढ़ाई का

तीसरा विषय
धारणा

नवाँ पाठ

राजयोग के द्वारा
आध्यात्मिक शक्तियों की प्राप्ति/दिव्य गुणों की धारणा

[1] विषय प्रवेश

[2] सहनशक्ति (Power To Tolerate)

- उदाहरण – आम के पेड़ का

(1) सहनशक्ति की आवश्यकता क्यों?

(2) सहन शक्ति न होने के भिन्न-भिन्न कारण

1. इच्छायें
2. कमजोरी
3. भय

(3) राजयोग के अभ्यास से सहनशक्ति का विकास

[3] समाने की शक्ति (Power To Adjust)

- उदाहरण – घर के बच्चे और पड़ोस के बच्चे की ग़लती का

(1) राजयोग के अभ्यास से समाने की शक्ति

(2) समाने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

- उदाहरण – भोजन की कमी और अतिथी के आगमन का

[4] परखने की शक्ति (Power To Discriminate)

(1) परखने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

- उदाहरण – नकली चीजअसली दिखाई देने का
- उदाहरण – एक व्यक्ति का जिसके जीवन में 50 पाप और 50 पुण्य था
- कहानी – भगवान की जिसमें भगवान ने गधा, कुत्ता, बन्दर, मानव बनाया और मानव ने भगवान से गधा, कुत्ता और बन्दर की आयु माँगता है

(2) राजयोग के अभ्यास से परख शक्ति का विकास

[5] निर्णय शक्ति (Power To Judgement)

(1) राजयोग के अभ्यास से निर्णय शक्ति की तीव्रता का विकास

[6] सामना करने की शक्ति (Power To Face)

(1) सामना करने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

(2) राजयोग के अभ्यास से सामना करने की शक्ति का विकास

- उदाहरण – अपने नजदीक के सम्बन्धी की मौत

[7] सहयोग शक्ति (Power To Co-operate)

(1) सहयोग शक्ति की आवश्यकता क्यों?

- उदाहरण – गोवर्धन पर्वत का

(2) सहयोग से सफलता

- कहानी – देवता और असुरों की

(3) परमात्मा के कार्य में सहयोग की आवश्यकता

1. तीन प्रकार के मनुष्य

① दानवी वृत्ती वाले

② मानवी वृत्ती वाले

③ दैवी वृत्ती वाले (राजयोगी)

[8] विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति (Power To Withdraw)

(1) विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति आवश्यकता क्यों?

(2) राजयोग के अभ्यास से विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति का विकास

- उदाहरण – कछुए का

[9] समेटने की शक्ति (Power To Pack-up)

(1) समेटने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

- उदाहरण – मुसाफिर का

राजयोग के द्वारा
आध्यात्मिक शक्तियों की प्राप्ति/दिव्य गुणों की धारणा

[1] विषय प्रवेश

राजयोग के अभ्यास से अर्थात् मन का नाता परमपिता परमात्मा के साथ जोड़ने से अविनाशी सुख शान्ति की प्राप्ति भी होती ही है, साथ ही उसमे अनेक प्रकार की आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। आध्यात्मिक शक्ति भौतिक जगत के अन्दर बहुत ही आवश्यक है।

किसी के पास धन की शक्ति है लेकिन अल्पकाल के लिए। किसी के पास शारीरिक शक्ति है उसके आधार पर बहुत कुछ खाता-पीता है, enjoy करता है लेकिन कभी accident हो जाता है। किसी के पास बोलने की शक्ति, किसी के पास लिखने की शक्ति होती है लेकिन यह कभी-कभी सुखदायी और कभी दुःखदायी भी होती है।

तो भौतिक शक्तियाँ अल्पकाल की शक्तियाँ हैं। लेकिन राजयोग के द्वारा हमें ऐसी शक्तियाँ प्राप्त होती हैं जो इस भौतिक जगत में रहते हुए, संसार में रहते हुए अपनी life को balance कर सकते हैं।

[2] सहनशक्ति (Power To Tolerate)

तो पहली शक्ति है – सहनशक्ति।

- **उदाहरण – आम के पेड़ का**

जैसे वृक्ष को पत्थर मारने पर भी वह मीठे फल देता है और अपकार करने वालों पर भी उपकार करता है। तो पेड़ को पत्थर क्यों मारा? पेड़ पर फल देखा, खुद के पास नहीं था इसलिए।

ऐसे ही हमारे जीवन में कई लोग कटू वचन रूपी, खराब वृत्तियों रूपी पत्थर मारते हैं। indirectly वह हमसे गुणों के फल मांगते हैं। जब मुझमें कोई विशेषता दिखाई दी या उसने देखी इसलिए वह मुझे कटू वचन रूपी पत्थर मारता है। पत्थर मारता है तो समझो वह कहता है आप गुणवान हो। ऐसा समझने से आपके अन्दर सहनशक्ति, खुशी आ जायेगी।

(1) सहनशक्ति की आवश्यकता क्यों?

सहनशक्ति हर व्यक्ति को चाहिए। चाहे परिवार संसार में रहता हो अगर उसके पास सहन शक्ति नहीं तो वो गुस्सा करेगा, लड़ेगा, मारपीट करेगा।

(2) सहन शक्ति न होने के भिन्न-भिन्न कारण

सहनशक्ति न होने का कारण है –

1. इच्छायें

इच्छायें मनुष्य को कभी भी अच्छा बनने नहीं देती। इच्छाओं के कारण मनुष्य कई गलत कार्य करता है।

2. कमजोरी

कमजोर व्यक्ति सहन नहीं कर पाता है और दुर्बल व्यक्ति निर्दयी बन जाता है।

3. भय

मनुष्य के अन्दर भय की भावना आ गयी है। भय के कारण वह सहन नहीं कर पाता है।

(3) राजयोग के अभ्यास से सहनशक्ति का विकास

आज के जमाने के अन्दर क्रोध को, रोब को या अहम को अपना artificial nature बना लिया है। तो राजयोग हमें सहनशक्ति लाने के लिए मदद करता है।

राजयोग का अभ्यास जब करते हैं तब हमें समझ मिलती है कि हमें जीवन के अन्दर कौनसी इच्छायें उत्पन्न करनी है।

श्रेष्ठ संकल्प जीवन में सहनशक्ति लाने में मदद करते हैं। सहनशक्ति लाने के लिए understanding power चाहिए। राजयोग के अभ्यास से understanding power बढ़ती है और हम हर व्यक्ति के स्वभाव को जान सकते हैं।

[3] समाने की शक्ति (Power To Adjust)

अब दूसरी है समाने की शक्ति। हम सभी में समाने की शक्ति है तो अवश्य ही लेकिन limitation के बाहर हम नहीं समाते हैं।

- **उदाहरण – घर के बच्चे और पड़ोस के बच्चे की ग़लती का**

घर में बच्चे ने गलती की, भूल की तो क्या आप बाहर बतायेंगे? नहीं, लेकिन ग़लती अगर पड़ोस का बच्चा करता है, तो क्या हम समाते हैं? नहीं।

जहाँ अपने खुद के बच्चे की बात आती है, उससे भूल होती है, तो उस बात को हम समा लेते हैं। लेकिन वही गलती अगर पड़ोस का बच्चा करता है, तो हम बात को समाते नहीं है। क्यो? क्योंकि हम limitation में आ जाते हैं। लेकिन परमात्मा हमें limitation के बाहर निकालते हैं। जहाँ limitation आते हैं वहाँ नुकसान होता है। जहाँ भी हद होगी वहाँ dangerous बन जायेंगे। इसलिए बेहद में रहना है। दुनिया हद में आ गयी है इसलिए destruction की ओर जा रही है।

(1) राजयोग के अभ्यास से समाने की शक्ति

राजयोग का अभ्यास मनुष्य की बुद्धि को विशाल बना देता है और मनुष्य गम्भीरता और मर्यादा का गुण धारण करता है। थोडी सी खुशियाँ, मान-पद पाकर वह अभिमानी नहीं बन जाता और न ही किसी प्रकार की कमी आने पर या हानि होने पर दुःखी होता है। वह तो सागर की तरह सदा अपनी दैवी कुल मर्यादा में बंधा रहता है और गम्भीर अवस्था में रहकर दूसरी आत्माओं के अवगुण न देखते हुए केवल उनसे गुण ही धारण करता है।

योगी को कहा जाता है – next to God अर्थात् जो गुण परमात्मा के हैं वही गुण योगी अपने में समाता जाता है। परमात्मा गुणों के सागर हैं तो योगी आत्मा गुणों में स्वरूप है।

(2) समाने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

जीवन में जो कर्म हम करते हैं, उनमें समाने की शक्ति का बहुत महत्व है। उससे व्यक्ति दूसरों का प्रिय बनता है और उसे समाज में सन्तुष्टता का प्रमाण-पत्र मिलता है। जीवन की सफलता के लिए इस शक्ति का होना भी जरूरी है।

- **उदाहरण – भोजन की कमी और अतिथी के आगमन का**

हमारे पास भोजन की कमी है परन्तु यदि कोई मेहमान आ जाता है और हम थोड़ा-थोड़ा कम खाकर भी उस अतिथी का सत्कार करते हैं तो वह प्रसन्न हो जाता है। समय तो बीत जाता है, अच्छा व्यवहार एक यादगार बन जाता है।

इसी प्रकार कोई व्यक्ति कुछ ऐसी बात कह देता है जो मन को अच्छी नहीं लगती। वह भी एक बुद्धिजीवी व्यक्ति है उसके विचार भिन्न होते हैं। यदि हम उसकी बात को अपने मन में समा लेते हैं तब तो संगठन बना रहता है और हम धीरे-धीरे एक दूसरे के समीप भी आ जाते हैं और एक दूसरे के प्रति सम्मान की भाषा व्यक्त करते हैं। यदि हम दूसरों के विचारों के अन्तर को समा न सके तब तो जीवन में चलना ही मुश्किल है। तब तो पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में, अड़ोसी-पड़ोसी में रोज़ झगडे ही होने लगेंगे। सबके विचार हुबहु एक जैसे तो हो नहीं सकते। हरेक के स्वभाव-संस्कार, शिक्षा-संस्कृति अलग-अलग होती है इसलिए जीवन के अन्दर समाने की शक्ति का होना बहुत जरूरी है।

[4] परखने की शक्ति (Power To Discriminate)

यही हमें परखना हैं कि हमारे जीवन में किचड़ा तो नहीं है?

(1) परखने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

- **उदाहरण – नकली चीजअसली दिखाई देने का**

आज के जमाने में नकली (artificial) चीजचमकीली दिखाई देती है, real दिखाई देती है। तो आज परमात्मा को न पहचानने के कारण सभी को भगवान मान लेते हैं।

जैसे कहा जाता है – Everything which shines is not gold. वैसे ही आध्यात्मिक ज्ञान चमक वाला नहीं है लेकिन value वाला है। होटल, क्लब, सिनेमा में चमक है लेकिन value नहीं है। तो हम क्या देखते हैं?

इसलिए हमारे जीवन के अन्दर परखने की शक्ति का होना बहुत ही आवश्यक है कि real क्या है?

- **उदाहरण – एक व्यक्ति का जिसके जीवन में 50 पाप और 50 पुण्य था**

एक बार एक व्यक्ति के life में 50 पाप और 50 पुण्य था। मृत्यु के बाद धर्मराज ने कहाँ तुम्हारे खाते में 50 पुण्य और 50 पाप है। धर्मराज ने कहा चलो तुमने 50 पुण्य तो किया है ना इसलिए मैं तुम्हें ही पूछता हूँ कि तुम्हें कहाँ जाना है? तो तुम जहाँ जाना चाहो जा सकते हो। चाहे heaven या hell में। फिर उसे heaven दिखाया heaven में उसने देखा कि वहाँ बहुत ही शान्त-शान्त वातावरण है। फिर उसको hell दिखाया तो hell में नाचना, गाना, डान्स आदि करने का वातावरण था उसने सोचा कि heaven में तो बहुत ही शान्ति है और hell में ऐसा वातावरण है तो वह धर्मराज को कहता है कि मैं hell जाना पसन्द करूँगा।

तो आज हम भी क्या करते हैं? जब कोई भाई या बहन कहती है कि यह आध्यात्मिक ज्ञान बहुत ही अच्छा है, बाहर का वातावरण तो चमक वाला है। अगर हममें परख शक्ति है कि क्या सही है और क्या गलत है तब ही जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शायद वो कहानी आप जानते होंगे।

- **कहानी – भगवान की जिसमें भगवान ने गधा, कुत्ता, बन्दर, मानव बनाया और मानव ने भगवान से गधा, कुत्ता और बन्दर की आयु माँगता है**

एक बार भगवान ने गधा बनाया। गधा को कहा तु बहुत मजुरी करेगा, तु अक्ल से कम होगा, मजुरी करते-करते टाइम मिलेगा तो खायेगा। तु 50 साल जियेगा। फिर गधे ने कहा मुझे सब मंजुर है लेकिन मेरी आयु 50 से कम हो, फिर गधे ने 30 साल माँगा। भगवान जी ने तथास्तु कहा।

फिर भगवान ने कुत्ता बनाया। तु बहुत वफादार प्राणी होगा, वफादारी में सब कुछ सम्भालेगा और सम्भालते-सम्भालते आपको मालिक ने जो दिया वो खायेगा। तु 30 साल जियेगा। तो कुत्ते ने भगवान से कहा कि मुझे सब मंजुर है सिर्फ मेरी आयु 30 साल के बदले 15 साल हो। तो कुत्ता 15 साल माँगता है। भगवान जी उसे भी तथास्तु कहते हैं।

फिर भगवान ने बन्दर बनाया। बन्दर को कहा आप एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कुदोगे, जंगल में जो मिलेगा वो खाओगे, दूसरों को हँसाओगे और तुम 20 साल जियोगे। बन्दर भी भगवान से आयु कम माँगता है। तो बन्दर 20 साल के बदले 10 साल माँगता है। भगवान उसे भी तथास्तु कहते हैं।

फिर भगवान ने मानव बनाया और कहा तु बुद्धिशाली प्राणी होगा, सारी दुनिया पर राज्य करेगा। और तु 20 साल जियेगा। फिर मानव कहता है भगवान जी यह तो बहुत कम है, मुझे तो ज्यादा आयु चाहिए तो वो फिर बन्दर, गधा, कुत्ता की भी आयु माँग लेता है।

तो आप मानो या न मानो यही जीवन मनुष्य का है। 20 साल के बाद मनुष्य का जीवन गधे जैसा होता है। अपने बीबी, बच्चों का बोझ उठाता है। फिर 40 साल के बाद कुत्ते जैसा जीवन जीता है। क्योंकि अब उसको ज्यादा कमाना पडता है। तो जो टाइम मिलता है, जो घर में खिलाते हैं वो खाकर चलता है। फिर 55 साल के बाद उसका जीवन बन्दर जैसे होता है। आज इस बेटे के घर, कल उस बेटे के घर। यही जीवन मनुष्य का है।

तो भगवान के सम्बन्ध को न परखने के कारण वो सर्व श्रेष्ठ जीवन जीने के बजाय जानवर जैसा जीवन जी रहे हैं।

(2) राजयोग के अभ्यास से परख शक्ति का विकास

राजयोग के द्वारा परख शक्ति भी सुचारू रूप से आती है। जैसे एक जौहरी कसौटी के आधार से असली व नकली आभूषणों को परख लेता है, वैसे ही राजयोगी भी ज्ञान की कसौटी के आधार से सच्चे व झुठे व्यक्ति और परिस्थिति को परख सकता है। शिवबाबा की याद से परख शक्ति सहज ही धारण हो जाती है।

[5] निर्णय शक्ति (Power To Judge)

यह शक्ति हर एक के पास है। बुद्धु के पास भी निर्णय शक्ति है लेकिन उसकी एक जगह काम कर रही है सारी जगह नहीं। निर्णय शक्ति उसे कहा जाता है जो समय, स्थान, व्यक्ति और परिस्थिति के अनुकूल हो, right हो, fast हो। समय पर निर्णय होना चाहिए। अगर समय पर वह चीज़ को प्राप्त करने के लिए 4 गुणा मेहनत करनी पड़ती है तो....।

कहते है ना कि – समय और स्वास्थ एक बार जाने से वापस नहीं आता है।

मनुष्य का मन आलतु-फालतु बातों में उलझा रहता है उसके लिए हमें time box बनाना चाहिए। loose time है तो time box में डालते जाना है। तो समय हमको मिलेगा। जो हम अपने हाथ से करते है वो अपने साथ चलता है, और जब हम भगवान के साथ के सम्बन्ध की importance समझ लेते है तो time निकालना नहीं पड़ता है।

(1) राजयोग के अभ्यास से निर्णय शक्ति की तीव्रता का विकास

राजयोग से हम अपने मन को श्रेष्ठ संकल्पो से स्थिर करते हैं, परमात्मा में लगाते हैं। तो राजयोगी के मन-बुद्धि की तार परमात्मा से जुटी होने के कारण वह तराजु की तरह उचित-अनुचित बात का शीघ्र ही निर्णय ले सकता है। उसको शिवबाबा से कई प्रकार की प्रेरणायें भी प्राप्त होती है। बुद्धिमानो में बुद्धिमान शिवबाबा से बुद्धियोग लगाने से योग्य समय पर निर्णय लेना सहज आ जाता है अथवा निर्णय शक्ति का विकास होता है। वह व्यर्थ संकल्प और परचिन्तन से मुक्त होकर सदा प्रभु-चिन्तन में रहता है।

[6] सामना करने की शक्ति (Power To Face)

पाँचवीं शक्ति है सामना करने की शक्ति जो योग अभ्यास से ही प्राप्त होती है।

(1) सामना करने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

परिस्थिति का सामना करने के लिए आध्याात्मिक शक्ति बहुत आवश्यक है।

(2) राजयोग के अभ्यास से सामना करने की शक्ति का विकास

- **उदाहरण – अपने नजदीक के सम्बन्धी की मौत**

सबसे दुःखदायक परिस्थिति जो किसी के जीवन में आती है तो वह है अपने नज़दीक के सम्बन्धी की मौत। राजयोगी इस घटना का बगैर किसी दुःख और वेदना के सामना करता है, क्योंकि वह जानता है कि आत्मा तो कभी मरती नहीं, आत्मा एक की तरह इस सृष्टी रूपी रंगमंच पर आती है, शरीर तो केवल एक वस्त्र के समान है। वह सोचता है कि आत्मा तो अपने कर्मों के अनुसार अन्य देह रूपी वस्त्र धारण करने के लिए गयी है, दूसरा अभिनय करने के लिए गयी है। राजयोगी के सामने अगर सांसारिक समस्यायें तूफ़ान का रूप धारण कर जाये तो भी वह कभी विचलीत नहीं होता है। उसने अपना साथी परमात्मा को बनाया है। जिसका साथी है भगवान उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफ़ान। परमात्मा का सहारा होने के कारण राजयोगी आत्मा सदा दीपक के समान जगती रहती है तथा अन्य आत्माओं को ज्ञान का प्रकाश देती रहती है। शिवबाबा की याद में स्थित होकर हर परिस्थिति का सामना सहज ही कर सकते हैं।

[7] सहयोग शक्ति (Power To Co-operate)

(1) सहयोग शक्ति की आवश्यकता क्यों?

जब तक मनुष्य संसार के अन्दर है उसको सहयोग ही चाहिए। सहयोग के बिना वह कार्य नहीं कर सकता है कितना भी होशियार हो। संसार का जितना भी कार्य चल रहा है वह सहयोग से ही। कोई व्यक्ति अकेला काम कर नहीं सकता। आज अमेरिका विश्व में powerful country है लेकिन उनको थोड़ी-थोड़ी चीज़ों के लिए दूसरों के सहयोग की शक्ति लेनी पड़ती है।

- **उदाहरण – गोवर्धन पर्वत का**

गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए गोप-गोपियों ने सहयोग दिया।

(2) सहयोग से सफलता

परमात्मा कहते हैं दुनिया के अन्दर हजारों समस्याओं के पर्वत हैं। तो वह सहयोग से ही दूर होते हैं। जहाँ मिल करके काम करते हैं वहाँ प्राप्ति, सफलता जरूर मिलती है। शायद आपने देवता और असुरों की कहानी सुनी होंगी।

- **कहानी – देवता और असुरों की**

एक बार भगवान जी इन्द्रसभा में देवता और असुर दोनों को ही भोजन के लिए आमंत्रित करते है। क्योंकि असुर हमेशा कहते थे कि हमें भोजन के लिए क्यो नहीं आमंत्रित किया जाता, हम भी आना चाहते हैं। तब भगवान जी दोनों को बुलाते हैं। तो सबसे पहले असुरों को भोजन के लिए बिठाया जाता है। क्योंकि उन्हें लगता है अगर हमें बाद में बिठायेंगे तो देवतायें ही सब भोजन समाप्त कर देंगे।

भगवान जी भोजन करने के लिए एक शर्त डालते हैं कि भोजन करने से पहले सबके हाथों में लकडी बांधी जायेगी। यह असुर और देवता दोनों को मंजुर होती है।

तो असुर भोजन के लिए बैठते हैं लेकिन इतना अच्छा भोजन सामने होते हुए भी वो खा नहीं सकते थे क्योंकि हाथों में लकड़ी बांधी होती है इसलिए। वह सोचते ही रह जाते है कि कैसे भोजन करें? ऐसे ही उनका समय समाप्त हो जाता है, उनको खाली पेट ही वहाँ से उठना पड़ता हैं। असन्तुष्ट होकर के वहाँ से उठते है।

फिर आती है देवताओं की बारी। वह भी भोजन के लिए बैठते है। देवतायें बहुत ही आनंद से सन्तुष्ट होकर के उठते हैं। और कहते हैं आज तो बहुत ही मज़ा आया क्या स्वादिष्ट भोजन था।

यह सब असुर देखते ही रह जाते हैं कि देवताओं ने भोजन कैसे किया? कौनसी उन्होंने युक्ति की? जबकि शर्त दोनो के लिए थी।

देवताओं को कहा जाता है सहयोग देने वाले। तो देवतायें एक-दूसरे के आमने-सामने बैठ करके एक-दो को भोजन खिलाते हैं।

तो सहयोग की शक्ति से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। तो यहाँ भी कौनसी शक्ति हुई? सहयोग की शक्ति। सन्तुष्टता का अनुभव करने के लिए सहयोग देना भी है और सहयोग लेना भी है। सहयोग तब देंगे जब हमारे में नम्रता होंगी, प्यार होंगा।

(3) परमात्मा के कार्य में सहयोग की आवश्यकता

तो आपको कौनसा सहयोग देना है? हरेक को अपना जीवन परिवर्तित करने का सहयोग देना है।

आज सहयोग शक्ति की कमी होने के कारण ही समस्यायें खड़ी हो जाती हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण सहयोग नहीं देना चाहता है।

1. तीन प्रकार के मनुष्य

आज संसार में तीन प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं –

① दानवी वृत्ती वाले

एक है दानवी वृत्ती वाले। दानवी वृत्ती वाले सोचेंगे – मेरा तो मेरा, पर तेरा भी मेरा अर्थात् अपना सहयोग देने के बजाय अन्य की वस्तु पर भी अधिकार रखेंगे।

② मानवी वृत्ती वाले

मानवी वृत्ती वाले सोचेंगे – मेरा सो मेरा, तेरा सो तेरा अर्थात् उनको किसी से मतलब नहीं। उनमें अगर स्वार्थ नहीं तो परोपकार की भावना भी नहीं।

③ दैवी वृत्ती वाले (राजयोगी)

परन्तु राजयोगी कहेगा – न कुछ मेरा, न कुछ तेरा। यह सब कुछ परमात्मा का है। वह केवल अपनी चीजों से ही अनासक्त रहने की प्रेरणा देगा। अपने तन-मन-धन को परमात्मा की अमानत समझकर ट्रस्टी होकर चलेगा और उसे ईश्वरीय कार्य में लगाकर सहयोगी बनता जायेगा। वह स्वयं कार्य करके औरो को सिखायेगा।

इसी प्रकार परमात्मा के कार्य में एक-एक के सहयोग की अंगुली मिलने से इस कलियुगी पहाड़ को उठाकर इसके स्थान पर सतयुग को लाना कोई बड़ी बात नहीं है। बस हिम्मत रखते जाइये और शिवबाबा की मदद लेते जाइए। कहा भी जाता है – हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा।

[8] विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति (Power To Withdraw)

(1) विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति आवश्यकता क्यों?

हमें कर्म जरूर करना ही है। लेकिन कर्म करने के बाद फ्री टाईम मिलता है तब पास्ट की बातों को याद न कर, व्यर्थ बातों को याद न कर अपने मन को भगवान की याद में स्थित कर दो।

मनुष्य का मन चारों तरफ घूमता रहता है इसीलिए राजयोग के अभ्यास से संसार में रहते हुए, कर्मयोग करते हुए अपने मन को परमात्मा के अन्दर लगाओ।

(2) राजयोग के अभ्यास से विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति का विकास

- **उदाहरण – कछुए का**

जैसे कछुआ अपने अंगों को जब चाहे सिकुड़ लेता है और जब चाहे फैला लेता है वैसे ही राजयोगी जब चाहे अपनी इच्छा अनुसार अपनी कर्मेन्द्रियों के द्वारा कर्म करता है और जब चाहे विदेही एवं शान्त अवस्था में रह सकता है।

[9] समेटने की शक्ति (Power To Pack up)

(1) समेटने की शक्ति की आवश्यकता क्यों?

सब कुछ समेटना यहाँ ही है। मन को इतना फैला रखा है लेकिन जब जाने का टाईम आयेगा तो मन को समेट सकेंगे? मन को हमेशा समेटकर रखो। क्योंकि सृष्टि का अन्तिम समय होने के कारण अब वापिस परमधाम घर जाने का समय आ चुका है।

- **उदाहरण – मुसाफिर का**

जिस प्रकार एक मुसाफिर यात्रा पर जाते समय आवश्यक वस्तुएँ ही अपने साथ ले जाता है, उसी प्रकार हमें अपनी आत्मा में दिव्य गुण, शक्तियाँ, श्रेष्ठ कर्म या श्रेष्ठ संस्कारों का ही संग्रह करना है। क्योंकि आत्मा के सच्चे साथी बनकर उसके साथ यही जाते हैं।

108 गुणों की सूची
(सद्‌गुण तथा दैवीगुण)

(1) यथार्थता
(2) परिवक्वता
(3) सावधानी
(4) मन की विशालता
(5) परोपकार
(6) वचनबद्धता (प्रतिबद्धता)
(7) निश्चिन्तता
(8) जागरूकता
(9) सन्तुष्टता
(10) सहयोग
(11) हर्षित
(12) विविधता (भिन्नता)
(13) मितव्ययता (Economy)
(14) स्वतन्त्रता
(15) ओजस्विता (शक्तियुक्तता)
(16) दूरदर्शिता
(17) लचीलापन
(18) उदारता
(19) धैर्यता
(20) गुणवत्ता
(21) उत्तम मनोविदता
(22) सामंजस्यता
(23) प्रामाणिकता
(24) सन्तोष
(25) नम्रता
(26) स्वावलम्बन
(27) प्रेरणादायक
(28) प्रसन्नता
(29) न्याय-प्रियता (न्यायपरिपालना)
(30) नियमबद्धता
(31) स्नेहपरता (प्रेममयता)
(32) प्रौढ़ता (परिपक्वता)
(33) औचित्यपूर्णता
(34) सहजता (स्वाभाविकता)
(35) आज्ञा परिपालना (आज्ञाकारिता)
(36) मन की स्पष्टता
(37) सहनशीलता
(38) सकारात्मकता
(39) शान्तचित्
(40) विश्वसनीयता
(41) सत्कारिता (आदर करना)
(42) आत्मविश्वास
(43) स्वयं प्रेरणाप्रद
(44) सादगी
(45) एकान्तप्रियता
(46) अचलता
(47) उत्सुकता
(48) व्यवहार कुशलता (युक्तियुक्तता)
(49) समयप्रज्ञता
(50) चिन्तनशीलता
(51) विश्वासपात्र
(52) विवेकपूर्णता
(53) पराक्रमता (साहस)
(54) इच्छुकता
(55) दूसरों को ऊपर उठाने की भावना
(56) सहिष्णुता
(57) सत्यसन्धता (सत्यप्रियता)
(58) विश्वासमयता
(59) संयमता
(60) मधुरता (मधुमयता)

(61) कर्त्तव्य परायणता
(62) स्थिरता
(63) पारमार्थिकता
(64) मृदुत्व (कोमलता)
(65) प्रशान्तता
(66) आत्म संयम (स्व-नियंत्रण)
(67) निःस्वार्थता
(68) सम्मानता
(69) कान्तियुक्तता
(70) परिशुद्धता
(71) शान्तिमय
(72) आशावादित्व
(73) सुव्यवस्थित
(74) अहिंसक
(75) नीतिबद्धता
(76) दयालुता
(77) दानशीलता
(78) आलोकता (हल्कापन)
(79) सहृदयता (कृपालुता)
(80) अखण्डता
(81) न्यायपूर्णता (विवेकपूर्णता)
(82) परिश्रमता
(83) उत्तम विनोदप्रियता
(84) महत्त्वाकांक्षा
(85) गौरवान्वित (सम्मानित)
(86) कठिन परिश्रमता
(87) करूणामयता
(88) कुलीनता (सभ्यता)
(89) शुभेच्छा
(90) मित्रता
(91) निर्भयता
(92) श्रद्धा
(93) विकारों से विपथगमन
(94) उमंग-उत्साह
(95) समर्पणमयता
(96) कर्मठता
(97) सहनशक्तित्व
(98) शीतलता
(99) अनुकम्प
(100) स्पष्टता और स्वच्छता
(101) उत्तरदायित्व की परिपालना
(102) सन्तुलन
(103) सतर्कता
(104) विशाल हृदयता
(105) कृतज्ञता (परोपकार स्मरण)
(106) शान्त स्वरूप (अशान्त स्थिति में)
(107) सत्यनिष्ठता (सत्य परिपालना)
(108) अनुकूलनशीलता (मोल्ड होना)
(109) पवित्रता

ईश्वरीय पढ़ाई के
चारों विषयों का मूल स्रोत
मुरली

साकार मुरली गीत

[1] विषय प्रवेश

साकार में बाबा पहले एक गीत बजवाते थे और उसी गीत के शब्दों के आधार पर मुरली चलाते थे। इसलिए बाबा के अव्यक्त होने के बाद जो साकार वाणियों का रिवीजन चल रहा है उसमें लगभग हर साकार वाणी में उस समय चलाए गए गीत की एक पंक्ति होती है। तो यहाँ पर उन्हीं गीतों की सूची दी जा रही है ताकि हम इन गीतों के विस्तार को जाने और समझें कि बाबा कैसे गीतों के शब्दों के आधार पर पूरी मूरली चलाते थे।

[2] साकार मुरली गीतों की सूची

(1) ओम् नमः शिवाए .. .. .

साकार मुरली गीत

[1] विषय प्रवेश

[2] साकार मुरली गीतों की सूची

(1) ओम् नमः शिवाए .. .. ..
(2) भोलेनाथ से निराला कोई और नहीं.. .. ..
(3) शिव शक्तियाँ आ गयीं धरती पर.. .. ..
(4) जय-जय अम्बे माँ.. .. ..
(5) नन्हें मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में.. .. ..
(6) आनेवाली कल के तुम तकदीर हो.. .. ..
(7) इन्साफ की डगर पर.. .. ..
(8) सो जा राज कुमारी.. .. ..
(9) बचपन के दिन भुला न देना.. .. ..
(10) भैया मेरे राखी के बन्धन को निभाना.. ..
(11) माता ओ माता.. .. ..
(12) चलो चले माँ सपनों के.. .. ..
(13) तुम्हीं हो माता पिता.. .. ..
(14) कौन है पिता, कौन है माता.. .. ..
(15) दुखियों पर रहम करो माँ बाप हमारे.. ..
(16) तु पितु मात सहायक स्वामी सखा.. .. ..
(17) ले लो दुआयें माँ बाप की.. .. ..
(18) ये वक्त जा रहा है.. .. ..
(19) आज अन्धेरे में है इन्सान.. .. ..
(20) आज के इन्सान को ये क्या हो गया.. ..
(21) देख तेरे संसार की हालत.. .. ..
(22) तेरे द्वार खड़ा भगवान.. .. ..
(23) तू प्यार का सागर है.. .. ..
(24) मुखड़ा देख ले प्राणी.. .. ..
(25) ये कहानी है दिवे की और तुफ़ान की.. .
(26) दुनिया रंग रंगीली बाबा.. .. ..
(27) जीवन डोर तुम्ही संग बाँधी.. .. ..
(28) हमारे तीर्थ न्यारे हैं.. .. ..
(29) धीरज धर मनुआ.. .. ..
(30) आख़िर वह दिन आया आज.. .. ..
(31) तुने रात गँवायी सोय के.. .. ..
(32) रात के राही थक मत जाना.. .. ..
(33) जिसका साथी है भगवान.. .. ..
(34) आज नहीं तो कल बिखरेंगे ये बादल..
(35) ओ दूर के मुसाफिर.. .. ..
(36) दूर देश का रहने वाला.. .. ..
(37) इस पाप की दुनिया से दूर कहीं ले चल..
(38) तकदीर जगाकर आयी हूँ.. .. ..
(39) राम सुमिर प्रभात मोरे मन.. .. ..
(40) मुझे अपनी शरण मे ले लो राम.. .. ..
(41) नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु.. .. ..
(42) छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.. .. ..
(43) धरती को आकाश पुकारे.. .. ..
(44) किसने ये सब खेल रचाया.. .. ..
(45) हमने देखा हमने पाया.. .. ..
(46) मैं एक नन्हा सा बच्चा हूँ.. .. ..
(47) बनवारी रे जीने का सहारा.. .. ..
(48) दिल का सहारा दूर न जाये.. .. ..
(49) हमें उन राहों पर चलना है.. .. ..
(50) आ गये दिल में तु.. .. ..
(51) जिस दिन से मिले हम तुम.. .. ..
(52) एक तु जो मिला.. .. ..
(53) मुझे गले से लगा लो.. .. ..
(54) तुम्हें पाके हमने जहान.. .. ..
(55) किसी ने अपना बनाके मुझको.. .. ..
(56) मुझ को सहारा देने वाले.. .. ..
(57) तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है.. .. ..
(58) इस दिल के टुकडें हजारों हुए.. .. ..
(59) प्रीतम आन मिलो.. .. ..
(60) जो पिया के साथ है.. .. ..

(61) जाग सजनियाँ जाग.. .. ..

(62) न वो हमसे जुदा होंगे.. .. ..

(63) महफिल में जल उठी शमा.. .. ..

(64) जले न क्यों परवाना.. .. ..

(65) मरना तेरी गली में.. .. ..

(66) दर पे आये हैं कसम ले.. .. ..

(67) इधर मुहब्बत उधर है जमाना.. .. ..

(68) लाख जमाने वाले.. .. ..

(69) बदल जाये दुनिया.. .. ..

(70) ना ये चाँद होगा ना तारे.. .. ..

(71) बड़ा खुश नसीब हूँ.. .. ..

(72) ये बहार है दुनिया को भूल जाने की.. ..

(73) कौन आया मेरे मन के द्वारे.. .. ..

(74) ये कौन आज आया सवेरे-सवेरे.. .. ..

मुरली की कहावतें

[1] मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों का अर्थ जानना जरूरी क्यों?

(1) टीचर ने विद्यार्थी से 'सत का संग तारे, कुसंग बोरे' का अर्थ पूछा तो उसने अर्थ का अनर्थ कर दिया

(2) विद्यार्थी ने टीचर से 'मन्मनाभव, मध्याजी भव' का अर्थ पूछा तो उसने अर्थ का अनर्थ कर दिया

[2] मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों का अर्थ

(1) सत का संग तारे कुसंग बोरे

(2) मन्मनाभव, मध्याजी भव

(3) इच्छा मात्रम् अविद्या

(4) संशयबुद्धि विनशन्ति, निश्चय बुद्धि विजयन्ति

(5) गुरु जिसका अन्धला चेले का सत्यानाश

(6) गुरु बिन घोर अँधियारा

(7) ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अँधेर विनाश

(8) ज्ञान अंजन सद्‌गुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनाश

(9) गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना गति नहीं

(10) गुरु का निंदक ठौर न पाए

(11) गुरु गोबिन्द दोनों खडे काके लागुँ पाय, बलिहारी गुरु आपने जिन गोबिन्द दियो बताय

(12) सच की नाँव डोलेगी लेकिन डुबेगी नही

(13) दुःख देंगे तो दुःखी होकर के मरेंगे

(14) सुख देंगे तो सुख पायेंगे

(15) अन्तर्मुखी सदा सुखी

(16) अब नहीं तो कब नहीं

(17) हिम्मते बच्चे मददे बाप

(18) बच्चों का एक कदम, बाप का हजार कदम

(19) कदम में पदम

(20) अम्मा मरे तो भी हलुआ खाओ, बीबी मरे तो हलुआ खाओ, मियाँ मरे तो हलुआ खाओ

(21) पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा

(22) काम विकार नर्क का द्वार, पवित्रता सुख का द्वार

(23) शंकराचार्य वाच – नारी नर्क का द्वार है
(24) राम राजा राम प्रजा राम साहुकार है, बसे नगरी जीये दाता धर्म का उपकार है
(25) रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाए।
(26) अन्धे की औलाद अन्धी, सजे की औलाद सजे
(27) अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा
(28) जो करेगा सो पायेगा
(29) हम सो, सो हम
(30) डण्डा लेने गये बाबर्ची बन बैठे
(31) दे दान, तो छुटे माया का ग्रहण
(32) जिनके माथे मामला उनका माथा खराब
(33) सब संग तोड़, एक संग जोड़
(34) खुशी जैसी खुराक नहीं और गम जैसा कोई मर्ज़ नहीं या चिन्ता जैसा कोई रोग नहीं
(35) जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा अन्न
(36) सेवा से मेवा मिलता है
(37) योगी शीतल काया वाले शीतल जिसके अंग, तपत बुझाए औरों की देकर अपना संग
(38) भारत की ये दुर्दशा देखकर आँखें होती हैं बन्द, देवों की इस पुण्य भुमि से अब आती है दुर्गन्ध
(39) शिवबाबा का भण्डारा भरपूर, खाने वालों के काल कंटक दूर
(40) सब नशों में है नुक़सान सिवाय एक नारायणी नशे के
(41) परवाह थी पारब्रह्म में रहनेवाले परमात्मा की, वो मिल गया तो फिर क्या चाहिए
(42) जप साहब तो सुख मिले
(43) एक ओंकार, सतनाम, कर्ता पुरुष, निर्भय, निर्वेर, अकाल मूरत, अयोनि सैभम
(44) तुम मात-पिता हम बालक तेरे तुमरी कृपा में सुख घनेरे
(45) अन्त मति सो गति
(46) मूत पलीती कपड धोय
(47) सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह क्लेष मिटे सब तन का
(48) राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार
(49) चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला
(50) बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहीं, चिन्ता ता की कीजिए अनहोनी जो होए
(51) राम सिमर प्रभात मोरे मन
(52) जिन सोया तिन खोया, जिन जागा तिन पाया

(53) झुठी माया, झुठी काया, झुठा सब संसार
(54) अमृत छोड विष काहे को खाए
(55) चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस और गिरे तो चकनाचूर
(56) आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सद्गुरु मिला दलाल
(57) सच्चे दिल पर साहेब राज़ी
(58) दिल साफ तो मुराद हासिल
(59) आप मुए मर गयी दुनिया
(60) बड़ा होना, बड़ा कहावना, बड़ा दुःख पाना
(61) बड़े तो बड़े, छोटे तो सुभान अल्लाह
(62) मायाजीते जगतजीत
(63) मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार
(64) एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी की भी पुनः आधी घड़ी
(65) किसी की दबी रहेगी धूल में, किसी की राजा खाए, किसी की चोर लुट जाए, किसी की आग जलाए, सफल होए साए जो काम धणी के लगाए
(66) भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा
(67) कोटों में कोई, कोई में भी कोई
(68) धन दिए धन न खुटे, देते-देते हित सवायो
(69) गंगा का तट हो, मुख में गंगा का जल हो, तब प्राण तन से निकलें, तो अहो सौभाग्य
(70) सच तो बिठो नच
(71) वाट वेन्दे बाम्भण फातो
(72) चुहे लधी हैड गरी चये माँ ब पंसारी
(73) धरत पडे धरम न छोडो
(74) मोचरा खाना, मानी लेना
(75) खुशियों में खगियाँ मारना
(76) मिरूँआ मौत मलुका शिकार
(77) अलिफ को अल्लाह मिला, बे को मिली बादशाही, आई तार अलिफ की, हुआ रेल का राही
(78) कख का चोर सो लख का चोर
(79) जो ओटे सो अर्जुन
(80) गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने
(81) कम कार डे, दिल यार डे
(82) जहाँ तक जीना है, वहाँ तक ज्ञान अमृत पीना है

(83) पढ़े-लिखे के आगे अनपढ़े भरी ढ़ोयेंगे

(84) आश्चर्यवत सुनन्ती,कथन्ती, सुनावन्ती, अहो मम माया भागन्ती

मुरली की कहावतें

[1] मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों का अर्थ जानना जरूरी क्यों?

(1) टीचर ने विद्यार्थी से 'सत का संग तारे, कुसंग बोरे' का अर्थ पूछा तो उसने अर्थ का अनर्थ कर दिया

एक बार क्लास में एक प्रश्न लिखा गया कि सत का संग तारे कुसंग बोरे का अर्थ बताओ।

तो एक अच्छे एज्युकेटेड भाई ने आन्सर में इसका अर्थ लिखा – जो सत का संग करें वो तारा बन जायेगा और जो कुसंग करें वो बोरा बन जायेगा।

तो इसलिए फिर क्लास में उस भाई का नाम लिये बिना, क्योंकि नाम लेने से फीलिंग आती है, पूछा गया कि जिसने ये लिखा है कि कुसंग से बोरा बन जायेगा, तो वो बोरा कौनसा है, शक्कर का या चावल का?

तो जब तक हमारी बुद्धि में ज्ञान क्लीयर नहीं होगा तो हम आने वालो को सही मार्गप्रदर्शन नहीं करेंगे। इसलिए बाबा क्या कहते हैं? गुरु जिसके अन्धले चेले का सत्यानाश अर्थात् जिसके गुरु के पास ही ज्ञान नहीं है तो उसके शिष्य का वो कल्याण कैसे कर सकता है।

हम औरों के आगे आदर्श है। हम जो कहते हैं लोग उसको सही रूप में मानकर के चलते हैं। अगर हमने उस ज्ञान को सही तरीके से समझा होगा तो हम समझा सकते हैं। इसलिए मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों का अर्थ जानना जरूरी है।

(2) विद्यार्थी ने टीचर से 'मन्मना भव, मध्याजी भव' का अर्थ पूछा तो उसने अर्थ का अनर्थ कर दिया

किसी भाई ने एक बी.के. टीचर बहन से 'मन्मनाभव, मध्याजाभव' का अर्थ पूछा, तो उसने कहा कि बाबा ने बोला है मन को मुझमें लगाओ और मध्य में किसी को न लाओ जो कि सही नहीं है।

क्लास में ऐसा बोलेंगे कि मध्याजीभव माना मध्य में किसी को न लाओ तो वे हँसेंगे। क्योंकि वो जो विद्यार्थी पढ़े-लिखे हैं, जो संस्कृत जानते हैं उनको तो इसका अर्थ मालूम रहता है, लेकिन वो टीचर बहन की अण्डरस्टैण्डींग को चेक करने के लिए जान-बुझकर ऐसा पूछते हैं।

इसलिए ज्ञान की गहराई पर जो आप सुनते हो उसको बैठकर के मनन-चिन्तन करो, उसको अच्छी तरह से पढ़ो, नहीं समझ में आए तो जब कोई आपको समझाता है दुबारा उससे पूछो आपको कोई मना नहीं है।

बाबा बोलता है जो नहीं समझ में आए बाबा से, अपनी बहनों से पर्सनल टाइम लेकर के आप समझो तब औरों को समझाओ।

अगर उल्टा ज्ञान दिया तो हमारा वो ही हालत होगा – गुरु जिसका अन्धला तो चेले का सत्यानाश तो विद्यार्थियों का भी पद कम होगा। अगर उनको कम समझ आयी और उन्होंने कोई गलती की तो उसकी सजा भी हमको मिलेगी।

इसीलिए याद रखो हम बहुतों के लिए निमित्त है, आधार मूर्त और उद्धार मूर्त आत्माएँ हैं। तो ज्ञान को बहुत अच्छी तरह से जानो, कोर्स की किताब को भी जरा बार-बार पढ़ लो, अध्ययन करो, मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों के अर्थ जानों।

[2] मुरलियों में आने वाली कहावतों/दोहों का अर्थ

(1) सत का संग तारे कुसंग बोरे

बोरे माना? डुबोए। सत का संग कौनसा है, क्या है? शिवबाबा का संग। बुद्धि का संग बाबा के साथ होगा तो हम इस दुनिया से तर जायेंगे, पार हो जायेंगे और अगर कुसंग में जायेंगे तो डुब जायेंगे। बुराइयों में, विषय विकारों में, बुरी आदतों में मनुष्य कब डुबता है? जब वो बुरे संग में जाता है। इसलिए बाबा हम बच्चों को क्या कहते है? संग की बहुत सम्भाल करो। सत का संग तारे कुसंग बोरे। बोरे माना (ये सिन्धी वर्ड है) डुबोए।

(2) मन्मनाभव, मध्याजाभव

मन्मनाभव माना मन बाबा से लगाना, शिवबाबा को याद करना। और त्रिमूर्ती का चित्र सभी ने देखा है? मध्य में कौन है? विष्णु है। तो आप विष्णु बन जायेंगे।

मध्याजीभव ये वरदान है कि अगर आप मन को शिवबाबा में लगायेंगे तो आप विष्णु समान बन जायेंगे। जैसे हमारा बाबा बोलता है न बाप और वर्सा। इसी प्रकार ये ही है मन्मनाभव मध्याजी भव अर्थात् विष्णु समान भव।

(3) इच्छा मात्रम् अविद्या

ये एक स्थिति हैं। ये स्थिति कहाँ होती है? ये स्थिति सतयुग में अपने आप बन जायेगी, लेकिन बनानी है यहाँ।

इच्छा मात्रम् अविद्या माना जिनको 'इच्छा' शब्द का ज्ञान भी नहीं है, 'इच्छा' क्या होती है, उसका ज्ञान नहीं है। जैसे छोटे बच्चे की स्थिति होती है, उसको इच्छा होती है कि मुझे खाना खाना है, मुझे दाल चाहिए, चावल चाहिए? नहीं। उसको जो भी उसकी माँ दुध पिलाए या कुछ भी खिलाए वो खाता है। अपनी इच्छा कुछ भी नहीं होती है उसको। उसको क्या पहनना है उसकी भी इच्छा का ज्ञान नहीं होता है।

जब-जब उसकी इच्छाएँ बढ़ती है तब से वो क्या होता है? दुःखी होता है। वो जैसा कपड़ा पहनना चाहता है और अगर माँ वैसा नहीं पहनाती है, तो वो दुःखी होता है।

तो बाबा इसीलिए क्या कहता है? इच्छा अच्छा नहीं बनने देती है।

(4) संशयबुद्धि विनशन्ति, निश्चय बुद्धि विजयन्ति

जहाँ भी कहीं संशय होगा तो विनाश किसका होगा? हमारा जो श्रेष्ठ पद है उससे हम गिर जाते हैं। कोई-न-कोई संशय से ही यहाँ से लोग चले जाते हैं। ज्ञान छोड़कर क्यों जाते हैं? कोई बात की भी क्लेरीटी नहीं है, उसके मन में कोई डाउट आता है, ये क्यों, ये क्या क्वेश्चन मार्क है। तो ये संशय हमारे पद को विनाश कर देता है।

और निश्चय बुद्धि हमेशा विजयी होगा। इसलिए हमेशा हर बात में विजय मेरी है, विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है इस निश्चय से कार्य करो तो सदा आपको विजय मिलेगी। हो ही नहीं सकता कि दूसरा कोई विजयी बनें। कल्प-कल्प के हम विजयी आत्मा हैं इस निश्चय से कोई भी कार्य करो चाहे भाषण करो, चाहे भोजन बनाने के लिए

किचन में जाओ इस निश्चय से जाओ मेरे जैसा भोजन कोई भी पका नहीं सकता हैं, मैं ही शिवबाबा के लिए भोग बनाऊँगी तो निश्चय से जायेंगे तो आपकी विजय होगी।

(5) गुरु जिसका अन्धला चेले का सत्यानाश

अगर गुरु ही अज्ञानी है, अगर उसके पास ही ज्ञान स्पष्ट नहीं है, उससे कुछ भूल होती है ....जैसे हम भी औरों के लिए लोग गुरु बन जाते हैं, लोग हमको गुरु की दृष्टि से देखते हैं और अगर हमने कोई भूल की, हम आदर्श हैं औरों के आगे, तो हमको जो फॉलो करने वाले हैं, हमारे जो फॉलोअर्स हैं (उनको चेले बोलते हैं) तो उनकी क्या हालत होगी?

तो बाबा हमेशा क्या कहते हैं? जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख सब करेंगे। अगर मैं गिरूँगी तो मेरे पीछे जो भी मेरे देखकर चलने वाले हैं वो भी गिरेंगे। तो गुरु जिसका अन्धला चेले का सत्यानाश अर्थात् जिसका गुरु ही बेकार होगा, अन्धला माना जिसके पास ज्ञान नहीं है तो उसके चेले की भी हालत क्या होगी? उसकी दुर्गति होगी।

(6) गुरु बिन घोर अँधियारा

गुरु नहीं तो जीवन में अज्ञान रूपी अंधेरा होता है।

(7) ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अँधेर विनाश

ज्ञान रूपी सूर्य अर्थात् जब ज्ञान सूर्य शिवबाबा आते हैं तो अज्ञान रूपी अंधेरा चला जाता है।

(8) ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया, अज्ञान अन्धेर विनाश

बाबा ने जब ज्ञान दिया तो अज्ञान का अँधकार खत्म हो गया।

(9) गुरु विना ज्ञान नहीं, ज्ञान विना गति नहीं

तो गुरु कौन मिला आपको? सद्गुरु। जब तक शिवबाबा नहीं मिला तो ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना हमारी गति -सद्गति नहीं है।

(10) गुरु का निंदक ठौर न पाए

हमारे कोई कर्म ऐसे न हो जिसमें बाबा की, हमारी बड़ी बहनो की, यज्ञ की निंदा हो। नहीं तो हमें कहीं . .कौन सा ठौर बोलता है बाबा? कौन सा स्थान नहीं मिलेगा? ऊँच पद नहीं मिलेगा।

(11) गुरु गोविन्द दोनों खडे काके लागुँ पाय, बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय

भक्ति मार्ग में ऐसा बोलते हैं — गुरु और गोबिन्द दोनों खडे हो तो किसके पाँव लगे पहले। तो बलिहारी गुरु की जो हमको भगवान से मिलाता है। तो अगर ब्रह्मा बाबा नहीं होता तो शिवबाबा से हम कैसे मिलन मनाते थे।

(12) सच की नाँव डोलेगी लेकिन डुबेगी नही

सत्यता के आगे कितनी भी परिक्षाएँ आयेंगी, हमारी जीवन रूपी नाँव को हिलाने वाली बातें भी आयेंगी लेकिन हम कभी भी डुबेंगे नहीं। ये निश्चय होना चाहिए कि हम सच की नाँव में बैठे है हमारा खिवैया कौन है? शिवबाबा। इसलिए हमारी नाँव कभी नहीं डुबेगी।

(13) दुःख देंगे तो दुःखी होकर के मरेंगे

हम किसी को दुःख देंगे तो उस एक्शन का रिएक्शन होगा, हमको भी उसके परिणाम में दुःख मिलेगा। कई बार लोग बहुत दुःख देते हैं और लास्ट में उनका क्या होता है? बहुत दुःख से मरते हैं।

अगर सास ने बहु को प्यार नहीं दिया है तो लास्ट में उसकी बहु सेवा करेगी उसकी? वो भी उसको ताने मार-मार के जैसे उसने उसको सताया उसी तरह से वो उसको दुःख देती है। तो दुःख देंगे तो दुःखी होकर के मरेंगे।

(14) सुख देंगे तो सुख पायेंगे

अगर हम दूसरों को सुख देंगे तो रिटर्न में हमें भी सुख मिलेगा।

(15) अन्तर्मुखी सदा सुखी

1. पहला स्पष्टीकरण

बाहरमुखी सदा दुःखी अन्तर्मुखी सदा सुखी। जो दूसरों को देखता हैं उसको क्या बोलते हैं? बाहरमुखी। बाहरमुखी क्या करता है हमेशा? ये क्या कर रही है, ये कैसी बैठी है, ये कपडा कौनसा है, इसकी साड़ी कैसी है, ये अच्छी है मैं भी ऐसी लुँगी। तो ये है बाहरमुखी, बाहरमुखी दुःखी होता रहता है – मेरी साड़ी अच्छी नहीं इसकी अच्छी है। मेरी बहन ने, मेरी दीदी ने इतनी अच्छी नहीं दी है। ये तु कहाँ से लाई? वो बोलेगी घर से लाई। फिर वो और दुःखी होगी मेरे घर वाले तो देने वाले ही नहीं है। तो बाहरमुखी सदा दुःखी।

अन्तर्मुखी सदा सुखी। जो अपने अन्दर को देखता है। बाहरमुखी दुसरों के अवगुण देखेगा, दुसरों की बाहर की बातें देखेगा, अन्दर का कुछ नहीं देखेगा। अन्तरमुखी हमेशा अपने अन्दर की चेकिंग करता रहेगा। अगर किसी को क्रोध करते हुए भी देखेगा तो उसको अच्छा नहीं लगता है लेकिन फौरन वो अपने अन्दर जाता है, सोचता है – अगर मैं क्रोध करती हुँ तो किसी को अच्छी लगुँगी?

बाहरमुखी सोचता है कि गुस्सा करती है तो ये अच्छी नहीं लगती है मेरे को। पर जब मैं गुस्सा करती हूँ तो मैं किसको अच्छी लगती हूँ। मेरे में गुस्सा नहीं है क्या? जब मेरे में नहीं है तब मैं दूसरे को कमेन्ट कर सकती हूँ, दूसरे पर ऊँगली उठा सकती हूँ। अगर वो अवगुण मेरे में नहीं है तब तो मुझे अधिकार है बोलने का कि क्यों गुस्सा करती है इतना। उस समय अन्तर्मुखी सोचता है कि मेरे अन्दर तो नहीं है? ये मुझे नहीं अच्छी लगती है तो मैं . .जब मेरा ये स्वरूप होगा तो मैं भी अच्छी नहीं लगती। वो कपडा भी धोयेगा अन्तर्मुखी होकर। जैसे मैं इस कपडे को साबुन लगाकर साफ कर रही हूँ ऐसे मुझे अपनी आत्मा को भी स्वच्छ और सुन्दर बनाना है। हर बात अपने अन्दर की तरफ लेना।

2. दूसरा स्पष्टीकरण

सर्व गुणों का मूल आधार है अन्तर्मुखता। अन्तर्मुखता का यह अर्थ नहीं कि मुख से कुछ न बोलें, परन्तु अन्दर जो व्यर्थ संकल्पों के तूफ़ान आ जाते हैं, उसमें अन्तर्मुख। अन्तर्मुखता की परिभाषा क्या है? मुख कहते हैं

मुखड़े को, मुखड़े में ये चार शक्तियाँ हैं – सोचने की, देखने की, बोलने और सुनने की। यह मुख, सारे अन्दर का भाव बताता है। आत्मिक स्थिति में स्थित होकर इन शक्तियों को प्रयोग करें, इसको कहते हैं अन्तर्मुख। जैसे गुलाम मालिक की आज्ञा मानता है, गुलाम गुलाम की आज्ञा नहीं मानेगा, ठीक इसी प्रकार आत्मा अपनी आत्मिक स्थिति में हो कर अपनी कर्मेन्द्रियों को आर्डर करें तो ठीक काम होगा। ऐसे नहीं सोचने की शक्ति समर्थ की बजाए व्यर्थ सोच ले, इसके लिए अपने ऊपर नियन्त्रण चाहिए। नियन्त्रण शक्ति उनमें होगी जो सीट पर सेट होंगे। सीट है अन्तर्मुखता, इसलिए कहा जाता है अन्तर्मुखी सदा सुखी, बाह्यमुखी सदा दुःखी।

कोई कहते हमको खुशी नहीं, अन्दर-अन्दर सन्नाटा है, अब यह दुःख ऐसा भी नहीं जो हाय करें जैसे एक होते हैं मोटे विकार दूसरे उसके बाल बच्चे तो दुःख का भी महीन रूप है – न तो शिव बाबा की याद, न माया का रूप – वास्तव में यह स्टेज भी सूक्ष्म दुःख की है। अगर कोई सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय धोखा देती है तो धोखा खाने वाला सदा दुःखी। अन्तर्मुखी सदा खुश रहेगा, उसको मायावी तूफ़ानों की कोई परवाह नहीं, सदा हर्षित। जैसे सागर में लहरें उठती रहती है वैसे ही अन्तर्मुखी के अन्दर भी सदा खुशी की लहरें उठती रहती।

(16) अब नहीं तो कब नहीं

अब नहीं तो कब नहीं माना? अभी जो हम नहीं करेंगे तो पाँच हजार वर्ष का ये रिपीटेशन होगा। तो अब नहीं तो फिर कल्प-कल्प के लिए नहीं। अभी अगर आज हम नहीं उठे तो हम क्या कहते हैं – क्या हो गया आज ही तो नहीं उठे। पर कल्प-कल्प का हमने रिकार्ड खराब किया। इसलिए जो करना है अभी करो। अभी नहीं तो कभी नहीं होगा। अभी शरीर छुट गया तो फिर कब करेंगे।

(17) हिम्मते बच्चे मददे बाप

जितनी हमारी हिम्मत उतनी बाबा की मदद। पर कभी-कभी हम लोग क्या कम्पलेन करते हैं? मेरे को तो बाबा मदद ही नहीं करता है, इसको-उसको बहुत करता है, बहनजी को करता है, हमारे को तो करता ही नहीं है। तो बाबा सबको मदद करता है लेकिन हम हिम्मत नहीं रखते।

कभी-कभी बाबा की मदद को भी समझने की शक्ति बहुत कम लोगों में होती है। हम लोग कभी-कभी बाबा से मदद माँगते हैं, हिम्मत न हो तो भी बाबा मदद करता है कई बार। बच्चों को भी अपने आप से मदद देकर के हिम्मत तक भी बाबा ही लेकर के आता है, जैसे – आप कहीं मुसीबत में हैं कोई व्यक्ति आता है सामने। बाबा किस रूप में आयेगा? किसी व्यक्ति के रूप में ही आयेगा न?

आपको धन की आवश्यकता है आप ट्रेन में यात्रा कर रहे हैं, आपका पैसा गुम गया है, कोई व्यक्ति देखता है आपको परिस्थिति में और वो आकर के आपको मदद करता है, लो बहनजी, आपको ऑटो फेयर चाहिए या टिकट गुम गया, ये ले लो, टिकट दे देता है तो वो किसने मदद की? उस समय सोचते हैं ये आदमी बहुत अच्छा है, ये नहीं होता तो मैं घर नहीं पहुँचती। उस समय ये नहीं सोचते ये बाबा की मदद है, मैं बाबा की हूँ इसलिए मुझे बाबा ने इस व्यक्ति से मदद दिलाई। अगर बाबा नहीं होता तो ये मुझे मदद नहीं करता।

आप देखो दूसरों की पेटी कोई नहीं उठाता है ब्रह्माकुमारी अगर अकेली हो कोई भी आपके साथ बैठा हुआ भाई होगा न अज्ञानी वो आपको कहेगा बहेनजी आप उतर जाओ मैं आपकी पेटी उतार के देता हूँ। तो कौन मदद कर रहा है? तो ये बाबा की मदद है। कई बार हम लोग ऐसा समझते हैं कि वो व्यक्ति में अटक जाते हैं लेकिन बाबा को भूल जाते हैं।

(18) बच्चों का एक कदम, बाप का हजार कदम

हम हिम्मत का एक कदम कोई भी कार्य में उठाते हैं, जैसे आपने हिम्मत रखी कि चलो मैं आदर्श ब्रह्माकुमारी बनती हूँ, भल आपके अन्दर कोई भी प्रकार की योग्यता नहीं है, तो बाबा आपको हजार गुणा मदद देगा। तो एक कदम हमारा, हजार कदम बाबा की मदद के।

(19) कदम में पदम

पदम के दो अर्थ है – पदम कमलपुष्प को भी कहा जाता है और पदम संख्या को भी कहा जाता है। ……जितना बाबा की याद में रहते हैं और अपने जीवन में पवित्रता को धारण करके चलते हैं उतना हम पद्मापदम पति बन जायेंगे।

(20) अम्मा मरे तो भी हलुआ खाओ, बीबी मरे तो हलुआ खाओ, मियाँ मरे तो हलुआ खाओ

कौनसा हलुवा खाने का? सूजी का हलुवा या आटे का हलुवा? नहीं, इस हलवे की बात नहीं है। लेकिन मुरली जरूर सुनना, मुरली जरूर पढ़ना, दुःखी नहीं होना और ये ज्ञान का हलुवा जरूर खाना।

- **प्रसंग - एक भाई का जिसने घर में किसी की मृत्यु होने पर हलवा बनाके खाया**

एक बार हमारे पास जो एक भाई आता था तो उसकी माँ मर गई, तो उसने हलवा बनाके खाया। वो क्लास में हमको आके बोला – बहनजी, मेरी माँ मर गई। तो हमने पूछा – कब मरी? बोला – अभी सुबह। तो हमने कहा – तुम क्लास में कैसे आये? तो कहने लगा – बहनजी, पहले तो मैंने हलवा बनाके खा लिया, भोग लगाया बाबा को। फिर मैंने पूछा – डेड बॉडी उठायी कि नहीं? बोला – नहीं, वो उधर ही है, अभी ये क्लास भी करके फिर जाऊँगा। तो मैंने कहा – थोड़ा सा कॉमन सेन्स भी रखना चाहिए। बाबा बोलता है सब बैलेंस रखके चलना होता है। पहली बात तो तुमने हलवा बनाया वो घरवालों को मालुम जरूर पडेगा, खुशबुँ आती है, तो वो छिपता नहीं है। तो बोला – बाबा बोलता है न खाओ। तो ये हलवा थोड़ी खाने का है, ज्ञान का हलवा खाने का है।

तो इसलिए कई भाई-बहनें ऐसी बातों से डिससर्विस कर देते हैं। है साधारण सी बात। कौनसा हलवा खाना है? ज्ञान का हलवा।

ज्ञान का हलवा माना आपको जो ज्ञान मिला है, उस समय आप वो ज्ञान यूज़ करो, मुरली जो सुनी है उस मुरली से उस परिस्थिति में आप अपने आपको खुश रख सको। जैसे हलवा खाकर मनुष्य खुश हो जाता है, किसी को भी गरम-गरम हलवा मिलता है, तो उसको ताकत आ जाती है। तो परिस्थिति को फेस करने की ताकत हमें ज्ञान के हलवे से मिलती है। तो जो बाबा हमको ज्ञान सुनाता है उस समय हम घर मे मुरली पढ़े, जो पहले मुरलियाँ अध्ययन की हैं उनका मनन-चिन्तन करें, बाद में हम क्लास में आ सकते हैं जब क्रियाकर्म पूरा हो जाये। क्योंकि क्या है इससे डिससर्विस होती है।

हमारे घर में हम रहते हैं और वहाँ ही कोई व्यक्ति मरा है और हम क्लास में आके और बाद में उनको बोले हम तो पहले ज्ञान का हलवा खाके आयेंगे उसके बाद जो है ये काम करें। अरे उनको क्या पता ज्ञान का हलवा क्या होता है। वो सोचते होंगे उनकी बहनजी ने हलवा बनाके खिला दिया होगा कि तुम्हारी अम्मा मरी अच्छा हो गया।

(21) पाना था सो पा लिया, अब काम क्या बाकी रहा

पाना था सो पा लिया अब काम क्या बाकी रहा माना बाबा मिला तो सब कुछ मिल गया, सन्तुष्टि हो गयी। अब कोई काम नहीं है हमारा।

ब्रह्मा बाबा को भी जब निश्चय हो गया कि मुझे भगवान मिला है तो बाबा के भी दिल के बोल ये ही थे – पाना था सो पा लिया।

(22) काम विकार नर्क का द्वार, पवित्रता सुख का द्वार

काम विकार जो है वही मनुष्य को नर्क में ले जाता है और पवित्रता से हम कहाँ जाते है? सुख के द्वार में जाते हैं।

(23) शंकराचार्य वाच – नारी नर्क का द्वार है

शंकराचार्य क्या कहता है? नारी नर्क का द्वार है। शिवबाबा क्या कहता है? नारी स्वर्ग का द्वार है। वो कहते हैं नारी जो है वो ही नर्क की तरफ ले जाती है, मनुष्यों को विषय विकारों के अन्दर गिराती है लेकिन शिवबाबा कहते है कि नारी नर्क का द्वार नहीं है लेकिन नारी ही स्वर्ग का द्वार है। तो आप कौन है? स्वर्ग का द्वार दिखाने वाले है।

(24) राम राजा राम प्रजा राम साहुकार है, बसे नगरी जीये दाता धर्म का उपकार है

ये लोगों को जब हम समझाते हैं, लोग बोलते हैं राम के राज्य की महिमा कि राम राजा, मर्यादा पुरुषोत्तम बोलते हैं न राम राजा को, राम प्रजा माना प्रजा भी राम जैसी मर्यादा पुरुषोत्तम थी और राम साहुकार माना वहाँ के जो साहुकार लोग थे वो भी राम की तरह मर्यादा पुरुषोत्तम थे। बसे नगरी माना उनकी नगरी में जो रहते थे वो भी दाता थे। बसे नगरी जीये दाता धर्म का उपकार माना वहाँ पर अधर्म नहीं होता था राम के राज्य में, धर्म का उपकार था।

तो फिर राम की सीता चोरी होना ये अधर्म है या धर्म है? ये मर्यादा है या अमर्यादा है? तभी हम उनसे पूछ सकते हैं जब राम राज्य का गायन आप ये करते हैं तो या तो ये गायन गलत है या फिर वो बात गलत है। राम की सीता चोरी कैसी हो गई जबकि वहाँ प्रजा इतनी मर्यादा पुरुषोत्तम थी, राजा इतना मर्यादा पुरुषोत्तम, साहुकार मर्यादा पुरुषोत्तम, सभी में देने की भावना थी और इतना खुशी से उसके राज्य में सभी जीते थे धर्म का उपकार था, अधर्म होता ही नहीं था तो सीता चोरी होना –ये धर्म हैं या अधर्म है।

(25) रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाए।

दुनिया में कहावत है कि जैसे राम जी ने भी जो वचन दिया वो निभाया, तो बाबा के इस ईश्वरीय कुल की रीत क्या है? हमने बाबा से जो भी प्रतिज्ञाएँ की हैं, जो भी हमने वायदे किए है भले हमारा प्राण भी चला जाए परन्तु जो हमने वायदा किया है वो हमको निभाना है। प्राण जाए पर वचन न जाए।

(26) अन्धे की औलाद अन्धी, सजे की औलाद सजे

ये धृतराष्ट्र के लिए बोलते हैं कि दुर्योधन को पानी की जगह रेत दिखाई दे रही थी और रेत को पानी समझा था उसने। तब उसको द्रोपदी ने कहा था – अन्धे की औलाद अन्धे।

तो बाबा कहते हैं जिनको तीसरा नेत्र नहीं है वो कौन है? सब अन्धे की औलाद अन्धे, और हम तीसरे नेत्र वाले हैं। सजे हैं माना जिसको नेत्र है उसको बोलते हैं सजा। तो सजे की औलाद सजे।

(27) अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा

- **कहानी – चौपट राजा की**

चौपट राजा की स्टोरी मालुम है? एक अन्धेर नगरी का राजा था। उसका नाम चौपट राजा था माना उसको अक्ल नहीं थी। उसके राज्य में सब चीजएक ही रेट। बदाम खाओ तो भी टके सेर, सब्जी लेनी है तो भी टके सेर, घी लेना है, दुध है, मिठाई है, जो भी है सब टके सेर। तो उसकी प्रजा बडी तंग थी उससे कि ये क्या राजा है हमारा। तो उस राज्य में कहीं दूसरा एक गुरु और शिष्य आए देखने, ऐसे ही घूमने के लिए। उस शिष्य को लगा ये तो बड़ा अच्छा शहर है। खुब खा-पी के सेहत बनाता हूँ। कसरत करता था। उसका गुरु उसको बोला भी कि भई ये चौपट राजा है कुछ गडबड हुई तो तेरे को सजा भी दे सकता है। तो उसने कुछ केयर नहीं की। वो चला गया गुरु । शिष्य जो है वहाँ रोज घी, मिठाईयाँ वगैरह खा-खा करके और कसरत करके खुब अपनी सेहत बना लिया।

एक बार वहाँ चोरी हो गई तो राजा ने बोला चोर कौन हो सकता है। जो सबसे मोटा होगा, पहलवान होगा उसको पकड़ कर ले आओ। तो ये तो बहुत अच्छा तगड़ा था, कसरत कर रहा था खा-पी कर के। इसको पकड़ करके ले गये और बोला इसको फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दो। तो फाँसी पर चढ़ाने से पहले उसकी आशा पूछी जाती है। तो उसने बोला मेरे गुरु से मुझे मिला दो। तो उसके गुरु को दरबार में बुलाया गया।

गुरु ने कहा बेटा तेरे को पहले ही बोला था मैंने तु फँसेगा इधर बड़ा सेहत बनाने निकला था, तो पडी न यहाँ सजा अभी तेरे को। अभी क्या करना है? बोलो अभी जो मैं बोलता हूँ तु उसको सुनना और ऐसे हाँ-हाँ करना कुछ घबराना नहीं। ये तो है चौपट राजा। तो उसके कान में उसने कुछ बोला तो उसने कहा कि नहीं-नही-नहीं फाँसी पर मैं चढूँगा, तो उसका गुरु बोलता है कि नहीं मैं चढूँगा। तो बोला क्यों लड़ रहे हो दोनों जन? तो बोला स्वर्ग में एक ही सीट खाली है महाराजा की। ये जायेगा तो ये बनेगा। मैं गुरु हूँ न मेरे को जाना चाहिए। तो चौपट राजा बोला हटो मैं जाऊँगा। तो चौपट राजा मर गया। सब बहुत खुश हुए कि हमारा राज्य सुधर गया ये पहलवान के आने से। तो ये है उसकी कहानी ।

मतलब जो व्यक्ति बेअक्ल होता हैं उसकी प्रजा कैसी होगी? तो उसकी नगरी भी वैसी होगी। तो ऐसा बताते हैं — अन्धेर नगरी चौपट राजा। तो ये बेअक्लों के राज्य की ये हालत होती है। तो अगर हम भी समझदार नहीं होंगे तो हमारा भी वो ही नाम होगा चौपट राजा।

(28) जो करेगा सो पायेगा

व्यक्ति जो कुछ करता है उसका परिणाम उसे ही भुगतना पड़ता है। इसलिए कहा जाता है कि जो करेगा सो पायेगा

(29) हम सो, सो हम

हम सो क्या? अभी हम सो कौन है? हम सो ब्राह्मण सो देवता सो क्षत्रिय।

(30) डण्डा लेने गये बावर्ची बन बैठे

बाबा कहावत सुनाते हैं कि पहले के लोग जो थे उनके पास माचिस नहीं होती थी तो आग को जलाने के लिये पत्थर से ऐसा मार-मार कर के प्रयोग में लाते थे। तो जिसके घर में पहले चुल्हा जलता था तो वो बाजू वाले क्या करते थे

उससे घर से लेकर के जाते थे, ऊपली या लकडी, फिर वो अपना चुल्हा जलाते थे, तो एक दूसरे को देते थे। इसको बोलते हैं डण्डा ।

बाबा कहते हैं कि कई लोग ऐसे हैं जो ज्ञान सीधे तरीके से नहीं सुनते हैं, तो आप क्या करो? कथा सुनने के लिए चले जाओ। उनको लगे कि अरे ये तो हमारी कथा सुनने के लिए आये हैं। जैसे डण्डा लेने के लिए गए, हम कुछ लेने के लिए गए ऐसा दिखाना है लेकिन वहाँ जाकर उनके गुरु बन जाओ।

बावर्चि माना खाना बनाने वाले कुक। कुक को बोलते हैं बावर्ची, जो भोजन पकाता है। किचन के मालिक बन गये। तो इस तरह से जाओ कुछ लेने के लिए लेकिन देकर के आना है ईश्वरीय ज्ञान। इस तरह से जाओं शिष्य बनकर आओ गुरु बनकर।

डण्डा लेने गये बाबर्ची बन बैठे – इसका अर्थ है ज्ञान लेने के लिए ऐसा शो करना। डायरेक्टली जो नहीं सुनते हैं उनको इनडायरेक्टली इस तरह से सुनाना है। उनके पास जाओ जैसे किसी के फंक्शन में चले गए। उनको लगे हमारे फंक्शन में आए लेकिन हमारा उद्देश्य क्या हो? हमें सेवा करनी है, इनको भी ईश्वरीय सन्देश जरूर देना है।

(31) दे दान, तो छुटे माया का ग्रहण

जब सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण होता है तो गरीब लोग बोलते हैं दे दान तो छुटे ग्रहण। तो कपड़ा दान करते है लोग। बाबा क्या कहते हैं – कौनसा दान दो? पाँच विकारों का दान दो तो तुम्हारें ऊपर जो माया का ग्रहण है, जो भी ग्रहचारी है वो सब निकल जायेगी।

(32) जिनके माथे मामला उनका माथा खराब

बाबा हमेशा बोलते थे ब्रह्मा बाबा के सिर पर तो कितने मामले हैं, आपको क्या है, क्यों नहीं लगता आपका योग। अरे शिवबाबा को जब ब्रह्मा बाबा याद कर सकता है, निरन्तर उसके ऊपर इतने यज्ञ की कारोबार, इतने सब सेण्टर्स की शिकायत, एक-एक व्यक्ति का व्यक्तिगत समाचार आता था बाबा को तो कितना मामला उसके सिर पर, माथे पर है। उसका माथा तो खराब होगा। जिसको इतनी सबकी बातें. . .

आपको एक व्यक्ति कुछ सुनाता है, आपका माथा खराब हो जाता और जिसको सारे विश्व की आत्माएँ अपना-अपना समाचार लिखकर भेजें। बाबा के पास भी समाचार आते थे, ये भाग गया, उसने ये कर दिया, इसने डिससर्विस कर दी, ऐसा हुआ, फलाना सेन्टर बन्द हो गया या फलानी ब्रह्माकुमारी चली गयी वापिस घर या कोई रूठ गया, कोई जिज्ञासु क्लास मे नहीं आ रहा है, भाग गया। तो ये सब बातें सुन करके. . . माइण्ड तो उन बातों को सुनने में देना पडता है। तो फिर भी बाबा सुनते हुए भी शिवबाबा की याद में निरन्तर रह सकते थे।

तो इसलिए बाबा बोलता था कि ब्रह्मा बाबा के माथे पर तो इतना मामला है, फिर भी इसका माथा खराब नहीं होता तो तुम्हारा माथा खराब क्यों होता है भला? तो ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। तो इसलिए बाबा बोलता था जिनके माथे मामले उनका माथा खराब।

(33) सब संग तोड़, एक संग जोड़

कौन सा संग तोड़ना है? देह और देह के सम्बन्धों से। और किस एक से जोड़ना है? शिवबाबा से।

(34) खुशी जैसी खुराक नहीं और गम जैसा कोई मर्ज़ नहीं या चिन्ता जैसा कोई रोग नहीं

खुशी बहुत अच्छी डायट है हमारी। कितना भी आप मोटे होने के लिए या हेल्दी होने के लिए बदाम खाओ, घी खाओ उससे आपको . . अगर आपके अन्दर चिन्ता का रोग लगा है तो ऐसे ही रहेंगे आप। चेहरे पर ज़रा भी लाली

नहीं आयेगी लेकिन जो खुश रहता है तो उसके बारे में सब समझते हैं कि पता नहीं ये क्या खाता है, इसका चेहरा तो लाल रहता है, हेल्दी है।

तो खुशी जैसी डाइट नहीं, डाइट माना खुराक।

और, चिन्ता जैसा कोई रोग नहीं। चिन्ता का कोई इलाज डॉक्टरों के पास भी नहीं है। आपकी चिन्ता मिटा सकता है डॉक्टर, दर्द मिटा सकता है? नहीं। लेकिन चिन्ता को कौन मिटाता है? शिवबाबा, अगर कोई अपनी चिन्ता शिवबाबा को सुनाए तो. .। शिवबाबा को चिन्तामणि कहते हैं न? चिन्तामणि अर्थात् सब चिन्ताओं को हरने वाली मणि।

(35) जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा अन्न

कहा जाता है – जैसा अन्न वैसा मन। अगर भोजन पकाने वाले का मन ठीक नहीं, तो जैसा मन वैसा अन्न अर्थात् अगर आपने खाना गुस्से से पकाया तो खाने वाले को क्या होगा? गुस्सा आयेगा। तो इस प्रकार से वो मन से अन्न का सम्बन्ध है। फिर मन का दूसरों के मन पर असर होता है।

हम लोग तो बाहर का भोजन आदि खाते नहीं है लेकिन हमारे लिए भी ये कहावत सूटेबल है कि अगर हम जैसी वृत्तियों से पकायेंगे तो खाने वाले की वृत्ति भी ऐसी बनेगी। किसी को सुधारना है तो, बाबा बाँधेली माताओं को भी बोलता है कि बहुत योगयुक्त होकर भोजन पकाओ, आप जो वायब्रेशन देना चाहो अन्न के माध्यम से दे सकते हैं। अगर आपको कोई तंग करता है तो उसको शुभभावना किस रूप में दो? भोजन में उसको शुभभावना भेजो कि इस आत्मा का भी परिवर्तन हो जाए, ये भी प्रेमस्वरूप बन जाए। आप प्रेमस्वरूप होकर के भोजन पकायेंगे तो जो आपको बहुत डाँटता है न वो भी प्रेमस्वरूप हो जायेगा। ये दीदी तो बडी खराब है, कहाँ मेरी किस्मत खराब हो गई, कहाँ आ गई मैं – तो ऐसी भावना से भोजन पकायेंगे तो क्या होगा? वो दीदी और आपको डाँटेगी, क्या भोजन पकाया क्योंकि टेस्ट नहीं आयेगा न उसमें। तो जब आप बाबा को याद करके पकायेंगे और प्रेम के वायब्रेशन्स देंगे तो भोजन भी टेस्टी बनेगा और आपको शाबासी मिलेगी, प्यार मिलेगा।

(36) सेवा से मेवा मिलता है

मेवा माना फल। सेवा करेंगे तो अच्छा फल मिलेगा आपको।

(37) योगी शीतल काया वाले शीतल जिसके अंग, तपत बुझाए औरों की देकर अपना संग

योगियों की कर्मेन्द्रियों में शीतलता होती है, इतनी शीतलता होती है कि अगर उनके साथ में भी कोई बैठे या उनका संग करे वो औरों की काया को भी शीतल बना देते हैं अपना संग देकर। संग का रंग लगता है। तो अगर हमारी कर्मेन्द्रियाँ शीतल होगी तो हमारा संग करने वाली आत्माओं की भी कर्मेन्द्रियाँ शीतल होगी।

कई बार ऐसा भी आता है –

सन्त बड़े परमार्थी शीतल जिनके अंग, तपत बुझाये औरों की देकर अपना संग

(38) भारत की ये दुर्दशा देखकर आँखें होती हैं बन्द, देवों की इस पुण्य भुमि से अब आती है दुर्गन्ध

कौनसी दुर्गन्ध आती है? विकारों की। माना इतना सुन्दर भारत है कि हमारे भारत की महिमा में क्या कहते है? भारत सोने की चीड़ीया था। अब उसकी दुर्दशा देख करके क्या होता है? आँखें बन्द हो जाती है, इतना विकारी,

इतना पतित हो गये हैं। तो जैसे कोई चीजअच्छी नहीं लगती है तो क्या करते हैं हम? हम आँख बन्द कर देते है। तो दिल नहीं होता है इस दुनिया को देखने के लिए जिसमे कि इतनी विकारों की दुर्गन्ध है, वहाँ खड़े होने को भी दिल नहीं होती है जहाँ दुर्गन्ध होती है।

इसका मतलब हमको इस पुरानी दुनिया से वैराग्य आना चाहिए। इसको तो देखते हुए भी नहीं देखना है।

(39) शिवबाबा का भण्डारा भरपूर, खाने वालों के काल कंटक दूर

आप शिवबाबा के भण्डारे से किसी को खिलायेंगे तो कभी ये नहीं सोचना कि अरे ये कोई देते ही नहीं है इनको क्यों खिलाना भोग, भोग नहीं देना चाहिए। बाबा बोलता है बड़े दिल वाले बनो। शिवबाबा का भण्डारा कभी खाली नहीं होगा। आप जितना उसमें से खिलायेंगे उतना बाबा, जो खाने वाला हैं उसकी बुद्धि को भी बाबा प्रेरित करता है, वो जरूर बाबा के भण्डारे में डालेगा और खाने वाले के काल कण्टक दूर होंगे क्योंकि प्रसाद में लोग बहुत भावना रखते हैं, जो भगवान के यज्ञ का प्रसाद खाता है उसका संकट, उसका काल कण्टक दूर होता है।

काल माना क्या है? मृत्यु का भय या मृत्यु, उसके जो भी संकट है, जो भी उसके आगे विघ्न हैं वो समाप्त हो जाते हैं। तो हम भावना से खिलाए भी क्योंकि खिलाने वाले के लिए बाबा बोलता हैं – ये याद रखो आपका भण्डारा ये आपका नहीं है, शिवबाबा का है, तो उसका भण्डारा सदा भरपूर रहेगा।

(40) सब नशों में है नुक़सान सिवाय एक नारायणी नशे के

किसी को नशा हो मैं फलाना हुँ, मैं ये हुँ, मैं पढ़ा लिखा हुँ उन नशों में नुकसान है, कोई न कोई आपका नशा उतारने वाला आ जायेगा। और वो भी पीने का जो नशा लेते हैं उनका कितना नुक़सान होता है, उनकी. . जेब खाली कर देते हैं पी-पी कर के वो, अपना धन भी बरबाद करते हैं, घर भी बेच देते हैं। तो उन नशों में है नुक़सान चाहे वो पीने-खाने के नशे हो या किसी को अभिमान का नशा हो, कोई भी प्रकार के पद का नशा हो। लौकिक में जो अभिमान जिसको बोलते हैं वो सब नशों में नुकसान होता है लेकिन अगर आपको नारायणी नशा चढ़ गया कि मैं लक्ष्मी या नारायण बनने वाली हूँ इस नशे में कोई नुक़सान नही है।

(41) परवाह थी पारब्रह्म में रहनेवाले परमात्मा की, वो मिल गया तो फिर क्या चाहिए

जिसे पाना था सो पा लिया ये उससे मिलता-जुलता है। हमको किसकी परवाह थी? शिवबाबा की। वो मिल गया अभी हमको किसकी परवाह? किसी की नहीं।

(42) जप साहव तो सुख मिले

ये भी सिक्खों के ग्रंथ का है। दो उनके शास्त्र हैं जपुजी साहिव और सुखमणि। तो जप साहव को माना शिववावा को याद करेंगे तो सुख मिलेगा।

(43) एक ओंकार, सतनाम, कर्ता पुरुष, निर्भय, निर्वेर, अकाल मूरत, अयोनि सैभम

ये सिक्खों के ग्रंथ में से है। ये सब बाबा की महिमा है।

एक ओंकार अर्थात् वो एक है, निराकार है उसका नाम ही सत्य है। वो कर्ता पुरुष निर्भय है, उसको कोई भी मृत्यु का भय या किसी व्यक्ति का भय ही नहीं। निर्वेर अर्थात् उसका किसी से कोई वैर विरोध नहीं है। अकाल

अर्थात् उसको काल का भी भय नहीं है। अकाले मृत्यु से भी परे है और अयोनि अर्थात् किसी योनि में भी नहीं आता।

(44) तुम मात-पिता हम बालक तेरे तुमरी कृपा में सुख घनेरे

ये भी सिक्खों के ग्रंथ का है। गुरु ग्रंथ साहब से है ये। शिवबाबा को हम क्या कहते हैं? कि आप हमारे माता-पिता हो आपकी कृपा से हमको सुख घनेरे माना अपार सुख मिलता है। कौन से सुख मिलते हैं? सतयुगी दुनिया के हम मालिक बन जाते है।

(45) अन्त मति सो गति

अन्त में जैसी हमारी मति होगी अर्थात् जहाँ हमारी बुद्धि जायेगी वो ही गति होगी। कई बार बाबा क्या कहता है? बहुत काल का अभ्यास करो – एक बाबा दूसरा न कोई। लेकिन ज्यादातर लोगों को आप देखेंगे अन्त में उनकी मति कैसी रहती है? जिसकी बुद्धि खाने में रहती है, वो बोलता है मुझे अभी रसगुल्ला खिला दो बस तभी मैं प्राण छोडुँगा, मुझे ये पानी पूरी खिला दो नहीं तो मेरा प्राण नहीं निकलेगा। तो सचमुच प्राण नहीं निकलता। उनको वो ही चीजखिलायेंगे तो ही प्राण छोड़ेगा। कोई बोलता है मेरे पौत्रे को ले आओ सामने, मेरी बहु को ले आओ, मेरे बेटे को ले आओ या वो कागज ले आओ मेरे को साइन करना है, वो अलमारी की चाबी दिखा दो मेरे को। माना उसकी जहाँ बुद्धि होगी उसकी गति क्या होगी? जन्म वैसा ही होगा।

जैसे कई बार बाबा बताता है –

- **अन्त काल जो स्त्री को सिमरे, ऐसी चिन्ता में जो मरे वेश्या योनि वलि-वलि उतरे।**

  वेश्या योनि माना खराब जन्म उसका। वेश्या तो विषय विकारों में जाने वाली होती है।

- **अन्त काल जो धन सिमरे, ऐसी चिन्ता में जो मरे सर्प योनि वल-वल उतरे।**

  सर्प योनि क्यों बताते हैं? साँप क्या करता है? धन के ऊपर बैठ जाता है लेकिन न यूज करता, न लेने देता है। ऐसे कई लोग कंजूस होते हैं धन बहुत होता है अपने अण्डर रखते हैं न वो खाते न किसी को देते. .घर वालों को भी नहीं यूज करने देते। गाड़ी होगी गैरेंज में लेकिन पैदल जायेंगे, बस में जायेंगे। दिखाने के लिए गाड़ी है। बहुत है ऐसे, समझे। सब कुछ है लेकिन यूज़ कुछ नहीं करने का – उसको बोलते हैं सर्प योनि। मनुष्य योनि में ही वो सर्प योनि का अनुभव कर रहा है।

- **अन्तकाल जो बच्चे को सिमरे, ऐसी चिन्ता में जो मरे सुअर योनि में जाए।**

  सुअर योनि माना सुअर-सुअरनी के बच्चे कितने होते हैं? 12-13-14। तो ऐसे कई लोगों को बहुत बच्चे. .। आजकल तो सब एज्युकेटड लोग नहीं पैदा करते लेकिन पहले के लोग 12-13 बच्चे पैदा करते थे तो मतलब क्या? अन्त में जिधर बुद्धि जायेगी वैसा हमारा नेक्स्ट बर्थ से सम्बन्ध हैं, वैसी हमारी गति होगी।

- **ऐसे अन्त में और क्या कहता है बाबा?**

  अन्तकाल जो शिवबाबा को सिमरे, ऐसी चिन्ता में जो मरे वो नारायण और लक्ष्मी की योनि में आए।
  तो किसकी स्मृति में मरेंगे? बाबा-बाबा बोलेंगे या उस समय हाय माँ?

(46) मूत पलीती कपड धोय

पतित आत्माओं को बाबा आकर पावन बनाते हैं। ये गुरु नानक की गुरु बाणी के शब्द है। तो कई बार समझ में नहीं आता है। जैसे ज्ञान अंजन सद्‌गुरु दिया ये भी गुरु नानक की बाणी का शब्द है।

मूत पलीती कपड धोई अर्थात् जैसे मूत माना मूत्र से सभी को बहुत नफरत आती है, वो माँ ही धो सकती है अपने बच्चों के ऐसे गन्दे कपडे .. छोटे बच्चे. .।

बाबा भी क्या कहता है कि तुम कितने विषय विकारों में गन्दे हो गए थे, कितने पतित हो गये थे लेकिन बाबा घृणा नहीं करता है क्योंकि वो हमारा मात-पिता है। इसलिए वो आकर हम पतित आत्माओं को पावन बनाता है। तो कौन से कपडे धोय? आत्मा और शरीर दोनों को पावन बनाता है।

(47) सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह क्लेष मिटे सब तन का

शिवबाबा को जितना हम याद करेंगे उतना सुख मिलेगा और शारीरिक व्याधियाँ भी खत्म हो जायेंगी।

(48) राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार

जब विनाश होगा तो राम के बच्चे भी जायेंगे और रावण के तो ढ़ेर सारे है बहु परिवार किसका है? शिवबाबा का तो छोटा सा परिवार है और रावण का बहुत बड़ा, लेकिन सब चले जायेंगे। किसी का भी यहाँ रहने वाला नहीं है। तो फिर किधर दिल लगाना है? शिवबाबा से।

(49) चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला

आप चढ़ती कला अर्थात् जीवनमुक्ति में जाते हो तो आपके कारण सभी आत्माओं को मुक्ति का वर्सा तो मिलता है। बाबा हमारे लिए आता है इस दुनिया में तो हमारी चढ़ती कला के साथ माना हमें जीवनमुक्ति मिलती है और उन लोगों को मुक्ति मिल जाती है। हमारे कारण उनका भी भला, बाबा उनको भी मुक्ति का वर्सा दे देता है।

(50) बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहीं, चिन्ता ता की कीजिए अनहोनी जो होए

हम बोलते हैं न ये ड्रामा बना बनाया है। इसको कोई तैयार नहीं करता है। वर्ल्ड ड्रामा बना बनाया ड्रामा है इसको बनाया नहीं जाता है।

दुनिया में भी क्या बोलते हैं लोग – होनी को कोई नहीं टाल सकता है। जो ड्रामा में निश्चिंत है वो ही होता है। जो फिल्म आप देखते हो तो जो रिकार्डेड है वो ही दिखाई देता है। पिक्चर देखने जाते हैं तो जो उसमें सीन आयेगा वो हमको देखना ही है या उसको चेंज कर सकते हैं वहाँ बैठे-बैठे आप? नहीं। इसी प्रकार से ये सृष्टि का जो ड्रामा है इसको भी कोई चेंज नहीं कर सकता।

बनी बनाई बन रही माना ये ड्रामा बना बनाया है अब कुछ बननी नाहीं, अब कुछ बनने वाला नहीं है, नया कुछ भी नहीं होने वाला है, जो नूँध है ड्रामा में वही होगा। अगर कल हमारी डेथ लिखी हुई है तो वैसा होगा ही उसको कोई नहीं टाल सकता है। तो फिर बाबा बोलता है न नथिंग न्यु ।

चिन्ता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय। अनहोनी माना जो नहीं होने वाली बात है वो तो होगी नहीं। जो होने का है वो ही ड्रामा में होगा, तो चिन्ता किस बात की। तो चिन्ता नहीं करना, निश्चिन्त रहो। ड्रामा के ज्ञान को जो समझ लेता है कि ये ड्रामा बना बनाया है, इसको कोई बना भी नहीं सकता है, इसको कोई चेंज भी नहीं कर सकता है। इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं, निश्चिन्त रहो क्योंकि अनहोनी होती नहीं। बाबा बोलता है – नथिंग न्यु माना जो भी है वो नया कुछ नहीं है, जो कल्प पहले हुआ है वो ही होने वाला है।

(51) राम सिमर प्रभात मोरे मन

भक्ति में ऐसे गाते हैं न राम सिमर प्रभात मोरे मन।
तो शिवबाबा को कब याद करना है? अमृतवेले उठकर के।

(52) जिन सोया तिन खोया, जिन जागा तिन पाया

भक्ति मार्ग में बोलते हैं –

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

तो दुनिया में तो अज्ञान नींद में जो सोता है वो सब कुछ खोता है लेकिन यहाँ अमृतवेले जो सोता है वो सब कुछ खोता है, जो जागता है वो सर्व प्राप्तियों का अधिकारी बन जाता है।

(53) झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार

ऐसा भक्ति मार्ग में बोलते हैं। माया भी झूठी, काया भी झूठी। काया अर्थात् ये पाँच तत्वों का शरीर भी सब विनाशी है। जो विनाशी चीज़ है वो सब झूठी है। सत्य क्या है? आत्मा और परमात्मा।

(54) अमृत छोड विष काहे को खाए

अमृत है ज्ञान और विष है विषय विकार। ज्ञान को छोड़ विषय विकार में नहीं जाना है।

(55) चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस और गीरे तो चकनाचूर

इस ज्ञान मार्ग में हमारी चढ़ती कला है। अब बाबा की श्रीमत अनुसार हम चलेंगे तो चढ़ती कला में कहाँ जायेंगे? वैकुण्ठ। वैकुण्ठ रस अर्थात् सतयुगी दुनिया की बादशाही प्राप्त कर सकते हैं अगर चलते रहें, चढ़ते रहें ज्ञान मार्ग में, सही तरीके से बाबा की श्रीमत प्रमाण चलते रहे तो। लेकिन अगर मनमत, परमत पर चलें और फिर इस ईश्वरीय मार्ग से गिरे तो चकना चूर।

बाबा कई बार बोलते हैं – दुविधा में दोनों गये ना माया मिली, ना राम। क्योंकि दुनिया वाले भी आपको ताने देंगे – मिल गया राम। लक्ष्मी नारायण बनने गये थे आ गये वापिस, लौट के बुद्धू घर को आये। तो न दुनिया में आपको सुख मिलेगा माना चकनाचूर हो गये।

जैसे पाँच मंज़िल से कोई गिरता है तो उसकी हड्डी पसली बचेगी क्या? नहीं। इसी प्रकार ये पाँच विकारों को जीत करके, इतना हाइएस्ट स्टेज तक पहुँच करके, कहाँ सतयुग की बादशाही लेने के अधिकारी बन रहे थे और गिरे तो चकनाचूर। ना इस दुनिया में उनका मान, ना उस दुनिया में कोई पद मिलेगा बल्कि और ही पद भ्रष्ट हो जायेगा।

(56) आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सद्गुरु मिला दलाल

दलाल कौन है? बहु काल से कौन दूर रहे? हम आत्माएँ। कौनसी आत्माएँ? जो सूर्यवंशी आत्माएँ हैं।
सबसे पहले परमधाम में बाबा को कौन छोडकर के आते हैं? हम लोग, हम सतयुगी आत्माएँ।
तो आत्मा परमात्मा से बहुकाल अलग रही माना 5000 वर्ष से हम बहुत दूर रहे।

और सुन्दर मेला कब हुआ? जब ब्रह्मा बाबा के तन में शिवबाबा आता है। तो सद्‌गुरु मिला दलाल के रूप में, ब्रोकर है न ब्रह्मा बाबा? तो इसलिए कहा कि सुन्दर मेला कर दिया जब सद्‌गुरु मिला दलाल के रूप में।

कोई का भी डायरेक्ट कभी भी सम्बन्ध नहीं होता है। किसी व्यापारी से भी सम्बध करना होता है तो बीच में ब्रोकर्स होते हैं, दलाली करते हैं, तो ब्रह्मा बाबा दलाल है।

बाबा बोलता है – मुझे दलाली के रूप में क्या मिलता है? नम्बर वन पद। क्योंकि मैं तुम सबकी सगाई शिवबाबा से कराता हूँ। सबका मिलन शिवबाबा से कराता है तो उसको फिर नम्बर वन स्टेट्स मिलता है।

(57) सच्चे दिल पर साहेब राज़ी

जितना हमारे अन्दर सच्चाई होगी शिवबाबा हमारे ऊपर राजी रहेगा और जिस पर शिवबाबा राजी हो उसकी कोई मनोकामना अधुरी नहीं रहेगी। सिर्फ एक सच्चाई-सफाई सीख लेंगे तो भी बहुत आगे बढ़ जायेंगे। इस पर भी एक छोटी सी कहानी सुनाते हैं कि सच्चाई का एक गुण मनुष्य को कहाँ-से-कहाँ ले जाता है।

- **कहानी – एक डाकु की जो सत्संग सुनकर सच बोलने की शिक्षा को अमल में लाता है**

एक बार जो एक बहुत बड़ा डाकु था उसके ऊपर बहुत बड़ा इनाम रखा हुआ था सरकार ने कि इसको कोई जिन्दा या मरा पकड कर ले आए तो इनाम दिया जायेगा। तो वो इतना होशियार था किसी की पकड़ में नहीं आता था। रोज अपना स्थान चेंज करता था। अब उसको डाका डाल-डाल कर के उस स्थान पर तो दुबारा जाना नहीं है जहाँ वो पहले गया है क्योंकि वहाँ तो उसकी इंक्वायरी चलती है।

तो अब उसने देखा कि जंगल में एक जगह मन्दिर है, सब व्यापारी लोग वहाँ जाते हैं। तो व्यापारी लोग तो दुकानें बन्द करके कैश साथ में रख के जायेंगे। बहुत एकान्त रास्ते पर है। तो उसने सोचा कथा सुनने के बहाने जाता हूँ, उसको क्या पता चलेगा मैं डाकु हूँ। कथा भी सुन लूँगा और ऐसे ही उसके साथ जाकर के रास्ते में उनको लूट लूँगा।

वो कथा सुनने के लिए गया तो वो पण्डितजी बहुत अच्छी कथा सुना रहे थे कि मनुष्य को कभी भी जीवन में झूठ नहीं बोलना चाहिए, सच बोलना चाहिए और पाप कर्म नहीं करने चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए। ऐसा वैसा सब बहुत अच्छी शिक्षाएँ दे रहा था वो।

उसका मन थोडा. .मतलब सत्संग से तो हर एक के ऊपर अच्छा रंग लगता है, तो वो दो-तीन घण्टा बैठा रहा, बैठा रहा। तो उसको थोडा अच्छा लगा और वो भूल गया डाका डालना और बैठा रहा जबकि सब चल गये।

पूजारी को तो डर लगा। थोड़ी शक्ल तो ऐसी होती है, जैसा कर्म वैसी शक्ल। तो सोचने लगा कि मैं अकेला और ये आदमी तो अजनबी है, नया सा है, तो डर गया अँधेरा है। इस पर वह बोला – भाई जाओ, क्या हुआ, तुम क्यों बैठ गए। तो उसने बोला मुझे आपसे कुछ बात करनी है। तो बोला क्या बात करनी है। तो बोला आपने जो बताई वो मेरे लिए तो बडी मुश्किल है कि चोरी ना करूँ, क्योंकि मेरा तो वो ही पेशा है, वो ही बिजनस है। मेरे बच्चों को क्या खिलाऊँगा।

आप ये बताओ मैं कौनसी एक बात धारण करूँ जिससे मेरा उद्धार हो जाये क्योंकि उसने बोला सत्संग की एक बात भी धारण करेंगे तो आपका उद्धार हो जाएगा। बोलते हैं कि भक्ति के दो अक्षर या दो शब्दों से भी मनुष्य को गति-सद्‌गति मिल जाती है, तो मैं क्या करूँ। तो उसने बोला तुम सिर्फ सच बोलो झूठ बोलना छोड दो तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। तो चोरी तो मैं नहीं छोडूँगा इतना याद रखो। बोला – नहीं छोडो लेकिन सच बोलो सिर्फ। बोला – ठीक है आज से मैं सच बोलूँगा।

वो गया एक राजा के महल में। तो एण्टर हुआ तो वहाँ पर जो द्वारपाल थे तो उसने पूछा कौन है? जैसे हम भी कई बार बोलते है, कोई दरवाजा खटखटाता है तो घर के लोग पूछते हैं कौन है? तो हम जोक से, मज़ाक से क्या बोलते

हैं कि चोर है। तो उसने बोला मैं डाकु हूँ। तो उसने सोचा अन्दर का ही कर्मचारी होगा, ऐसे ही इसको इरीटेट हो गया है। इसलिए द्वारपाल ने कहा – अच्छा, जा भई, जा अन्दर। मतलब छोड़ दिया उसको। वो तो बडा खुश हो गया कि सच बोलने से तो इतना अच्छी तरह से.., मेरे को आज तक एण्टरी नहीं मिली।

अब अन्दर तो सब खुला रहता है, तो उसने राजा के दरबार में अन्दर जाकर के उसकी जो भी ज्वेलरी जहाँ रखी होती है न उसका मुकुट वगैरह पूरे ज्वेलरी, अच्छे हीरे जवाहरातों के ज्वेलर्स उसने एक पेटी में रख लिए और उसी तरफ से निकला जिधर से उसने एण्टरी की। सोचा ये तो पागल है इधर से ही निकलना ठीक है। तो वो सिर पर पेटी रखा और चला।

द्वारपाल बोला – क्या है भाई, कौन हो, क्या ले जा रहे हो? तो वो बोला कि कहा न डाकु हूँ, हीरे-जवाहरात ले जा रहा हूँ। तो द्वारपाल ने सोचा ये थोडा क्रेक माइण्ड का है। इसलिए उसे कहा – जा, बाबा जा। ये तो हमेशा ऐसी बात करता है, ठीक से बोलता भी नहीं है। मैं पूछ रहा हूँ तो इतना क्या गुस्सा आता है। डाकु सोचने लगा कि अच्छा बुद्धु मिला मुझे भी, सच बोलने का आज तो बड़ा फायदा हुआ, इतना खुश हो गया वो।

तो सुबह जब राजा उठा उसने सभी द्वार पालों को बुलाया और पूछा कौन सोया था रात को, कौन पहरे पर नहीं था, कैसे हुआ ये सब? वजा ने पूछा कि क्या ये सच है कि इतना सब माल गया। तो द्वारपाल ने कहा – हाँ। तो राजा बोला कि इसका मतलब तुमको मालूम है। तो वह द्वारापाल बोला मुझे तो पता नहीं, मैंने जीवन में ऐसा सच्चा डाकु नहीं देखा जो बोल के आया कि मैं डाकु हुँ और बोल के गया। पर मैंने सोचा कि अपना ही कर्मचारी होगा इसलिए मैंने छोड़ दिया। तो आप अभी एलान करो मेरे को लगता है वो व्यक्ति इतना सच्चा है वो जरूर आयेगा।

तो राजा ने एलान कराया और वो आ गया। राजा ने बोला तुम रात को आये थे। बोला – हाँ। तुम चोरी करके ले गये थे? बोला – हाँ। पूछा –क्यो? कहा – क्योंकि ये मेरा बिजनस है। तो राजा बहुत खुश हो गया, बोला मेरे दरबार में भी ऐसे सच्चे मंत्री नहीं है, तो तुम आज से मेरे कोष मंत्री बन जाओ, सारा हीरे जवाहरात तुम ही सम्भालो। तो वो तो मालामाल हो गया। राजा ने उसको रख लिया।

बाबा भी बोलता है सच्चे दिल पर साहेब राजी। इतना प्राप्ति होती है, एक गुण भी अगर हम धारण कर लेंगे तो हम मालामाल हो जायेंगे। इसलिए कुछ भी हो जाए, गला भी कट जाए तो भी झूठ नहीं बोलना। सफाई से बहुत आगे बढ़ जाते हैं।

(58) दिल साफ तो मुराद हासिल

जितनी हमारी साफ दिल होगी तो हमारी सर्व मनोकामनाएँ बाबा पूर्ण कर देगा।

(59) आप मुए मर गयी दुनिया

जैसे व्यक्ति मरता है तो उसके लिए तो सारा संसार मरा हुआ है। तो बाबा बोलता है आप जीते जी मर गए माना आपके लिए ये दुनिया खत्म, कोई सम्बन्ध नहीं।

(60) बड़ा होना, बड़ा कहलाना, बड़ा दुःख पाना

जितना बड़े बनेंगे उतना क्या होता है? संसार में ये कहावत है – जितना बड़ा बनेंगे उतना दुःख खाना पड़ेगाा।
आप देखो प्राइम मिनिस्टटर और प्रेसीडेण्ट के कैसे-कैसे कार्टुन आते हैं। देखा है न न्युज पेपर में? कैसी उनकी हँसी मजाक होती है। कोई उनको स्टेटस वाइस ऐसी इज्जत थोडी देते हैं। लोग सामने गुलदस्ता देते हैं, पीछे से जुते दिखाते हैं, है न? तो माना जितना बड़ा बनते हैं उतना सहन करना पड़ता है, उतना ग्लानि सहन करनी पड़ती है, इंसल्ट होती है।

हमारे ऊपर लोग बातें बनायेंगे कि बड़े तो बन गये लेकिन करते क्या हैं। अब वो सीट पर हम आयेंगे तो हम भी कुछ कर नहीं सकते हैं। आज हम सोचते हैं कि ये प्राइम मिनीस्टर क्या है? पागल है। अगर आप वहाँ बैठेंगे आपको भी पागल बनाकर रखेंगे लोग।

तो इसलिए बड़ा बनने का शौक सभी को होता है, लेकिन वो स्टेज पर आने के बाद सोचते हैं कि अरे हम छोटे ही ठीक थे। तो बड़ा कहलाना, बड़ा दुःख पाना ।

कहानी – बड़े की

अपनी दादी कई बार बड़े की कहानी सुनाती है। दही बड़ा खाते है न? तो दादी बोलती है – एक बार बड़े को पूछा गया, हे बड़ा, तू बड़ा कैसे बना? उसका नाम तो बड़ा है न? तो बोला – पहले तो मैं खेत में उगा, वहाँ मैं धूप, बरसात, आँधी, तुफान सब सहन करके खड़ा रहा खेतों में। फिर मेरे को बैल के पाँव के नीचे यानि वो हल डाल करके उस दाल को निकालते हैं फिर उसके बाद जो हैं उसका छिलका निकालने के लिए मशीन में डाला मेरे को। उसके बाद लोगों ने मेरे को खाने के लिए क्या किया? पहले पानी में दाल को डुबाके रखा फिर ग्राइण्ड किया, उसमें मिर्ची, मसाला, नमक अपने टेस्ट के अनुसार डाला और गरम-गरम तेल में मेरे को डाला और गरम-गरम तेल से निकाल कर मुझे ठंढे पानी में डाला और खाके लोग मजा लेते हैं। पर मैं बड़ा कैसे बड़ा बना, मुझे कितनी परिस्थितियाँ सहन करनी पड़ी।

तो बड़े लोग जो भी बड़े बनते हैं उनकी आप जीवन कहानी पढ़ो कोई सहज बड़ा नहीं बना होगा, उसने कितनी परिस्थितियों को क्रास किया।

तो हमको क्या बनना है? लक्ष्मी नारायण बनना है न? तो याद रखो उतना सहन भी करना पड़ेगा। बड़ा कहावना, बड़ा दुःख पावना।

कई लोग बोलते – बाबा मेरी तो इतनी परीक्षा है। तो बाबा बोलता है – तो तुम लक्ष्य छोड़ दो लक्ष्मी नारायण बनने का, परीक्षा कम हो जायेगी। अभी आपको आई.ए.एस आफिसर बनना है और परीक्षा एबीसीडी की चाहेंगे तो कैसा होगा?

तो हम जितना ऊँचा लक्ष्य अपनी बुद्धि में रखेंगे, जैसे आप एक दिन सुबह योग में बोल दो – बाबा मेरे को अष्ट रत्नों में आना है। आप रोज़ बोलो, बाबा तो मान लेता है, अमृतवेले जो भी बोलो। और फिर माया को आदेश दे देता है – माया बच्ची ज़रा इसको आठ रत्नों मे आने का शौक है, तो थोड़ा इसको देख लेना। वो बाबा की लाड़ली बेटी है, हमारी मौसी है। तो इसलिए जैसा हम लक्ष्य लेते हैं वैसा हमारा एक्जाम आयेगा, ये याद रखो। जितना बड़ा बनना है उतना बड़ा एक्जाम भी देना पड़ेगा।

तो परीक्षा हमेशा आगे बढ़ाती है या पीछे ले जाती है? तो इसलिए परिक्षाओं से कोई डरेंगे तो नहीं न? अभी बहुत. . क्योंकि आप फिल्ड में जायेंगे, फिल्ड में जाना माना परिक्षाओं की बरसात शुरू, तो घबराना नहीं। ये सोचो कि विजय तो हमारी ही होनी है और मुझे तो ऊँच पद पाना है। इसलिए मुझे तो बड़ा ही बनना है, मुझे छोटा तो बनना नहीं है।

लेकिन किसमें बड़ा बनना है? माना ऐसा नहीं मैं टीचर इंचार्ज बड़ी बन जाऊँ, लेकिन पद में मुझे बड़ा बनना है। यहाँ भले मुझे कोई छोटा समझके चलाए, यहाँ तो छोटा बनने में बहुत आराम है। है न? टेंशन फ्री। बड़े लोगों के ऊपर ये सब मामला। जो भी जिज्ञासु गाली देंगे बड़ी बहनजी को देंगे, छोटी को नहीं देंगे। छोटी भी गलती करेंगी तो भी बोलेंगे – क्या बहनजी, कैसी टीचर हैं, कुछ ट्रेनिंग नहीं देते, है न? फिर भी बड़ो को ही बोलते हैं। तो इसलिए कहा गया है – बड़ा होना, बड़ा कहलाना, बड़ा दुःख पाना।

(61) बड़े तो बड़े, छोटे तो सुभान अल्लाह

शिवबाबा को कितना प्यार आता है छोटों के ऊपर कि बडे तो बडे ही है वो तो सभी की नजरों में ही है, पर छोटे जो है न वो किसकी नजरों में है? शिवबाबा की। बाबा बोलता है – ये मेरे समान बच्चे हैं। तो छोटा बनना भी बहुत बडा भाग्य है।

(62) मायाजीते जगतजीत

माया को जीता माना सारे विश्व के हम मालिक बनते हैं, जगत को जीता। माया से हारे हार है। हमारी हार और जीत का खेल किस पर आधार है? माया को जीता माना हमारी जीत और माया से हार खायी माना हार है।

(63) मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार

भगवान को मनुष्य को देवता बनाने में एक सेकण्ड भी नहीं लगता है।

(64) एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी की भी पुनः आधी घड़ी

शिवबाबा को याद जरूर करो। बिल्कुल टाइम नहीं मिलता है ऐसा तो कोई नहीं होगा न। बाबा बोलता है एक घड़ी, आधी घड़ी,आधी की भी आधी घड़ी मुझे याद जरूर करो।

(65) किसी की दबी रहेगी धूल में, किसी की राजा खाए, किसी की चोर लूट जाए, किसी की आग जलाए, सफल होए साए जो काम धणी के लगाए

कई लोग बहुत बैंक बेलेंस रखते हैं छुपा-छुपा करके, बाबा की सेवा में नहीं लगाते। तो लास्ट में क्या होगा? बाबा कहता है कोई अण्डरग्राउण्ड रखते हैं तो वो दबी रहेगी धूल में। जब भूकम्प आयेंगे तो वो नीचे चला जायेगा सब। किसी की गर्वमेण्ट लूटेगी, रेडस पडते है न। तो राजा तो अभी नहीं है, अभी तो गवर्मेण्ट ही है।

किसी की राजा खाए, किसी की चोर लूट करके ले जायेंगे, किसी की विनाश की अग्नि में सब कुछ जल जाएगा लेकिन जो हमने ईश्वरीय सेवा में सफल कर दिया वो हमारे साथ चलेगा।

(66) भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा

यह आत्मा के लिए गाया जाता है कि आत्मा रूपी सितारा भृकुटी के बीच चमकता है।

(67) कोटों में कोई, कोई में भी कोई

करोडों में से कोई, कोई में भी कोई है जो बाबा को यथार्थ रीति से जानते हैं। पहचानने वाले बहुत है। लेकिन बाबा को जो है, जैसा है उस यथार्थ रीति से जानने वाले बच्चे बहुत कम है।

(68) धन दिए धन न खुटे, देते-देते हित सवायो

ये ज्ञान धन जितना बाँटो खुटता नहीं है और ही बढ़ता जायेगा।

(69) गंगा का तट हो, मुख में गंगा का जल हो, तब प्राण तन से निकलें, तो अहो सौभाग्य

ऐसा भक्ति में सोचते हैं कई लोग। बाबा बोलते हैं बंगाल में क्या करते हैं? जब कोई मरने वाला होता है तो उसको गंगा के तट पर ले जाते हैं पहले ही। मरने से पहले ही उसको डुबा-डुबा के मार देते हैं। हरि बोल, हरि बोल - वो बिचारा हरि क्या बोलता होगा, मरा मरा ही बोलता होगा राम-राम के बजाय, है न? तो बाबा क्या कहते हैं – गंगा का तट अर्थात् हम सब कहाँ रहते हैं ? सेण्टर माना क्या है? गंगा का तट है। तो हम बाबा के घर पर हो, मुख से ज्ञान सुनाते हो, कानों में ज्ञान अमृत की धारा पडती हो, शिवबाबा का ज्ञान सुनते-सुनते बाबा की याद में हम शरीर छोडें तो क्या होगा? अन्त मति सो गति। अहो सौभाग्य।

(70) सच तो बिठो नच

जिसके अन्दर सच होगा वो हमेशा खुशी में नाचता रहेगा। सच्चाई नहीं होगी, झूठ बोलेगा तो वो कभी खुश रहेगा? नहीं। उसके चेहरे पर खुशी नहीं होगी, उसकी आन्तरिक स्थिति भी खुशी की नहीं होगी।

(71) वाट वेन्दे बाम्भण फातो

ये सिन्धी में बोलते हैं। रास्ते चलते ब्राह्मण फँस गया। ब्राह्मण कौन? ब्रह्मा बाबा। ब्रह्मा बाबा बताते हैं मैं तो जा रहा था . .अपना जीवनयापन कर रहा था, जैसे दुनिया में चलते हैं कार्य व्यवहार होता है, मेरी गृहस्थी सम्भाले हुआ था, सब अच्छा कारोबार था रास्ते चलते मुझे शिवबाबा ने पकड़ लिया।

(72) चूहे लधी हैड गरी चये माँ ब पंसारी

चूहे को हल्दी की गाँठ मिली तो क्या समझा? मैं भी पंसारी बन गया। मैं बहुत बडा मर्चेण्ट हूँ चूहे को हल्दी की गाँठ मिल जाती हैं तो उसको बहुत नशा चढ़ जाता है। तो माना अल्पज्ञान होने से कई लोग क्या सोचते हैं कि मैं बहुत बड़ी विद्वान बन गई, बहुत बडी टीचर, बहुत बडी स्पीकर बन गई।

चूहे को मिली हल्दी की गाँठ तो पंसारी बन बैठा। सिन्धी में है – चूहे लधी हैड गरी चये माँ ब पंसारी। आजकल इतना पूरा मुरली में आता नहीं है। आजकल तो हिन्दी में ही लिखते हैं चूहे लधी हैड गरी इतना ही लिखते हैं।

चूहे को हल्दी की गाँठ मिली तो समझा मैं पंसारी बन गया, ऐसी हिन्दी में भी कहावत है।

(73) धरत पड़ीये धरम न छोड़ीये

सिन्धी में बोलते हैं – धरत पड़ीये धरम न छोड़ीये । जैसे हिन्दी में कहावत है - प्राण जाए पर वचन न जाए इसी प्रकार से ये है । कुछ भी हो लेकिन हम अपना धर्म नहीं छोड़े, अपना वचन जरूर निभाये। जो भी बाबा से वायदा किया है वो हमको निभाना है।

(74) मोचरा खाना, मानी लेना

ये सिन्धी वर्ड है। मोचरा माना जूता। किसी को जूता मारकर के फिर रोटी खिलाओ उसको कैसा लगेगा? अपमान करके किसी को कुछ भी खाने के लिए दिया जाता है तो अच्छा लगता है?

तो इसी प्रकार बाबा बोलते है कि सजा खाकर के अगर सतयुग में गये तो ऐसा ही है जैसे मोचरा खाकर मानी खाना। मानी माना रोटी और मोचरा माना जूता । तो जूता मारकर के कोई रोटी खिलाए तो आपको अच्छा नहीं लगता। तो इसी प्रकार से हम सम्मान से, पास विद ऑनर होकर के जाए। अगर कोई भी गलती रह गयी तो क्या होगा? फिर

धर्मराजपूरी में जायेंगे। सजा खाना माना मोचरा खाना, जूता खाना और मानी माना फिर छोटा-मोटा सा पद मिल जायेगा, तो वो क्या काम का। जबकि हम बाबा के बने तो क्यों न बाबा से पूरा वर्सा अधिकार के रूप में प्राप्त करें।

(75) खुशियों में खगियाँ मारना

बोलता है न बाबा की ब्रह्मा बाबा खगियाँ मारता था। आपने देखा होगा छोटे बच्चे न जब बहुत खुश होते हैं तो ऐसा-ऐसा करके जम्प करते हैं, नाचते हैं मुझे ये मिल गया, मुझे ये मिल गया। ब्रह्मा बाबा को भी जब खुशी होती थी बाबा अपने कमरे में नाचता था मैं कृष्ण बनूँगा, मैं कृष्ण बनूँगा। ऐसे खुश होना चाहिए। लेकिन अन्दर ऐसे नहीं कि आप लोग कहीं यहाँ ही खगियाँ मारना शुरू कर दें। बाबा बोलता है खुशी में झुमना चाहिए, खुशी में आपको नाचना चाहिए ।

(76) मिरूँआ मौत मलुका शिकार

मिरूँ माना क्या होता है? मिरूँ माना जानवर, मलुक माना शिकारी और मलुक फरिश्ते को भी बोलते हैं।

बाबा बोलते है जब विनाश काल होगा तो दुनिया कैसे मरेगी? जैसे जानवरों की मृत्यु। जब शिकारी शिकार करता है तो वो जानवर को मारता है, तो जानवर की मौत और उसकी खुशी कि मैंने शिकार कर लिया। तो इसी प्रकर दुनिया त्राहि-त्राहि करेगी कि विनाश हो गया, हमें मौत आ गई लेकिन हमको खुशी होगी। हमको क्या खुशी होगी? मरेंगे तो हम भी, लेकिन हम फरिश्तों की तरह जायेंगे। हमें तो अभी नयी दुनिया में जाना है इस बात की खुशी होगी। उन लोगों को मृत्यु का डर होगा और हमको नयी दुनिया की खुशी।

तो हम फरिश्तों की तरह खुशी में रहेंगे और दुनिया जानवरों की तरह मृत्यु को प्राप्त होंगी। तो इसको कहा जाता है मिरूँआ मौत मलुका शिकार।

(77) अलिफ को अल्लाह मिला, बे को मिली बादशाही, आई तार अलिफ की, हुआ रेल का राही

बाबा कहता था अलिफ मैं हुँ मुझे तो भगवान मिल गया और बे माना मेरे जो पार्टनरस है न इनको .. पार्टनरशिप. .। बाबा तो निकल गया था कि मुझे कुछ नहीं चाहिए आपको जो भी देना लेना हो वकील को बिठा करके आप जो उचित समझो मुझे दे दो, बाकी सब तुम्हारा है। वो पार्टर्न्स उसको तो झुठी बादशाही मिली वो सोचने लगे कि हम मालिक बन गए। बाबा तो निकल गया इसमें से अब हम मालिक हैं जितना दें हमारी मर्ज़ी। तो बे को मिली झुठी बादशाही वो उसमें खुश हो गए और बाबा के तब एक लौकिक काका थे वो बहुत सीरीयस हो गये थे। उनकी टेलिग्रॉम आयी थी तो बाबा वहीं से ट्रेन में बैठकर चले गये। तो इस तरह की उन्होंने तार दी घर में कि ये अलिफ को अल्लाह मिला बे को माना मेरे पार्टनरस को झुठी बादशाही मिल गई और मेरे को तार आयी, तो मैं रेल का राही बन गया।

(78) कख का चोर सो लख का चोर

छोटी सी चीजकी भी चोरी की या लाखों रूपए की चोरी की, चोरी तो चोरी होती है, नाम तो चोर ही हो गया ना। तो बाबा के यज्ञ का इतना सा तिनका, कख माना जिसकी कोई वैल्यु नहीं है जैसे घास का तिनका उतना भी उठाया, कोई चीजबिना पूछे उठायी वो भी चोरी है।

किसी का पेन ले लिया, बाद में काम निकालने के बाद रख भी दिया उसके बाजु में परन्तु आपका दिल तो खाता है न मैंने गलत किया है। बाबा हमेशा बोलते थे जो भी काम करते समय जो बात दिल में खटकती है, दिल

खाता है उसमें आपका खाता बनता है विकर्मो का। कुछ भी हो. अगर हम किसी की बात कर रहे हैं और अन्दर दिल खा रहा है किसी की ग्लानि कर रहे हैं दिल खाता है न अन्दर? तो हमारा खाता बन रहा है।

(79) जो ओटे सो अर्जुन

जो पहले करे वो अर्जुन। अर्जुन माना जो अर्जन करता है, जो पहले बात को मान लेता है। जो करे वो ही अर्जुन है। भगवान ने अर्जुन को अपने सामने रखा उदाहरण। इस प्रकार मैं अर्जुन बनूँ, सबसे पहले मैं करूँ। ऐसे नहीं पहले ये करे फिर मैं करूँ।

अक्सर हम लोग क्या करते हैं? कुछ प्राप्ति की बात होती है तो पहले मैं और जब कुछ करने की बात होती है तो क्या कहते हैं? पहले आप कर लो। भाषण पहले आप कर लो दीदी फिर मैं कर लूँगी, पर ऐसा नहीं हो। जिसमें सब डरते हैं उसमें मैं पहले, त्याग करने में पहले मैं और प्राप्ति के लिए पहले दूसरों को रिस्पेक्ट दो पहले आप।

(80) गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने

गुड़ कौन है? शिवबाबा। गुड़ जिस थैली में रहता है उसको मालुम है गुड़ कितना मीठा है।

गुड़ कौन है? शिवबाबा। तो शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा कम्बाइण्ड है। तो बाबा बोलता है कि ये बच्चों के अन्दर क्या चलता है ऐसा नहीं कि शिवबाबा को मालूम है और ब्रह्मा बाबा को नहीं मालूम है। शिवबाबा को जो मालूम है वो जिस थैली (ब्रह्मा बाबा के तन) में बैठा हुआ है उसको भी उसकी मिठास, उसकी अनुभूतियाँ, जो बाबा के अनुभव हैं, जो बाबा के पास नॉलेज है, तो जिस तन में वो बैठा है उसको भी वो अनुभवी बना देता है।

बाबा के बच्चे कई ऐसे समझते हैं कि शिवबाबा, ब्रह्मा बाबा को क्या पता पड़ता है कि हम क्या कर रहे हैं। तो बाबा बोलता है ये बच्चों की जो गति-मति है न, वो मैं जानुँ और शिवबाबा जाने और कोई नहीं जान सकता है।

(81) कम कार डे, दिल यार डे

कर्म करते हुए भी दिल से शिवबाबा को याद करो।

(82) जहाँ तक जीना है, वहाँ तक ज्ञान अमृत पीना है

जब तक जीवन है तब तक ज्ञान का अमृत पीते रहना है।

(83) पढ़े-लिखे के आगे अनपढ़े भरी ढ़ोयेंगे

बाबा बोलता है जो पढ़े . ज्ञान में पढ़े-लिखे। ऐसे दुनिया में भी जो पढ़े-लिखे होते हैं वो तो नवाब बनके घूमते हैं और जो अनपढ़ होते है वो क्या करते हैं? नौकर-चाकर बनके कूली का काम करते, सामान उठाना, बोझा उठाना। तो जो इस पढ़ाई में ध्यान नहीं देंगे तो वो सतयुग में भी क्या करेंगे? भरी ढोना माना बोझा उठाने का काम, दास-दासी का पद प्राप्त करना या नौकर चाकर बनना। तो क्या बनना है? पढ़ेंगे लिखेंगे तो बनेंगे नवाब, खेलेंगे कुदेंगे तो बनेंगे खराब। पर आजकल खेलकुद बहुत अच्छा है, खराब होने का नहीं है। आजकल स्पोर्टस में तो बहुत कुछ कमा लेते हैं। तो उसका भी ज्ञान चाहिए कौन सा खेल खेलने का है? तो माया के साथ खेलेंगे तो? खराब हो जायेंगे।

(84) आश्चर्यवत् सुनन्ती,कथन्ती, सुनावन्ती, अहो मम माया भागन्ती

धारणा क्लासेस
ट्रेनिंग का लक्ष्य

ट्रेनिंग का लक्ष्य क्या है ?

हम सब यहाँ पर एक बहुत ऊँचे लक्ष्य को लेकर बैठे हैं। कहा जाता है जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण। कुमारी की पहचान उसके वर्तमान समय के चाल-चलन और संस्कार से होती है। जो आत्मा अपने जीवन में ऊँचे लक्ष्य को लेकर जीती है वह साधारण कार्य नहीं करती, लेकिन अपने लक्ष्य अनुसार ही उसके लक्षण होते है। उसका व्यवहार अपने जीवन के लक्ष्य के अनुसार ही होता है।

तो मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मैं किस लक्ष्य से Training के लिए आयी हूँ? क्या मैं Training देखने के लिए आयी हूँ? सुनने के लिए आयी हूँ? मुझे अपने आप से सवाल पूछना होगा कि क्या मैं सचमुच एक आदर्श सेवाधारी बनना चाहती हूँ? क्या मैं बाबा की भुजा बनने को तैयार हूँ? जिस भुजा को देखकर अनेक आत्मायें अपना योगी जीवन बनायें। यह जिंदगी का बहुत बड़ा कदम ले रहे है। हमें अच्छी तरह से अपने आप से पूछना है कि क्या मैं अपनी Life बनाने आयी हूँ? या बीताने आयी हूँ? ब्रह्माकुमारी त्याग, तपस्या, सेवा, सद्‌भाव की प्रतिमा होती है। क्या मैं आजीवन त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी रहने को तैयार हूँ?

यह Life कोई Hobby नहीं है। जैसे दुनिया में अनेक प्रकार के Professions हैं, ऐसे यह ब्रह्माकुमारी Life Profession नहीं है। यह ऋषिमुनियों की, त्यागियों की, तपस्वियों की Life है। क्या मेरा मन, मेरी बुद्धि ऐसी Life स्वीकार करने को तैयार है? एक होता है मन करता लेकिन ताकत नहीं होती है। ताकत देना, लक्ष्य को स्पष्ट करना Training का काम है। क्या मैं सच में ऐसा समझती हूँ कि मैं अपनी Life में श्रेष्ठता, पवित्रता, सत्यता के पथ पर चल सकूँगी? सोने की तरह खरी उतर सकूँगी?

Young Age मैं ऊँची सोच, ऊँचा लक्ष्य, ऊँचा दृष्टिकोण, ऊँचा Vision रखना होता है। आपकी योग्यतायें, विशेषतायें छोटे सोच के लिए नहीं है। विस्तारित रूप से अपनी विचारधारा बनानी है। एक बार लक्ष्य निर्धारित करने के पश्चात उस लक्ष्य को प्राप्त करना, उसी ओर अपने कदम बढ़ाना ही हमारा पुरुषार्थ है। लक्ष्य के प्रति शास्त्रो में हमारा ही गायन है। अर्जुन को अपने लक्ष्य के सिवाय कुछ भी दिखायी नहीं देता है, लक्ष्य को पाना यही तात लगी थी। लक्ष्य के प्रति हमारा समर्पण भाव चाहिए। वह अर्जुन और कोई नहीं था वह हम ही है। क्या मुझ आत्मा के अन्दर ऐसा लक्ष्य है? आज ऐसा लक्ष्य निर्धारित करने की जरूरत है। क्या कारण है कि जो मैं Doctor, Engineer आदि नहीं बनना चाहती, क्यों ब्रह्माकुमारी बनना चाहती हूँ? मैं इस Life को क्यों Select कर रही हूँ? एक बार कदम आगे बढ़ाया तो फिर पीछे कदम नहीं हटाना है। **आगे बढ़ना तो वीरों का काम है।**

क्यों मैं यह Life Select कर रही हूँ?
क्या मेरे Teacher ने कहा इसलिए?
क्या सेवाकेन्द्र पर Hands की आवश्यकता है इसलिए?
क्या सेन्टर का जीवन बड़ा सूरीला है इसलिए?
क्या माँ-बाप ने भेजा इसलिए?

क्यों हमने लौकिक जीवन में कदम न रखकर अलौकिक जीवन को पसंद किया? जितना आप अपने आपसे पूछेंगे उतना लक्ष्य Clear होता जायेगा।

एक अच्छी शिक्षिका वही बन सकती है जो स्वयं को Number One Student समझती है। अगर एक क्लास की Student नहीं तो अच्छी Teacher भी नहीं। लेकिन अपने आपसे पूछिये की मुझे ईश्वरीय ज्ञान और योग का रस है? तो आप विद्यार्थियों को Control कर सकेंगे। ट्रेनिंग के अंतर्गत इसलिए हम सम्मिलित होते हैं कि हर बात हमारे सामने व्यवस्थित और Clear हो जाए ऐसा न हो कि इन बातों की हमें Knowledge नहीं थी।

ट्रेनिंग के अंतर्गत लिए जानेवाले Topics

1. Spiritual

इसमें मुरली का अध्ययन और अध्यापन, ईश्वरीय ज्ञान से सम्बन्धित Basic बातें बतायी जायेगी।

2. Human Resource Developement

हमारे अन्दर जो गुण है उनका विकास कैसे करें? इस संदर्भ में धारणा की Class होगी।

3. याद अथवा Rajyoga Meditation

योग क्या है? योग की विधी क्या है? योग के Lesson हम विद्यार्थियों को कैसे दें? साथ ही साथ हम आत्माओं का सम्बन्ध शिवबाबा के साथ कैसे जोड़ें? योग के आधार से हम अपने जीवन में गुण, शक्तियां कैसे भरें?

4. Public Service

किस रीति से भाषण करें? Programme कैसे बनायें? और Manners की छोटी-छोटी बातें भी सीखायी जायेगी।

मम्मा नम्बर वन इसलिए गयी कि मम्मा सुनती थी और धारण करती थी। क्लास में जो भी ज्ञान की, योग की बातें कही जाती है उसे तुरन्त धारण करना है। विद्यार्थी समझकर यह ट्रेनिंग करनी है। ट्रेनिंग की दुनिया से संकल्प मात्र भी बाहर नहीं जाना है। मुझे सदा Alert रहना है। **Always Alert, Active और Attractive (गुण और खुशबू में Attractive).**

ट्रेनिंग मे हम सब आए हैं अपनी जीवन की तस्वीर बनाने। इस ट्रेनिंग से मैं जैसी अपनी तस्वीर बनानी चाहूँ वैसी बना सकती हूँ।

ब्रह्माकुमारी लाइफ में मेहनत से नहीं घबराना है। इस लाइफ मे जितनी मेहनत होगी उतनी हमारी जीवन रूपी इमारत ऊँची खड़ी होगी।

आदर्श शिक्षिका के गुण और जिम्मेवारी

बाबा-हर कार्य चाहे वह छोटे से छोटा हो उसे महत्वपूर्ण बना देते थे। जैसे – बाबा टोली ऐसे बाँटते थे जैसे वह हीरे का टुकड़ा है, बाबा भोजन करते थे, वह भी साधारण रूप से नहीं लेकिन ऐसे जैसे रूहानियत से। इसी तरह बाबा ने माताओं और कन्याओं को साधारण व्यक्तित्व से ऊँचा उठाया। इसी प्रकार शिक्षिका बनना कोई बड़ी बात नहीं है। Course करा देना, भाषण कर लेना, समझा लेना, प्रदर्शनी Organize करना आज के जमाने में यह कोई भी कर लेगा, यह बड़ी बात नहीं है। आजकल Computer Correspondence द्वारा अध्ययन कर लेते हैं। हम बहनों के जीवन की ऐसी कौनसी विशेषतायें है जो हम आदर्श रूहानी बाबा के कार्य में मददगार बन सकते हैं। तो मैं अपने अन्दर ऐसी कौनसी Quality धारण करूँ जो कहीं न हो। तब तो मेरी Value होगी।

एक आदर्श टीचर के अन्दर कौनसी Quality देखना चाहेंगे?

(1) आदर्श शिक्षीका वह है जिसका जीवन Follow करने योग्य हो, जिसके कदमों पर चलना अच्छा लगे।

(2) आदर्श शिक्षीका को ज्ञान, योग, धारणा, सेवा से प्रीत होगी। चारों विषय से प्रीत होगी वही अच्छी टीचर होगी।

(3) बाबा ने जैसे पढ़ाया है उसी ही रीति से वह पढ़ती और पढ़ाती है। बाबा के जो मूल बोल है वह कभी भुलेगी नहीं।

(4) आदर्श शिक्षीका All rounder होगी।

(5) आदर्श शिक्षीका के सामने लक्ष्य Clear होगा। Clear Vision, Clear Aim होगा।

(6) वह शिक्षीका को उस पद पर पहुँचने का माध्यम मानेगी। आदर्श शिक्षीका Medium है, Opportunity है। शिक्षीका का जीवन साधन भी है, साधना भी है। जो Opportunity शिक्षीका को प्राप्त होती वह Student को मिल नहीं सकती। टीचर का Badge मिल गया यह पर्याप्त नहीं है। मुझे Certificate मिल जाए नहीं। मेरे जीवन का लक्ष्य ऊँचा है।

जब तक आपने अपने निजी जीवन की Philosophy नहीं बनायी तब तक आप आदर्श शिक्षीका नहीं बन सकते।

(7) आदर्श शिक्षीका उदाहरण से, धारणा से पढ़ाती है। Lecture से नहीं, Class से नहीं, वाणी से नहीं अपने Example से जैसे मम्मा और बाबा।

(8) उदाहरणमूर्त बनना यह आदर्श शिक्षीका का गुण होता है।

(9) आदर्श शिक्षीका इशारों से समझने वाली होगी। उसकी बुद्धि सूक्ष्म और एकमुखी (एक के तरफ मुख) होगी। इसलिए Vibration, इशारों को Catch करनेवाली होगी। इशारों से, Vibration से सीखनेवाली और चलनेवाली होगी। कोई बार-बार समझाये और समझे वह आदर्श शिक्षिका नहीं है।

(10) आदर्श शिक्षीका मुरली सुनेगी और अपनायेगी।

उदा. – अगर स्वयं अमृतवेला नहीं करेगी तो दूसरो को सुना नहीं सकेगी।

(11) आदर्श शिक्षीका Self Respectable होगी, स्वमानधारी होगी।

(12) आदर्श शिक्षीका बार-बार अपनी अवस्था से, Position से नीचे नहीं आयेगी।

(13) आदर्श शिक्षीका बाबा की Right hand होगी, सदा Positive होगी।

(14) आदर्श शिक्षीका बाबा के हर कार्य में, रचना के कार्य में सहयोगी होगी।

(15) आदर्श शिक्षीका बाबा के इशारों पर चलनेवाली और क्लास को भी चलानेवाली होगी।

(16) आदर्श शिक्षीका समय के साथ Move करनेवाली होगी। समयनुसार चलनेवाली होगी जैसी लहर वैसे चलेगी।

(17) आदर्श शिक्षीका हर आत्मा का सम्बन्ध बाप के साथ जुड़वानेवाली होगी। हम निमित्त हैं – आज है कल नहीं। हम सब का Address मधुबन है। अगर विद्यार्थी कहे यह हमारी टीचर है तो Fail कहेंगे। हम सब बाबा के Student है। मम्मा जितनी अच्छी टीचर थी उतनी ही निर्माण और निमित्त थी, सर्व का सम्बन्ध बाबा के साथ जुड़वा देती थी। यह मेरा Student, यह मेरा Area यह सब समाप्त करना है। बाबा नम्बर भी देगा तो अपनी अवस्था से।

(18) आदर्श शिक्षीका बेहद बुद्धिवाली होगी।

(19) आदर्श शिक्षीका के जीवन का श्रृंगार त्याग, तपस्या सेवा होगी।

(20) आदर्श शिक्षीका शिवप्रिया (शिव बाबा को प्रिय) होगी। एकव्रता, सच्ची पार्वती, अव्यभिचारी बुद्धि, सर्वगुणों में पुरुषार्थी, सर्व कलाओं में सम्पन्नता, मर्यादाओं का पालन, अहिंसा, सद्भाव और मन-वचन-कर्म से सेवा करेगी।

(21) आदर्श शिक्षीका होशियार होगी।

(22) आदर्श शिक्षीका पढ़ाई की शौकिन होगी।

(23) आदर्श शिक्षीका अपने इस लाइफ को Golden Period of Life समझेगी।

(24) आदर्श शिक्षीका पद नहीं है, Position नहीं है, Status नहीं है, Title नहीं है लेकिन तपस्या है। तपस्या केवल एक जगह पर बैठना इसको नहीं कहा जाता है।

अपने गुणों को साकार करना, बनायें रखना है। हम जो भी कार्य करते तो पहले यह सोचे कि अपने आप में मैं ऐसी कौनसी विशषता और रूहानियत भरूँ जो सबको दिखाई दे?

दादी जानकी ने कहा था जिस समय आप Course कराते हो, योग कराते हो, तब अपने आप से पूछो जो मैं सुनाती हूँ वह मेरे अन्दर है? अगर नहीं है तो मन खाना चाहिए। जब मन खायेगा तब वह उस बात को Complete धारणा करेगा।

सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण......यह Degree कब आयेगी? यह हमारे जीवन का लक्ष्य है। बाप ने जो सीखाया उसका पालन, Attention और धारणा करेंगे तब यह Degree आयेगी।

हमारा जो Higher Goal है वह कभी न भूले। क्या आदर्श शिक्षीका का साधन उस दैवी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए Use कर रही हूँ?

यह विद्यालय देवी-देवता बनाने का विद्यालय है, शिक्षीका बनाने का नहीं है। क्या इस माध्यम द्वारा अपने Final Aim की तरफ अग्रसर हो रही हूँ? विद्यार्थी जीवन में हम जिनती मेहनत करते है उतनी Teaching Life में नहीं करते।

(25) आदर्श शिक्षीका लोकप्रिय होगी। वह दिलों में स्थान प्राप्त करेगी। दिलों पर राज्य करनेवाली होगी, व्यक्तियों पर राज्य करनेवाली नहीं।

(26) आदर्श शिक्षीका ज्ञान गंगा है।

ब्रह्माकुमारी जीवन का फाउण्डेशन

ब्रह्माकुमारी जीवन अलौकिक जीवन है। जैसे ब्रह्मा बाबा नॉलेजफुल है वैसे ही ब्रह्मा की बेटी भी नॉलेजफुल होनी चाहिए। ब्रह्मा के हाथों में शास्त्र दिखाये हैं, क्योंकि ब्रह्मा मुख से शिवबाबा ने सारे वेद और शास्त्रों का सार सुनाया। हम ब्रह्मा की बेटी भी नॉलेजफुल होनी चाहिए क्योंकि हमारा जन्म ही ज्ञान से हुआ और जीवन भर ज्ञान की ही पढ़ाई पढ़नी और पढ़ानी है। क्योंकि ब्रह्माकुमारी बनना अर्थात पढ़ना और पढ़ाना। जब हम ब्रह्माकुमारी बन रहें है तो हमारी बुद्धि में ज्ञान का हर सत्य स्पष्ट होना चाहिए। भले हम ज्ञानमार्ग में किसी भी कारण से आते हैं लेकिन अब आने के बाद हम स्वयं भी अब ब्रह्माकुमारी बन रहे हैं तो बुद्धि में ज्ञान का हर सत्य स्पष्ट होना चाहिए। शुरू से लेकर बाबा ने जो बातें बतायी हैं वह बातें स्पष्ट होनी चाहिए। मुझे नहीं पता है यह जवाब हम नहीं दे सकते। एक ब्रह्माकुमारी माना ब्रह्माकुमारी विद्यालय की Representative। जब मैं संस्था को Represent कर रही हूँ तो मुझे पता होना चाहिए कि शुरू से लेकर के बाबा ने क्या कहा है। इसलिए शुरू से लेकर के आज तक की वाणीयों (अव्यक्त और साकार) का अच्छी रीति से अध्ययन करें। जब स्वयं पढ़ते हैं तो कई बातें हमें स्पष्ट होती हैं। जब हम अपनी बुद्धि से Study करते है तो काफी बातें हमें स्पष्ट होंगी। साकार मुरलियों में जीवन की छोटी-छोटी बातें बाबा ने सीखायी है।

जब तक हमारा Practical जीवन, हमारा कार्य व्यवहार ठीक नहीं है तब तक हम फ़रिश्ता बन नहीं सकते। इस जीवन को ठीक करने की बातें साकार मुरलीयों में हैं। मुरली ही मक्खन है। ईश्वरीय ज्ञान वह मक्खन है जिसमें सब समाया है। इसलिए जिसे मुरली से प्यार है, जो मुरली का पूरा अध्ययन करते हैं उनकी बुद्धि में ज्ञान का पूरा विस्तार आ जाता है। गहराई माना अन्दर ही अन्दर जाना और विस्तार माना ऊपर-ऊपर जाना। इसलिए हमें रोज मुरली सुननी और पढ़नी है। रोज Common बात सुनने से बोर हो जाते हैं। बोर क्यों होते हैं? क्योंकि उस बात को हम महत्त्व नहीं देते हैं। रोज ज्ञान सुनने से जागृती बनी रहती है। मनुष्य से देवता बनने का साधन – ज्ञान और योग ही है। हमारा ज्ञान अपविर्तनशील, सर्वोच्च ज्ञान है और ज्ञानदाता हमारा शिवबाबा है इसलिए ज्ञान के आधार से हमें चलना है। **ज्ञान वो अविनाशी सत्य है जो हमें सदा साथ और शक्ति देता है।**

मम्मा कहती थी कि आपके पास माया आयी यह किसी को पता भी न चले। हर पुरुषार्थी को माया आती है पर हमारे में ज्ञान बल इतना हो जो हम खुद ही खुद को ठीक कर सकें। हम दुःखी होना चाहें तो भी हो न सके इतना ज्ञान बाबा ने दिया कि मैं कौन हूँ? कौन पढ़ा रहा है? जीवन का ऐसा कोई रहस्य नहीं है जो बाबा ने हमें समझाया नहीं। जो बातें बाबा नहीं बताते तो क्यों नहीं बताते? क्योंकि जरूरी नहीं है इसलिए। बाबा के सामने जब बैठते हैं तो नालेजफुल बनकर बैठना है। जो नालेजफुल है वह समझदार होता है। विवेक ही सबसे बड़ी गिफ्ट है।

शास्त्रों में कहते हैं – भगवान सुबह-सुबह अक्ल बाँटते है लेकिन जिनके पात्र में छेद है वह ग्रहण नहीं कर सकते। वह छेद है अवगुणों का। बुद्धियोग कई ओर होता है, देहधारीयों मे होता है इसलिए उनके बुद्धि में ज्ञान ठहर नहीं सकता।

मेरे पुरुषार्थ और सेवा में बीमारी विघ्न न पड़े। ऐसी Will Power हो तो अपने आप बीमारी चली जायेगी। सुबह उठने की आदत कभी भी तोड़नी नहीं है। उठ करके कुछ भी काम कर सकते हो लेकिन उठने का नियम नहीं तोड़े। तो ऐसे करते-

करते निद्राजीत बन जायेंगे। योगी का पहला लक्षण निद्राजीत बनना। सुबह जल्दी नहीं उठते हैं तो आपको योगी जीवन का अनुभव नहीं होगा। जब तक आप अमृतवेले नहीं उठते तब तक आपका योगी जीवन नहीं है।

हमारा जीवन जितना हो सके उतना सिम्पल हो। अपने आप को हमेशा ज्ञान से चलाना है प्यार से नहीं, साधनों से नहीं। हमें वैराग्य भी समझ के आधार पर करना है न की दुःख के आधार पर। हमें संसार का त्याग ज्ञान से, समझ से करना है कि ये संसार क्या है और बाबा क्या है? इसलिए वैराग्य का आधार है सत्य ज्ञान। दुःख से वैराग्य यह मजबूत आधार नहीं है। इसलिए दो चीज़ें महत्त्वपूर्ण हैं –

(1) ज्ञान की गहराई

(2) बाबा से प्यार।

बाबा से प्यार यही हमारे जीवन का आधार है।

ब्रह्माकुमारी (समर्पित) जीवन का महत्व

संगमयुग की कुमारी संगमयुग के 100 ब्राह्मणों से उत्तम है क्योंकि कुमारी जब ब्रह्माकुमारी बन जाती तो 100 क्या सैकड़ों ब्राह्मणों की जीवन बनाने के निमित्त बन जाती। बालब्रह्मचारीनी, कमलासिनी, हंसवादिनी, वीणावादिनी श्वेतवस्त्रधारिनी यह संगमयुग की ब्रह्माकुमारी का ही गायन है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि मुझे मेरे जैसे 100 ब्रह्मचारी मिल जाये तो मैं भारत की सूरत बदल दूँगा।

संगमयुग में यह भी हमारा सौभाग्य है कि हम कुमारी है। विदेश में Unmarried होते पर कुमारी बहुत मुश्किल से होती है। भारत में सही अर्थ से कुमारी में कौमार्य व्रत है। जब भगवान आये तब हम कुमारी हो यह भी एक अच्छे भाग्य की निशानी है। गृहस्थी भल कितने भी पवित्र हो लेकिन उनको पहले सीढ़ी चढ़नी पड़ेगी। लेकिन कुमारी के लिये यह नहीं है। इसलिए बाबा कहते यह मेरे Readymade hands है।

कुमारियों को थोड़े ही योग सीखाना होता है। योग उनको सीखाना होता जिनका कहीं योग जुटा होता है। कहीं लगा हो वहाँ से हटाकर बाबा से लगाना होता है। कुमारियों का कहीं लगाव नहीं है, जुड़े नहीं हैं Direct बाबा से जुड़े हैं।

भल पवित्र कुमार भी है, कुमारी भी है लेकिन कौनसी विशेषता बाबा ने कुमारियों में देखी? कुमारियों को बाबा ने क्यों अपनाया?

मुख्य पवित्रता की विशेषता है जिसके कारण बाबा का कुमारियों पर विशेष प्यार है। पिछले जन्म में हमारे कर्मो का Account ही ऐसा रहा होगा जो हमें कुमारी जीवन मिला। कुमारियाँ निर्बन्धन होती है। लेकिन कुमार निर्बन्धन नहीं हो सकते। इसलिए कुमार पवित्र होते हुए भी उनकी अपने मात-पिता के प्रति जिम्मेवारी होती है। तो (1) पवित्रता (2) निर्बन्धन और (3) सात्विकता। शरीर से पवित्र होने के बाद भी विचार में, वृत्ति में, दृष्टि में, स्मृति में हर प्रकार से सात्विकता बहनों में Naturally होती है।

ज्ञान का कलश क्यों दिया है?

क्योंकि बहनों में ऐसी Natural विशेषता है जो आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने के लिए विशेष आवश्यक है। कुमारियाँ निर्बन्धन तो है लेकिन समाज का Setup ऐसा है कि कहीं भी उसे बन्धना होता है। जब कहीं जीवन देना ही है तो क्यों नहीं हम भगवान को जीवन दें। लौकिक में हमारी आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता बाबा को है। केवल ज्ञान में चलना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन अज्ञानता की तुलना में विशेष है। क्योंकि कितने भी पढ़े लिखे हो लेकिन लोगों में यह नैतिकता नहीं कि ज्ञान में चले। लोगों की तुलना में बाबा के बच्चे महान है जिन्होंने रस, स्वाद, फैशन यह सब चीजे छोड़ दी हैं। यह हमारा पहला कदम है।

हम शूद्र से ब्राह्मण बन गये यह हमारे परिवर्तन का First step है। अब हम ब्राह्मण परिवार में आये है। ब्राह्मणों में भी उत्तम जीवन को हमें प्राप्त करना है।

ब्राह्मणों में विशेष बात कौनसी है?

अब हम केवल ज्ञान में चलना नहीं चाहते लेकिन ज्ञान में चलते हुए अपना जीवन सेवा में सफल करना चाहते हैं। अपने जीवन को अब हमें सार्थक करना है। ईश्वरीय पढ़ाई और ईश्वरीय सेवा में हमारा जीवन उपयोग में नहीं लाया तो पवित्र जीवन का क्या फायदा? बाबा के ज्ञान से हमने अपने जीवन को महान बनाया लेकिन मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने पवित्र जीवन के साथ बाबा का मददगाार बन जाऊँ। उदा. – सुग्रीव का। बाबा ने हमें विकारों के बन्धनों से छुड़ाया तो इस पवित्र जीवन को हमें खा-पीकर मौज में नहीं गँवाना है। लेकिन हमे अब बाबा का पूरा मददगाार बनना है। यह हमारा कर्त्तव्य है। इसलिए केवल ज्ञान में चलना यह तो एक दृष्टि से स्वार्थ है।

आजकल की दुनिया में तो युवक और युवती दो कारणों से शादी भी नहीं करना चाहते –

(1) जवाबदारी उठाना नहीं चाहते, उसमें बन्धना नहीं चाहते और

(2) सम्बन्ध की मर्यादा में बन्धना नहीं चाहते।

कुमारियाँ भी दो कारणों से ब्रह्माकुमारी नहीं बनना चाहती –

(1) वह जवाबदारी नहीं उठाना चाहती।

(2) यज्ञ के Discipline के बन्धन में बन्धना नहीं चाहती। तो हम यह त्याग करने की क्षमता नहीं रखते हैं।

इस जमाने में Sensible जो है वह भी अपना Carrier बनाना चाहते हैं तो हम उन्हों से सीखें कि हमने यह क्षेत्र चुना है तो क्या हम अपना Carrier बनाना नहीं चाहते? हमने यह आध्यात्मिकता का क्षेत्र चुना है तो हमें कुछ करके दिखाना है।

एक कुमारी होने के नाते मैंने आध्यात्मिक जीवन को अपनाया है तो क्यों अपनाया है? यह मार्ग क्यों चुना है? मैंने यह सफेद कपड़े क्यों पहने है? यह मार्ग मैंने चुना तो फिर मुझे दैहिक, लौकिक, भौतिक, सांसारिक, विषयी इच्छायें नहीं होनी चाहिए।

जीवन के दो मार्ग हैं –

(1) योग मार्ग या श्रेय मार्ग

(2) भोग मार्ग या प्रेय मार्ग (आकर्षण, प्रलोभन मार्ग)

हमने योग (श्रेय) मार्ग चुना है तो क्यों चुना है? अगर जीवन को श्रेष्ठ बनाना है तो यही मार्ग है। जो मार्ग हमने चुना है उसमें हमारा Carrier बने यही हमारा लक्ष्य रहे। हमारे लिए यह विवषता नहीं है कि हम घर में रहते हुए ज्ञान में चले। सेन्टर पर रहना माना अपने पवित्र जीवन को Safe कर लेना, Secure कर लेना है। क्योंकि यज्ञ के अन्दर रहना, मर्यादाओं के किले में रहना माना अपने पवित्र जीवन को Safe कर लेना, Secure कर लेना है। अब मेरा लक्ष्य नहीं बदलना चाहिए।

बहनों को पवित्र दृष्टि से देखना यह आज की दुनिया में नहीं है। अगर योगिनी, तपस्वीनी बनकर रहें तो लोग ऊँची नजर से देखेंगे बाकि Normal स्थिति में रहने से कोई पवित्र दृष्टि से नहीं देखते। **पवित्र कुमारी जीवन की सार्थकता है ब्रह्माकुमारी बनना।**

हम कहीं पर भी रहें लेकिन हमें दो गुण अपनाने ही पड़ते हैं –

(1) Tolerance (2) Adjustment.

क्या घर में रहते भी इससे आप मुक्त रह सकेंगे? सहन तो लौकिक में भी करना पड़ता है तो क्यों नहीं मैं भगवान के खातिर सहन करूँ, Adjust करूँ तो भाग्य बनेगा। तो मेरी आध्यात्मिक स्थिति को बनाना है, हमारा Internal बाबा ऐसा अविनाशी साथी है जो हर पल हमारे साथ रहता है, घर में रहते हुए हम कितनी भी सेवा करें लेकिन उतना Respectable नहीं बनेंगे जितना समर्पित जीवन Respectable है, क्योंकि उन्होंने भगवान के आधार पर अपना जीवन छोड़ा। इसलिए जो समर्पित ब्रह्माकुमारी है उसको ही Respect की नजर से देखते हैं। बल्कि ब्राह्मणों के भी संकल्प चलेंगे कि क्यों नहीं यह समर्पित होती क्योंकि सेण्टर पर रहने में कौनसा बलिदान है? यहाँ हमारे जीवन का मूल जवाबदार बाबा है। **जिसका जवाबदार भगवान है, वह तो हमें राजकुमारी की तरह रखेगा।** हमनें भगवान के लिए इतना किया इसलिए वह हमें फूलों की तरह रखता है। यहाँ हमें सम्भालना है अपने मन को। सिवाए बाबा के किसी मे बुद्धियोग न जाये यह वफादारी हममें चाहिए। अगर इतनी वफादारी रखते हैं और Practically मिलके चलते हैं तो बाबा हमें बहुत सम्मान देते हैं। अगर जीवन से बाबा को और ज्ञान को Minus कर दो तो हमारी व्यक्तिगत क्या पहचान है? क्या हैसियत है? इतना हमारा ऊँचा जीवन है तो क्यों नहीं हम अपना जीवन बाबा को दें ?

मेरी बुद्धि में यह Clear हो कि मैं कभी मुँझू नहीं और मुझे कोई उलझा न सके। **एक कुमारी बनकर ज्ञान में चलना माना भगवान की प्रेमिका बनना है और ब्रह्माकुमारी बनना माना भगवान की पत्नी बनना है।**

सभी अधिकार के मालिक बनते है भगवान के Half Partner. Half Partner का अधिकार उसको ही है जो अपना जीवन सामर्पित करते हैं। समर्पित वह है जो अपनी पूरी शक्ति, बुद्धि, धन, समय, बाबा को दे देते हैं।

ब्रह्माकुमारी जीवन में पढ़ाई का महत्व

जब हम विद्यार्थी जीवन में होते हैं तब हमको मुरली का, योग का, Programme या Function में जाने का महत्व होता है, उसे Importance देते हैं। लेकिन खेद की बात है की जब हम Centre पर रहने लगते हैं तब हमारा यह Interest बढ़ने के बजाए स्थगित हो जाता है कम होने लगता हैं। हम ब्रह्मामुख से जन्मी हुई ब्रह्माकुमारियाँ है हमारी यादगार में आज भी School, Colleges और Institutes में सरस्वती को पूजा जाता है। हम ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान गंगाये हैं। ब्राह्मण का अर्थ ही है जो पूर्व जन्म है उससे मर जाना और ज्ञान के आधार से जो जन्म लेते वह दूसरा जन्म। इसलिए द्विज कहा जाता है। द्विज अर्थात् दूसरा जन्म लिये हुए।

जब हम टीचर बन जाते है तो टीचर के लिए पढ़ाई का महत्व और ही बढ़ जाता है, हमें मास्टर नॉलेजफुल ज्ञान गंगा बनकर रहना है।

जीवन की दो प्रकार की Approaches हो सकती हैं –
(1) अपने जीवन को शिवबाबा के दिये हुए ज्ञान और योग से जीना।
(2) साधारण मानवीय जीवन जीना।

हमारे सामने कोई समस्या आये तो उसे दो प्रकार से Solve कर सकते हैं –
(1) साधारण रूप से हम अपना Account set कर लेते हैं।
(2) ज्ञान-योग से Solve करते हैं।

मान लीजिए आपके साथ किसी ने ज्यादती की तो आपके दो उत्तर हो सकते हैं –
(1) चुप रहना (2) उसे ऐसा जवाब दे कि फिर से वह कुछ ना बोले।

हम सबकी जीवन प्रणाली न्यारी और प्यारी होनी चाहिए। एक Spiritual person का Tit for tat का Culture नहीं हो सकता। एक Spiritual person को चुप रहना ही आवश्यक है। जो Deeply Spiritual होता है वह अपना जमा का खाता गुप्त रीति से करता है। मम्मा और बाबा आगे गये क्योंकि उन्होंने कभी भी प्रशंसा स्वीकार नहीं की। वह कभी फूल भी स्वीकार नहीं करते थे।

Spiritual Life माना अपने आप के लिए न जीकर दूसरों के लिए जीवन दे देना। जैसे-जैसे आप ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ते है तो हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन सबसे सम्बन्धित भिन्न-भिन्न प्रकार की परिक्षायें देनी होगी।
दो प्रकार की Approaches हैं –
(1) Spiritual Approach
(2) Human Approach

कोटो मे कोई, कोई में भी कोई Spiritual Approach से चलनेवाली आत्मायें हैं। Spiritual Approach में स्वयं को बनाने की, सहन करने की आवश्वकता होती है। बाबा की पढ़ाई एक समान है लेकिन केवल 8 दाने, 108 दाने ही नम्बर आगे लेते, विजयी बनते हैं। इसका कोई तो Reason होगा? क्योंकि हम सब Human Approach पर उतर आते हैं। हमें स्वयं को परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। हम जा रहे हैं दैवी दुनिया में। दैवी दुनिया में Human Approach काम में आनेवाली नहीं है इसलिए अगर वर्तमान समय हमने Spiritual Life नहीं बनाई तो देवता बनना, Spiritual Life बनाना यह हमारे लिए एक Challenge है। Life यूँ ही नहीं बन जाती। जीवन बनाने के लिए उसमें कुछ डालना होता है। इसलिए रूहानी पढ़ाई पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है।

सेवाकेन्द्र पर रहकर अगर मुरली क्लास नहीं करते तो समझो उसको पढ़ाई से प्यार नहीं है। हम अपने जीवन में एक नियम बना लें कि Morning class कभी भी Miss नहीं करना है। किसी कारण वश आपको मुरली Miss करनी पड़ती है तो आप मुरली पहले पढ़ सकते हैं, अमृतवेले भी पढ़ सकते हैं। अगर पढ़ाई का शौक होगा तो धारणा भी होगी। अगर पढ़ाई की धारणा नहीं है तो छुईमुई हो जायेंगे। जो होशियार कन्यायें होती हैं वह अपना समय पढ़ने के लिए निकाल ही लेती है। जितना आप पढ़ाई के शौकीन होंगे तो आपको समय भी मिलेगा और आप Strong भी बनेंगे। ज्ञानिष्ठ बुद्धि बनेंगे। हिसाब-किताब ज्ञान-योग से चुक्तू करने हैं, रोने से नहीं। रोना कमजोरी है। बाबा को रोने वाले बिल्कुल अच्छे नहीं लगते थे। रोता वह है जो खोखला है। जो ज्ञानिष्ठ बुद्धिवाली होगी वह कभी रोयेगी नहीं। जो पढ़ेगा वह जानेगा कि मुझे इस समस्या से कैसे पार होना है। ज्ञान के आधार से अपने आप को चलाना है। बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय है। ज्ञान-योग से आत्मा को शक्तिशाली बनाना है, अपने स्वमान में रहना है जो अपमान करनेवाला भी झुक जाये।

ईश्वरीय ज्ञान रत्न हमें Appropriate, Proper देने हैं – यह एक कला है। ठीक समय पर ज्ञान देना यह भी एक कला है।

Young Age में सबसे बड़ा दुश्मन है आलस्य। सदा अपने आप को चेक करो कि क्या मुझे योग में Interest है?

पाँच बातें हमें विद्यार्थी जीवन में धारण करनी है –
(1) कौवे जैसा स्नान - कम समय में स्नान होगा। किसी के व्यक्तित्व की परख बाथरूम में स्नान के लिए उसको कितना समय लगता है इससे होती है। जिसकी बुद्धि Clear होगी उनको Time नहीं लगेगा।
(2) श्वान निद्रा – जैसे कुत्ता होता है ज़रा-सी आहट में जग जाता है। ऐसी हमारी नींद चाहिए कम आहट में भी उठना।
(3) बगूले जैसा ध्यान –
(4) अल्पाहार – कम भोजन होना चाहिए।
(5) ब्रह्मचर्य –

पढ़ाई की जो शौकीन होगी वह समझदार होगी परचिन्तन में नहीं जायेगी। हमेशा ज्ञान की बात सुनकर ही सोना है।

जिन कन्याओं की ज्ञानिष्ठ बुद्धि होगी वह कभी फेल नहीं होगी। **वे लोग रूकते है जिनके पास जिन्दगी का कोई लक्ष्य नहीं होता है।**

तीन बातें आपमें होगी तो आप कभी हारेंगे नहीं –
(1) झुक-झुक , (2) मर-मर और (3) सिख-सिख

बड़े की परख निर्माणता है।

अपने क्लास में अनुशासन बनाए रखना

क्लास करते समय और साथ-साथ कार्य व्यवहार में आते समय विद्यार्थियों पर अनुशासन बनाए रखें और उनको ऐसा लगे की हमें कुछ नया मिल रहा है। कुछ परिवर्तन जब हम लाते हैं, उनका ध्यान रखते हैं तो उनका उमंग उत्साह बढ़ता है। विद्यार्थियों को रोज ऐसा महसूस हो कि आज कुछ नया हुआ या प्रगति हुई। प्रगति के साथ-साथ उसे Discipline भी आनी चाहिए। कई बार ऐसा समझते है जो सेवा कर रहा है वह आगे बढ़ रहा है। लेकिन प्रदर्शनी समझाना, Course कराना, भाषण करना, Management करना, Stage Programme करना इसको उन्नति नहीं कहेंगे। सेवा में आगे बढ़ना यह उन्नति नहीं है, उन्नति है स्थिति और स्थिति तब बनेगी जब सेवा करते-करते, सेण्टर पर रहते-रहते, चाहे Field में रहते लेकिन आपमें और उनमें अनुशासन बना रहता है। अगर कोई यह समझता है कि मैं भाषण कर सकता हूँ, Management कर सकता हूँ अब मैं आगे बढ़ रहा हूँ तो यह उसकी सबसे बड़ी भूल है। इसलिए खुद को हमेशा विद्यार्थी समझना है, निमित्त समझना है। अगर कोई यह समझे कि मैं टीचर हूँ तो यह wrong है। हम निमित्त सेवाधारी है यह समझने से कभी बाबा नहीं भूलेगा, मैं पन नहीं आयेगा। अगर आपको किसी से काम करवाना है तो पहले आपको वह काम करना होगा। आदर्श ब्रह्माकुमारी वह जो भाषण करना भी जाने और बासन (बर्तन) मांजना भी जाने।

अनुशासन के बिना Student Life नहीं है। वह Student ही क्या जिनके जीवन में Discipline न हो। Discipline is the key to Success. इसलिए हमारे ब्राह्मण जीवन की कुछ मर्यादायेँ बनी हुई हैं। परन्तु कई बार इन बातों पर विद्यार्थियों का ध्यान नहीं होता है इसलिए छोटी-छोटी बातें भी उनको बतानी है। जैसे –
(1) चप्पल बाहर stand पर रखना।
(2) Bathroom या Toilet use करते हैं तो उनके Lights off करके जाना, Flush use करना।
भाईयों की बातें भाईयों को ही बताने दें। हर बात बड़े प्यार से बतानी या सीखानी है। जैसे – कोई मैले कपड़े पहनकर आता है तो उनको प्यार से कहना है – देखो, यह भगवान का स्थान है आप मैले कपड़े पहनकर न आये।

जितना हम अनुशासित रहेंगे वैसे Vibration से Student भी अनुशासित रहेंगे। अपने आप को Lawfull बनाना है, उसका प्रभाव हमारी दिनचर्या पर होता है। जो आप संगठन मे करते हो वही आप अकेले में रहते करें।

क्लास में भी मर्यादाओं से बिठाना है। उनको बताना है कि हमारे यहाँ यह मर्यादा है कि
(1) भाई अलग और बहनें अलग-अलग बैठते हैं।
(2) सबको लाईन में बिठाना है।
(3) क्लास रूम की सफाई को कायम रखना है।
(4) हर बार एक ही छात्र जवाब ना दे। उनको कहना है जिसको पूछा जाये वही जवाब दे।
(5) यह भी देखना जरूरी है कि क्लास सभी ध्यान से सुन रहे है? बाबा के प्रति उनके अन्दर आदर निर्माण करना है, हमेशा उनको समझाना है कि, कोई भी बहन सुनाये लेकिन क्लास कभी Miss नहीं करना है, कौन समझा रहा है? स्वयं भगवान हमें पढ़ाते है।
(6) कितना भी साधारण व्यक्ति हो लेकिन उनके प्रति आपका रूहानी प्यार हो।
(7) यह अपनी स्कूल है, हर स्कूल का Uniform होता है। तो उनको प्रेरणा देनी है कि आप सफेद कपड़े ही पहन के आओ। अगर कोई बांधेली हो उसे घर में Permission न हो तो उनको हल्के रंग के कपड़े पहनकर आने को कहो। सफेद ही क्यों पहनते हैं? उसकी भी पहचान दो क्योंकि सफेद पवित्रता का, शान्ति का, स्वच्छता का, शुद्धता का, सादगी का प्रतीक है।

अगर कोई पूछे कि आप रंगीन कपड़े क्यों नहीं पहनते, सफेद ही क्यों पहनते है?

उनको कहो कि अगर हम रंगीन कपड़े पहनेंगे तो बुद्धि ऐसी चलेगी कि आज मैंने पीला रंग का पहना है तो कल मुझे कौनसा पहनना है। इससे संकल्प चलेंगे दूसरी बात सफेद कपड़े एक भी होगा तो पता भी नहीं चलेगा माना कम ड्रेसेस में भी काम चलता है और यह हमारी Uniform है। आपके लिए Compulsory नहीं है लेकिन सिर्फ क्लास में पहनकर आओ। Badge का महत्व भी उनको समझाना है कि यह बाबा से हमें मिला हुआ मैडल है।

(8) कोई-कोई छात्रों को बाबा को पत्र लिखने की आदत होती है। अगर वह आपको दे तो आप उनको कहो कि हमारी बड़ी बहन को दें। अगर बड़ी बहन नहीं है तो उनको कहो पत्र Envelope में डालो, उसको चिपकाओ और ऊपर लिखो शिवबाबा C/o ब्रह्माबाबा। किसी का पत्र कभी भी खोलकर नहीं देखना है। हम बड़े बनते हैं अपनी धारणाओं से। कुछ भी करना है तो बड़ी बहन से पूछकर ही करना है।

(9) विद्यार्थियों की पढ़ाई की उन्नति के लिए उनको प्रेरित करना है कि मुरली Regular और Punctually सुननी है।

(10) हमे योग Punctually करना है। योग के समय पर सेण्टर की सभी बहनें योग जरूर करें। योग से विद्यार्थियों का आह्वान करना है।

(11) विद्यार्थियों के लिए भट्ठी का Programme रखें।

(12) मुरली में Interest बना रहे इसके लिए विद्यार्थियों को मुरली अलग-अलग रीति से सुनानी है।

(13) मधुबन के प्रति उनका प्यार निर्माण करें। इसके लिए मधुबन से जो कुछ Directions आते वो क्लास मे जरूर सुनाने हैं।

(14) कभी-कभी विद्यार्थियों की Exam लें, कभी-कभी प्रदर्शनी कैसे समझायें, कोर्स कैसे करें? यह सीखाना है। विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें जिससे विद्यार्थियों की रूची बनी रहे।

(15) विद्यार्थियों को अलग-अलग Wing के Member बनने के लिए प्रेरित करना है।

अन्तर्मुखता और गम्भीरता

मनुष्य सीखने की निशानी है। संगठन में रहते सब से स्नेह से रहते अकेले रहना है। हर एक की अपनी समझ होती है, अपनी-अपनी Understanding होती है, अपने-अपने संस्कार होते हैं। इसलिए किसी के भी बातों में जाना नहीं है। हम अपनी झोली प्यारे बाबा के आशीर्वाद से, स्नेह से भरने के लिए आये हैं। ज्ञान बीज है और गुण उस बीज का फल है। गुणों में मुख्य हैं अन्तर्मुखता और गम्भीरता।

(1)

– अन्तर्मुखता –

'अंतर्मुखी सदा सुखी' यह शब्द हमने सुना हुआ है। इसका तात्पर्य है कि मुख पर जितनी भी कर्मेन्द्रियाँ हैं (देखने के, सोचने के....) यह सब कर्मेन्द्रियाँ बाहर देखती हैं। अच्छा-बुरा, अपना-पराया यह आँखें देखती हैं, मुख सांसारिक इच्छाओ के आधार से बोलता है, कान भी बाहर की ही बातें सुनता है। इन कर्मेन्द्रियों के द्वारा देखने से, बोलने से, सुनने से हम कभी सदा सुखी नहीं हो सकते। क्योंकि मुझे कोई दिखाई दे रहा है वह मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है वह मेरी कमजोरियाँ ही देखता है। अन्तर्मुखता का अर्थ है सारे मुख को अन्दर ले जाओ तो यह अन्तर्दृष्टि अन्दर ही देखेगी। अपने अवगुण को निकालने के लिए हम किसी का भी सहयोग ले सकते हैं। कोई भी मनुष्य अगर Perfect बनना चाहता है तो वह अपने पुरुषार्थ से कभी सन्तुष्ट नहीं होगा। वह किसी के सहयोग से अपना पुरुषार्थ करेगा। वह सोचेगा कि मेरी छोटी-छोटी कमजोरियों को निकालने के लिए यह आत्मा कितनी सहयोगी है। बड़ा आदमी अगर एक छोटी सी भी भूल कर ले तो बहुत बड़ी बात हो जाती है। अगर अन्तर्मुखता मे होते हैं तो कहते यह आत्मा ने मुझे बड़ा समझा मेरी छोटी भूल को बहुत बड़ा समझा लेकिन मुझे यह एक आत्मा ऐसी मिली जो मेरी छोटी भूल को निकालने के लिए मुझे सहयोग दिया। अन्तर्मुखता की अवस्था में हमे कोई दुश्मन नजर नहीं आयेगा। अन्तर्मुखता की स्थिति में सुख होगा, बाह्यमुखता की स्थिति में दुःख होगा।

अन्तर्मुखता की स्थिति में मुझे सम्पूर्णता की स्टेज क्या होती, वह दिखाई देगी। मैं सम्पूर्ण बनने जा रहा हूँ तो मुझे सूक्ष्म कमजोरियों को भी निकालना है। अन्तर्मुखता होते ही यह समझ में आता है कि मैं ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण हूँ, मेरे बोल की Value बहुत बड़ी है। ब्राह्मण का निकला हुआ बोल साधारण नहीं होता है। अगर मैंने कहा कि यह मेरी सखी पगली है, तो बाह्यमुखता का मैंने Show किया लेकिन अन्तर्मुखी अपने अन्दर छान करके कहेगा Sorry मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए। मुख से जो शब्द निकल जाते हैं जैसे – बुद्धु, पगली, लल्लू..... यह प्यार से बोले जा रहे हैं लेकिन यह बोल सिद्ध हो जाये तो सुखदायी होंगे। अगर ऐसे बोल जिससे घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है उनसे बोलें तो सम्बन्ध में विच्छेद आ जायेगा। मैंने किसी को देखा कि यह बहुत सुन्दर है, फिर मेरा दिल चाहेगा कि इससे थोड़ा बोलू, देखूँ...। अन्तर्मुखी अपने अन्दर छान कर के अपने अन्दर की हर कमजोरी को निकालने का पुरुषार्थ करेगा। हर बोल को अन्तर्मुखी होकर देखना है कि क्या मेरा यह बोल सुख देनेवाला है? आत्मा किस सौंदर्य को देखकर आकर्षित होती है? गुणों को देखकर। किसी देहधारी के पास बैठने का दिल होगा लेकिन अन्तर्मुखी होकर देखो कि आत्मा को यह पसंद है मुझे मेरे नैन क्या कहते हैं? और अन्तर नैन क्या कहते हैं? जो अन्तर्मुखी होगा उसका Decision बड़ा अच्छा होगा और वह निर्णय अविनाशी होगा, Eternal होगा, Temporary नहीं।

हँसने और हँसाने में स्वयं की और औरों की क्या उन्नति है? थोड़े से पल को अगर गवा दें तो वह पल हमें वापस मिलेंगे? हँसना मना नहीं है लेकिन वह हँसना जिससे ना मेरी उन्नती है, ना दूसरों की उन्नति है वह हँसना किस काम का? उस हँसने से हमें स्वयं को बचाना चाहिए।

अन्तर्मुखता की स्थिति में Brake powerful हो जाता है और जैसा समय है जैसी स्थिति है उसी स्थिति में आ जायेंगे। अन्तर्मुखता वाले जो भी बात होती है उसको समा लेते हैं। ईश्वरीय जीवन केवल सेवा के लिए नहीं है लेकिन अपनी स्वउन्नति पर भी ध्यान देना है। अन्तर्मुखता की स्थिति मे सेवा के साथ स्वयं की स्थिति का सन्तुलन होता है। जब हम किसी की सेवा करते हैं तो अपनी स्थिति इतनी दिव्य, अलौकिक रहती है जिससे सेवा के साथ स्वयं की उन्नति होती है। कम से कम 8 घण्टा याद का चार्ट होना चाहिए। जब भी कोई ग्रूप मिलने आये मिलने से पूर्व कुछ समय 1 सेकेण्ड बाबा को याद करो तो इस युक्ति से अगर हम याद करते हैं तो याद का चार्ट बढ़ता जायेगा। अन्तर्मुखी रहने से सदा स्वयं की याद बनी रहेगी। अगर स्वयं और सेवा दोनों का सन्तुलन होगा तो आपकी सेवा का फल निकलेगा। अन्तर्मुखता की अवस्था भरपूर अवस्था है। बाह्यमुखता की अवस्था खाली अवस्था है।

(2)
– गम्भीरता –

अन्तर्मुखता का गम्भीरता के साथ गहरा सम्बन्ध है। उदाहरण :– सागर के ऊपर लहरे हैं लेकिन अन्दर से सागर कितना गम्भीर होता है।

गम्भीर व्यक्ति वह है जो अन्दर से खजानों का मालिक है। मान लीजिए – किसी की गलत बात सामने आ रही है तो जल्दी से किसी को टोण्ट कसना, बोल देना, जल्दी से उत्तर देना यह गम्भीर व्यक्ति नहीं बोलता है। गम्भीर व्यक्ति ऐसा भी नहीं कहेगा कि जो होता है वह होने दो मेरा क्या जाता है। गम्भीर व्यक्ति बात सुनता है, देखता है, सोचता है लेकिन उस बात के प्रभाव में नहीं आता। गम्भीर व्यक्ति न किसी के बात पर टोण्ट कसता है, न नुक्ताचिनी करता है, न बात काटता है। गम्भीर व्यक्ति के बात को सुनने के लिए सभी तैयार होते हैं, सभी ध्यान देते हैं और जो गम्भीर नहीं होता है उसकी बात को कोई भी सुनना नहीं चाहेगा। गम्भीर व्यक्ति मौके पर बात करता है। गम्भीर व्यक्ति के बोल कम होते हैं, व्यर्थ कम होने के कारण उसका निर्णय छोटा होता है लेकिन बड़ा शक्तिशाली होता है। गम्भीर व्यक्ति माना किसी की कमजोरी को देखकर अन्दर समाते जाना और मौके पर भी न बोलना यह नहीं है। वह किसी की कमी को देखकर चुप नहीं रहेगा, उसके पास जो कुछ होता है उसका वह प्रयोग करता है। सेवाकेन्द्र पर बहनों को गम्भीरता की बहुत आवश्यकता होती है। गम्भीर व्यक्ति बीती को बिन्दी लगाता है। वह कभी अनुमान नहीं लगाता है।

योग से विकर्म विनाश कैसे हो?

योग को सहज राजयोग का शब्द दो। योग शब्द ही निकाल दो। इसे याद कहो, याद करना स्वाभविक होता है। अगर हम योग शब्द देते हैं तो उससे पहले सहज राजयोग देते हैं। **जहाँ हमारे संकल्प से सहज शब्द निकल गया तो जहाँ हम concentration कर सके वह शक्तियाँ निकल जाती है।** योग अति सहज है। सहज कहने से उमंग आता, उत्साह आता है। अगर किसी के मन में यह बैठ जाये यह सहज है, ऐसा कहने से शक्तियाँ जागृत होती है। अगर सहज समझेंगे तो करना नहीं पड़ेगा, ऐसा लगेगा कि यह हुआ पड़ा है। जब मुझे सहज लगेगा तब ही मैं औरो को सहज कर बता सकूंगी। बाप को याद करना मुश्किल नहीं है सहज है। अगर मुश्किल समझेंगे तो उमंग-उत्साह नहीं आयेगा, निश्चय नहीं रहेगा, शक्तियाँ जागृत नहीं होंगी। जब मेरा स्वयं पर विश्वास नहीं तो मैं सफलता कैसे प्राप्त कर सकती हूँ। कोई भी कार्य करना है तो पूरी शक्ति से करना चाहिए। जो कुछ करना चाहे सम्पूर्ण हृदय से करना चाहिए। योग नहीं लगता है तो मायूसी आती है, self confidence कम होने लगता है, Frustration आता है।

योगी के वास्तव में यह गुण होते हैं –
(1) बहुत बड़ा गुण है कोई भी कार्य करना है तो उसे Concentrated mind से करना है, Divided mind से नहीं करना है। Self confidence बहुत बड़ी चीज़ है, योगी को योग का अनुभव करने के लिए।
(2) हमेशा यह Attitude रखना है कि यह मैं कर सकती हूँ, I can do it, क्यों नहीं कर सकती? बाप है और बाप ने पहचान दी है कि यह मेरा स्वरूप है। अगर मैंने ज्ञान को समझा है तो कभी भी मेरे मन में अविश्वास नहीं आयेगा।

हर मनुष्य के मस्तिष्क मे दो योग्यतायें होती हैं –
(1) करने की योग्यता
(2) ना करने की योग्यता
उदा. – रात को सोते हैं सारा दिन संकल्प चलाते। संकल्प करने की भी योग्यता है और बैठे हैं संकल्प नहीं आये तो संकल्प ना करने की भी योग्यता है। हमेशा Brain active होना चाहिए और Active Brain के अन्दर यह दो योग्यतायें होती है। Brain की शक्तियाँ Activate होनी चाहिए। कईंयों के अन्दर यह योग्यतायें कम होने के कारण उसको नींद नहीं आती क्योंकि उसने अपनी योग्यतायें सही रीति काम में नहीं लायी। दोनों योग्यताओं को Use करना चाहिए इसलिए बाबा कहते हैं बच्चे ड्रील करो।

Brain के अन्दर दो शक्तियाँ हैं –
(1) रोकने की, (2) चलाने की
यह जन-जन के संस्कार हैं। रोकना भी हमें आता हैं और चलाना भी हमें आता है।

कार मे भी दो योग्यतायें होती हैं –
(1) Start करने की, (2) Stop करने की। दोनों ही बहुत जरूरी हैं।

देह के सम्बन्ध, देह की दुनिया के संकल्प रोकना है यह रोकने की शक्ति है और मैं शुद्ध आत्मा हूँ यह चलाने की शक्ति है।

जैसे – कोई चीज़ होती है, Hereditary है, सम्बन्धी है, व्यापार है, शरीर है। तो योग क्या चीज़ है? तो उस समय यह याद न कर यह समझना है कि मैं आत्मा हूँ माना उसको रोकना है और मै आत्मा हूँ यह चलाना है इसको ही योग कहा जाता है। योग अर्थात व्यर्थ को रोकना और शुद्ध संकल्पों को चलाना।

योग में शक्तियों का प्रयोग जब करते तब योग करना सहज हो जाता हैं। चित् के, मन के विचार को रोक लेना इसको ही योग कहते है। कोई भी प्राणी सम्पूर्ण रूप से संकल्प रोक नहीं सकता। बाबा संकल्प को रोकने को नहीं कहते बल्कि बुरे संकल्पो को रोको और अच्छे संकल्पों को चलाओ। मन को सब तरफ से साफ करो। आपका मुखड़ा ही चलता-फिरता Museum का काम करेगा। कितना भी मन के राज़ छिपाना चाहो छिप नहीं सकते। हमारी आंतरिक स्थिति उठना, बैठना, हाव-भाव से भी पहचान में आ जाती है। जो संकल्प योग के लिए आवश्यक है वही संकल्प हमें चलाने है।

हर मनुष्य के अन्दर एक गुण है – वह है प्रेम। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा कि जिसमें प्रेम स्वाभाविक न हो। किसी को प्रेम है वह मोह का रूप ले लेता, आसक्ति का, वासना का रूप ले लेता और कोई ऐसे भी है जिनका किसी से प्रेम नहीं लेकिन अपने स्वयं से ही प्रेम हैं। बाबा ने कहा है योग क्या है? बाप के प्रति प्रेम यह योग है (Love towards God)। देह से, देह के पदार्थो से प्रेम हटाकर के मेरे से प्रेम करो। प्रेम एक Divine quality है और यह Divine quality तब बनेगी जब हमारे अन्दर शुद्धता होगी। प्रेम में जो विकृती आ चुकी है उसको सुधारने के लिए प्रेम बाबा से करो। जितना-जितना बाबा के प्रती हमारा प्रेम शुद्ध होता जायेगा, जितनी Self awarenss आती जायेगी, उतनी देह, देह के सम्बन्ध से Awareness हटती जायेगी। Body से Withdraw होना और Body से Awareness यह हमारा जन्मजात संस्कार है। ध्यान को लगाने के लिए कुछ करना नहीं है यह हमारा जन्मजात संस्कार है। ध्यान जब हमारा ठीक हो जाता है तो उसे समाधि कहते है माना लगन मे मगन होना कहते है। यही स्टेज विकर्मों को नष्ट करने मे मदद करती है।

ध्यान की अवस्थायें -(1) प्रत्याहार, (2) धारणा, (3) ध्यान और (4) समाधि अपने आप में रूचि निर्माण करनी है। जहाँ रूचि होती है वहाँ ध्यान जाता है। बिना अभ्यास के सफलता नहीं मिल सकती है।

आध्यात्मिक श्रृंगार को बिगाड़ने वाले अवगुण

कुछ अवगुण होते हैं जो हमारे श्रृंगार को बिगाड़ते हैं।

(अ)

– असन्तुष्टता –

सेण्टर पर जो भी जिज्ञासु आते हैं वह कोई न कोई भावना लेकर आते हैं। जब तक उनकी भावना पूर्ण नहीं होती तब तक वह ज्ञानी नहीं बन सकते। अगर मेरे स्वयं के जीवन में असन्तुष्टता है, सन्तुष्टता नहीं है, भरपूरता नहीं हैं तो आने वाले जिज्ञासु को सन्तुष्ट कर सकते हैं?

(1) बाबा के बच्चे सदा भरपूर होते है। जिनको बाबा ने ज्ञान का कलश दिया अगर वही भरपूर होगा तो वह जिसको जहाँ जरूरत होगी उतना उनको दे सकेगा। असन्तुष्टता बहुत बड़ा अवगुण हैं। जो असन्तुष्ट होगा वह कभी भी बाबा के घर की सेवा नहीं कर सकता है। सन्तुष्टता मनुष्य के सिर का मुकूट है। सन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार ही नहीं लेकिन सिर का ताज है। अगर सन्तुष्ट नहीं होगा तो निर्धन, गरीब से गरीब बच्चा भी उस पर रहम करेगा। अगर बाबा के बच्चे ही सन्तुष्ट नहीं तो यह बहुत बड़ी ईश्वरीय ग्लानि है यह सबसे बड़ी बाबा की भी ग्लानि है।
(2) असन्तुष्टता वाला व्यक्ति ना वह खुद सुखी रहता है, ना वह किसी को सुख दे सकता है। जो सुख देता ही नहीं, लेता है वह दाता के घर में रह नहीं सकता। असन्तुष्टता का कारण है उसमें बहुत सी इच्छायें और कामनायें होती हैं। वह उनको पूर्ण करने

के लिए तड़पता है और हमेशा अतृप्ती और अपूर्ती अपने में महसूस करता है और उसको दुःख की महसूसता होती हैं। जो नहीं मिलता है उसका वह चिन्तन करता हैं। उसका चिन्तन भी चिन्ता वाला होता है और वह दूसरों को भी चिन्तन करने पर मजबूर करता है माना वातावरण को बोझिला बनाता हैं। असन्तुष्ट व्यक्ति अशान्त होता भी है और करता भी है। असन्तुष्ट मनुष्य को पहले स्वयं की चिन्ता होती है। असन्तुष्ट मनुष्य स्वयं की चिन्तायें औरों को दे देता है। कोई तो दूसरों के साथ Compare करके असन्तुष्ट रहते हैं। जो असन्तुष्ट रहता है वह दूसरों का ध्यान अपने तरफ खिंचवाता रहता है। जो असन्तुष्ट होता है उससे सब भारी होकर चलते हैं। असन्तुष्ट व्यक्ति हमेशा छोटी-छोटी बातों को दिल से लगाता है। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है, स्वभाव में माधुर्य नहीं होता है, मिलनसार नहीं होते हैं। जो सन्तुष्ट है वह सबके प्रति लुटाता है। असन्तुष्ट व्यक्ति हमेशा उल्हना देता रहेगा, ताना कसता रहेगा, अपनी कमी-कमजोरियों को निकालने की बजाए दूसरों की कमियों को देखता रहता हैं। वह हमेशा मनुष्यों में, प्राणीयों में, परिस्थितियों में Defect निकालता रहेगा। वह उदास होगा, निराश होगा जैसे कोई दुर्भाग्यशाली होता है वैसे वह थका-थका रहेगा। वह बात-बात पर अपने आप को कोसता है। दस बार उसकी कोई नेकी करता है, उसका सत्कार करता है और एक बार भी उसको बोल दिया तो वह नाराज़ हो जाता है। भगवान पर भी कभी-कभी उसको गुस्सा आ जाता हैं। उनको मौका दिया जाए तो भी टेढ़े है, ना दिया जाए तो भी टेढ़े। कोई उसकी कितनी भी भलाई करे वह उसको भूल जाता है और बुराई को याद रखता है। असन्तुष्ट व्यक्ति उसके पास जो कमी है वह उसका चिन्तन कर दुःखी होंगा।

(3) असन्तुष्ट मनुष्य जीवन से तंग आ जाता है उसकी बड़ी Choices बनी रहती है। वह बहुत जल्दी-जल्दी रूठेगा और रूठने के साथ-साथ उल्हने देगा। असन्तुष्ट मनुष्य हमेशा कमी, असफलता या दोष अधिक देखेगा। उसमें अच्छाई, गुण और सफलता कम होगी। असन्तुष्ट व्यक्ति अपनी तुलना औरों से कर कमियों को दूर करने के बजाए प्राप्तियों की अधिक कामना करेगा। परिस्थितियों, बन्धनों को दूर करने के बजाए वह छोटी-छोटी बातों से तंग बहुत जल्दी आयेगा। थकावट, हिम्मतहीनता, उत्साहहीनता उसमें होगी, ऐसा व्यक्ति वातावरण को बिगाड़ता है। उदासी, मायूसी की तरंगे वह फैलायेगा। असन्तुष्ट व्यक्ति बहुत जल्दी घाटे की ओर जाता है। चढ़ती कला की बजाए उतरती कला की ओर जाता है। गुण चर्चा, ज्ञान चर्चा करने की बजाए वह अपनी असन्तुष्टता की ही चर्चा करेगा उससे सब का हर्ष नाश करने के वह निमित्त बनेगा। कहीं जायेगा भी तो अगर उसकी खातिरी नहीं हुई तो कहेगा क्या बस इसीलिए ही बुलाया था, समय नष्ट किया। वह हमेशा दूसरो की कमियों को देख अपने आप को जलाता है। **असन्तुष्टता मोहव्वत की कैंची है।** असन्तुष्ट व्यक्ति हमेशा आत्मिक असमर्थता ज्यादा प्रकट करता हैं, और छोटी-छोटी बात को भी बड़ा रूप दे देता है। किसी के स्वभाव संस्कारों से भी वह असन्तुष्ट रहता है। आवश्यक बातें वह भूल जाता है। उसका दिमाग हमेशा गरम रहता है। कोई भी श्रेष्ठता लाना चाहते हैं तो जब तक कमियाँ भरें तब तक श्रेष्ठता आने में थोड़ा समय लगेगा। कोई भी कमजोरी एक दिन में नहीं जायेगी उसको निकालने का पुरुषार्थ करना हैं।

(व)

– भाव-स्वभाव –

आत्मा ने देहभान में रहकर जो कर्म किया वह स्वभाव होता है। जब हम एक-दो से मिलते हैं तो भाव-स्वभाव का टक्कर होता हैं। हम स्व के भान अर्थात् आत्म भान में रहकर कर्म करते हैं तो हमारा कर्म दिव्य बनता है। किसी का कैसा भी भाव या स्वभाव हो लेकिन हम डरें नहीं।

(1) आप रहें संगठन में लेकिन मन की स्थिति ऐसी हो कि मैं अकेली हूँ और बस बाबा मेरा साथी है और साथी का जो Direction है वह मुझे पालन करना है। इस बात को विस्मृत न करनेवाला किसी भी स्वभाव वाले के साथ रह सकता है।

(2) संगठन में रहते हुए एक-दो की राय को मान देना है। जहाँ तक हो सके अपनी राय को पीछे रखो दूसरों की राय को सम्मान दो।

(3) अगर भाव-स्वभाव से बचना है तो हर एक के साथ समान व्यवहार होना चाहिए।

(4) जो मैं करूँगा मुझे देख सब करेंगे ऐसी भावना रखनी है, फलाना करता है या नहीं करता है यह नहीं सोचना है।

(5) हमेशा अपने मन में सहयोग की भावना रखनी है। मुझे सबका सहयोगी बनना है, शुद्ध कल्याणकारी भावना रखनी है, कोई कैसा भी व्यवहार करें।

(6) इधर-उधर की बातें, Personal बातों में ज्यादा न जाये और ख्याल रखें कि मुझे एक आदर्श टीचर बनना है। अपने को छोटा और सेवाधारी समझो।

(7) गुणग्राही दृष्टि और सबसे स्नेह होना चाहिए।

(8) कभी किसी को नीचा दिखाने की कोशिश न करे। एक-दो को परखकर सन्तुष्ट रहना है। संगठन में हल्के होकर चलें।

(9) इच्छाओं को त्यागनेवाले, अपने को मारनेवाले बनो।

(10) मैं, मेरेपन के भाव को त्याग सब शिवबाबा का है यह भावना रख निमित्त समझ चलना है।

(11) सबको सुख दो और आशीर्वाद लो। आशीर्वाद पुरुषार्थ को बहुत जल्दी बढ़ाता है।

(12) शिक्षाओं से प्रीत रखनेवाला कभी भी टकराव में नहीं आयेगा।

कोई भी अपने निजी पुरुषार्थ में आगे बढ़ नहीं सकता, सबके सहयोग से ही वह आगे बढ़ता है जितना बड़ा संगठन उतना पुरूषार्थ भी अच्छा होता है। कभी भी किसी से अपने आप को Compare कर हीन भावना न आये। याद रखना है कि स्वयं भगवान हमें पढ़ाने आया है, तकदीर बनाने आया है तो कभी भी हीन भावना नहीं आयेगी। स्वयं सर्वशक्तिवान मेरा साथी है तो हीन भावना क्यों आये?

जो आता है वही सेवा में use करना है। मैं क्या हूँ – यह देखो, क्या नहीं हूँ – यह नहीं देखो। दाता बहुत कुछ देना चाहता है लेकिन हीन भावना वाला कभी लेना नहीं चाहता। जो मेरी विशेषता है वह मेरी है।

अगर बाबा के प्यार और सम्मान में आँसू आते हैं तो बाबा उनकी झोली वरदानों से भर देता है। बाबा के कमरे में कभी भी दुःख के आँसू नहीं आने चाहिए। रोना, रूसना यह कमजोरियाँ है।

आध्यात्मिक तबीयत

अपनी आध्यात्मिक तबीयत अपने बड़ों को जरूर दिखानी है। बड़े हमारे लिए क्या समझेंगे ऐसा संकोच कभी भी नहीं आना चाहिए। हम कभी भी ऐसा चिन्तन न लायें कि बताने से क्या होगा। योग्य समय आने पर बाबा किसी को भी निमित्त बनाता है।

टीचर जो है वह क्लास की नींव है। नींव बहुत शक्तिशाली होनी चाहिए। ज्यादा चलाने से बीमारी बढ़ जाती है। **आध्यात्मिक बीमारी को कैसे पहचानें?**

(1)

अमृतवेला जो सारे दिन की दिनचर्या का नींव का समय है, वह आज का मेरा कितना Fresh रहा? अगर अमृतवेला ठीक नहीं हो रहा है तो उसे Ignore ना करें क्योंकि यह एक कमजोरी बहुत सी बीमारियों को लायेगी। जैसे – सहनशक्ती, धैर्यता कम हो जायेगी, जल्दी से Temper Lose होगा, सन्तुष्ट नहीं रह सकेंगे अगर अमृतवेला ठीक नहीं हो रहा है तो बड़ों से जरूर राय लेनी है। बड़ों से हमारा हमेशा सम्बन्ध होना चाहिए।

(2)

वाणी (मुरली) हम सुनते हैं लेकिन आनन्द नहीं ले पा रहे हैं, Enjoy नहीं कर पा रहे हैं। गहराई मे जाने की कोशिश कर रही हूँ लेकिन जा नहीं पा रहे हैं। खुशी चेहरे पर नहीं आ रही है, रौनक नहीं आ रही है। वाणी चल रही है और हमारा मन कहीं

ओर घूम रहा है, ऐसी अवस्था हो रही है तो फौरन समझ लेना चाहिए कि बीमारी जरूर आगे है। मुरली के साथ हमारा Dance भी चलना चाहिए। मुरली सुनते समय झूमते नहीं है तो अन्दर में जरूर कोई कमजोरी है, उस कमजोरी को ज्यादा समय नहीं रखना चाहिए, अपने बड़ों को बता देना चाहिए। कोई भी कमी को ज्यादा समय नहीं रहने देना चाहिए। मुरली अमृत है जो सारे जगत में किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकता। मुरली का एक भी Point याद नहीं रहा तो यह क्यों हुआ? इससे स्पष्ट है कि मन की अवस्था ठीक नहीं है।

(3)

Traffic Control के समय या Class के समय नींद आ रही है, सुस्ती आ रही है, उबासी आ रही है या कुछ काम करते समय ऐसा लग रहा है कि थोड़ा आराम कर लूँ - तो मान लीजिए जरूर कोई बीमारी है। अगर कमाई का ख्याल होगा तो कमाई के समय कमाई ही करेगा फिर बाद में आराम करेगा।

(4)

सेवा करना चाह रहे हो लेकिन दिल जान से नहीं करना चाहते, हड्डी सेवा माना तल्लीन होकर सेवा नहीं करना चाहते, Hardwork नहीं करना चाहते। ऐसा लगता जैसे – आराम के समय आराम होना चाहिए, खाने के समय खाना मिलना चाहिए। तो भी समझो कि कहीं ना कहीं बीमारी है, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। सारे विश्व के लिए मेरा योगदान कुछ नहीं हो सकता है।

(5)

कुछ लिखने का, पढ़ने का, मंथन करने का मन नहीं कर रहा है तो समझ लेना है कि तबीयत ठीक नहीं है। यही समय है ज्यादा से ज्यादा सेवा करने का, ज्यादा से ज्यादा सेवा का समय और मैं कम सेवा कर रही हूँ। अन्त का भी अन्त है और ज्ञान का कलश भगवान ने मेरे ऊपर रखा है इसलिए सबको ज्ञानामृत जरूर पिलाना है। विश्व सेवा का इतना ख्याल नहीं आता, बेहद बाप के बच्चे बेहद सेवा न करे यह हो नहीं सकता इसका मतलब है कि बाबा के प्रति सच्चा प्यार नहीं है।

(6)

अगर आपके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या नफरत आये, चाहे किसी टीचर के प्रति, चाहे किसी छात्र के प्रति तो समझ लेना चाहिए कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है। अगर नफरत आ गई तो समझो आपने अमृत की जगह जहर पिला दिया तब समझना चाहिए कि Mentally कुछ Problem है।

(7)

हर एक समझें कि मुझे टीचर प्यार करती है। अगर आप समझते हैं कि मुझे प्यार नहीं मिल रहा है तो समझो तबीयत खराब है।

(8)

कोई गलती पर आपका मन खाता है, आप बताते नहीं, तो मन खानेवाली बीमारी बहुत बड़ी बीमारी है। ऐसी बीमारी को कभी छिपाना नहीं चाहिए, बड़ों को बता देना चाहिए। तो समझो मेरी तबीयत खराब है।

(9)

सेण्टर पर रहते कभी कोई छोटी बात आ जाये तो घर जाने के विचार आते हैं। यह बीमारी जरूर आती है। यहाँ के नियम जो हैं ना मुझे अच्छे नहीं लगते, बड़े बहुत Strict हैं। ऐसा लगेगा तो समझो तबीयत ठीक नहीं है। यह बहुत बड़ी बीमारी है तुरन्त बड़ों को बताना है।

(10)

अपने मन मे कभी ऐसा लग रहा है कि बाबा के प्रति मेरा प्यार कम होता जा रहा है तो समझना चाहिए कि बीमारी आ गई। चेक करना है कि मेरा प्यार कहीं बँट तो नहीं गया?

(11)

आपकी किसी विद्यार्थी से या किसी और से ममता या लगाव बढ़ रहा है, झुकाव, लगााव और प्यार जरा ज्यादा हो रहा है तो समझो तबीयत ठीक नहीं है। आपको उसके साथ बैठना भी अच्छा लगता, बोलना भी अच्छा लगता है, खाना-खिलाना भी अच्छा लगता है। इसका मतलब आपके अन्दर स्वमान की कमी आ रही है। सेवा की कमी हो रही है और व्यक्ति विशेष की सेवा बढ़ रही है। ऐसा होता तो अपने बड़ों को जरूर बताना चाहिए। कोई भी बात छिपी नहीं रह सकती। जो अपनी अवस्था को बिगाड़े उसका Secret नहीं रखना है।

(12)

जीवन ही रूचि का नहीं – ऐसा लगता है, थके-थके से लग रहे हैं, कोई भी अच्छा नहीं लगता, अपने आप भी अच्छा नहीं लगता, उदासी आती है, रोने को जी होता है, ऐसा उदास मन होगा जो कुछ भी करना अच्छा नहीं लगेगा, ना कुछ सुनने का अच्छा लगेगा तो समझना चाहिए कि मेरी तबीयत खराब है, मैं बीमार हूँ। ऐसे वक्त पर आप अपने स्वयं का हमदर्द बनकर अपने मन को समझाना है।

(13)

योग में बैठती हूँ तो बाबा का प्यार महसूस नहीं हो रहा है, ज्ञान भी अच्छा नहीं लग रहा है, योग भी अच्छा नहीं लगता। तो समझो मेरी तबीयत खराब है, मैं बीमार हूँ।

बड़ों से कभी छिपाना नहीं है, झूठ नहीं बोलना है। अपने दोषों को विद्यार्थियों पर नहीं लगाने हैं। इससे स्पष्ट है कि पाप बढ़ता जा रहा है। हिसाब-किताब ठीक नहीं देते और अपने गिरने का खड्डा अपने आप खोद लिया, इससे रूहानी मृत्यु हो सकती है। अगर आप बाबा के बच्चों को धोखा दे रहे हो तो महान पाप करते हो।

(14)

अपने को ईमानदार दिखाना, अपने आप का शो करना, ऐसा हो तो समझना है कि बीमारी है।

टीचर की जिम्मेवारियाँ

टीचर के लिए सबसे बड़ी बात है त्याग। एक-दो के लिए छोटा-मोटा त्याग करे तो कोई बड़ी बात नहीं। मैं नम्बर वन विद्यार्थी हूँ – यह टीचर का सबसे पहला पार्ट है।

(1)

– पुरुषार्थ –

(1) पुरुषार्थ में बड़ी सिन्सीयर होगी।

2) उसकी मानसिक स्थिरता बहुत अच्छी होगी।

3) अध्यात्मिकता मे वह बड़ी शक्तिशाली होगी।

4) गहराई से कोई भी ज्ञान की बात को समझने वाली और दूसरों को भी वैसे ही गहराई से समझाने वाली होगी।

5) किसी भी ज्ञान की बात में उसे संशय नहीं होगा। कहा जाता है जहाँ संशय आया वहाँ छेद आयेगा और Leakage शुरू हो जायेगा। जहाँ छेद होता है वहाँ दोष होता है।

6) वह प्रथम और सर्वोपरी योगी होगी। कैसे भी समय निकालकर वह योग जरूर करेगी। आनेवाले समय में विद्यार्थी तमोगुणी संस्कार वाले होंगे, इसलिए हमारी स्थिति बहुत ही श्रेष्ठ होनी चाहिए।

7) अमृतवेला नियमित उसका योग होगा।

8) Traffic Control भी उसका नियमित बन चुका होगा। 9) आत्मस्थिती का अभ्यास सदा बढ़ाती रहेगी। अगर कम मेहनत में ज्यादा फल पाना चाहते हैं तो आत्मस्थिति को बढ़ाने की आवश्यकता है। टीचर का मतलब ही है कि जिसकी हर चीज़ Natural हो।

10) मानवीय मूल्यों को धारण करने के लिए वह सदा सचेत रहेगी।

11) सेवा के लिए सदा तत्पर रहेगी।

12) केवल स्वयं ही चार सब्जेक्ट में उन्नति नहीं करेगी लेकिन अपने चारों Subjects की धारणा से दूसरों को उत्साहित और प्रोत्साहित करनेवाली होगी।

13) वह केवल प्रवक्ता नहीं होगी लेकिन उदाहरण स्वरूप होगी। उसका साथी एक बाबा होगा तो उससे औरों को भी वह बाबा के नजदीक लायेगी।

(2)

– पवित्रता –

उसके जीवन की दृढ नींव होगी। जिसमें सम्पूर्ण पवित्रता नहीं वह टीचर कहलाने के योग्य है ही नहीं। मेरी पवित्रता ऐसी हो जो किसी की भी अपवित्र दृष्टि मेरे प्रति न जाये, ना मेरी किसी के प्रति दृष्टि खराब हो जाये। पवित्रता ब्रह्मण जीवन की नींव है, आधार है। किसी की हिम्मत न हो जो मुझे Touch कर सके, किसी का भी अपनी देह के प्रति आकर्षण न जाये। जो पवित्रता को धारण करेंगे उनकी सब मुराद हासिल होगी। वह पवित्रता में Lead करनेवाली होगी। उसके नैन-चैन से पवित्रता, रूहानियत छलकेगी।

(3)

– Honest –

बाबा के साथ Honest रहेगी। बाबा के Box की Money उसकी Personal Money नहीं होगी। बाबा की चीज़ बाबा की सेवा के लिए Use करेगी, अपने प्रति नहीं। तन भी अपना नहीं, वह केवल ट्रस्टी होगी। कुछ भी उसका अपना नहीं, ना घर से लगाव, ना संसार से लगाव होगा, वह किसी में फँसी हुई नहीं होगी। सब कुछ बाबा का है और सब कुछ बाबा की सेवा के लिए है। आमदनी और खर्च का पूरा-पूरा साफ और स्वच्छ हिसाब रखेगी। अपने ऊपर कम से कम खर्चा करेगी।

(4)

– वफादार –

वह बाबा के प्रति बड़ी वफादार होगी। बाबा पर उसका पूरा विश्वास होगा। वह कभी भी बाबा को धोखा नहीं देगी माना कोई गलत काम हो गया तो वह कभी भी छिपायेंगी नहीं। जो बाबा कहता है वही वो करेगी। बाबा की आज्ञा उसके सिर माथे होगी। बाबा ने विश्वास रखा है तो उस विश्वास को वह तोड़ेगी नहीं।

(5)

– Pleasing Nature –

उसकी Nature बड़ी Pleasing होगी। खुश रहकर खुश करनेवाली होगी। चेहरे पर मुस्कुराहट होगी, हृदय में प्यार होगा लेकिन Official भी होगी। सबके प्रति बोल नम्र और Soft होंगे। किसी के बोल के कारण मैं डर जाऊँ या चुप हो जाऊँ यह भी गलत है। बहुत चिढ़कर बात करने वाली नहीं होगी, सन्तुष्ट होगी।

(6)

जब कोई बाबा के घर आता है तो उसकी बड़ी आशा होती है। बाबा का घर सर्व आत्माओं को राहत देने का स्थान है, आशा पूर्ण करने का स्थान है। आने वाली आत्मा कम-से-कम प्यार, स्नेह और शान्ति तो ले जावें। अगर बहन ही अशान्त हो तो वह दूसरों को शान्ति कैसी देगी? जो भी आये उसको ऐसा लगे कि मैं इस ब्राह्मण परिवार का सदस्य हूँ। तरस और रहम की भावना आत्माओं के प्रति होनी चाहिए। जो बाबा का स्नेह मुझे मिला है वह सबको मिले। हरेक का अपना-अपना महत्व है, कभी भी हम किसी को Rejected निगाहों से ना देखे, Selected निगााहों से देखे। हरेक का पार्ट विशेष है।

(7)

– Love and Law का Balance –

Love and Law का Balance होना चाहिए।

(8)

ईश्वरीय कायदों पर चलने वाली टीचर होनी चाहिए। योगी जीवन माना मर्यादाओं का जीवन। मर्यादा माना खुश जीवन कभी ऐसा न लगे कि मर्यादा माना बन्धन है क्योंकि योगी तो स्वतन्त्र है वह एक सेकेण्ड में उड़ जाता है। वह उड़ता पंछी है और यह मर्यादायें उसको उड़ाती है। जहाँ मर्यादायें तोड़ते वहाँ बन्धन प्रतीत होगा। हम बच्चें विधि विधान बनाने वाले है तोड़ने वाले नहीं। कभी भी मेरे द्वारा विधान न टूटे। हम अपने कायद को न तोड़े अगर मैंने तोड़ा तो दूसरा भी जरूर तोड़ेगा।
उदा. – मानो मुरली क्लास में कोई अपने सम्बन्धी को ले आये तो उन्हें अलग से क्लास में बिठाओ। नहीं मानते है तो उन्हें कहो यह हमारा कायदा है। उनका स्वागत जरूर करें लेकिन कायदा नहीं तोड़े। अगर कोई एक कायदा तोड़ता है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं तो ना तोड़ूँ। जिनको हम कायदें से चलाते हैं उनको भी फायदा होता है। यह University है, राजाओं का राजा बनने का Training Centre हैं। अगर स्वयं ही नियमों पर नहीं चलेगा तो वह राज्य अधिकारी बन कैसे सकता है क्योंकि हम शासक हैं, नये विश्व पर राज्य करने वाले है। अगर स्वयं नियमों पर नहीं चलेंगे तो औरों को कैसे चला सकेंगे? इसलिए बाबा पढ़ा भी रहा है और साथ-साथ अच्छा चुनाव भी कर रहा है।

(9)

टीचर मधुर भाषी, नम्रभाषी होगी और समय पर दृढ भी होगी। अपने कायदों पर दृढ़ होगी उसे कोई हिला नहीं सकता क्योंकि नियम सबके लिए बराबर है। उदाहरण – सेवाकेन्द्र पवित्र स्थान है यहाँ अपवित्र कोई ठहर नहीं सकता। लेकिन मानो लौकिक भाई आया है, किसी काम से आया है और वह रूकना चाहता है तो ऐसे नहीं कि उसको दूसरे रूम में सुला देंगे – यह सोचकर हाँ नहीं करना है। हाँ, उसको जिज्ञासू के यहाँ ठहरा सकते है क्योंकि गृहस्थी में उनके बच्चे भी होते है।

(10)

Law और Judgement

Law और Judgement दोनों साथ-साथ हो। कहीं-कहीं सिर्फ Law न हो लेकिन स्नेह भी हो।

(11)

वह सबको उन्नति करने का Chance जरूर देगी क्योंकि हरेक विद्यार्थी में विशेषता, शक्तियाँ अवश्य होती हैं। हमेशा यह देखें कि इनकी उन्नति किसमें होगी। उनको सेवा, खुशी, आमदनी इन सब से वंचित नहीं करना चाहिए। कई विद्यार्थी सोचते हैं कि हम योग में बैठ सकते है और कायदे नुसार ठीक समय है तो Chance देना चाहिए। यह टीचर के अन्दर हमेशा होना चाहिए की मैं बढ़ूँ लेकिन साथ में यह भी बढ़े।

(12)

टीचर में कभी भी ईर्ष्या न हो और प्रभावित भी न हो जाये, कई बार कई विद्यार्थी, टीचर से भी आगे निकल जाते हैं तो हम कभी यह न सोचे कि मैं टीचर हूँ और यह विद्यार्थी है, ऐसे विद्यार्थी पर नाज़ होना चाहिए।

(13)

– Leadership Quality –

टीचर में Leadership Quality जरूर होनी चाहिए। उसको प्लान बनाना, सेवा को कैसे Expand करना है यह आना चाहिए।

(14)

उसका जीवन प्रभावित करने वाला होना चाहिए। वह अपने पास एक-दो के अच्छे विचारों को रखेगी। उन सबके विचारों को सत्कार देते हुए चलेगी। मान लो कोई आपको राय पूछता है तो राय जरूर देनी चाहिए और किसी के भी राय का तिरस्कार नहीं करेगी लेकिन सत्कार करेगी।

(15)

वह विद्यार्थियों का ख्याल जरूर रखेगी। उनके योग और पवित्रता पर ध्यान देगी क्योंकि योग से जीवन में प्रकाश आता है।

(16)

एक Leader के नाते निर्णय करेगी, क्या करना है, कैसे करना है, सबकी राय जरूर लेगी, लेकिन अन्तिम निर्णय अपना देगी। उसके मन में निमित्तपन का भाव सदा बना रहेगा।

(17)

विद्यार्थियों की हम सेवा करते हैं लेकिन साथ-साथ उनके Safety का भी ख्याल करना है। सिर्फ एक तरफ ही ध्याान न हो उनके आइवेल का भी ख्याल रखना है। तो उनको खुशी होगी।

(18)

विद्यार्थियों में एकता का वातावरण बनायें रखने की जिम्मेवारी टीचर की हैं इसलिए एक-दो की विशेषता का वर्णन करे, कभी भी किसी की कमजोरी फैलायें नहीं। यह हमारी Qualification होनी चाहिए कि कौनसी बात मुझे बतानी है और कौनसी नहीं।

(19)

टीचर सबमें समरसता लायेंगी। अगर कोई हीन भावना वाला है, सन्तुष्ट नहीं है तो उसको अलग सी पालना देगी। अगर कोई राय देता है तो सिर्फ सुन लो अगर आपको मालूम है तो भी कुछ नहीं बोलो ताकि उसका उमंग-उत्साह बढ़े। किसी को आगे बढ़ाने के लिए खाली ज्ञान सुनाना नहीं होता है।

(20)

एकता बनाने के लिए संगठीत रूप से Programme बनायें, Picnic निकालें जिससे सभी इकट्ठे हो जाये। सभी आपस मे मिल जुलकर रहे यह ख्याल रखें। नया कोई आये तो उसको Help जरूर करनी है। लौकिक संगठन नहीं होना चाहिए उनमें लौकिकता न आये। उदाहरण – मान लो कोई शाल बेच रहा है, कोई बिस्कुट बेच रहा है तो उनको कहना है कि बाबा का सेवाकेन्द्र कोई दुकान नहीं है। आप बिस्कुट बनाते हो तो अपनी दुकान मे बेचो बाबा का घर कोई दुकान नहीं है। कभी भी सेवाकेन्द्र को Shopping centre नहीं बनाना है। आप कभी भी इस विषय पर बात ना करे कि उसने यह चीज़ ऐसी दी, खराब दी, इसमें समय बरबाद ना करे क्योंकि मेरा श्वास, संकल्प, समय बाबा के लिए है। विद्यार्थियों मे भावना पैदा करे कि बाबा का सेण्टर मेरा अपना सेण्टर हैं वह सेण्टर के लिए कुर्बान जाये। जो कुछ बाबा का है वह मेरा ही तो है।

(21)

हमने जीवन अध्यात्मिक जीवन बनाने के लिए दिया है। टीचर बहुत गम्भीर होनी चाहिए, ऐसा नहीं जो मन में आया वह बोल दिया। टीचर का ह्दय विशाल माँ की तरह होना चाहिए ऐसे नहीं की छोटी-छोटी बातों को पकड़ती रहे। अगर किसी से गलती हो गयी तो वह स्वयं ही कहने के लिए आयेगा। उसको पता होगा की उसने यह किया फिर भी वह स्नेह देगी। ऐसा स्नेह दो जिससे काँटा अपने आप निकल आये। किसी की कमजोरी को निकालने के लिए कभी स्नेह भी देना पड़ता है तो कभी आँख भी दिखानी पड़ती है। किसी को सुधारने के लिए बहुत बड़ी आवश्यकता है – **जो कमजोर है उसको आप सहयोग दो।**

विद्यार्थियों के साथ कभी सक्त नहीं बनना है। कोई आपसे ये ना कहे कि हम आपसे भारी है। Official रूप भी चाहिए और ऐसा Strict भी नहीं की विद्यार्थी आपसे बोलने को घबरायें। लेकिन अन्दर से शुभ भाव रहे हमेशा दोनों का Balance रहे। जिम्मेवारी की भावना होनी चाहिए। जिन बच्चियों ने ज्ञान समझा है उनके स्वरूप द्वारा बाबा को वह समझे।

ब्रह्माकुमारी जीवन के नियम और मर्यादायें

हम सब ब्राह्मणों को नियमों का पालन करना जरूरी है क्योंकि हम सभी Law maker और Peace maker है।

(अ)
– नियम –

(1) अमृतवेले याद की यात्रा

अमृतवेले याद की यात्रा – 4 बजे से 4.45 बजे तक याद करना है।

(2) प्रातः नियमित क्लास

प्रातः नियमित क्लास करना है।

(3) ब्रह्मचर्य का पालन

ब्रह्मचर्य का बल बुद्धि को शुद्ध बनाता है। मन-वचन-कर्म, दृष्टि-वृत्ति, सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्र बनो और बनाओ।

(4) शुद्ध अन्न

खाते समय बाबा की याद में रहना है। कोई भी नशीली चीजें, प्याज-लहसुन आदि का सेवन नहीं करना है।

(5) संगदोष से दूर

नित्य बाबा का और योगयुक्त ज्ञानी आत्माओं का संग करना है। अश्लील पुस्तके और चलचित्र से दूर रहना है।

(6) दैवी गुणों की धारणा

दैवी गुणों की धारणा-यही सच्चा धर्म है।

(7) ईश्वरीय सेवा

(8) पोतामेल

सारे दिन का पोतामेल चेक करना।

(9) सेण्टर पर आनेवाले भाई-बहनें अपनी आत्म-उन्नति के लिए आते हैं इसलिए कोई भी राजकीय, पारिवारीक बातों की लेन-देन नहीं करनी है।

(10) ईश्वरीय नियमों के विरूद्ध कोई भी भूल हो जाए तो निमित्त को खत लिखकर बताना है।

(11) मधुबन के Permission के सिवाए कोई भी भाई-बहन सेण्टर पर रह नहीं सकता।

(12) यदि कोई विद्यार्थी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश किसी भी नियम को भंग करता हैं जिससे सेण्टर का नियम भंग होता है, सेवाकेन्द्र का वातावरण दूषित होता है, अशान्ति फैलती है तो Incharge बहन उसे समझानी दे या Zone Incharge या मधुबन से पूछकर उनको आने के लिए मना कर सकते है।

(13) कोई भी विद्यार्थी विद्यालय की शिक्षाओं को स्वीकृति के सिवाए कोई भी Hand bill नहीं छपवा सकते हैं। Personal कोई भी प्रकार की Salvation Government से नहीं ले सकते हैं।

(ब)
– मर्यादायें –

(1) बापदादा से वा निमित्त बनी बहनों से सच्चाई सेवा Honesty से रहना है तथा अपनी जीवन कहानी लिखकर देनी है।

(2) यदि कभी किसी से गलती होती तो Law अपने हाथ मे नहीं लेना है, बड़ों को बताना है।

(3) यज्ञ की सच्ची दिल से, तन-मन से सेवा करनी है। अपनी जिम्मवारियों को पूरा करना है।

(4) ब्राह्मण जीवन की मर्यादा मन-वचन-कर्म की पवित्रता है। कभी भी किसी देहधारी से प्रभावित नहीं होना है या लगाव या झुकाव में नहीं आना है। किसी के प्रति Negative बात पर ध्यान नहीं देना है, शुभभावना रखनी है।

(5) कभी कोई भूल होती है तो प्रायश्चित करना है।

(6) दिल की लेन-देन कभी किसी से नहीं करनी है।

(7) बहनों की Personal life में Interest नहीं लेना है।

(8) अपने से बड़े भाई-बहनों को Regard देना है। छोटों को भी Regard देना है, यह Royality ही ब्राह्मण जीवन की शान है।

(9) श्रीमत पर चलना, संगठन को एकता के सूत्र मे बांधना है।

(10) सदा अपने को निमित्त सेवाधारी समझना है।

(11) हम सब का वायदा है बाबा, आप जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे.....इस वायदे से सदा सन्तुष्ट रहना है।

(12) सभी भाई-बहनों से अपना व्यवहार मधुर स्नेहयुक्त रखना है। ऐसे कोई बोल न निकले जिससे Disservice हो।

(13) यज्ञ के वातावरण को योगयुक्त वा शक्तिशाली बनाने के लिए अन्तर्मुखता में रहना है।

(14) शरीर की सँभाल रखते ईश्वरीय सेवा में अलबेला नहीं बनना है। अपने स्वास्थ्य का खुद ही ध्यान रखना है।

(15) यज्ञ वा सेवाकेन्द्र पर अपनी पूरी Dress में रहना है।

(16) यदि अपनी कोई गम्भीर भूल हुई है तो स्वयं आप दादी को बताये और जो सजा मिले उसे मान्य करना है।

(17) समर्पित बहनें कभी भी किसी से Partner होकर धन्धा नहीं कर सकते।

(18) समर्पित कभी किसी से उधार की लेन-देन नहीं कर सकते।

ट्रेनिंग के दौरान पुछे गये प्रश्नावली

प्रश्न 1– प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था का यज्ञ की स्थापना के समय का पूरा नाम लिखो एवं इसकी स्थापना कब, कहाँ और किसने की?

प्रश्न 2– रुद्र माला,रुण्ड माला और वैजयन्ती माला का अन्तर स्पष्ट करो?

प्रश्न 3– कोई भी 5 धर्म स्थापकों,उनके द्वारा स्थापित धर्म तथा धर्म शास्त्र का नाम बताओ?

प्रश्न 4– ब्रह्मा बाबा ने जब लौकिक धन्धा छोड़ने का निश्चय किया तो अपने परिवार को क्या तार किया वे शब्द लिखो?

प्रश्न 5– साकार ब्रह्मा बाबा ने अन्तिम मुरली के अंत में कौन से तीन शब्द शिक्षा प्रद उच्चारे थे?

प्रश्न 6– दैवी गुण में से कोई ऐसे 8 गुण लिखते हुये साथ में यह भी लिखो कि किस गुण के लिए कौनसी शक्ति सहयोगी बनती है उस शक्ति का नाम उस दैवी गुण के सामने लिखो?

प्रश्न 7– मधुबन में पिताश्री की स्मृति में जो स्थान ट्रेनिंग क्लास के सामने बना है, उसके स्तम्भ पर लिखे चारों नाम हिन्दी और अग्रेजी में लिखो?

प्रश्न 8– निम्नलिखित का अन्तर संक्षेप में स्पष्ट करो–

(अ) शुभभावना और शुभ कामना

(ब) मोटेरूप का अभिमान और सूक्ष्म अभिमान

(क) हिसाब किताब और कर्म-बन्धन

(ड) निर्णय शक्ति और परख शक्ति (उदाहरण देकर स्पष्ट करो)

प्रश्न 9– लौकिक स्टुडेण्ट लाइफ और अलौकिक स्टुडेण्ट लाइफ का अन्तर उदाहरण देकर स्पष्ट करो?

प्रश्न 10– यज्ञ रक्षक किसे कहेंगे? उसकी 4 विशेषतायें लिखो एवं यज्ञ में आने वाले स्थूल विघ्न और दूर करने के उपाय संक्षेप में लिखो?

प्रश्न 11– दान करना और पुण्य करना इन दोनों का अन्तर उदाहरण देकर स्पष्ट करो?

प्रश्न 12– पुण्यात्मा बनने के लिए कौनसा स्लोगन पक्का करना होगा?

प्रश्न 13– सन्तुष्टता का आधार क्या है?

प्रश्न 14– व्यर्थ का खाता कैसे परिवर्तन होगा?

प्रश्न 15– मुक्ति वर्ष में कौनसा संकल्प करना है?

प्रश्न 16– मुक्ति वर्ष में मुख्यता किन-किन बातों से मुक्त बनना है?

प्रश्न 17– कारण बताओ–

(1) शिवबाबा भारत में ही अवतरित होते है क्योंकि...

(2) आत्मा साकार दुनिया में आकर शरीर धारण करती है क्योंकि ...

(3) शिवबाबा के बच्चो को बाजार की खाद्य वस्तुएं नहीं खानी है क्योंकि ...

(4) शिवबाबा ब्रह्मा के तन का ही आधार लेते है क्योंकि ...

प्रश्न 18– परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है – 5 मुख्य प्वाइंटस् लिखो?

प्रश्न 19– श्रीमद्‌भगवत गीता का भगवान कौन? 5 प्वाइंटस् लिखकर अपने उत्तर की पुष्टी करो

प्रश्न 20– गीता, रामायण, महाभारत से हमारा क्या सम्बन्ध है?

प्रश्न 21– आत्मा निर्लेप नहीं है 5 प्वाइंटस् लिखो।

प्रश्न 22– आत्मा पुनर्जन्म लेती है (4 प्वाइंटस्)

प्रश्न 23– आत्मा, परमात्मा, महात्मा, देवात्मा में अन्तर स्पष्ट करो।

प्रश्न 24– एक आत्मा अधिक से अधिक और कम से कम कितने जन्म लेती है?

प्रश्न 25– आत्मा लीन नहीं होती (4 प्वाइंटस्)

आदर्श टीचर बनने के लिए –

- स्वयं को परिवर्तन करना है ......
- देही अभिमानी बनना है ......
- निर्माणचित् बनना है ......
- सबको सन्तुष्ट करना है ......
- बेहद के विचार रखने है ......
- जगतमाता वा माँ-पन की दृष्टि ......
- साधा जीवन हो ......
- अनासक्त वा ट्रस्टी बनो ......
- आलराउण्ड तथा एवररेडी बनो ......
- निर्णयशक्ति हो ......
- मान-अपमान में समान हो ......
- शक का शिकारी न बने ......
- ड्रामा पर पक्की स्थित रहें ......
- जिद्द के संस्कार न हो ......
- गम्भीरमूर्त हो ......
- यज्ञ की बुराई सुनने वाली न हो ......
- दो साथी में आपसी स्नेह हो ......
- हर परिस्थिति में मोल्ड होनेवाली हो ......
- हैन्डलिंग पॉवर अच्छी हो ......
- सदा हर्षितमुख हो ......
- परचिन्तन से मुक्त हो ......
- संग के रंग से बचे रहो ......

आदर्श टीचर वह है –

- सच्चाई और सफाई हो **......**
- गुणग्राही दृष्टि हो **......**
- जैसा कर्म मैं करूंगी मुझे देख **......**
- सबके साथ संस्कार मिलाने वाली हो **......**
- अपना टाईम-टेबल अच्छा हो **......**
- हर सेवा में चुस्त हो **......**
- ईश्वरीय नियमों का पालन करें **......**
- अथकपन के संस्कार हो **......**
- सबको रिगार्ड दे **......**
- विरोधी भाव के संस्कार न हो **......**
- सर्व को आगे बढ़ाने की भावना **......**
- शुभ चिन्तक हो **......**
- आत्मविश्वासी हो **.....**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +919414003497, +919414082607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com,

sparc@bkivv.org

नोट